कथा-पाठ

कथा-पाठ



अशोक

कथा-पाठ

(मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन)

अशोक



सिद्धिरस्तु, दिल्ली

कथा-पाठ

(मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन)

लेखक : अशोक
लोहना, मधुबनी (बिहार)
वर्तमान पता : बी-102, श्रीरामचन्द्र एन्क्लेव, रोड नं.1ए,
शिवपुरी, पटना-23
मोबाइल : 8986269001
ईमेल : ashokthewriter@gmail.com

कला संपादन : मणिशंकर कुमार
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

प्रकाशक : सिद्धिरस्तु, दिल्ली
संपर्क : 9431693352, 9971919826, 9310475355
ईमेल : siddhirastu.trust@gmail.com
वेबसाइट : www.siddhirastutrust.com

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 300

ISBN : 978-81-957865-5-8

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली

KATHA-PATH (Critical Studies of Maithili Short Stories)
by Ashok, Edition 1st, 2022, Price : ₹ 300

:: अनुक्रम ::

प्रकाशकीय

सिद्धिरस्तु मिथिलाक्षर लिपिक प्रचार-प्रसारके अतिरिक्त मैथिली भाषा आ साहित्यक समग्र विकासक लेल कृतसंकल्पित अछि। एहि क्रममे सिद्धिरस्तु अनेको विधामे पोथीक प्रकाशन कऽ रहल अछि आ निरंतर प्रयासरत अछि जे मैथिली साहित्यकेँ प्रति मैथिलीजनक उदासीनताकेँ तोड़ल जाए जाहि सँ पाठक आ पोथी'क बीचक दूरी पाटल जा सकैछ।

'कथाकार अशोक' नाम सँ प्रसिद्ध श्री अशोकजीक मैथिली साहित्यमे प्रवेश कविकेँ रूपमे भेल छनि। बिहार सरकारक सहकारिता विभागमे उच्चाधिकारी पद पर रहितो अशोक जी साहित्य रचनामे लीन रहलाह। हिनक रचना अनेको विधामे अछि, चाहे ओ कथा होइ वा कविता, निबन्ध होइ वा यात्रा कथा, आलोचनात्मक लेखन होइ वा बात-विचार, सब क्षेत्रमे हिनक दखल छनि। अशोकजी नीक कवि, श्रेष्ठ कथाकार, निबंधकार, समीक्षक आ कुशल सम्पादक छथि। स्वभावसँ सरल, मृदुभाषी आ प्रगतिशील विचारक संम्पोषक कथाकार अशोकजी दृष्टि बहुत व्यापक छनि, मैथिलीक नवोदित साहित्यकारक लेल ओ अनुकरणीय छथि।

हिनक उत्तम स्वास्थ्यके कामना करैत हम एहि पोथीकेँ पाठकवृन्दकेँ समर्पित कऽ रहल छी आ आशा करैत छी जे हिनक एहि कृतिकेँ मैथिली साहित्य जगतमे स्वागत होयत। अस्तु।

– हरि मोहन झा
अध्यक्ष, सिद्धिरस्तु

21 फरवरी, 2023
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

एक विधा पर आधारित आलोचना पोथी

साहित्यक विभिन्न विधा पर आधारित आलोचनाक पोथी किछु वर्ष पूर्व सँ मैथिलीमे प्रकाशित हुअ' लागल अछि। ओहि सँ पूर्व विश्वविद्यालय सभमे शोध त' होइत रहल अछि मुदा ओहि शोधक बहुत कमे प्रकाशन भेल। एम्हर मुदा ओकरो प्रकाशनमे गति आयल अछि। शोध सँ इतर जे आलोचनाक पोथी आयल अछि से उपन्यास, नाटक, कथा विधा पर लिखल पोथी थिक। उपन्यास पर शिवशंकर श्रीनिवास आ कमलानन्द झाक पोथी प्रकाशित भेल अछि त' नाटक पर कमलमोहन चुन्नूक। मैथिली कथा पर एहि सँ पूर्व मोहन भारद्वाजक 'कथा-गोष्ठी' आ शिवशंकर श्रीनिवासक 'बदलैत स्वर' अछि। हमरा खुशी अछि जे एहि क्रममे हम तेसर कड़ी जोड़ि रहल छी।

मोन पड़ैत अछि जे एकैसम सदीक आरम्भ भेलाक बाद सँ आलोचक मोहन भारद्वाज ई कह' लागल रहथि जे आब विधाक हिसाब सँ आलोचनाक पोथी अयबाक चाही। आलोचक आब कोनो विशेष विधाक विशेषज्ञ बनथि त' नीक रहत। एखन धरि मैथिलीक आलोचक जे छथि से विभिन्न विधा पर जखन जे अवसर उपलब्ध होइत छनि, आलोचना लिखैत छथि। ओकरा पोथी रूपमे छपबितो छथि। पोथीमे आलोचनात्मक निबन्ध सभके संग्रहीत करैत छथि। हुनकर शब्दमे 'ई किराना दोकान टाइप' पोथीक जमाना आब नहि रहल। ओ एही सोच विचारक क्रममे 'कथा-गोष्ठी' पोथीक योजना बनौलनि। ओकरबाद यात्रीक उपन्यास बलचनमा पर 'बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान' ओ 'डाकबचन' पोथी लिखलनि।

हमरा कथा रचना संग कथा पर आलोचना लिखबाक सेहो अवसर भेट' लागल। कथा लिखब, कथाके बूझब आ कथाक आलोचना लिखब, हमरा लागल जे फराक-फराक होइत छैक। से बात एहि क्रममे हमरा बूझ'

मे आबि रहल छल। कथा लिखब त' 1971 सँ शुरू केलहुँ मुदा जहाँधरि बुझबाक प्रश्न अछि से एखनो जेना चलिए रहल अछि। ई ओहिना अछि जेना कथा रचब अछि। आलोचना त' एकैसम सदीमे आबि क' शुरू केलहुँ। एहि क्रममे मैथिली आ हिन्दीक कथा आलोचना सम्बन्धी बहुतो निबन्ध ओ पोथी पढ़लहुँ।

जखन आलोचक सुरेन्द्र चौधरीक पोथी 'हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ' पढ़लहुँ त' एकेठाम बहुत बात बुझलियैक। तहिना आलोचक नामवर सिंहक 'कहानी : नई कहानी' सेहो रहय। इच्छा हुअ' लागल जे मैथिलीमे सेहो जँ ओहेन पोथी अबितय। बहुतो सक्षम मित्रलोकनि कें एहि लेल अनुरोध केलियनि। मुदा पाठ-प्रक्रिया पर आधारित पोथी नहि आबि सकल।

जखन हम एहि पोथीक रूपरेखा बनब' लगलहुँ त' अपन प्रकाशित कथा संबंधी विभिन्न आलोचनात्मक निबन्ध सभक संग रचना-प्रक्रिया आ पाठ-प्रक्रिया पर लीखि क' सेहो एहिमे सम्मिलित करबाक विचार केलहुँ। एही संग मोहन भारद्वाज आ मैथिली कथालोचन सेहो लिखलहुँ। पूर्व प्रकाशित निबन्ध संग ओ तीनू निबन्ध एहि पोथी मे सम्मिलित अछि। तैयो मुदा संतोष नहि भेल अछि। होइए जे मैथिली कथाक प्रवृत्ति ओ विकासक दृष्टिसँ एक सोझे पोथी शीघ्रहिं लिखी। कथ्य ओ शिल्प कोना विकसित भेल अछि, तकरा देखी। किछु प्रसिद्ध कथाक पाठ-प्रक्रियाक आधार पर विश्लेषण करी। ई सभ भविष्यक गर्भमे अछि। जेना सम्भव होयत, करबे करब।

एहि पोथीमे सेमिनारमे पढ़ल गेल, पत्रिका वा अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ लेल लिखल गेल अथवा अपने मोने लिखल-प्रकाशित आलोचनात्मक निबन्ध सभ अछि। पोथी रूपमे छपेबाक समय ओहिमे किछु परिवर्तन ओ परिवर्द्धन कयल गेल अछि। ई निबन्ध सभ मोटा-मोटी मैथिली कथाक पाठ पर आधारित अध्ययन थिक। एही संग मैथिली कथालोचन पर सेहो अपन विचार रखलहुँ अछि। आशा अछि पाठक लोकनि कें मैथिली कथाक सम्बन्ध मे ई पोथी पसिन्न पड़तनि।

पटना, 22/09/2022

— अशोक

मैथिली कथा : रचना-प्रक्रिया

कोनो रचना कियो किएक करैत अछि? एही संग ईहो प्रश्न उठैत अछि कि कोनो रचना कथाकार कोना करैत अछि? कथाकार रचना एहि कारणे करैत अछि जे दोसरा के किछु कहबाक छैक, दोसरा संग संवाद करबाक छैक। ओ पाठकक मोन के रंजन करैत अछि, प्रसादन करैत अछि। एहिसँ ओकरा अपनो सुख भेटैत छैक। आनन्द होइत छैक। कथा लिखलाक बाद पहिने त' अपने मोन आनन्दित होइत छैक। वस्तुतः समर्थ रचनाधर्मी कथाकार दूषित अन्तःकरणक सेहो परिष्कार करैत ओकरा प्रसादन करबाक क्षमता रखैत अछि। सभ मनुक्ख के सह-अनुभूति द्वारा परस्पर जोड़ने रखबाक लेल रचना एक साधन थिक। एहिठाम ई प्रश्न उठि सकैत अछि जे ई रचनाधर्मी कथाकार की होइत छैक? रचनाधर्मी कथाकार ओ होइत अछि जे 'समाज द्वारा गढ़ल गेल नव सत्य के योग्य बना दैत अछि। सामयिकता के शाब्दिक रूपसँ पछोड़ धरय बला लोक रचनाधर्मी नहि होइत अछि, ई बात ध्यानमे राखि लेबाक चाही।'[1] वस्तुतः पाठक वर्ग ओहि कथाकार दिस उन्मुख होयत जेकर अपन एक स्तर अछि, जे अपन ढंगसँ लिखैत अछि आ वैह लिखैत अछि, जे ओ चाहैत अछि। जे हरेक फैशनक संग अपना के बदलि लैत अछि, ओ रचनाधर्मी कथाकार नहि अछि।

दोसर जे प्रश्न अछि कि कोनो रचना कोना कयल जाइत अछि त' सैह रचना-प्रक्रिया कहबैत अछि। वस्तुतः रचना कोनो तात्कालिक मनोद्वेगक परिणाम नहि होइत अछि। मोनमे किछु फुड़ायल आ तत्काल ओकरा कागज पर कलमसँ लीखि देलहुँ वा मोबाइल पर टाइप क' देलहुँ त' से रचना नहि थिक। मोनक भाव के केवल उछालि क'

राखि देलासँ रचना नहि बनैत अछि। असल मे रचना एक दीर्घकालिक मानस-प्रक्रियाक परिणाम होइत छैक। यथार्थ जीवनसँ सम्पर्कक कारण रचनाक बीज-वस्तु सभ रचनाकारक मस्तिष्क मे बहुत समयसँ एकत्रित होइत रहैत अछि, ओहिमे पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया होइत रहैत अछि और एक विशेष उत्तेजक क्षणमे ओ एक निश्चित रूपमे ढरि क' ओकर रचनामे अभिव्यक्त होइत अछि। उपर कहलहुँ जे कथाकार अपन पाठक के किछु कह' चाहैत अछि, तैं एहि दुआरे ओ रचनामे प्रवृत्त होइत अछि। रचनाक रूप तखने समक्ष अबैत अछि जखन मानस-प्रक्रिया पूर्ण भ' जाइत छैक आ कथाकार ई अनुभव कर' लगैत अछि कि पाठकसँ किछु विशेष कहबाक क्षण आबि गेल अछि। 'वस्तुत: रचना बाह्य यथार्थक चुनल गेल तथा नव आकृतिमे ढारल गेल अंश, अनुभव ओ संवेदनाक छानल रूप थिक। ओहिमे मनुक्खक सम्पूर्ण अर्जित संस्कार सभक परम्परा सभक आ विवेकक योगदान होइत अछि।'[2]

आब मैथिली कथा पर ध्यान देल जाय। कथा वा कहानीक प्राचीन नाम संस्कृतमे 'गल्प' या 'आख्यायिका' भेटैत अछि। मुदा आधुनिक समयमे कथाक नामसँ जे रचना भेल से संस्कृत साहित्यक गल्प ओ आख्यायिकाक नामसँ भेटै बला रचना सभसँ फराक अछि। अपन वर्तमान रूपमे ई विधा अंग्रेजी साहित्य सँ होइत मैथिलीमे आयल। कथा के पश्चिममे शार्ट स्टोरी कहल जाइत अछि। तैं राजकमल चौधरीक कथा-संग्रह 'ललका पाग'क भूमिकामे आलोचक रमानाथ झा लघुकथाक प्रयोग करैत छथि। आब लघुकथाक एक फराक विधाक रूपमे गणना होइत अछि। हमरा सभके ई मोन रखबाक थिक जे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथा-संग्रह 'विड़म्बना'क भूमिकामे आलोचक रमानाथ झा ओहि संग्रह के 'गप्प साहित्यक प्रथम उपहार' कहने रहथि। ओ कहलनि जे, 'घटना विशेषक कल्पना कए ई लोकनि गप्प रचैत छथि जाहिमे कतोक मे तँ ई लोकनि स्वयं सम्मिलित भए जाइत छथि ओ तखन स्वानुभूतिक गप्प छोड़ैत छथि, कतोक मे आनक गप्प कहैत छथि जेना सबटा हिनका देखल वा सुनल अन्तत: जानल धरि अवश्य होइन्ह। साहित्यिक दृष्टि सँ एहिमे चमत्कार तखन अबैत छैक जखन ई कल्पित गप्प सब यथार्थ गप्प सन भाषित हो तथा एकरा कहबामे विच्छित्ति अबैक।' स्वाभाविक रूपसँ ओ कथाक

रूप तत्व के ध्यानमे राखि क' कथा लेल गप्प कहलनि अछि। हुनकर मोनमे ई 'फिक्शन'क समानार्थक रहल अछि। मुदा जखन कथा लिखल जाय लागल आ कथ्य युगक अनुकूल बदलैत गेल त' कोना लिखैत छी के स्थान पर की लिखैत छी वा की कहबाक अछि के लेखनक सार्थकता मानल जाय लागल। आलोचक मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि जे, 'एहिठाम ई स्पष्ट करब आवश्यक जे रूपहीन कथा नहि भ' सकैत अछि। कोनो कथामे शिल्प अनिवार्य तत्व थिक। बखेड़ा तखन शुरू होइत अछि जखन कथा-कथन-कौशल, कथा-लेखनक अभीष्ट भ' जाइत अछि। तहिना विचार अथवा सिद्धांत के ओछा क' राखि देब कथा नहि थिक। यथार्थक सुन्दर प्रस्तुतिसँ कथा रोचक त' होइतहि अछि, ओकर सम्प्रेषण ीयता तथा सार्थकता सेहो बढ़ि जाइत अछि। तात्पर्य ई जे विवाद कथाक विभिन्न तत्वक उपस्थिति नहि, ओकर प्राथमिकताक अछि। एक समय छल जखन वस्तुवादी रचनाकार शिल्प-विधानकें गौंण वा एतेक धरि जे हेय, बुझैत छलाह। मुदा, आब से स्थिति नहि अछि।'[3]

मैथिलीमे ओना कथासँ मधुश्रावणी, वटसावित्री, सपता-विपता कथा सभक संग विभिन्न आख्यान-उपाख्यान, गोनू-विनोद, मैथिली पुरुष-परीक्षा अथवा उदयन कथा, वररूचि कथा सन-सन कथा सेहो बुझल जाइत अछि। संगहि विभिन्न लोक-कथा ओ दादी-नानीक खिस्सा, चौपाल पर श्रमिक वर्ग द्वारा कहल-सुनल जाइत खिस्सा अथवा पूर्व जमीन्दार वर्ग कें नित्र अनबाक लेल सुनाओल जाइ बला खिस्सा सेहो अबैत अछि। मुदा खिस्सा आ कथामे अन्तर अछि। कथाकार ओ आलोचक शिवशंकर श्रीनिवास कथाकार सोमदेवक कथा पर बात करैत कहलनि अछि जे, 'हमरा जनैत दुनूमे सूक्ष्म अन्तर अछि। ओ ई जे कथा अपन घटनाक संग किछु कहैत अछि, जकरा कथ्य कहल जाइत अछि। कथामे घटना, विषय, पात्र, परिदृश्य ओ वर्णन-विन्यास महत्वपूर्ण रहितो ओकर शिल्प-शैलीक संग सभ सँ महत्वपूर्ण अछि ओकर कथ्य। कथ्य नहि त' कथा की? किन्तु, सभ किछु रहितो खिस्सामे कथ्यक अभाव रहैत अछि। ई कथ्यक अभाव रहितो खिस्सा मे किछु महत्वपूर्ण बात रहैत अछि।'[4]

जहाँधरि मधुश्रावणी, वटसावित्री कथा वा विभिन्न लोक कथा आ खिस्सा सभक प्रश्न अछि ई सभ जनजीवनमे परम्परा सँ पीढ़ी दर पीढ़ी

मौखिक अथवा वाचिक रूपसँ मनोरंजन आ नैतिक शिक्षा लेल कहल जाइत रहल। ई कथा ओ खिस्सा सभ क्रमश: कालान्तरमे लिखित रूपमे आयल। एहिमे वाचिक परम्परामे खिस्सकड़ अपन प्रतिभा अनुसार संशोधन ओ परिवर्द्धन करैत रहलाह। मैथिलीक मौलिक कथा लेखन संग से बात नहि छल। आब ओ मात्र एक कथाकारक रचना भ' गेल। ओहि पर ओहि कथाकारक व्यक्तित्वक छाप रहैत अछि। एहि प्रसंगमे आलोचक कुलानन्द मिश्र लिखने छथि जे, 'मैथिली मे मौलिक कथा-लेखन संगे कथा अपन वाचिक की लिखित परम्परासँ विछिन्न भ' गेल। हिन्दीमे कथाक आरम्भ मे प्रेमचन्दक कथामे भारतीय कथा-चेतनाक जाहि सातत्यक दर्शन होइछ, ओहेन किछु यदि मैथिलयो कथामे परिलक्षित होइत त' अपन कथा-दृष्टिक गप्प सम्भव छल। प्रो॰ हरिमोहन झाक कथा बादमे जाहि जातीय आ क्षेत्रीय विशेषताक संग उपस्थित भेल तकरो अनुसरण भेल रहैत त' एहन चर्च लेल आधार बनैत। मुदा से नहि भेल आ मैथिलीक मौलिक कथा आदिए सँ अनठीया गमला मे पल्लवित-पुष्पित भेल। तैं विश्वकथा दृष्टि, कम सँ कम सामान्य भारतीय दृष्टि सँ पृथक कोनो स्वतंत्र दृष्टि मैथिलीमे नहि भेल।'[5] एहि सन्दर्भ मे ई बात हमरा सभके मोन रखबाक थिक जे प्रायश: सभ आधुनिक भारतीय भाषाक कथामे कथाक विकास त' अनठीये गमलामे भेल अछि। हिन्दयो मे प्रेमचन्दक बाद से बात कहाँ रहल। ई मानल जाइत अछि जे कथाक जे आख्यानपरकता वा कथात्मक शक्ति (Narrative energy) अछि से कथाक आनन्दमे अछि। प्रेमचन्दक कथात्मक शक्ति पर बात करैत कहल गेल अछि जे, 'कथाक आनन्द कथाक प्रवाह मे अछि और ई प्रवाह कथानक के पूर्णताक रूपमे उदाहृत कयल जा सकैत अछि। आख्यान-साहित्यक रचयिता एहि प्रवाहसँ परिचित छलाह, फलत: ओ कथाक आनन्द के अबाधित पूर्णता देबामे समर्थ भेलाह। कहियो-कहियो त' प्रेमचन्द अपन एहि विवशताक कारण औपन्यासिक परिप्रेक्ष्यमे कथाक निबंधना करैत बुझाइत छथि। ई दोष प्रेमचन्द के नहि थिक, कथा-परम्पराक थिक। हिन्दी कहानी-साहित्यक दीर्घ परम्परा पर दृष्टिपात करब त' अहाँ पायब जे कथाक तत्व ईशा सँ ल' क' यशपाल तक मे कतहु गौण भ' क' नहि आयल अछि। हिनका सभक कथात्मक शक्ति (Narrative energy) एहि बातक प्रमाण

थिक।'[6] एहि कथनमे निबंधना शब्दक प्रयोग भेल अछि। निबंधनाक अर्थ प्रदर्शित करब, तैयार करब, बनायब होइत छैक। एहि लेल अंग्रेजीमे (Lay out) शब्दक प्रयोग भेल अछि। उपन्यास आ कथा दू फराक बिधा थिक। प्रेमचन्द के सम्बन्ध मे कहल गेल अछि जे ओ अपन कथाके उपन्यासक परिप्रेक्ष्यमे तैयार करैत छला। ओ बहुधा उपन्यास आ कथा एक्के समय मे लिखैत रहथि। मुदा अनेक कथानक के एक संग ल' क' चलबामे कठिनाइक अनुभव होइत छलनि। मुंशी दयानारायण निगम के 28 नवम्बर 1919 के लिखल पत्रमे प्रेमचन्द लिखने रहथिन 'दिमाग एक संग दूटा फराक प्लाट नहि सम्हारि सकैत अछि। अनुभव केने छी जे एक्के काज एक समय भ' सकैत अछि। या त' नाविल लिख सकैत छी अथवा कहानी। नाविल लेल एक्केटा प्लाट काफी अछि आ ओकरा लिखब ओतेक मुश्किल नहि अछि, जतेक प्रत्येक मासमे दू-तीन कहानी के।'[7] जँ हमरालोकनि ध्यान दी जे मैथिलीक तीन उपन्यासकार-कथाकार मायानन्द मिश्र, लिली रे आ प्रभास कुमार चौधरी सेहो औपन्यासिक परिप्रेक्ष्यमे कथाक निबन्धना करैत देखाइ देताह। प्रभास कुमार चौधरीक कथा पर विचार करैत शिवशंकर श्रीनिवास लिखलनि अछि जे, 'एहि बीच अन्य भाषाक कथामे औपन्यासिक फलक देखबाक इच्छा व्यक्त कयल जा रहल अछि, किन्तु एते अवश्य जे बात उपन्यास आ कथाके फुटकबैत अछि ओ त' आवश्यक अछि। ओहिमे सभसँ पहिने ई जे उपन्यासमे विभिन्न क्षणसँ बात उठैत एक क्षण पर अबैत अछि आ कथामे एक क्षणसँ विभिन्न क्षणमे जा एक क्षणमे घुरि अबैत अछि। ई अन्तरक अतिरिक्त कतेको अन्तर त' स्वाभाविक अछि किन्तु उपन्यासक जे फलक विषयमे कहल अछि ओ ई जे कथामे जखन मनोविश्लेषण घनीभूत हैत त' बीतल क्षणक विस्तार सँ घटना जुड़ि सकैए (जे उपन्यास फलक रूपमे परिचित अछि) आ कथामे औपन्यासिक फलकक बोध कयल जा सकैत अछि। एकरा कथात्मकताकें अर्थात कथा-घटनाकें विश्वसनीय ओ सहृदय बनेबा लेल आवश्यक मानल जा रहल अछि। से ई बात सातम दशकक कथाकार प्रभासजीक कथामे आयब विशेष महत्व रखैत अछि।'[8]

मैथिलीमे हरिमोहन झाक कथा 'पाँच पत्र' के पाँच टा छोट-छोट पत्रक शिल्पमे चालीस वर्षक सम्पूर्ण जीवनकें कलात्मक ढंगें समेटि

लेबाक कारणे औपन्यासिक आयाम दै बला मानल जाइत अछि। कथाकार प्रो॰ मनमोहन झा पाँच पत्रक सम्बन्ध मे लिखने छथि जे, 'प्रेमचन्द युग-युगान्तरक इतिहासक एकटा विषम विषय एवं मानवीय रूप समक्ष राखि देलनि 'कफन' मे। शोषणक एहन विभत्स वानगी जाहिमे रैअत कें मरय नहि देल जाइत छैक किएक त' ओकर अस्तित्व पैघक पैघत्व कायम रखबाक लेल जरूरी छैक। ताहू मे एकटा निफिकिर अलमस्तता छै किएक त' ओ जनैत अछि जे जीवित मे भनहिं देह पर वस्त्र नहि भेटौक मुदा मुइला पर कफन भेटबे करतै..... जाबे हिन्दुत्व रहतै ताबे बेर-बेर भेटतै। तहिना 'पाँच पत्र'क विषय सेहो सार्वभौम अछि जे कोनो भाषा, देश वा कालक सपना नहि अपितु एहन रचना अछि जाहिमे सम्पूर्ण मानवताकें शाब्दिक अभिव्यक्ति देल गेल छैक। पांच-पत्र जीवनक विभिन्न अवस्था.... चारू आश्रमक कथा अछि।'[9]

एहि संग हमरा सभकें फेर सँ मोन पाड़बाक थिक जे उपन्यास आ कथा दू पृथक विधा थिक। तैं दूनूक संरचनामे भेद सेहो छैक। वस्तुत: कथा लेल घटना पर घटना जोड़ैत चल जायब जरूरी नहि अछि। कथा केवल वातावरण आ चरित्रक परस्पर निर्भरतासँ सेहो बनि जाइत अछि। घटनापूर्ण कथाक तुलनामे एहन कथा सभक संरचना कोनो दृष्टि सँ अपूर्ण वा रूपाकारहीन नहि अछि। आख्यान-उपाख्यान आदि मे अद्‌भुत वृतांत, आकस्मिक घटना, चमत्कारिक उपाय, दैवीय सहायताक जे साधन सभ उपयोग कयल गेल से कथामे सर्वथा बदलि गेल। कथामे जीवनक कार्य-कारण रूप आ सम्बन्ध पर बल देल गेल। वास्तविकता के ध्यानमे राखल गेल। वस्तुत: पूर्वमे कल्पना द्वारा अपन संसार निर्मित करबाक पूर्ण स्वतंत्रता रहय। तहिया कार्य-कारण सम्बन्ध के अवहेलना क' मनुष्यक वास्तविकता तथा ऐतिहासिकतासँ उपर उठि क' कथानक के निर्माण कयल जा सकैत छल। मुदा कथामे फेन्टेसीक अतिरिक्त कोनो रूपमे एहन छूट नहि अछि। एहि क्रममे आलोचक जयधारी सिंहक आजुक कथाक सम्बन्धमे कहल कथन समीचीन अछि, ओ कथा शिल्पके निबन्ध-शिल्पसँ भिन्न मानैत कहैत छथि, 'कथाक प्राण थिक जीवनसँ सानिध्य, स्वाभाविकता, वातावरणक आवेष्टनमे चरित्र विशेषक प्रभाव।' आ ई प्रभाव जेहेन भाषा-शैली द्वारा अधिक मार्मिक रूपसँ मन पर पड़ि सकय से शैली

अवश्य स्वीकार्य, भने ओ पण्डितक शैलीसँ भिन्न बूझि पड़य।[10]

आब हम सभ मैथिली कथाक सम्बन्धमे ई चर्चा क' ली जे आन भारतीय भाषा आ कि विश्वक अन्य भाषाक कथा सभसँ मैथिली कथा कोना फराक अछि अथवा कोना फराक भ' सकैत अछि। अर्थात् मैथिली कथा सभमे ओ कोन तत्व सभ रहतैक जे ओ मैथिली कथा कहाओत। कारण एहि सम्बन्धमे पूर्वहुँ साहित्य संसारमे चर्च-वर्च होइत रहल अछि। एहि विषय पर एक विशेष चर्चा-परिचर्चा आलोचक भीमनाथ झा द्वारा जनवरी 2001 मे विट्ठो कथागोष्ठी मे एक बीज-आलेखक माध्यमसँ भेल। शीर्षक रहै 'मैथिली कथाक वर्त्तमान समस्या'। ओहिमे मैथिली कथाक दिनोदिन पतरायल जा रहल पाठकक समस्याक संग ईहो प्रश्न उठौने रहथि जे मैथिली कथा माने की? मैथिली भाषामे लिखल गेल कोनो कथा-रचनाकें मैथिली कथा कहल जाय आ कि एहि लेल कोनो आनो गुण-धर्म अपेक्षित अछि? एहि सँ पूर्व हमरा सभ देखलहुँ जे आलोचक कुलानन्द मिश्र कहने रहथि जे मैथिलीक मौलिक कथा आदिएसँ अनठीया गमला मे पल्लवित-पुष्पित भेल। मैथिली मे कोनो स्वतंत्र दृष्टि नहि विकसित भेल। ओही क्रममे स्वतंत्र दृष्टिक अभिप्राय स्पष्ट करैत ओ कहलनि जे, 'मैथिली कथाक अपन स्वतंत्र दृष्टिसँ हमर अभिप्राय ओकरा कोनो क्षेत्रीय सीमामे बान्हब कथमपि नहि थीक। हम त' मात्र एतबा कह' चाहैत छी जे कोनो विषयक उपस्थापन मे ओकर जातीय विशिष्टता स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित होयबाक चाही जे ओकरा बंगला कि तमिल कि मलयाली कथा-चेतनासँ भिन्न चरित्र प्रदान करैक।'

तँ स्वतंत्र दृष्टिसँ हुनक अभिप्राय कथाक जे विषय अछि, ओकर उपस्थापनमे जातीय विशिष्टता रहबाक सन्दर्भ मे अछि। ई बात सत्य थिक जे जेकरा हम सभ मिथिला वा तिरहुत कहैत छी वा बुझैत छी से सम्पूर्ण विश्व आ कि भारतसँ पृथक नहि अछि तैं मोटामोटी विषय वैह छैक जे अखिल भारतीय वा अखिल विश्वक छैक। तैयो विषयक चयन महत्वपूर्ण छैक। जहां धरि जातीय विशिष्टता के बात छैक त' कियो ओकरा भाषासँ जोड़ैत छथि त' कियो संस्कृति सँ। आलोचक तारानन्द वियोगी मैथिली कथाक वर्त्तमाना समस्यापर लिखल भीमनाथ झाक लेख पर बात करैत तीनटा विन्दु के फड़िछा क' रखलनि अछि। (1) ठेंठ

मैथिल अभिव्यक्ति कलाक ह्रास भेल अछि। (2) एखनहुँ किछु एहन लेखक छथि जे किताबी समस्याक आरोपण जमीन पर क' रहल छथि। आ (3) आजुक तिथि मे जे मेधावी कथाकार लोकनि कथा क्षेत्र मे सक्रिय छथि, एहि मे सँ अधिकांशक मानस-पटल पर जे मिथिला छैक, से हुनका लोकनिक नेनपनक मिथिला छियनि।'[12] एहि विन्दु सभ पर ओ विस्तारसँ लिखैत विमर्श लेल बहुतो तथ्य सभ के रखलनि अछि। हुनकर तीनू विन्दु युक्तिसंगत अछि। विचारणीय अछि। तीनू एक दोसरासँ जुड़ल सेहो अछि। मुदा प्रश्न ई अछि जे आजुक तिथिमे कतेक मेधावी लेखक छथि जे मिथिलामे रहिक' कथा लीखि रहल छथि अथवा लीखि सकैत छथि। जे ओत' रहि क' लीखि रहल छथि हुनकर कथामे जमीनी समस्याक यथार्थ के हुनकर अभिव्यक्ति कला संग मिला क' देखल जा सकैत अछि। ओकर जांच-पड़ताल कयल जा सकैत अछि। ओहिमे समाधानक किछु सूत्र सभ भेटि सकैत अछि। मुदा जाहि मेधावी लेखक के मिथिला मे रहब सम्भव नहि छनि आ बहुलांश मे आइ के समयमे सम्भव नहिये छनि, हुनका लेल सेहो सोचब-विचारब जरूरी छैक। अन्तत: हम 'ठेंठ मैथिल अभिव्यक्ति कला' पर ठमकि गेल छी। आलोचक काञ्चीनाथ झा 'किरण'क एक निबन्ध अछि 'फकड़ा'। ओहिमे ओ ठेंठ शब्द पर विस्तारसँ अपन मत रखलनि अछि। प्रस्तुत सन्दर्भ मे हुनकर किछु पाँती के देखल जा सकैत अछि, 'दोमस भाषाक क्षेत्रमे देशक अर्थ लोक थिक भूमि नहि। आ लोकमे संस्कृत शब्दक ज्ञाताक अपेक्षा ठेंठ शब्दक ज्ञाता अछि। अत: ठेंठक अर्थ अल्प देशव्यापी संगत नहि होइछ। ... ओही समाजक लोक जकरा अपन अनुभवसँ समाज कें हित करक भावना प्रबल भ' जाइत छलै से अपन भावकें, अपन अनुभूतिकें अपन ठेंठ शब्दमे बान्हि दैत छल। लीखय अबैत नहि छलै तैं कण्ठस्थ क' लैत छल। लोक कें सुनबैत छलै वा अवसर पाबि पढ़ैत छल।'[13] ठेंठ मैथिल अभिव्यक्ति कला लेल आजुक कथाकार के ओही लोक-समाजसँ भाषा आ कला ल' क' ओकरा वर्त्तमानक अनुकूल विकसित करय पड़तनि। जे कथाकार ई क' सकैत छथि से एहि दिशामे प्रवृत्त भ' सकैत छथि। मुदा जिनकासँ ई सम्भव नहि छनि आ ओ भारत अथवा विश्वक कोनो जगह पर रहि रहल छथि, हुनका लेल आलोचक कुलानन्द मिश्रक कहब

छनि जे, 'धरती एक होइतो सभठाम एक रंग नहि छथि। तहिना मनुक्ख जाति तत्वत: एक होइतो कतोक तरहक भिन्नता रखैत अछि। एहि भिन्नताक कारण सभकें आब जानल-बूझल छैक। चीन, जापान, भारत वा आन देश एके भूमिक भाग होइतो भौगोलिक भिन्नताक अतिरिक्त ऐतिहासिक आ वैचारिक भिन्नताक रूपमे देखल जाइछ। तें कोनो रचना अपन जातीय आ क्षेत्रीय संस्कारके आत्मसात क' वैश्विक सोचक संग होइतो अपन संवेदनागत विशिष्टताक कारण अपन पृथक पहिचान बना सकैछ। मैथिलीक कथाकारोकें अपन विशिष्टताक रक्षा हेतु एक संगे कतोक दुनियाँक सोच संस्कार संग आत्मीयता स्थापित क' अपनाकें ओहि भिन्न-भिन्न दुनियां आ सोचके अपनाकें सहभागी आ सहभोक्ता बना असंदिग्ध पहिचान लेल नव ओरिआओन कर' पड़तनि। अपन इतिहास आ संस्कृतिक पुर्नअन्वेषण दुरुस्त बात थीक। मुदा एहि अन्वेषण के एकांगी नहि होयबाक चाही। एहि पुर्नअन्वेषण मे मानव जातिक समस्त अधिवास आ सम्पूर्ण चिन्तनक प्रतिफलोक प्रभाव देखार होयबाक चाही।'[14]

असलमे मैथिली कथाक सय-सवा सय वर्षक विकासमे ऐतिहासिक कारणसँ कथाके मैथिली कथा हेबाक लेल विशिष्ट गुण-धर्मक चर्चा हुअ' लागल अछि। ओ ऐतिहासिक कारण अछि अपन फराक परिचिति, फराक अस्मिता लेल अनवरत चलैत सोच-विचार। क्षेत्रीयताक आग्रह। संस्कृतिक रक्षा। कथाकार मायानन्द मिश्र मानैत छथि जे ओहिमे विश्वसनीयता, स्वाभाविकता, प्रमाणिकता ओ यथार्थताक संग क्षेत्रीयताक अभिव्यक्ति हेबाक चाही। ओ कहलनि अछि जे, 'कथाकारकें संस्कृतिक आभ्यान्तरिकता ओ वाह्यरूप दूनूमे उचित संतुलन बना क' चल' पड़त।आ जखने ई संतुलन रहत तखने ओ भारतक मैथिली कथा कहा सकत। सांस्कृतिक निजत्वसँ भारतीय कथामे कोना भिन्नता अबैत अछि तकर एकटा उदाहरण देखल जा सकैत अछि। राजिन्दर सिंह वेदीक कथा 'गुलाम' ओ उषाप्रियंवदाक 'वापसी' तथा मैथिली कथा 'चन्द्रविन्दु'क कथा-वस्तु एक अछि। समकालीन भारतीय जीवनक कथा। किन्तु सांस्कृतिक भिन्नतासँ कथ्य ओ कथन-भंगिमा कोना बदलि जाइछ से देखल जाय। 'गुलाम'क वृद्ध सिख घरमे बेकार नहि बैसि सकैछ तैं अवकाश प्राप्त होइतहुँ पुन: काजक खोज मे घरसँ चलि जाइछ। 'वापसी'क वृद्ध के घरमे क्यो सहन

नहि क' पबैछ तैं घरसँ चलि जाइछ। आ 'चन्द्रविन्दु' मे वृद्ध कें दूनू बेटा अपना लगमे राख' चाहैछ। किन्तु वृद्ध स्वयं एडजस्ट नहि क' पबैछ तैं चलि जाइछ। ई तीनू कथा एक्के भारतीय कथा होइतहुं क्षेत्रीय कथा थिक। एहेन अनेक उदाहरण देल जा सकैछ।'[15] 'चन्द्रबिन्दु' मायानन्द मिश्रक कथा थिक। एहि कथा ओ हिन्दीक एहि तरहक अन्य कथाक सम्बन्धमे आलोचक देवशंकर नवीनक मत छनि जे 'पीढ़ीक द्वन्द्व के उजागर कर' बला एहन कथा सभमे आयल भिन्नता घटना-प्रसंग ओ पद्धतिक कारणे अछि। पद्धतिक ई भिन्नता लेखकीय जीवन-दृष्टिक कारण होइत अछि। लेखकक ई जीवन-दृष्टि रचनाक शिल्प, शैली, स्वरूप कें सेहो दिशा दैत अछि।'[16] हम देवशंकर नवीनक एहि मतसँ सहमत छी। कथाकार जाहि समाजसँ छथि, ओकर जे जीवन पद्धति छैक, ओहीसँ कमोवेश ओकर जीवन-दृष्टिक निर्माण होइत छैक। ई भिन्नता एको भाषाक कथाकारक बीच भ' सकैत अछि। जेना कहलहुँ, मैथिली कथा आब सय-सबा सय वर्षक भ' गेल अछि। ओहिमे बहुत प्रकारक परिवर्तन भेल अछि। कथ्य, ओ शिल्प-शैली मे परिवर्तन होइत गेल अछि। ई सभ समर्थ कथाकार सभक योगदानसँ भेल अछि। जीवन-दृष्टिसँ बनल रचना-दृष्टिसँ भेल अछि। आलोचक मोहन भारद्वाज मैथिली कथाक विकासक लक्षण सभके देखबैत आजुक मैथिली कथाक सम्बन्धमे कहैत छथि, 'शताब्दी एकसँ एकैस भ' गेल ई ओकर विकासक लक्षण थिक। विकासक ई लक्षण मैथिली कथामे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रारम्भमे मैथिली कथाक अर्थ छल मैथिली भाषामे लिखित कथा। किछु दिनक बाद भाषाक संग क्षेत्र जुटि गेल आ मैथिली कथाक अर्थ भ' गेल मैथिली भाषामे लिखित मिथिलाक कथा। स्थिति आरो आगां बढ़ल। मिथिलाक क्षेत्रीय परिधि टूटि गेल। तखन मैथिली मे लिखित मैथिलक कथा मैथिली कथा बनि गेल। किन्तु, मैथिली कथा जाहि परिभाषाक संग एकैसम शताब्दीक प्रारम्भ क' रहल अछि तकर व्याप्ति आरो बेसी छैक। आजुक कथा मैथिले के नहि, सम्पूर्ण मानव समुदाय के सम्बोधित अछि। भाषिक आ शैल्पिक संरचनामे मैथिल आ दृष्टिकोणमे सार्वभौम - मैथिली कथाक वर्त्तमान परिचय यैह अछि।'[17] स्पष्ट अछि जे दृष्टिकोणमे परिवर्तनसँ, ककरासँ संवाद करबाक अछि, ओकर परिधि व्यापक भेलासँ कथा बदलत, कथ्य

बदलत, कथन-भंगिमा बदलत। जखन कथ्य बदलत तखन शिल्प-संरचना बदलत। हँ, शिल्प-विधान के गौंण नहि बुझबाक चाही। तैं जे कियो कथाकार कथा लिखता आ से दोसरा के किछु कहबाक लेल लिखता, हुनका लग किछु एहन बात रहतनि, जाहि लेल दोसरा संग संवादक खगता अनुभव करता आ से मैथिली भाषामे लिखता त' से मैथिली कथा होयत। हम कथाकार सुभाष चन्द्र यादवक एहि कथनसँ सहमत छी जे, 'कोनो रचना सांस्कृतिक विशिष्टता प्रदर्शित करबाक लेल नहि लिखल जाइत अछि। ओकर सरोकार मानवीय तत्वसँ रहैत छैक, सांस्कृतिक चिह्नसँ नहि। भाषामे सांस्कृतिक समस्त विशिष्टता समाहित रहैत अछि। मैथिलीमे लिखल साहित्यक मैथिलत्व ओकर भाषा अछि।'[18] एकैसम शताब्दी शुरू भेला सेहो आब एकैस वर्ष भ' गेल। आब त' क्रमशः मैथिलीमे कथाकारेक संख्या कम भ' रहल अछि। तैं कथा लिखब आ कथा पढ़ब आइ के तिथिमे जरूरी भ' गेल अछि। दुनियां त' मुट्ठीमे भ' गेल अछि मुदा हमर संसारे छोट भ' गेल अछि। तैं एहि ऐतिहासिक वा मनोवैज्ञानिक दबाब सभसँ मुक्त भ' कथा-रचना मादे सोची। कथाक प्रमुख तत्व होइत अछि कथा-तत्व आ रंजकता। ई एहन आन्तरिक गुण अछि कथाक जे ओकरा ओहेन शिल्पगत प्रयोगक छूट नहि दैत छैक जेहन कविताक क्षेत्रमे सम्भव छैक।

जहाँधरि कथाक रचना-प्रक्रियाक बात अछि, कोनो दू कथाकारक एकमत होयब सम्भव नहि होइत अछि। एकर कारण ई जे कोनो रचनात्मक साहित्यक कोनो प्रक्रियात्मक फार्मूला नहि होइत छैक। मैथिलीमे एखन धरि लिखित रूपमे कोनो कथाकार द्वारा अपन रचना-प्रक्रियाक सम्बन्धमे विस्तारसँ कहल नहि गेल अछि। छिटपुट रूपमे वार्ता, इन्टरभ्यू, संवाद, चर्चा आदिक माध्यमसँ संक्षिप्तमे सोंझा अवश्य आयल अछि। कथाकार तारानन्द वियोगी कहैत छथि जे, 'हम अपन कथामे अधिकतर निर्माणाधीन यथार्थ के उठबै छी। कोनो एहन घटना जे एखन घटिये रहल अछि। फलाफल भविष्यक गर्भमे छै, परिवर्त्तन रोज घटित भ' रहल छै तकर एक क्रमतँ जरूर छै, मुदा निष्पत्ति कोनो नहि। परिवेश, स्वाभाविक थिक जे एहना स्थितिमे, अत्यन्त सक्रिय भूमिका निमाहत। एहि चीजक अवलोकन एक तँ चौकस भ' क' जमीन कें देखबाक उत्साह हमरा

भीतर पैदा करैए, दोसर अतीतसँ मुक्तिक रस्ता साफ कयने जाइए। निर्माणाधीन यथार्थक लेखन मूलतः एक्टिविस्टक काज छियै, मुदा हम मानैत छी जे एक्टिविस्ट भेने बिना कोनो सृजनात्मक (क्रिएटिव) लेखक पूर्ण लेखक नहि भ' सकैए।'[19] 'निर्माणाधीन यथार्थ' तारानन्द वियोगीक नव प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द थिक। एखन धरि 'भोगल यथार्थ' आ 'सामाजिक यथार्थ' पारिभाषिक शब्दक रूपमे मानल जाइत अछि। यथार्थ आ यथार्थवाद एक दोसराक पूरक थिक। जे साहित्यकार मानव-जीवन एवं समाजक सम्पूर्ण तथा वास्तविक चित्र उपस्थित करैत छथि आ अपन साहित्यक विषय वायवी-जगतसँ नहि चुनि क' वास्तविक जगत सँ चुनैत छथि, ओ यथार्थवादी कहबैत छथि। वस्तुतः 'यथार्थवाद' यथार्थक आधार भूमि पर ठाढ़ कयल जीवनक जीवंत चित्र थिक। 'भोगल यथार्थ' ओ थिक जेकरा व्यक्ति भोगने हो, बांकी सभ अयथार्थ थिक। सामाजिक यथार्थमे यथार्थ के ओकर विविध रूप आ अंतर्विरोध सभक संग चित्रित करबाक छूट रहैत छैक, मुदा शर्त्त ई अछि जे कलाकार के लग वैज्ञानिक समाजवादी दृष्टि हो। तारानन्द वियोगीक तात्पर्य वास्तविक जगतमे घटित एहन घटना सँ अछि जे एखन घटिये रहल अछि। अर्थात एखन पूर्णतया घटित नहि भेल अछि। क्रिया-प्रतिक्रिया चलिये रहल अछि। वातावरण उष्ण अछि। हमरा एहि क्रममे मोन पड़ैत अछि हुनक कथा 'विवेक-बध'। ई कथा ओहि समयमे लिखल गेल रहय जखन पिछड़ल जाति लेल आरक्षण लागू भेल रहय। देशमे एकर व्यापक समर्थन ओ विरोध भेल छल। समाज दू भागमे बंटि गेल छल। ओ एहि कथाके सगर राति...कथागोष्ठीमे सुनौने रहथि त' तीव्र प्रतिक्रिया भेल छल। बादमे ओ कथा बहुत प्रसिद्ध भेल आ ओकरा मैथिली सँ चुनल कथाक रूपमे अंग्रेजीमे अनुवाद सेहो भेल।

मैथिलीक आधुनिक कथाके नव दिशा देनिहार आ ठोस सामाजिक धरातल पर अननिहार कथाकार ललित मैथिली कथा-रचनामे बदलाओक आवश्यकता पर जोर दैत कहने छथि जे, 'मैथिल ब्राह्मणसँ इतर मिथिलावासीक जीवनक हास-अश्रु, कटु-तिक्त-कषाय परिवेशक अन्वेषण-'रमजानी', 'स्वप्न भंग', 'जंगल ओ रास्ता', विभिन्न वर्गक लोक, नाना प्रकारक स्थितिमे जकड़ल एकटा Wider-Spectrum नाना प्रकारक रंग-गन्ध अनुभूति। विभिन्न प्रकारक शिल्पक सर्जन। मात्र

उहात्मक, गंधात्मक नइ। 'प्रतिनिधि' मे Hero कतहु नहि अबैत छैक। चाहक दोकान पर दू-चारि जनक गप्पसँ कथानकक निर्माण, क्लाइमेक्स, एण्टी-क्लाइमेक्स आ अन्त। घटना-स्थल परिवर्तित नहि होइछ। Daphne De Maurier क उपन्यास Rebecco, जाहिमे रिबेका हिरोइन छैक मुदा मुइल छैक। एतावता उपरिलिखित सौष्ठवसँ मातृभाषाकें विभूषित करबाक इच्छा रहय। एहन पात्र ओ कथानक, जाहिमे रक्त-स्वेदक गंध हो, माटिक सोन्ह गन्ध। ई शब्दसँ नइ, परिस्थितिसँ, परिवेशसँ, पात्रसँ निकसय।'[20] वस्तुतः एहि इन्टरभ्यू मे कथाकार ललित अपन कथा सभक उदाहरण दैत अपन कथा-रचना-प्रक्रिया पर संक्षेपमे बहुत बात कहि जाइत छथि। एहिमे कथा रचना लेल कथानकक निर्माण, कथाक अंत, पात्र, परिवेश अनुभूति आ कथ्य ओ शिल्पक संतुलन आदि कथाक विभिन्न अवयव पर ओ अपन सोच-विचार के उदाहरणक संग व्यक्त करैत छथि। कथ्य ओ शिल्पमे प्राथमिकताक प्रसंग कथाकार राजकमल चौधरी आ कथाकार मायानन्द मिश्रक मन्तव्य आ रचना-प्रक्रिया पर हुनका लोकनिक कहल बातके रखैत आलोचक देवशंकर नवीन लिखलनि अछि, 'कथा-लेखन पर बात करैत कहिओ राजकमल चौधरी शिल्प कें महत्वपूर्ण मानने छलाह। हुनका मतें विषयक मूल स्रोत तँ सब, रचनाकारक एके होइत अछि - समाज ; तँ समाजसँ उठाओल विषय कें अभिव्यक्त करबाक शिल्पे कोनो कथा कें आन सँ भिन्न बनबैत अछि। राजकमल चौधरी अपन कथा लेखनमे सदैव शिल्पक नव-नव प्रयोग करैत रहै छलाह। शिल्प दिस हुनकर आकर्षण अत्यधिक रहै छल। मायानन्द लेल शिल्प गौण पक्ष छल। राजकमल जकां ओ शिल्पक प्रति अतिरिक्त आग्रह नइ रखै छलाह। कथ्यक अनुरूप ओ अपन कथाक शिल्प सहज आ स्वाभाविक ढंग सँ तैयार करै छलाह। अइ दिशामे कहिओ हुनकर सायास चेष्टा लक्षित नइ भेल। कथाक शिल्प आ संरचना लेल ओ कहियो तनाव नइ पोसलनि। ओ स्वयं कहलनि जे कथा लिखै मे ओ मासक-मास समय लगबै छलाह, अनेक बेर मसौदा बनबै छलाह। ओही कारण हुनकर सब कथा एतेक सुगढ़ होइ छल, आ सम्पूर्णताक सुख दै छल।'[21]

कथाकारक रचना-प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर एहनो भ' सकैत अछि जे ओ एक कथा लिखै मे बहुत समय लगाबय। किछु वर्ष लगातार

लिखलाक बाद किछु वर्ष कथा लिखब छोड़ि दिअय। फेरसँ लिखय त' पूर्व मे लिखल कथासँ भिन्न तरहक कथा लिखय। लगातार लिखितो जीवन आ समाजक भिन्न-भिन्न क्षेत्रक कथा फराक कथ्य संग परिवर्तित शिल्पमे लिखय। कथाकारक रचना-प्रक्रिया एहनो भ' सकैत अछि जे ओ बेसी कथा नहि लीखि सकय। कथाकार धूमकेतु सँ एही प्रसंग प्रश्न पुछला पर ओ कहने रहथि, 'कतेक बेर एहनो भेल अछि जे मोने-मोन भेल जे एकटा खिस्सा लिखलौं, मुदा लिखल गेल नहियें। अहुना रचना हमरा लेल प्रसव वेदनासँ कम नहि होइत अछि। आइ राइट ओनली व्हेन आइ मस्ट तैं बात अनठबैत रहैत छियैक। एतबा मानब जे जीवन जँ कोनो दोसर तरहें बीतल रहितय त' थोड़ेक आर कथा लिखने रहितहुँ।'[22] एहि प्रकारें स्पष्ट अछि जे, जेना कहलहुँ कोनो दू कथाकारके रचना-प्रक्रिया भिन्न-भिन्न होइत अछि। मनुक्खक स्वभाव, ओकर सोच-विचारक ढंग, जीवनक अन्य समस्या सभ, परिवेश, वर्ग आदिक भिन्नताक चलते कथाकार के एकमत होयब कठिन अछि। सैह कारण अछि जे एके समयक कथाकारो द्वारा एके विषय पर लिखल कथाक कथानक, कथ्य, भाषा, शिल्प भिन्न-भिन्न भ' सकैत अछि। तैयो एक सर्वमान्य विधिक विकास त' स्वयं भ' जाइत अछि।

विचार के कथाक प्रमुख तत्व मानल जाइत अछि। विचार अबि गेल त' ओकर आधार पर आगू बढ़ल जा सकैत अछि। वस्तुतः विचार ओ नींव थिक जाहि आधारे पर कथाकार उपयुक्त आ प्रभावशाली कथानक के निर्माण क' सकैत छथि। आलोचक सुरेन्द्र चौधरीक कहब छनि जे, 'एत' एतबे कहब अपेक्षित अछि जे कथानक के निर्माणक अंतरंग विचार (Idea) क अवधारणा थिक। जें कि विचार रूपमे कोनो घटना या कोनो व्यापार या कोनो वस्तुस्थिति हमर प्रेक्षण (परसेप्शन) मे अबैत अछि, तैं हम ओकरा कहानीक अंतर्त्तत्व या निक्षेपक तत्त्व के रूपमे स्वीकार क' लैत छी। किन्तु, एहि विचार के जखन हम वस्तु-विधान कर' लगैत छी त' हमरा सभकें स्पष्ट रूप सँ ई ज्ञात होइत अछि कि ओकरा संग अनेक दोसर वस्तु सभ स्वाभाविक रूपें आ एक अज्ञात प्रक्रिया सँ हमरा सभक दृष्टि मे आबि जाइत अछि। कोनो द्वन्द्वहीन विचार कथाक वस्तु-विधानक योग्यता नहि रखैत अछि।'[23] वस्तु-विधान निर्धारित प्रक्रिया, प्रचलित रीतिसँ

रचब थिक। उदाहरण लेल दाम्पत्य जीवन अथवा सम्बन्ध पर मैथिलीमे बहुतो कथा अछि। शुरू सँ आइ धरि एहि पर कथा लिखल जाइत रहल अछि। एहि कथा सभके देखब त' उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क 'रूसल जमाय', मनमोहन झाक 'रूना', काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'मधुरमनि', उमानाथ झाक 'निकट आ दूर', शैलेन्द्र मोहन झाक 'भरत वाक्य', मायानन्द मिश्रक 'काल-रेत', राज मोहन झाक 'सुख', जीवकान्तक 'वस्तु', शिवशंकर श्रीनिवासक 'पिरीत', विभूति आनन्दक 'डर', शैलेन्द्र कुमार झाक 'किट-किट धा' आदि घनेरो कथा अछि जाहिमे समय, अवस्था, परिस्थिति, प्रेम, तनाओ, संयुक्त परिवारसँ एकल परिवार धरिक बदलैत स्थितिक कारणे आ कथाकारक पृथक-पृथक प्रेक्षणक कारणे कथानक बदलि गेल अछि। वस्तुतः से एहि विभिन्न कथा सभक अन्तरंग विचार (Idea) मे परिवर्तनक कारणे भेल अछि। दाम्पत्य जीवन अथवा सम्बन्ध पर लिखैत सभ कथाकार जखन अपन पृथक-पृथक विचारसँ वस्तु-विधान कर' लगला त' ओकरा संग अनेक दोसर वस्तु सभ स्वाभाविक रूपें एक अज्ञात प्रक्रियाक तहत हुनक सभक दृष्टिमे आबि गेलनि। फलतः एक द्वन्द्व उत्पन्न भेल, सैह कथाक निर्माणक आधार बनल। तैं कहल गेल जे कोनो द्वन्द्वहीन विचार कथाक वस्तु-विधानक योग्यता नहि रखैत अछि। मुदा जँ एहि कथा सभक विचार के फूट सँ छानि के बाहर कर' चाहब त' से सम्भव नहि अछि। से एहि कारणे जे विचार भावनामे सानल अछि। भावना एक अज्ञात आ अदृश्य प्रक्रिया सँ विचार मे परिणत भ' गेल अछि। कहबाक अर्थ ई जे कथामे विचार मानवीय भावात्मक सम्बन्धक क्षेत्रसँ सेहो आबि सकैत अछि आ क्रियात्मक सम्बन्धक क्षेत्रसँ सेहो। तहिना जँ आरक्षण लागू भेलाक बाद भेल उथल-पुथलक परिप्रेक्ष्यमे लिखल कथाकार रमेशक कथा 'जनेउ', मंत्रेश्वर झाक कथा 'गुमटी' आ तारानन्द वियोगीक कथा 'विवेक-वध' के देखब त' सभ कथाकारक कथामे कथानक भिन्न-भिन्न लागत। कथानक मुदा घटना-प्रवाह नहि थिक। ओकर संक्षेपण नहि कयल जा सकैत अछि। ओ कथाक कारण-तत्व थिक। कारण-तत्व के रूपमे कथानकक व्यवस्था फूट-फूट होइत छैक आ ओहि व्यवस्थाक अनुसार ओकर स्वरूप सेहो फूट-फूट होइत छैक। कोनो कथामे कोनो पात्र

कोन परिस्थितिमे की करैत अछि, किएक करैत अछि आ कोन प्रेरण ासँ करैत अछि, ओकरे सूत्रीकरण कथानक के मूल अछि। आलोचक सुरेन्द्र चौधरीक कहब छनि जे, 'कथानक कोनो निरपेक्ष वस्तु नहि अछि, वस्तुत: ओ कथाकारक, कल्पनासँ सेहो सापेक्ष अछि आर ओकर प्रेक्षणसँ सेहो। कल्पनाक शक्ति और प्रेक्षणक सत्य दूनू विकासशील वस्तु थिक। प्रेक्षणक सत्य बदलैत अछि त' निश्चित रूपसँ कथानकक रूप सेहो बदलबैक चाही। किन्तु, ओकर संश्लेषणवला गुण त' नहि बदलैत अछि। संश्लिष्ट कथानक के अभावमे नीकसँ नीक कथा सेहो कमजोर होइत बुझाइत छैक।'[24]

कथाक लेल घटना, चरित्र, वातावरण, विषय, विचार जरूरी अछि। ई घटना कोनो जरूरी नहि अछि जे भौतिक रूपसँ घटित भेल हो! वस्तुत: घटना तथ्य नहि थिक। ओहि घटनामे जाहि कारण सभक, मान्यता सभक, व्यवहार सभक आ भावना सभक दिस संकेत अछि, ओ कारण, मान्यता सभ, व्यवहार आ भावना सभ, यथार्थ थिक। तैं आइ कोनो समर्थ कथाकार केवल भौतिक घटनासँ प्रेरणा ल' क' कथाक रचना नहि करैत छथि। घटना के खाली ओछाक' नहि कथामे राखि दैत छथि। सभ जीवनक मूलभूत परिस्थितिक बोधसँ घटना निर्मित क' लैत छथि। ई भ' सकैए जे कथामे निर्मित घटना कोनो भौतिक घटनासँ मेल खाइत हो अथवा कथामे आयल घटना बादमे भौतिक रूपसँ ककरो जीवनमे घटित रूपमे देखाय। उदाहरणक लेल नारायणजीक कथा अछि 'रोग'। एहि कथाक यथार्थ अछि जे दू टा लगभग एकहि रोगसँ ग्रसित व्यक्तिक बीच अपनापन, स्नेह विकसित भ' जाइत अछि। भलेही लिंग, वय आ भाषा एक नहि हो। सम्भव छैक जे किछु अंशमे एहन घटना घटित भेल हो अथवा कथाकारक प्रेक्षणमे आयल हो मुदा कथामे जे घटना निर्मित भेल अछि से जीवनक मूलभूत परिस्थितिक बोधसँ यथार्थ के अभिव्यक्ति करैत अछि। एहि अर्थ मे आजुक कथा केवल घटनाक वर्णन नहि थिक, ओ घटनाक मूलमे व्याप्त मानव-जीवन के सम्पूर्ण सन्दर्भक संकेत थिक। समकालीन कथाक रचना-प्रक्रियामे कथाक निर्माण लेल आइ चरित्रक मूल संवेदनाके उभारबाक कोशिश करब मुख्य भ' गेल अछि। घटना सभक आ परिस्थिति सभक नाटकीयताक चित्रण आब गौण भ' गेल अछि। मुदा एहिसँ ई नहि बूझि लेबाक चाही जे

कोनो कथा बिना कोनो सिद्ध परिस्थिति के, केवल पात्र के भावनात्मक रूपसँ ठाढ़ क' देलासँ नीक कथा बनि जायत। एहि बात के बुझबाक लेल कथाकार महाप्रकाशक कथा 'कैलेण्डर' के देखल जा सकैत अछि। समाजमे चरित्रक संकट के ई कथा बहुत मेहीं सँ समक्ष अनैत अछि से एहि दुआरे जे वस्तुत: समाजमे पढ़ल-लिखल मध्यवर्गीय समाजक चरित्र क्षुद्र भ' गेल अछि। ओ अपन मित्रो के ठकि सकैत अछि। मित्रक पसिनक कोनो वस्तु झपटि क', फुसला क', योजना बना क' हड़पि सकैत अछि। तहिना तारानन्द वियोगीक कथा 'पन्द्रह अगस्त संतानवे' के देखल जा सकैए। एहि कथामे हीरा महतोक जे चरित्र अछि तकरा बुझबाक लेल ओकर मूल संवेदना के जेना उभारल गेल अछि आ ओहि लेल जेहेन वातावरण के निर्मित कयल गेल अछि से कथाके बिना कोनो सिद्ध परिस्थिति के केवल पात्रके भावनात्मक रूपसँ ठाढ़ क' देलासँ नहि बनि सकैत छल। एहि क्रममे शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'गुण-कथा'क अंजनी देवीक चरित्र के सेहो देखल जा सकैत अछि जिनकर मूल संवेदना भूमण्डलीकरण आ बाजारवादक परिस्थितिमे उभरि क' समक्ष आबि जाइत अछि।

एहन मैथिली कथा जाहिमे रचना-प्रक्रियामे मानसिक आयाम द्वारा जीवन-सत्यक अवधान होइत अछि, तकर आरम्भ पाँचमे दशक सँ शुरू भ' गेल। एहि सँ पूर्व अथवा बादोमे समस्त सत्य के शुद्ध रूपसँ बहिर्गत सम्बन्ध के रूपमे मानल जाइत रहल। एहिसँ मानवीय सम्बन्ध आ मानवीय व्यवहार मे अवचेतन संस्कार कार्य करैत रहय। आलोचक रमानाथ झा, राजकमल चौधरीक कथा-संग्रह 'ललका पाग'क भूमिका मे लिखलनि जे, '... कथानकक मौलिक तत्व थिकैक संघर्ष ओ से बाह्य हो वा आभ्यन्तरीण। एम्हर आबि बाह्य संघर्ष सँ विशेष महत्व देल जाय लागल आभ्यन्तरीण संघर्ष कें ओ इएह रीति बढ़ैत-बढ़ैत घटना-चक्रमे चलि गेल ओ आजुक कथामे घटना समेत मनहिमे घटैत अछि। मानसिक व्यापार सब कथामे भेटैत अछि, मुदा ओ कथा-कौशलक अलंकार थिक।'[25] रचना प्रक्रियाक तहत उमानाथ झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क कथासँ प्रारम्भ भेल ई प्रक्रिया प्रयोग ओ प्रवृत्तिक रूपमे आगू बढ़ैत गेल। राजकमल चौधरी, राज मोहन झा, जीवकान्त, प्रो॰ मनमोहन झा आ ओकर बादोक कथाकार

मे एहि प्रक्रियाके देखल जा सकैत अछि। मुदा जेना रमानाथ झा ओही क्रममे कहने छथि जे, 'अलंकारहिं सँ कथाके भरि देब ई नव प्रयोग थिक ओ एहिमे ओएह कृत्रिमता भासित होइत अछि जे उत्तरकालीन संस्कृत काव्यमे लक्षित होइत अछि। राजकमलजीक 'पनिडुब्बी' एहि प्रयोगक चरम दृष्टान्त थिक तथा 'साँझक गाछ'हु मे इएह प्रयोग अछि।'[26] त' प्रयोगक नाम पर मोनमे खाली घटना दर घटना चलैत रहत त' निश्चिते 'मनकथा' बनि जायत। राज मोहन झाक अधिकांश कथामे सेहो मोनेमे घटना घटैत अछि मुदा मोनमे घटल घटनाक भौतिक आधार सेहो रहैत छैक। वस्तुत: ओही आधार पर मनोविश्लेषणात्मक रीतिएँ ओ कथाक ताना-वाना बुनैत छथि। राज मोहन झाक कथाके मनकथा नहि कहल जा सकैत अछि। राजकमल चौधरीक 'साँझक गाछ' सेहो मनकथा नहि थिक। ई कथा शिल्प ओ कथ्यक आधार पर मैथिलीमे अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि।

जेना पहिनहुँ चर्च भेल अछि कथामे निबन्धना (Lay out) क रचना-प्रक्रियामे बहुत महत्व अछि। जँ उपन्यास वा निबन्ध के परिप्रेक्ष्यमे कथाक निबन्धना करब त' कथाक ढांचा कमजोर भ' जायत। तहिना एक कथामे अनुषांगिक कथा गढ़बाकाल संतुलन बहुत जरूरी अछि अन्यथा कथामे जटिलता उत्पन्न भ' जायत। सघनता ओ व्यापकतासँ एकात्मक स्थापत्य बला निबन्धना सेहो व्यापक प्रभाव छोड़ैत अछि। वस्तुत: एकात्मक कथानक के निर्माण लेल कथा-शक्तिक जरूरत होइत छैक। कथा-शक्तिक अभावमे कथानकमे नाटकीय तत्वक समावेश कर' पड़ैत छैक। कृत्रिम विन्दु सभ के उठाब' पड़ैत छैक। एतेक बुनाबट कर' पड़ैत छैक जे कथा वस्तुत: कथा नहि रहि क' बुझौअलि बनि जाइत छैक। एही प्रकार समानान्तर कथासँ सेहो कथा बुनल जाइत छैक। मुदा एहि लेल दू विपरीत वस्तुके दू भिन्न प्रकरणमे विचार-सूत्रक एकता जँ रहय तँ पाठक पर गहींर प्रभाव छोड़ि सकैत अछि। अन्यथा असफल आ अस्तव्यस्त भ' सकैत अछि। समानान्तर कथासँ गहींर प्रभाव छोड़' बला एहन कथामे राज मोहन झाक 'युद्ध...युद्ध...युद्ध', विभारानीक 'कौआहकनी', विभूति आनन्दक 'एकटा उड़ल फुर्र', शैलेन्द्र आनन्दक 'उठ पुत्ता पुरल पुरल' के देखल जा सकैत अछि। 'युद्ध...युद्ध...युद्ध' मे एक दिस पति-पत्नीक

बीच युद्ध अछि त' दोसर दिस भारत-पाकिस्तानक बीच बांगलादेश ल' क' युद्ध। 'कौआहंकनी' मे राजा आ सात रानीक कथा संग कुन्ती तथा ओकर सासु, दूनू दियादनी एवं तीन ननदि अछि। 'एकटा उड़ल फुर्र' मे चिड़ियाक परिवार, धिया-पूता अछि त' दोसर दिस एक दम्पति आ बच्चा सभ। 'उठ पुत्ता पुरल पुरल' मे एक दिस चिड़ैक लोककथा अछि त' दोसर दिस पंजाब गेल श्रमिक परिवारक बेटा।

आलोचक रमानन्द झा 'रमण' मैथिली कथामे एकर अतिरिक्त आरो विभिन्न शिल्पक उदाहरण देलनि अछि। ओ कहैत छथि जे, 'प्रलापीय शिल्पक कथामे कथानायक बकैत रहैत अछि। ओकर बाजब बताहक बाजब जकां एक सुराह नहि होइत अछि। ओहिमे सामाजिक आ राजनीतिक परिवेशक प्रक्षेपण रहैत अछि। प्रभास कुमार चौधरीक कथा 'पिनकी' प्रलापीय शिल्पक कथाक नीक उदाहरण अछि। ...आवर्त्तक शिल्प मे आरम्भ अंत सँ होइत अछि। ई दू प्रकारे होइत अछि - भावक आवर्त्त आ भाषिक आवर्त्त। पहिल प्रविधि भाव वा विचारपरक होइत अछि तँ दोसर विचारपरक। डॉ॰ धीरेन्द्रक कथा 'सिम्मरक फड़' (कुहेश आ किरण) आ 'गुम्मा थापड़' एही शिल्पक कथा थिक। ...सांकेतिक शिल्पक कथामे कथाकार सामान्य घटना वा मन:स्थितिक चित्रण मध्य प्रतीकात्मक वा सामान्य भाषाक प्रयोग द्वारा स्थिति वा पृष्ठभूमिक संकेत करैत छथि। ई संकेत अर्थक विभिन्न स्तर के उद्घाटित करैत अछि। उदाहरणस्वरूप गंगेश गुंजनक कथा 'जीवन रस' (कथा दिशा महाविशेषांक, 1997) देखि सकैत छी। ...एक कथामे कथानायकक दू व्यक्तित्वक निरूपण शिल्प - एक कथाक अन्तर्गत अनेक कथाक शिल्प जकां महत्वपूर्ण अछि। एक कथामे कथानायकक व्यक्तित्वकें एकसँ बेसी रूपमे प्रस्तुत करबाक शिल्प। एकर उदाहरण थिक 'अप्पन लोक' (राज मोहन झा) ...प्रतीकात्मक शिल्प-प्रतीकक प्रयोगसँ भाषा संघनित होइत अछि। संघनित भाषाक प्रयोगसँ प्रभावक क्षमता बढ़ैत छैक। एहि शिल्पक कथाक आश्वादन लेल भावात्मक होयब पर्याप्त नहि अछि, बौद्धिक होयब सेहो अपेक्षित छैक। कथाकार अपन अभिप्रेत कें कम शब्द एवं प्रभावक रूपमे कहबाक लेल प्रतीकात्मक शिल्पक प्रयोग करैत छथि। कहि सकैत छी जखन कोनो स्थिति, विचार वा भावक अभिव्यक्ति हेतु प्रतीकक प्रयोग

कथामे होइछ तँ ओहेन कथाक शिल्प प्रतीकात्मक होइत अछि। पण्डित गोविन्द झाक कथा 'गाड़ी पर नाव' (भरि राति भोर, 1998) प्रतीकात्मक शिल्पक उदाहरण थिक। ...बिम्बात्मक शिल्प - बिम्बात्मक शिल्पक कथामे कथाकारक इन्द्रियबोध विशेष प्रखर रूपमे व्यक्त रहैत अछि। सुख-दुख एवं सौन्दर्यानुभूति गहन रहैछ। कथाक शीर्षक सेहो बिम्बात्मक भए सकैत अछि। राजकमलक अधिकांश कथा बिम्बात्मक अछि। हुनक साँझक गाछ' मे कतेको स्थल पर भाषाक प्रयोगसँ बिम्बात्मक शिल्पक निर्माण भेल अछि।'[27]

अन्तत: कथाक रचना-प्रक्रियाक सम्बन्धमे ई कहल जा सकैत अछि जे कथा-वस्तुक अनुरूपे शिल्पकला, रूप-विधान आ वस्तु-विन्यास होयब सफल कथा लेल जरूरी होइत छैक। संगहि कथा-वस्तुक विन्यास (Orientation) सहज-सुलभ-विधानसँ होयब व्यवहारिक अछि। विधान औपचारिक (Formalistic) नहि हेबाक चाही। कथा उपर सँ जतेक अलंकृत लागय ओकर भीतरमे आंतरिक गतिमत्ता कायम रहबाक चाही।

संदर्भ-संकेत

1. सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ, छात्र संस्करण, 2010 ई॰
2. डॉ॰ अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, 2009 ई॰
3. मोहन भारद्वाज, रचना-संरचना, कथा-गोष्ठी, 2008 ई॰
4. शिवशंकर श्रीनिवास, सोमदेवक कथा, नवारम्भ पत्रिका, 2019 ई॰
5. कुलानन्द मिश्र, कुलानन्द मिश्रसँ अशोकक संवाद, संवाद, 2007 ई॰
6. सुरन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ, छात्र संस्करण, 2010 ई॰
7. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचन्द (विनिबन्ध) 2016 ई॰
8. शिवशंकर श्रीनिवास, प्रभास कुमार चौधरीक कथा, बदलैत स्वर, 2011 ई॰
9. प्रो॰ मनमोहन झा, पाँच पत्रक पसार, सन्धान-4, पत्रिका 2000 ई॰
10. जयधारी सिंह, आमुख, मैथिली कथा-संग्रह, द्वितीय संस्करण 2008 ई॰
11. कुलानन्द मिश्र, कुलानन्द मिश्रसँ संवाद, संवाद, 2007 ई॰
12. तारानन्द वियोगी, मैथिली कथा : समस्या आ समाधानक वर्त्तमान, आरंभ पत्रिका, 2003 ई॰
13. काञ्चीनाथ झा 'किरण', फकड़ा, किरण समग्र, खण्ड : एक, 2007 ई॰
14. कुलानन्द मिश्र, कुलानन्द मिश्रसँ अशोकक संवाद, संवाद पोथी, 2007 ई॰
15. मायानन्द मिश्र, मायानन्द मिश्र संग रमण कुमार सिंहक संवाद, संवाद पोथी, 2007 ई॰
16. देवशंकर नवीन, लोकमान्य मायानन्द पोथी, 2021 ई॰
17. मोहन भारद्वाज, एक सँ एकैस, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
18. सुभाषचन्द्र यादव, सुभाषचन्द्र यादवसँ तारानन्द वियोगीक संवाद, संवाद पोथी, 2007 ई॰
19. तारानन्द वियोगी, मैथिली कथा : समस्या आ समाधानक वर्त्तमान, आरंभ, 2003 ई॰
20. ललित, ललित संग विभूति आनन्दक इन्टरभ्यू, ललित समग्र, 2012 ई॰
21. देवशंकर नवीन, लोकमान्य मायानन्द पोथी, 2021 ई॰
22. धूमकेतु, धूमकेतुसँ अशोकक संवाद, संवाद पोथी, 2007 ई॰
23. सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ, छात्र संस्करण, 2010 ई॰
24. ओएह
25. मोहन भारद्वाज, रचना-संरचना, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
26. ओएह
27. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली कथा साहित्यमे शिल्पक विकास, बेसाहल पोथी, 2003 ई॰

(अप्रकाशित)



मैथिली कथा : पाठ-प्रक्रिया

कोनो कथा कोना पढ़ल जाय सैह पाठ-प्रक्रिया कहबैत अछि। जेना कथाकें कोना रचल जाय, कोना कहल जाय से रचना-प्रक्रिया वा लेखन-प्रक्रिया थिक तहिना कोना पढ़ल जाय वा कोना पढ़ल जेबाक चाही से पाठ-प्रक्रिया कहबैत अछि। कथा रचल जाइत अछि पाठक संग संवादक लेल। प्रत्येक रचना एक सांस्कृतिक-प्रक्रिया थिक। रचनाकार, पाठक आ आलोचक ओही प्रक्रियाक अनिवार्य कड़ी छथि। आलोचक नामवर सिंह लिखने छथि, 'कथा स्वयं एक प्रक्रिया थिक। एहन प्रक्रिया जाहि बाटे लिखैत समय लेखक चलैत छथि त' पढ़ैत पाठक। पाठक एहि प्रक्रिया के स्मरण करय त' लिखबाक प्रक्रियाक सेहो किछु सूत्र हाथमे आबि सकैत छैक। संगहिं कथाक बेसी सँ बेसी रूप पकड़ि मे आबि सकैत छैक।[1] ई प्रश्न उठि सकैत अछि जे की आइ सँ पहिनेक कथामे एहन किछु नहि छल जे सूक्ष्मतासँ आ सक्रियतासँ पढ़बाक अपेक्षा रखैत हो? असलमे ई अपेक्षा एहि दुआरे उत्पन्न भेल अछि जे आजुक कथा बेसी अन्तर्मुख अछि, बेसी जटिल अछि। एहि बात के स्पष्ट करैत आलोचक कुलानन्द मिश्र लिखने छथि जे, 'प्राचीन भारतीय कथा अपन निष्कर्ष ल' क' महत्वपूर्ण होइत छल, ओकर खण्ड-खण्ड मे बांटल सम्प्रेषणीय तथ्य ओकर प्राण होइत छलैक मुदा समकालीन कथा मनुक्खक जीवनक एहन मूर्त्त आ स्पन्दित चित्र होइछ जाहिमे पात्र आ पाठक संग स्वयं लेखको ओहिमे शामिल रहैछ।'[2] जखन आजुक कथामे पात्रक संग पाठक आ लेखको शामिल रहैत अछि त' पाठकक जिम्मेदारी बढ़ि जाइत छैक। पढ़ब सेहो एक रचनात्मक कार्य भ' जाइत छैक।

वस्तुतः जेना कथा-रचना लेल अनुभवक प्रभावसँ उत्पन्न अनुभूति अर्थात प्रत्यक्ष ज्ञान (Experience) सँ अनुभवजन्य भावना वा चित्तोद्रेक (Feeling)क आवश्यकता होइत छैक तहिना कथा-पाठ लेल अनुभवपरक ग्रहण के जरूरत छैक। जें कि कथा अपन प्रकृतिए सँ जनतांत्रिक अछि तैं ओकर रसास्वादन के ढंग सेहो जनतांत्रिक होयब स्वाभाविक अछि। रसास्वादन के जनतांत्रिक ढंगक अर्थे थिक अनुभवपरक ग्रहण। एहि क्रममे आलोचक नामवर सिंह एहि बात पर जोर देलनि अछि जे पाठकक सहज-बोध के उद्‌बुद्ध आ प्रबुद्ध कयल जाय। ओ कहैत छथि जे, 'अपना ओहिठाम बहुत पहिनेसँ सन्त सभक द्वारा एहि सहज-दृष्टि पर जोर देल गेल छल ; फेर आधुनिक युगमे प्रेमचन्द सेहो रचनात्मक साहित्य के अतिरिक्त समीक्षा लिखि क' सहज-दृष्टिक शक्ति देखौलनि। तखन सँ जटिलता बढ़ि गेल अछि। साहित्य-विमर्श सँ रसास्वादनक किछु नव तरीका सेहो समक्ष आयल अछि। मुदा ओहि सहज दृष्टिक उपयोगिता आइयो अछि। भरिसक वर्त्तमान शिक्षाक प्रसार के संग ओही संस्कार के फेरसँ प्राप्त करबाक आवश्यकता बढ़ल जा रहल अछि। स्पष्ट रहय कि 'सहज-दृष्टि' साधारण-दृष्टि नहि थिक। मुदा अहू सँ बेशी आवश्यकता एहि बातक अछि जे ई सहज-बोध जाहि साधारण पाठकमे अछि, स्वयं ओकरे उद्‌बुद्ध आ प्रबुद्ध कयल जाय। बर्जीनिया वुल्फ जेना दू चारि 'कामन रीडर' भ' जाय तैयो बहुत अछि; मुदा एहन 'कामन रीडर'क निर्माण सहज-बोधक स्तरसँ साधारण पाठक के शिक्षित करबाक प्रक्रियासँ होयत।'[3] त' एहि सहज-बोध आ सहज-दृष्टि के संग महाकवि विद्यापतिक शब्दमे 'सहज सुमति'क योग भ' जाय त' आर श्रेयस्कर होयत। सहज अर्थात् स्वतः उत्पन्न, स्वाभाविक, अकृत्रिम सुमति अर्थात् विवेक माने स्वाभाविक विवेक। हम सभ सुरुचि के गप करैत रहलहुँ अछि। आलोचक रमानाथ झा रुचिक परिष्कार के बात कहलनि। सुन्दर के संग सुन्नरक परम्परा सेहो विद्यमान रहल अछि। तथापि साहित्यमे अथवा कथा-उपन्यासमे खाली सामाजिक समस्या तकैत छी। सभ वस्तुमे समस्ये-समस्या देखाइत अछि। पाठकक समस्या, लेखक वा आलोचकक समस्या, कथा-उपन्यासमे विवाहक समस्या, विधवाक समस्या, स्त्रीक समस्या, रोजगारक समस्या, राजनीतिक

समस्या। त' की कथा हम सभ विभिन्न समस्या वा ओकर समाधान लेल पढ़ैत छी? ओहि लेल त' आन-आन पोथी सभ अछिये। साहित्य जाहि लेल लिखल जाइत छैक वा पढ़ल जाइत छैक से मूलमे संवेदना छैक। एक-दोसरासँ संवाद छैक। तखन ईहो ध्यानमे रखबाक अछि जे साहित्यक अवधारणा समयक अनुसार बदलैत गेल अछि। साहित्य के आब व्यापक परिप्रेक्ष्यमे देखल जाइत अछि। साहित्य आ समाजक पारस्परिक सम्बन्ध पर बहुतो विवेचन प्रस्तुत भेल अछि। साहित्यक समाजगत आ मनोवैज्ञानिक स्रोत सभ पर शोधो भेल अछि। एहि पर समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक आ इतिहासकार सभ काज केलनि अछि। निष्कर्ष निकाललनि अछि। साहित्यक गहींर सामाजिकता उजागर भेल अछि। लेखक आ पाठक जखन एक्के व्यवस्थाक अंग अछि, एक्के रंगक व्यवस्थाक दंश भोगैत अछि त' दूनूक हित समान अछि। कथाकार ललितक लेखन-विमुखता पर बात करैत आलोचक मोहन भारद्वाज सेहो लिखने छथि जे, 'छठम दशकक कथाकार लेल स्वातंत्र्योत्तर भारतक सामाजिक एवं राजनीतिक चेतनासँ असम्पृक्त रहब सम्भव नहि छल। स्वतंत्रताक प्राप्ति, जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलन, अस्पृश्यता तथा कतोक अन्य प्रकारक स्थितिक प्रति मोहभंग आ सभसँ बेसी हिन्दी कथाक व्याप्तिसँ परिचितिक प्रभाव मैथिली कथा पर पड़लैक। एहिसँ एक दिस जत' कथा-क्षेत्रक विस्तार भेलैक दोसर दिस कथाक यथार्थवादी स्वर सेहो मुखर होम' लगलैक। ललितक रचना एकर अन्यतम प्रमाण अछि।'[4] ललितक प्रसंगमे लेखन-विमुखताक लेल ओ फराकसँ बहुतो कारण कहलनि अछि। ओहिसँ सहमत भेल जा सकैत अछि आ असहमतो। मुदा सामाजिक ओ राजनीतिक चेतनासँ असम्पृक्त रहब ने लेखक लेल सम्भव अछि आ ने पाठक आ आलोचक लेल। एही संग रस के बात सेहो अछि। कथामे कथा-रस रहब जरूरी होइत छैक। मुदा कथाके कोनो खास रस हास्य वा करुण धरि सीमित बूझब उचित नहीं थिक।

ई सभ बात हम एक कथाकारे रूपमे अनुभव नहि केने छी। एक पाठक रूपमे सेहो अनुभव केने छी। कथाकार विभारानीक एक कथा अछि 'रहथु साक्षी छठ घाट'। ओहि कथाके पहिल बेर पढ़लहुं त' आकर्षित नहि केलक। मुदा लागल जे किछु मिस क' रहल छी। थोड़ेक दिनक

लेल छोड़ि देलियैक। फेर जखन पढ़लहुं त' बुझायल जे विभा मिथिलाक ब्रह्मणेत्तर समाजमे बाल-विवाह, विधवा-विवाह पर टिप्पणी क' रहल छथि। बाल-विवाह फेर वैधव्य तखन पुनर्विवाह आ संतानक उत्पत्ति धरिक कथा छठि घाट के साक्षी राखि कहैत छथि। कथाक अन्त सुखद अछि। ओ कथा किछु दिनका बाद पुनः पढ़बाक मोन भेल। तखन जे पढ़लहुं त' कथाक अन्तमे देहक सौंसे रोइयां भुलकि गेल। ओ बालिका-वधू मुनिया जे ओहि कथामे एको शब्द नहि बजैत अछि, से अपन नान्हिटा किलकारी मारैत बच्चाक चुम्मा लैत अछि तँ रोमांच भ' जाइत छैक। वस्तुतः ओ मुनिया अपन माय-बाप-परिवारक सुख-सेहन्ताक बलि चढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारें अन्ततः ओहि कथा संग हमर अनुभव-यात्रा सम्पन्न भेल छल। ई हमरा लेल एक पाठक रूपमे अपूर्व अनुभूति छल। एहि लेल हमर पाठ-प्रक्रिया लम्बा चलल जरूर मुदा ई कथाक केवल अंतिम प्रभाव नहि छल। ई हमर पाठकक ओहि कथा-रचना संग चलि क' ओहिमे निहित भाव के बुझबाक चेष्टा छल। पाठक-आलोचक नामवर सिंह कथा-पाठक प्रक्रिया के स्मरण करैत कहैत छथि, 'कथा शुरू होइत अछि, मोनक दोहरी क्रिया शुरू होइत अछि। मोन एक संग वर्त्तमानमे सेहो अछि आ भविष्यक दिस दौड़ैत अछि। छी हम एहिठाम, अनुमान लगबैत छी आगूक। आगू बढ़ला पर अनुमान गलत निकलैत अछि, कखनो ठीक निकलैत अछि। गलत भेला पर एक प्रतिक्रिया होइत अछि, ठीक भेला पर दोसर। लगातार आगू आर आर कखनो-कखनो पाछू देख लेबाक एक क्रम अछि जे चलैत रहैत अछि। क्षितिजक एक चलैत सीमा अछि जे प्रत्येक क्षण नव होइत चलैत अछि आ ओहि सीमामे रहिक' हम चलैत रहैत छी। एक दोहरी प्रतीक्षा अछि जाहिमे अनागत शब्द पाठकक प्रतीक्षा करैत अछि त' पाठक अनागत शब्दक। एक भविष्य अछि जे शब्दसँ भरल अछि आ हजारक हजार शब्द के द्वारा पाठक के एक अंतसँ फराक रखने अछि। एक दूरी अछि जे दृष्टि के हरेक डेग के संग घटैत जाइत अछि। प्रत्येक शब्द सँ अनेक दिशा सभ शुरू होइत अछि। मोन कखनो एहि रस्ते बढ़ैत अछि त' गड़बड़ लगला पर दोसर रस्ते। अकस्मात दिशाक संकेत भेटि जाइत अछि। हम बूझि लैत छी जे लेखक कोम्हर ल' जाय

चाहैत अछि। विजलीक एक चमक सन होइत अछि। आलोक के एक रेखामे अचानक सभ किछु जुड़ि जाइत अछि। छिड़िआयल घटना सभ एक कथानकमे उभरि क' अबैत अछि ; निरर्थक प्रतीत होइबला बात सभ सार्थक भ' जाइत अछि, खण्ड चित्रके एक रूपाकार भेटि जाइत छैक ; छिटपुट प्रभाव एक भावमे बन्हि जाइत अछि आ भाव एक विचार के रूपमे आलोकित भ' जाइत अछि। एहि प्रकारें एकदम मूल त' नहि ; तैयो बहुत करीब के एक कथा-प्रतिमा निर्मित होइत अछि। एहि प्रतिमाक निर्माता स्वयं पाठक अछि। कथाके पढ़बाक अर्थ छी एक एहने प्रतिमाक निर्माण। केवल प्रभाव ग्रहण करब पढ़ब नहि थिक। पढ़बो एक रचनात्मक कार्य थिक। आ केवल प्रभाव के सोपान तक रहि जायब रचना नहि थिक। रचना थिक ओहि प्रभाव के भाव के पुनः रूप प्रदान करब।'[5] ई बात नहि अछि जे कथाक भाव-विचार बुझनिहार पाठक मैथिलीमे नहि छथि। ई ठीक अछि जे सभ एक रंग नहि छथि। विभिन्न प्रकारक कथाक परम्परा त' अहूठाम रहबे कयल अछि। आधुनिक समयमे कविताक रूप बदलला पर प्रेषणीयताक समस्या ठाढ़ भेल छल मुदा क्रमशः अहू मे सम्यक विकास होइत गेल। तैं साहित्य-बोध त' एहिठाम रहबे कयल। उत्तरोत्तर कथाक पाठक समुदायक विकास सेहो भ' रहल अछि। एहन सजग पाठकसँ बहुधा भेंट भ' सकैत अछि। कथा-गोष्ठी सभमे कथा सुनि क' टिप्पणी केनिहार पाठक-श्रोताक ग्रहणशीलता देखि क' चकित भेल जा सकैत अछि। वस्तुतः कथा त' कहले जाइत छैक, चाहे सुनल जाय अथवा पढ़ल जाय। कथा-वाचनमे कथाक अर्थ जाहि ढंगे आ अर्थें खुजैत छैक से पढ़ला पर नहि भ' सकैत छैक। पढ़बाक क्रिया स्वाभाविक रूपें फराक ढंगसँ होइत छैक। तैं पाठ-प्रक्रियाक प्रयोजन। 'सगर राति दी जरय' गोष्ठीमे जखन हम सभ कथा सुनायब शुरू केने रही त' किछु दिनक बाद कहबाक ढंग के प्रति साकांक्ष हुअ' लगलहुँ। ओहिसँ कथाक शब्द संयोजनसँ ल' क' कथाक प्रवाह दुनूमे फर्क आयल। तैं जे ग्रहणशील सजग पाठक छथि हुनका केहनो कथा बुझबामे कठिनाइ नहि होइत छनि। भले हीं ओ ओहि कथाक सम्बन्धमे बहुत कमे शब्दमे अपना के व्यक्त क' पाबथि। सम्पूर्ण कथाक मर्म के विश्लेषित भने नहि क' पाबथि। हँ, ई बात ओहेन कथा-पाठक लेल नहि लागू होइत अछि जे समय कटबाक लेल, मात्र मनोरंजन लेल अथवा नीन्न अनबाक लेल कोनो कथा-उपन्यास पढ़ैत छथि। एहन पाठकक अपन कोनो दृष्टिकोण नहि होइत छनि, ओ लेखकक दृष्टिकोण के प्रति समर्पित पाठक होइत छथि। एक कथाकार रूपमे हमर ई व्यक्तिगत अनुभव अछि जे जाहि बुद्धिमत्ताक संग अपन विचार, टिप्पणीक रूपमे एक सजग पाठक कहलनि से ओही कथाक सम्बन्धमे साहित्यक शिक्षक अथवा आलोचक सेहो नहि कहलनि। दोसर रूप ईहो अछि जे मैथिलीमे लिखल कथा पढ़ि जे विचार एक आलोचकक बनलनि से ओकर हिन्दी अनुवाद पढ़लाक बाद एकदम बदलि गेलनि, फड़ीच्छ भ' गेलनि। वस्तुतः जेना नामवर सिंह कहैत छथि जे अनुवादक जिम्मेदारी जेहेन विशेष प्रकारक आनन्द दैत छैक से पढ़ि क' रहि जाइ बला के नहि भेटैत छैक। ओ कहलनि अछि जे, 'कहल जा सकैत अछि जे पढ़ब एक प्रकारक अनुवाद थिक। कोनो कथा के किछु लोक पढ़ि क' रहि जाइत छथि मुदा किछु लोक एतबेसँ संतुष्ट नहि होइत छथि। ओ चाहैत छथि जे हुनकर समक्ष कथाक ओ रूप सदिखन बनल रहय आ ओहि रूपके निर्माण के बिना ओ रहि नहि पबैत छथि, फलस्वरूप अनुवाद क' जाइत छथि। एहि प्रकारें ओ एक नव जिम्मेदारी लैत छथि। ई जिम्मेदारी एक विशेष प्रकारक आनन्द दैत छैक जे केवल पढ़ि क' रहि जाइबला लेल दुर्लभ छैक।'[6]

ई बात महत्वपूर्ण अछि जे जाहि 'रुचिक परिष्कार' के बात आलोचक रमानाथ झा कहने छला से परिष्कृति रुचि आजुक समयमे, सर्वमान्य नहि अछि। संगहिं आइ रुचि के विकृत करबाक लेल बहुतो साधन सभ उपलब्ध भ' गेल अछि। बाजार के मांग के अनुसार लेखन, सामान्य कोटिक लेखकक प्रसार, कोनो मान्यता, पुरस्कार आ समय कटबाक लेल लेखक बनबाक लौल आदि बहुतो कारण अछि जे पाठकक रुचि के विकृत करबाक संग पाठकके विरक्त सेहो क' रहल अछि। मुदा ईहो सत्य थिक जे कुरुचिपूर्ण साधन सभक विकास के संग एहि सभक विरुद्ध एक चेतना जागृत सेहो भ' रहल अछि। तैं आजुक मैथिली पाठकक रुचि के प्रति संदेह करब ठीक नहि अछि। एकर अतिरिक्त कथाक पाठ-प्रक्रियासँ सम्बद्ध किछु दोसरो महत्वपूर्ण प्रश्न सभ अछि।

एकर सभसँ पहिल प्रश्न अछि, स्तरीय पाठ के दोष। आलोचक सुरेन्द्र चौधरी लिखलनि अछि जे, 'कथाक पाठ के प्रसंग मे जँ ओकर मर्म नहि खुजल, ओकर अर्थ या सम्बद्ध मूल्य सभक विवृति नहि भेल त' कथा पढ़वाक सभ कोशिश बेमानी भ' जायब बुझबाक चाही। मुदा प्रश्न अछि जे कथाक मर्म अथवा अर्थ कथामे कत' होइत अछि आ पाठक ओकरा कोना प्राप्त क' सकैत अछि। एही समस्या के सोझरबै लेल पाठ-प्रक्रिया सन दुरुह शब्दावलीक प्रयोग कर' पड़ल अछि। कथाक अर्थ शुद्ध कथात्मक स्तर पर सेहो भ' सकैत अछि अथवा दोसर समानांतर स्तर पर सेहो। हँ, आजुक कथामे सामान्यत: कथात्मक स्तर पर नहि भ' क' अन्यत्र होइत अछि।'[7] एही क्रममे ओ कथाक कथात्मक स्तर, भावात्मक स्तर आ सांस्कृतिक स्तर के बात केलनि अछि। संक्षेपमे कहल जाय त' कथात्मक स्तर कथानक के धरातल पर होइत अछि। कथानक के घटना आ चरित्र-व्यापारसँ सेहो। पाठक लेल सर्वप्रथम आ तात्कालिक रूपसँ चरित्र आ घटना सभक कथात्मक स्तर दृश्यमान होइत अछि। दोसर स्तर भावात्मक होइत अछि। भावात्मक स्तरसँ तात्पर्य बोध के स्तरसँ अछि। ई स्तर बोध स्तर पर भावनाक मर्म ल' के खुजैत अछि। जाहि कथाक मर्म भावात्मक स्तर पर खुजैत अछि, ओहिमे घटना चमत्कारिक नहि होइत अछि। फलत: ओहिसँ प्राप्त बोध सेहो चमत्कारिक नहि होइत अछि। भावात्मक स्तर बला कथामे कखनो-कखनो छोट-छोट उल्लेख सेहो अनंत अर्थ-सम्भावना सभ के उजागर क' दैत अछि। कथाक अंतिम स्तर (अर्थ-विवृतिक दृष्टिसँ) सांस्कृतिक होइत अछि। एहिठाम कथा विशेष सँ सामान्य भ' जाइत अछि, अर्थात् सम्पूर्ण जीवन पद्धतिक आंतरिक सत्य बनि जाइत अछि। एहीठाम कथाक सत्य जीवनक सत्य बनि जाइत अछि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'गाछ-पात' के एहि क्रममे उदाहरणक रूपमे देखल जा सकैत अछि। एहि कथामे तीनू स्तर पर कथा चलैत अछि समानान्तर। मुदा ओकर मर्म सांस्कृतिक स्तर पर खुजैत अछि। ई कथा दू जीवन पद्धतिक अन्तर्विरोध पर चलैत भारतीय संस्कृतिक मानवीय तत्वकें स्थापित करैत अछि। एक गाममे रहनिहारि बूढ़ी अर्थात गाछ आ दोसर शहर मे रहनिहार बेटा, पुतहु, पोता-पोती अर्थात पात। एक

अपन रस, माटि-पानि अर्थात संस्कृतिक मानवीय तत्वसँ ग्रहण करैत अछि तँ दोसर आधुनिक बसातमे उधिया रहल अछि। बूढ़ीक जीवनक सत्य परम्परागत सामुदायिक जीवन-पद्धति ओ आचार-विचारमे अछि। स्वाभाविक रूपसँ कथाकार अपन कथाक शिल्प खिस्सा कहबाक प्राचीन रूप के परिवर्द्धित-विकसित करैत रखलनि अछि। मुदा ओहिमे अपन जीवन-दृष्टि ओ भाषा-विन्यास सँ बहुस्तरीय प्रभाव उत्पन्न केलनि अछि। एहि कथा पर पाठ-प्रक्रियाक तहत अगिला अध्यायमे विस्तार सँ लिखल गेल अछि। ओना ओहि अध्यायक शीर्षक 'मैथिली कथाक शिल्प ओ भाषा' अछि।

जँ 'गाछ-पात' भारतीय संस्कृतिक मानवीय तत्व के स्थापित करैत अछि त' कथाकार राजकमल चौधरीक कथा 'कमलमुखी कनियाँ' एक फराक सांस्कृतिक विमर्श प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे एहन पुरूष समाजके कथा कहल गेल अछि जे सामंती ओ रूढ़िवादी परिवार तंत्रक गौरवके महिमामंडित करबाक परम्पराक पालनसँ अपनाके अमानवीय बना लेलक अछि। जड़ताक समानान्तर नवताक कोनो प्रकारक आहटि ओकरा बर्दाश्त नहि छैक। अपन एहने रूढ़िवादी मानसिकतासँ निर्लज्ज भ' उठल अछि। एहि कथामे कथानकक स्तरमे शिल्पक नव प्रयोग द्वारा वांछित प्रभाव उत्पन्न कयल गेल अछि। कथा शीर्षक संग खण्ड-खण्ड मे कहल गेल अछि। शिल्पक एहि प्रकारक प्रयोगसँ ओहि रूढ़िवादी परम्पराक लोक ओ ओकर मानसिकतासँ परिचयक संग घटना-क्रम के संक्षिप्त राखब सम्भव भ' गेल छैक अन्यथा कथाके औपन्यासिक विस्तारमे महाआख्यान बनाब' पड़ितैक। खण्ड-खण्ड मे कहल कथा मुदा पाठक पर अखण्ड प्रभाव छोड़ैत अछि। विवाहक बाद नवकनियाँ सासुर आयले छैक। वर नन्द पहिले-पहिल कमलमुखी के महादेवपुर घाट मे गंगा स्नान लेल अयला पर देखने रहथि। रूप दर्शन सँ प्रभावित भ' अगिले शुद्ध मे चोरा क' मित्र सभ संग जा कथा ठीक कयनिहार घटक राज कें पचीस टाका द' विवाह केने रहथि। नन्दक वृद्ध पिता अप्पन मित्र धर्माधिप-महाराज संगे कोनो हिल स्टेशन अथवा दिल्ली बम्बइ, कलकत्ता मे रहैत छलथिन। माय जीबित नहि रहथिन। पित्ती सभ भिन्ने बथान बन्हने छलथिन। एकटा बहीन से सासुरे बसैत। तैं कनियाँ

के प्रवेश काल एक-दू टा खबासिनीक अतिरिक्त आर कियो नहि। कनियाँ दोसर जिला सहरसासँ आयल छथि। सौंसे गाममे बिहाड़ि-बिरड़ो उठि गेल छैक। अजातिमे विवाह क' लेलक। ई अजाति उपजातियो भ' सकैत अछि। हरिसिंहदेवीक पाग खसि पड़ल रहय। नवकनियाँक सम्बन्धमे ई कौचर्ज हुअ' लागल जे ओ परम सुन्दरी स्त्री सिंगार-पटार करैत अछि। पाउडर लगबैत अछि, साया पहिरैत अछि, आंगी पहिरैत अछि, आंगीक तरोमे किदन सभ पहिरैत अछि। मुदा ओत' पुरुष जाति ई धार्मिक नियम बनौने रहय जे एहि महाजातिक स्त्री एकवस्त्रा रहय। एक्केटा नुआसँ शरीरक सभ अंग नुकौने रहय। अन्ततः वर मुहबज्जीसँ पहिनहि संगी-साथी संग भांग पीबि क' चैलेन्ज कयला पर अंगना जा क' कोठलीमे पैसिक क' चिकरल, 'अहां पाउडर लगबै छी? अहांकें बूझल नईंए जे स्नो-पाउडर धर्मक विरुद्ध थिक!

बुच्ची दाइ चुप्प!

'अहाँ आँगी पहिरइ छी? अहाँकें बूझल नईं-ए जे आँगी-ब्लाउज धर्मक विरुद्ध थिक?

बुच्ची दाइ चुप्प!!

बुच्ची-दाइ कें दृश्य आ घटनाक ई आकस्मिक विरोधक अर्थ नईं बूझि पड़लनि। जँ बुझियो पड़लनि त' बिना चतुर्थीक राति भेने, बिना मुँह-देखाओन लेने पतिदेवता सँ कोना गप्प करती!'

दलान पर बैसल मित्र मंडली के देखेबाक लेल आ विश्वास दियेबाक लेल जे कमलमुखी पाउडर नहि लगबैत छथि आ आँगी नहि पहिरैत छथि, नन्द दुनू हाथें धर्म-पत्नीक डेंग पकड़ि घिसिअबैत दलान पर ल' अयला। अपन बांहि छोड़ा कें कमलमुखी ठामहि धप्प सँ पसरि गेल। नन्द गरम हाथें घोघ हटयबाक कोशिश कर' लगला। कमलमुखी घोघ कें दूनू हाथे पकड़ि आँचर मुंहें पर रहबाक चेष्टा कर' लगली। मित्र वर्ग सभकें हिन्दी फिल्मक आनन्द आबय लगलनि। मित्र सभक आग्रह सँ शरीरक सभटा शक्ति लगा क' चेतानन्द कमलमुखीक जरजेटी साड़ीक आँचर घीचि देलनि। चान-सन मुखड़ा सँ सौंसे दलान मे नवीन इजोत पसरि गेल। उपस्थित लोक सभ ठहक्का मारि क' हँस' लागल। पिहकारी... चल' लागल। नन्द चिकरलाह, 'देखि लिअ', रामजी बाबू! सहरसावाली पाउडर नईं लगौने छलीह। कंजूस बाप कहियो स्नो-पाउडर कीनि क' आनिए नईं द' सकलथिन। पाउडर-स्नो माने दू-अढ़ाइ टाका आ एतबामे तँ जन हरबाह भरि दिन खेत मे हर चलाओत, रोपनी करत!!'

घींचल जाइत साड़ीक आँचर छोड़ि कमलमुखी बाँसक ध्वजा जकाँ ठाढ़ि भ' गेली। नोरायल शब्दमे बाझल गरें बाज' लगली, 'ठीके हम स्नो पाउडर नईं लगौने छी। पाउडरे-टा की, हम आँगियो नईं पहिरने छी। अहाँ सभकें विश्वास नईं होइए? विश्वास नईं होइए तँ देख लिअ!' एतबा कहैत कमलमुखी पतिदेवताक हाथसँ साड़ीक आँचर छीनि लेलनि आ सौंसे साड़ी धरती पर खोलि क' फेंकि देलनि। कुर्सी पर बैसल मित्र-मण्डलीक समीप जाइत बजली, आँगिए की, अहाँ सभक माय-बेटी कें, पुतहु कें त' साड़ियो नइ पहिरबाक चाही।' राजकमलक ई कथा 1958 ई॰ मे प्रकाशित भेल रहय। बासठि वर्ष भ' गेल। आइ 2021-22 ई॰ मे अपन संस्कृतिक प्रदर्शन करबा लेल मंच पर विभिन्न सुन्दरी सभ हेरीटेज वॉक करैत एकवस्त्रा साड़ी संग भरल सभामे उतरि रहल छथि। हमर सभक सांस्कृतिक बोध कोना रूढ़िवादी-सामंतवादी परिवार तंत्रसँ उपनिवेशवादक यात्रा करैत उपभोक्तावाद, बाजारवाद पर अटकि गेल अछि से देखबा-सोचबा जोगर अछि। ई कथा कोना कथाक सत्यसँ अजुका सामाजिक जीवनक सत्य धरि यात्रा केलक अछि से बोधक स्तर पर वर्त्तमान सांस्कृतिक अनुष्ठान सभ उघारि क' देखा दैत अछि। से एहन समयमे जखन धर्म आ संस्कृति के फेरसँ एकरूप मानबाक चलनि बढ़ल अछि। वस्तुतः धर्म आ संस्कृतिमे जे रूढ़ि सभ बनि गेल छल से नवकलेवरमे एकरूप भ' रहल अछि।

आजुक कथाक वर्त्तमानक प्रसंगमे आलोचक मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि जे, 'गमैया जमीन्दारक शोषण खतम भ' गेल, उपनिवेशवादी शोषणक जमाना आबि गेल अछि। एकर रंग-ढंग, आकार-प्रकार बदलल अछि, व्यापक अछि। आब देह आ दरिद्रतेक शोषण नहि भ' रहल अछि - संस्कृति आ साहित्य के विकृत करबाक उपभोक्तवादी मनोवृत्तिक पोषण आ संवर्धन कयल जा रहल अछि। तें राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक कोनो चौबटिया

पर अहाँ जायब हिनका लोकनिक कथा पहरा दैत भेटत।'[8] वस्तुतः ई कथा सभ पहरा संवेदनाक धरातल पर अपन पात्र सभक माध्यमे अंतरंग संवेदनीयतासँ मानवीय मूल्यक द्वारा पाठक संग एकाकार भ' कय क' रहल अछि। एकरा हम भावनाक धरातले पर बूझि सकैत छी। कथाक भीतर पहुंचि क' हम एहि मानवीय अर्थ के प्रति-मानवीय भावनाक उत्थापन के प्रति-सजग भ' उठैत छी। एहिसँ वेशी कोनो कथा की क' सकैत अछि। कथाक सीमा के त' हमरा सभ के स्वीकार करहि पड़त। एहि सन्दर्भ मे उदाहरण लेल उषाकिरण खानक कथा 'अजनास'क पात्र अजनास, तारानन्द वियोगीक कथा 'हीरा जनम तिहारो'क पात्र हीरा महतो, धुमकेतुक कथा 'छठि परमेसरी'क पात्र गोपीनाथ, शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'सिनुरहार'क पात्र कल्याणी, देवशंकर नवीनक कथा 'पवन पुल'क पात्र हम (कथावाचक), जीवकान्तक कथा 'तेल'क पात्र रामधारी जी, प्रो॰ मनमोहन झाक कथा 'खिस्सा'क पात्र हम (कथावाचक), रमेशक कथा 'दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?'के पात्र श्री दिनकर झा, नारायणजीक कथा 'चित्र'क पात्र हम (कथावाचक), प्रदीप विहारीक कथा 'पोखरिमे दहाइत काठ'क पात्र कविता संग पाठक के ओहि पात्रक अंतरंग संवेदनीयतासँ एकाकार भेला पर कथाक मर्म भावात्मक स्तर पर खुजैत अछि। एहि कथा सभमे राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक सन्दर्भ अछि मुदा से पात्रक संवेदना संग जुड़िये क' उदघाटित होइत अछि। वस्तुतः कथाक व्याप्ति के प्रति पाठकक सजगता आवश्यक अछि। आलोचक सुरेन्द्र चौधरी लिखलनि अछि जे, 'आचार आ व्यवहारमे भेद होइत अछि, कथाकार के उद्देश्य मानवीय व्यवहारक चित्रण होइत अछि, ओहि व्यवहारक पाछू संवेदनीय प्रेरणा सभके उजागर करब होइत छैक। अस्तु, कथाक पाठ-प्रक्रियामे सजगता, आत्मनिर्णयक सक्षमता आ कला-संवेदनाक प्रति क्रियात्मक तत्परताक आवश्यकता होइत अछि।'[9]

आब हम सभ कथा आ फेन्टेसीक प्रसंगमे सेहो किछु चर्चा क' ली। फेन्टेसी वस्तुतः वस्तुसत्यक प्रति दोसर आ नव दृष्टिकोण अछि। फेन्टेसी हमरा सभक बहुतो आंतरिक असंगति सभ के प्रकाश मे आनि सकैत अछि। फेन्टेसीक उपयोग जँ एक रचनात्मक प्रतिभाक कथाकार

करैत छथि त' जाहि प्रच्छन्न वास्तविकता सभ धरि ओ पहुंचि सकैत छथि से भरिसक प्रत्यक्ष स्तर पर ओकरा कोनो रूपमे नहि पाओल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त कोनो कथाकार एहि चालू संसारके भीतर नुकायल ओहि असल संसार के सहसा देखि लिअय आ सम्पूर्ण विस्मयके संग हमरा समक्ष ओकरा उद्घाटित क' दिअय आ अपरिचय तथा अनभ्यास के तहत ओकरा हम 'फेन्टास्टिक' कहि रहल होइ, सेहो भ' सकैत अछि। ई सभ बात हम आलोचक सुरेन्द्र चौधरी आ नामवर सिंह द्वारा फेन्टेसीक सम्बन्धमे लिखल विस्तृत विचार सभ के पढ़ि क' संक्षेपमे कहि रहल छी। मैथिलीक समकालीन कथामे फेन्टेसीक उपयोग सँ कमे कथा लिखल गेल अछि। मुदा कथाकार विभारानीक कथा 'कठपुतरी' के एकर दृष्टान्त रूपमे देखल जा सकैत अछि। एहि कथाक आरम्भ एहि रूपें होइत अछि, 'गप्पमे सप्प भेलै त' एतबे जे ओहि पुतरीमे प्राण आबि गेलै।' पुतरीमे प्राणे नहि आबि गेलै, ओकरा मायो-बाप भेटलै। विवाहो भेलै। मुदा एहि सभक क्रममे ओ जाहि सख-सेहन्ता, जीवन जीबाक ललक, सुकुमार बाल-सुलभ स्वभाव पर हृदयविदारक आदंक आ आतंक के भोगैत अछि से पढ़ैत पाठक संवेदनाक एहन धरातल पर पहुंचि जाइत अछि जे विस्मयकारक ओ निर्मम, कठोर चट्टानसँ बनल छैक। ई कथा मैथिली पाठक लेल सर्वथा नवीन अनुभवसँ गुजरब थिक। पाठक एही संग आत्मनिरीक्षण ओ बाहरक संसारमे नुकायल ओहि नग्न सत्यक परीक्षण करबा पर विवश भ' जाइत अछि। ई कथा कहैत अछि जे सभ्यताक एतेक विकास के बावजहूद स्त्री के कठपुतरी बना क' रखबाक परम्परा एखनो धरि समाप्त नहि भेल अछि।

अंतमे हम मैथिलीक एक कथा 'महागिद्ध' सँ एहि पाठ-प्रक्रिया के समाप्त कर' चाहैत छी। एहि कथाक कथाकार छथि गौरीनाथ। ई कथा ओना त' कथात्मक स्तर पर चलैत अछि मुदा कथामे आयल छोट-छोट उल्लेख अनंत अर्थ-सम्भावनासँ भरल अछि। तैं एहि कथाक मर्म भावात्मक स्तर पर खुजैत अछि। एकर कारण कथाक एक-एक पंक्तिमे निहित अर्थक संग कथाक परिवेश, वातावरण, कथाक पात्र आ कथाक रचना-प्रक्रिया अछि। बिना कोनो टोप-टहंकार के ई कथा

एहन मनुक्खक जीवन सत्य के बिना कोनो आवरण के समक्ष अनैत अछि जेकरा लेल जीयब आ जीवित रहब एक पैघ समस्या छैक। एक चुनौती छैक। ई कथा कोनो चौबटिया पर नहि एक एहन रस्ता पर अछि जे गरम-गरम बालु पर चलबाक रस्ता थिक। ने कतहु पानि, ने छायादार गाछ-वृक्ष। केवल बालु, गरम-गरम बालु। आ एकटा जिलेबी गाछ। जेना कहलहुं एकर प्रत्येक पाँती बिना कोनो आवरण के सोझ-सोझ चलैत अछि मुदा अर्थगर्भित अछि। 'आब व्यक्ति मरी लग आबि गेल छल। कुकुर आ गिद्ध सत्ता पक्ष आ प्रतिपक्ष जकाँ भिड़ल छल आ व्यक्ति दूनू पर वर्चस्व राखवला एहन गौंण पक्ष जकाँ छल जकर पक्ष-विपक्ष दूनू पर अवैधानिक आधिपत्य होइ छै। ओ मरीक टांग पकड़ि उनटा देलक।' वस्तुतः कथामे आयल ईहो व्यक्ति कोनो अंतिम व्यक्ति नहि थिक। ओ त' बजारमे बैसल महागिद्धक लेल माउस आ हड्डी अलग क' के आपूर्त्ति केनिहार छल। ओहो पेटक आगिसँ जर' बला छल। वस्तुतः ई कथा संसारक विपन्न व्यक्तिक पेटक भूख सँ ल' क' बजारक कारपोरेटी शक्ति संचालकक उद्दाम भूख धरिक महायात्रा करैत अछि। एहि कथाक पाठसँ गुजरब एक आछन्न कर' बला अनुभवक यात्रा थिक। एहन अनुभव जकरा आत्मविश्वासपूर्वक शब्दमे रूपान्तरित करब कठिन होइत छैक।

त' जेना हमरा सभ बुझलहुँ जे कथा रचब, कथा पढ़ब, कथाक अनुवाद करब आ आलोचना करब सभ अपना आपमे एक रचनात्मक कार्य थिक। एहि कार्यके कोनो रूपमे कतहु सँ आरम्भ कयल जा सकैत अछि।

संदर्भ-संकेत

1. नामवर सिंह, कहानी-पाठ की प्रक्रिया, कहानी, नयी कहानी पोथी, 1992 ई॰
2. कुलानन्द मिश्र, कुलानन्द मिश्रसँ अशोकक संवाद, संवाद पोथी, 2007 ई॰
3. नामवर सिंह, कहानी-पाठ की प्रक्रिया, कहानी, नयी कहानी पोथी, 1992 ई॰

4. मोहन भारद्वाज, ललितक लेखन - विमुखता, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
5. नामवर सिंह, कहानी-पाठ की प्रक्रिया, कहानी, नयी कहानी पोथी, 1992 ई॰
6. ओएह
7. सुरेन्द्र चौधरी, कहानी की पाठ-प्रक्रिया : कथा के स्तरों का प्रश्न, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ पोथी, छात्र संस्करण, 2010 ई॰
8. मोहन भारद्वाज मैथिली कथाक वर्त्तमान : किछु प्रसंग, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
9. सुरेन्द्र चौधरी, कहानी की पाठ-प्रक्रिया : कथा के स्तरों का प्रश्न, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ पोथी, छात्र संस्करण, 2010 ई॰

(अप्रकाशित)



मैथिली कथालोचन आ कुलानन्द मिश्र

कुलानन्द मिश्रकें लोकधर्मी साहित्यालोचनक बेगरता एहि कारणे भेलनि जे साहित्य सृजन आ साहित्यालोचन दूनूमे परम्परा-प्रेमक विकृति असाध्य रोग जकाँ जड़िया गेल छल। परम्परा-प्रेमक रुग्ण मनोभाव रचनाक थाकल स्वर आ विवेचनक औंघाइत दृष्टि लेल उत्तरदायी रहय। स्थितिगत तथ्य पर विचार करैत ओ देखलनि जे मैथिली साहित्य लेखन कि साहित्य विवेचनक वितान पर ओ वर्ग पसरल पड़ल अछि जकरा अपन स्वार्थ एवं सुरक्षाक दृष्टिसँ ओहि विकृत परम्परा आ ताहिसँ उपजल रचना एवं विवेचनाक समर्थन करब अनिवार्य छैक। एहिसँ ओहि वर्गक हितसाधन होइत छैक। संस्कृत साहित्य आ काव्यशास्त्र तें ओहि वर्गक रसग्राही एवं सौन्दर्योपासक लोकनिकें प्रियगर आ रुचिगर छलनि। ओहि साहित्य-संसारमे रमैत ओहि वर्गक लोक ततेक आत्मतृप्त छल, अपनामे ततेक लीन छल जे बाहरक बदलैत सत्य संग कोनो सुरक्षित सम्बन्ध कि सार्थक सम्वाद स्थापित नहि क' सकल।'[1]

मैथिलीमे आलोचकलोकनिक एहने मनोभाव संस्कृतक काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तक आधार पर मैथिलीक आधुनिक साहित्यक आलोचनामे सेहो लागल रहल। बादमे ई अनुभव कयल गेल जे एहिसँ काज चल' बला नहि अछि। काञ्ची नाथ झा 'किरण' अपन निबन्ध 'आलोचना : एक दृष्टिकोण' मे लिखलनि जे आधुनिक भारतमे धीरादात्त नायकक अस्तित्वक सम्बन्धमे कियो सोचि नहि सकैत अछि। यदि कियो आलोचक कोनो प्रसंगमे संस्कृतक सहायता लैत छथि त' ओकरा आधुनिक स्थितिक अनुसार रूपान्तरित क' सामंजस्य बैसाब' पड़तनि। एहिसँ ओ मानलनि जे सामान्य-बोधक आधार पर साहित्यालोचनक पाश्चात्य सिद्धान्त आधुनिक

जीवन-स्थिति लेल बेसी उपयुक्त होयत।[2] रामकृष्ण झा 'किसुन' सेहो संस्कृत काव्य-शास्त्रक अप्रासंगिक मापदण्डकें अस्वीकारलनि आ मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्रक मूलकें पकड़बाक चेष्टा केलनि। 'मैथिली साहित्यमे नव कविता' शीर्षक निबन्धमे ओ स्पष्ट कहलनि जे मानव-चेतनाक विकासक संग-संग रसबोधक पद्धतियोमे परिवर्तन होइत गेल अछि। तें नवकविताक वैशिष्ट्य-परीक्षण पूर्व प्रचलित निकष वा प्राचीन रसवादक नियम-लक्षण क आधार पर नहि भ' सकैत अछि।[3]

साहित्य-विवेचनमे साहित्यक प्रति धारणा सेहो काज करैत अछि। साहित्यक धारणे साहित्य-विवेचनक दृष्टिक आधार बनैत अछि आ पद्धति कें दिशा दैत अछि। साहित्य सम्बन्धी धारणाक परिवर्तन आ विकासमे सामाजिक विकास-प्रक्रियाक सेहो महत्वपूर्ण भूमिका होइत छैक। आधुनिक कालमे नव सामाजिक सन्दर्भसँ नव साहित्य उत्पन्न भेल त' साहित्यक नव धारणा सेहो समक्ष आयल। स्वाभाविक रूपसँ नव सहित्यक विकास भेल त' साहित्यक नव धारणा पर विचार करब जरूरी मानल गेल। मैथिलीमे किसुनजी साहित्यक प्रति अपन धारणा व्यक्त करैत कहलनि जे सामाजिक-यथार्थकें बूझब आ ओकरा प्रतिबिम्बित करब यैह थिक कवि-कर्म। सामाजिक स्थिति अर्थात अर्थ व्यवस्था, प्रशासनक पद्धति, उद्योग-उत्पादन, जीवन-यापनक प्रणाली, जटिलता, संकुलता आ स्तर, विज्ञान एवं कलाक जन-जीवन पर प्रभाव, ओकर विकास आ उपलब्धि आदि जेना-जेना बनैत-बदलैत रहैत अछि, तहिना-तहिना सामाजिक यथार्थ मूलतः स्थिर रहितो रूपतः परिवर्तित होइत रहैत अछि, आ तें तकरा आत्मसात क' अभिव्यक्त करबाक शिल्प-शैली सेहो परिवर्तित होइत रहैत अछि।[4] मुदा मैथिलीक कतेको आलोचक आधुनिक साहित्यक नव धारणाकें पचा नहि सकला। साहित्यक प्रति पुरान धारणा हुनकर संस्कारमे बनले रहल। यदि पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रक तकनीक आ पद्धतिसँ परिचितो भेला त' साहित्यक अवधारणात्मक अन्तर्द्वन्द्व बनले रहलनि। फलतः आलोचनाक लेल ने अपेक्षित गम्भीरता हुनकामे आयल ने ओ नव दृष्टिक संग अपन बाते राखि सकला। केवल भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रक तकनीकी शब्दावलीक पथार लगौलनि। बोधक स्तर पर अस्पष्टताक कारणे आलोचना-कर्म संग संलग्नताक अभावमे परिश्रमसँ सेहो ओ लोकनि जी

चोरबैत रहला। तैं आँखि मूनि क' अनकर कहल बातकें खाली दोहरबैत रहला। फलस्वरूप आलोचना साहित्यक सृजन संतोषजनक रूपें नहि भ' सकल। सुधांशु शेखर चौधरी 'समालोचना एवं मैथिलीमे समालोचनाक विकास' नामक निबन्धमे लिखलनि जे मैथिलीक शिक्षार्थीलोकनिकें ऊँच कोटिक आलोचना-साहित्यक अभावमे कोनहु प्राचीन अथवा आधुनिक कवि एवं साहित्यकारके नीक जकाँ चिन्हबामे अत्यन्त कष्टक अनुभव भ' रहलनि अछि। तकर मुख्य कारण जे आलोचकलोकनि बहुधा गओले गीत गबैत रहि जाइत छथि। जाहि श्रमक अपेक्षा सफल आलोचकसँ रहैत छनि ताहिसँ ओलोकनि अपन जी चोरबैत छथि।[5]

रमानाथ झाकें मैथिली आलोचना साहित्यकें समृद्ध तथा ओकर दिशा निर्देश करबाक सर्वाधिक श्रेय देल जाइत अछि। उमानाथ झा मैथिली आलोचना साहित्य नामक निबन्धमे रमानाथ झाक आलोचनाकें सभ प्रकारक-मल्लिनाथी, सैद्धान्तिक, ऐतिहासिक, शोधमूलक एवं विवेचनात्मक मानलनि अछि।[6] एहि बातसँ लगैत अछि जे रमानाथ झा तात्कालिक आवश्यकताकें देखैत जत'-जे उचित बुझलनि ताहि पद्धतिक अनुसरण क' मैथिली आलोचनाक न्यों तैयार केलनि। मुदा मोहन भारद्व ाज मानैत छथि जे रमानाथ झाक आलोचनाक सीमा छनि। ओ अंग्रेजीक विद्यार्थी भइयो क' संस्कृत मानसिकताक लोक छला। साहित्यक प्रति हुनक धारणा संस्कृत काव्यशास्त्रक पृष्ठभूमि मे पल्लवित भेलनि। मैथिली साहित्यक ओ जे व्याख्या आ विश्लेषण कयलनि तकर मुख्य कसौटी छल संस्कृत-काव्यशास्त्र। यद्यपि हुनक समीक्षा पढ़ला पर लगैत अछि जे संस्कृत-काव्यशास्त्रक कसौटीकें आधुनिक मैथिली साहित्यक व्याख्याक लेल ओ पर्याप्त नहि मानैत छला। तथापि ओ सीमासँ बाहर निकलबाक प्रयास नहिये जकाँ केलनि अछि।[7] परन्तु ई सभ मानैत छथि जे रमानाथ झा संस्कृत मानसिकताक लोक भने रहथु ओ अपन काजक प्रति गम्भीर अवश्य छला। रमानाथ झासँ फराक मैथिली साहित्यकें बुझबाक आँखि देनिहारमे काञ्चीनाथ झा 'किरण' आ रामकृष्ण झा 'किसुन'क नाम उल्लेखनीय अछि। किरण जी जत' अपन वैचारिक निबन्ध सभक द्वारा मैथिली साहित्यक प्रगतिशील धाराकें फरीछ केलनि ओतहि किसुनजी नवकविता पर विचार करैत आलोचनाक भाषाकें शास्त्रीयताक दम्भ आ

ज्ञानक बोझसँ मुक्त केलनि।[8]

रमानाथ झाक बाद कुलानन्द मिश्र नहि केवल प्रविधि अपितु नव दृष्टिक संग मैथिली आलोचनामे प्रवेश केलनि। हुनका लग साहित्य आ कलाक उद्देश्य स्पष्ट छलनि। आ जनैत छला जे समाज मे पाओल जाइत भिन्न-भिन्न उत्पादन-सम्बन्ध लोकक रुचि, आवश्यकता आ जीवन-शैलीकें वास्तवमे सम्पूर्णतः प्रभावित करैत छैक। ओ ईहो बूझैत छला जे साहित्य आ कलामे सोद्देश्यताक प्रश्न वास्तवमे कोना प्रारम्भ होइत छैक आ किएक आवश्यक होइत छैक।[9] समाजकें वर्गीय आ ऐतिहासिक यथार्थवादी दृष्टिसँ देखबाक कारणे कुलानन्द मिश्र साहित्यकें बृहत्तर लोक-चेतनासँ सम्पृक्त क' यथार्थक लग अनबाक बात करैत छथि। ओ मानैत छथि जे व्यक्तिगत चेतनाक मनोवैज्ञानिक आधार ल' क' रचल गेल साहित्य निश्चित रूपसँ सम्पन्नवर्गक मानसिक विलासिताक खोराकक ओरिआओन कयलक। तैं बृहत्तर लोक-चेतनासँ सम्पृक्त भ' यथार्थक लग आबि मनोभिलषित वस्तु धरि पहुँचबाक यात्रा आरम्भ भ' सकैत अछि। एहन यात्रा भिन्न-भिन्न भ' सकैत अछि तैयो भिन्न-भिन्न लेखकक सज्ञानताक छाप ओकर रचना पर पड़बे करतैक।[10] एहि प्रकारें सामाजिक यथार्थक बोध आ छोट लोकक पक्षधरताक ज्ञान कुलानन्द मिश्रकें जत' अभिजात्य सौन्दर्यबोधक आलोचनाक दृष्टि देलक ओतहि पाठक, लेखक आ आलोचककें एक सामान्य धरातल पर अनबाक विचारकें सेहो पुष्ट केलक।

मैथिलीमे आलोचक लेल रहरहाँ निष्पक्षताक गप्प कयल जाइत अछि। सुनबामे ई निष्पक्षता बहुत आकर्षक लगैत अछि। मुदा जखन विचार करैत छी त' अमूर्त्त आ निरर्थक लाग' लगैत अछि। वस्तुतः ई निष्पक्षताक बात आलोचककें साहित्यक सामूहिक प्रक्रियासँ फराक क' न्यायाधीशक ऊँच आसन पर बैसबैत अछि, जे साहित्य-शास्त्रक अनुसार कृतिक जाँच क' लेखककें दोषी वा निर्दोष घोषित करैत अछि। मुदा ई शास्त्रे जन सापेक्ष नहि अछि। समानताक बात एहिमे नहि भेटैत अछि। पारस्परिक सम्वादक एहिमे कोनो गुंजाइश नहि छैक। सार्थक सम्वाद धरि पहुँचबाक त' बातो नहि सोचल जा सकैत अछि। एहिमे आलोचक लेल निष्पक्षता आ रचनाकार लेल सहनशीलताक निर्देश अछि। वस्तुतः ई सभटा साहित्यक ओहि धारणासँ उपजल अछि जे साहित्यमे सामाजिकता आ पक्षधरतासँ भड़कैत

अछि। ओ मानैत अछि कि साहित्यमे सामाजिक यथार्थसँ आ ओकर समाजशास्त्रीय विश्लेषणसँ साहित्यक साहित्यिकता नष्ट भ' जाइत छैक। साहित्यक सम्बन्धमे ई तत्त्ववादी दृष्टि मानैत अछि जे साहित्यिकता किछु अपरिवर्तनशील तत्त्व धरि सीमित अछि। ओ ई नहि मानैत अछि जे साहित्य बदलैत अछि, ओकर विकास होइत छैक त' साहित्यक धारणा सेहो बदलैत छैक, ओकरो विकास होइत छैक।[11]

साहित्यक बदलैत धारणा आ साहित्यालोचनक परिवर्तित होइत दृष्टिसँ लैस भ' आठम दशकमे कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाज, जीवकान्त, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर आदि मैथिली आलोचनामे अपन यात्रा प्रारम्भ केलनि। कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे लेखनक क्षेत्रमे डेग धरैत काल समीक्षा आ आलोचनेक पथ प्रशस्त करबाक बात हुनकर मोनमे सभसँ अधिक जड़िआयल छल। हिनका लोकनिक लक्ष्य स्पष्ट छल। मुदा लक्ष्य स्पष्ट रहितो कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजकें छोड़ि आन कियो लगन ओ तत्परताक संग आलोचना-कर्म सँ सन्नद्ध नहि रहि सकला। जीवकान्त त' ओहि समूहसँ लगातार विचलित होइत गेला आ अन्ततः हुनक साहित्यक अवधारणे बदलि गेल। एहि समूहक अतिरिक्त आन किनकोसँ जँ ई तत्परता आ लगन सम्भव भेलनि त' से रामदेव झा, भीमनाथ झा आ रमानन्द झा 'रमण' छथि। मुदा एहि तीनूक साहित्यक प्रति धारणा आ आलोचना पद्धति मोहन भारद्वाज आ कुलानन्द मिश्रसँ फराक छनि। ओना हिनका सभ पर संस्कृत वा भारतीय साहित्य-शास्त्रक प्रभावकें नकारल नहि जा सकैये। मुदा पाश्चात्य आ आन-आन भारतीय भाषा-साहित्यक माध्यमे आयल नव-नव स्वरकें ई लोकनि अकानैत रहला अछि। ओहिसँ अपन दृष्टिकें मजैत आ विकसित करैत रहला अछि। मैथिली आलोचनामे अपन निजता स्थापित करैत रहला अछि। मैथिली आलोचनाकें बुझबाक लेल हिनकालोकनिक लेखनकें जानब आवश्यक अछि। ई लोकनि साहित्यक मार्क्सवादी धारणाकें नहि मानैत छथि। साहित्यक मार्क्सवादी धारणा मानैत अछि जे साहित्य ओ काल्पनिक सत्ता थिक जे युगक आर्थिक यथार्थसँ निर्मित होइत अछि आ ओकरे अनुवर्तन करैत अछि। यथार्थकें बिना बुझने कल्पना (साहित्य)कें नहि बूझल जा सकैत अछि। मुदा रमानन्द झा 'रमण' साहित्यक उपयोगिताकें मात्र आर्थिक

दृष्टिये आँकब नितान्त घातक मानैत छथि।[12] ओ मानैत छथि जे साहित्यसँ समाजमे उत्तरदायित्व बोध जगैत अछि। साहित्य समाजक नैतिक दायित्वसँ परिचित करबैत अछि। जहाँ धरि साहित्यकें आर्थिक दृष्टियें आँकबाक प्रश्न अछि, मार्क्सवादियो साहित्यक उपयोगिताकें आर्थिक दृष्टिये नहि अँकैत अछि। केवल आर्थिक दृष्टियें आँकलो नहि जा सकैत अछि। मार्क्सवादी पद्धति सामाजिक गुणक संग साहित्यक सम्बन्ध आ कृतिक अभिव्यक्तिक शक्ति द्वारा सामाजिक जीवन पर पड़यबला प्रभावक निर्धारण करैत अछि। मोटामोटी रमणजीक धारणा साहित्यकें मूल्यपरक मानबाक धारणा आ ओकर व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। साहित्यक प्रभाववादी विचारक हेबाक कारणें रमानन्द झा 'रमण' साहित्यक शिल्प पक्ष पर सेहो ध्यान देलनि अछि। शब्दक प्रयोगमे सेहो हुनकर रुचि छनि। मैथिली कथाक शिल्पविधान आ मैथिली कथा पर पर-भाषिक प्रभाव नामक हुनक निबन्धकें एहि सन्दर्भमे देखल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे शिल्पक प्रयोग पर भीमनाथ झा सेहो काज केलनि अछि। साहित्यक पुरान ओ नव धारा पर हुनक ऐतिहासिक दृष्टिसँ कतेको विवेचन आयल अछि। ओ मानैत छथि जे कथामे भोगल यथार्थक उद्घाटनक एहि युगमे मैथिली कथाकारक विशाल वाहिनी मध्यमवर्गेक छाउनीसँ बहराइत अछि। स्वतंत्रतापूर्वक कथाकार होथु वा स्वतंत्रता बादक, पछिला सदीक उत्तरार्द्धक आदिसँ ल' क' नवीनतम पीढ़ीक प्रायः शतप्रतिशत कथाशिल्पी एही वर्गक छथि, हुनकालोकनिक कपारक रेखा एही वर्गक समस्याक तनाव सँ उगल रहैत छनि।[13] रामदेव झाक आलोचनाक मुख्य प्रवृत्ति अनुसन्धानात्मक अछि। 'मैथिलीक आद्य कथा' नामक निबन्ध एहि दृष्टिसँ बहुत उपयोगी अछि। ओ आँखिसँ ओझल पुरान कृति सभकें सेहो समक्ष अनलनि अछि। एहि तरहक काज रमानन्द झा 'रमण' सेहो लगातार करैत रहला अछि। जहाँ तक साहित्यक सामाजिक दृष्टिक सम्बन्ध अछि हिनकालोकनिक साहित्यक धारणा दर्पणवादी धारणासँ आगू बढ़ल नहि लगैत अछि। मोहन भारद्वाजक धारणा यथार्थवादी छनि। ओ कृतिक समाजपरक विवेचन पर विशेष जोर दैत छथि। ओ मानैत छथि जे मार्क्सवादी विचारक साहित्यकें अपन सिद्धान्तक उदाहरण रूपमे रखबाक प्रयास करैत छथि। परिणामतः एहि प्रकारक आलोचनामे यांत्रिकता आबि जाइत अछि।

मानव-यथार्थ आ ओकर काव्यात्मक प्रतिक्रियासँ सम्पर्क स्थापित नहि क' दलगत संकीर्णतामे ओझरायल शब्दाडम्बर ने त' साहित्य लेल उपयोगी अछि आ ने समाजक लेल मंगलकारी। जीवन तथ्यक वास्तविकतासँ आँखि मूनि क' सिद्धान्त-प्रतिवादनक प्रयास ओहिने काल-कवलित भ' जायत जेना संस्कृत अलंकारशास्त्रक अनेक सिद्धान्त भेल अछि। एहि प्रकारें लगैत अछि जे मैथिलीमे आलोचक लोकनिक एक वर्ग साहित्यकें समाजसँ सम्पृक्त मानियो क' ओकर स्वायत्तताक समर्थक छथि त' दोसर वर्ग साहित्यक स्वायत्तताके सामाजिक जीवनसँ बाहरक वस्तु नहि मानैत छथि।

कुलानन्द मिश्रक भीतर आलोचना-कर्मक सम्बन्धमे विचार ओ चिन्तन आरम्भेसँ चलैत रहल अछि। फलस्वरूप आलोचना-कर्मक एक सामाजिक उद्देश्य हुनका समक्ष स्पष्ट भेल। ओ रचनात्मक स्तर पर पाठक, लेखक ओ आलोचकक बीच आत्मीय सम्बन्ध बनेबाक दायित्वकें सेहो बुझलनि। ओ कहैत छथि जे आलोचना कोनो रचनाक ओहि सौन्दर्यबोध आ यथार्थोस्थापनकें विवेचित आ विश्लेषित करबा धरि सीमित रहि रचनाकार आ पाठकक बीच ओहि सम्वादकें आरम्भ करबाक आधार तैयार करैत अछि, जकर परिणति रचनाकार आ पाठकक बीच आत्मीय सम्बन्धक स्थापनामे होइत अछि।[14] ई विचार मैथिली आलोचनाक समकालीन यथार्थ पर आधारित हुनक आलोचना-कर्मक विकसित उद्देश्यकें स्पष्ट करैत अछि। मुदा एहन बोध आ सामर्थ्य रखनिहार कुलानन्द मिश्र मैथिलीक खगताक हिसाबें आलोचना-कर्ममे निरन्तर अपन योगदान नहि द' सकला।

आलोचना-कर्मक सिद्धान्त विवेचनमे जतेक हुनक योगदान अछि से पाठालोचनमे नहि। ओना पाठालोचनोमे नव दृष्टिक संग आलोचना आरम्भ करबाक श्रेय हुनका देल जा सकैत अछि। एहि सन्दर्भ मे हरिमोहन झाक 'पाँच-पत्र' ओ कांञ्चीनाथ झा 'किरण'क मधुमनि कथाक समीक्षाकें देखल जा सकैत अछि। वस्तुतः कथा पाठक प्रक्रियासँ कथा-समीक्षाक विधि मैथिलीमे वैह अनलनि। मात्राक स्तर पर पाठालोचनमे हुनक कम योगदानक कारण जत' हुनकर जीवन शैली रहलनि ओतहि ऊँच आ कठोर मापदण्ड सेहो रहल। ओ पाठालोचन लेल कृतिक चयनमे उदार ओ व्यापक नहि रहला।

वर्तमानमे आलोचना-कर्मक सीमा लगातार टूटि रहल अछि। ओकर उद्देश्य दिनानुदिन विकसित होइत गेल अछि। वस्तुतः ऐतिहासिक परिस्थितिक अनुकूल आलोचना-कर्मकें नव सिरासँ परिभाषित कयल गेल अछि। एहि नव परिभाषाक अनुसार आलोचक आब मध्यस्थक भूमिकामे नहि रहला। ने ओ साहित्यिक एजेन्ट रहला ने कवि आ छात्रक बीचक भाष्यकार। आलोचक नामवर सिंह लिखलनि अछि जे प्रत्येक कृति एक सांस्कृतिक प्रक्रिया थिक आ कृतिकार, पाठक ओ आलोचक ओही प्रक्रियाक अनिवार्य कड़ी छथि। एहि प्रकारें आलोचक कवि अथवा पाठक लेल नहि लिखैत छथि अपितु कोनो कृति पर लिखब हुनक ऐतिहासिक दायित्व थिकनि। एहि दृष्टिसँ आलोचक मूलतः ओहि सांस्कृतिक प्रक्रिया अन्तर्गत अपन अनुभव, विचार आ सपनेकें सम्पुष्ट एवं व्यवस्थित करबाक लेल संघर्ष करैत छथि। आलोचकक आत्मसंघर्ष सेहो रचनाकारक समान महत्वपूर्ण अछि - वस्तुतः व्यवहारमे ओ आत्मसंघर्ष आर जटिल होइत अछि किएक त' ओ दोबर होइत अछि।[15] स्पष्ट अछि जे आलाचना-कर्मक एहि मान्यता धरि कुलानन्द मिश्रक आलोचना-सम्बन्धी चिन्तनकें अयबामे साहित्यक स्पष्ट अवधारणा आ समाजसँ ओकर सम्बन्धक फरीछ ज्ञान रहल अछि। एही संग हुनका मैथिली सन्दर्भमे तात्कालिक खगता सेहो नहि बिसरल छनि। ओ पारस्परिक सम्वादक आधार पर रचनाकार आ पाठकक आत्मिक सम्बन्धक बात एही परिप्रेक्ष्यमे करैत छथि। स्वाभाविक अछि जे आत्मिक सम्बन्ध लेल वैचारिक आ भावनात्मक स्तर पर एकता हेबाक चाही जे कोनो सामाजिक उद्देश्यसँ प्रेरित हो। एहीठाम पक्षधरता आवश्यक होइत छैक। एहि प्रकारें आलोचना-कर्मक सैद्धान्तिक आधार तैयार करबामे कुलानन्द मिश्रक योगदान महत्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि। तैं रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनामे हुनक अवदान उल्लेखनीय भ' जाइत अछि। आलोचना-कर्मक सिद्धान्त-विवेचन आ उद्देश्य निर्धारण ासँ आगू चलबाक बाट ओ अवश्य बना देलनि अछि।

एहि बाट पर मैथिली कथालोचनक यात्रा तखनहिं सम्भव भ' सकल जखन कुलानन्द मिश्र एहि क्षेत्रमे अयला। एकर कारण इहो भ' सकैत अछि जे मैथिली आलोचनाकें छठम आ सातमे दशकमे ओ कृति सभ भेटलैक जे एहि दृष्टिसँ आलोचना लेल सामग्री द' सकैत छल। मुदा

कुलानन्द मिश्रमे एहि दृष्टिक चेतना उत्पन्न होयब फराकसँ हुनकर महत्वकें रेखांकित करैत अछि। ओना जखन ई दृष्टि आ पद्धति आयल त' ओ पछिला समयमे जा क' सेहो ओहि कृति सभकें ताकि अनलक जकर विकास छठम आ सातम दशकमे भेल रहय। जें कि मैथिलीमे कथा केन्द्रीय स्थानमे रहय तें कथालोचनेसँ मुख्यत: एहि पद्धतिक संग साहित्यालोचनक मार्ग प्रशस्त भेल। ओना आनो विधा विशेष क' कविताक आलोचना एहि पद्धतिक संग भेल अछि। मुदा कविता अपन विशिष्ट बिम्ब-विधान आ लयात्मकताक कारणे समाजशास्त्रीय पद्धतिकें सदतिकाल एक चुनौती प्रस्तुति केलक। एहि पद्धतिसँ कथालोचनक आरम्भ समीक्षा, प्रवृत्तिमूलक निबन्ध, प्रत्यालोचन आ पुनर्मूल्यांकनसँ भेल। एहिमे सन्निपात, फराक, अग्नि-पत्रक संग मिथिला-मिहिरोक योगदानकें रेखांकित कयल जा सकैत अछि। हालांकि मात्र सामाजिक सन्दर्भकें ध्यानमें रखैत चेतना समिति द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठीमे पढ़ल निबन्ध सभ सेहो कथालोचनकें गति देबामे योगदान केलक। कमसँ कम समकालीन कथा-साहित्यक स्वरकें अकानबाक ओहिमे चेष्टा कयल गेल। जीवकान्त मानलनि जे मैथिलीक समकालीन कथा-साहित्य संश्लिष्ट आ सौंस अछि। ओ बहुत रास छोट-छोट आ फराक-फराक खण्डकें जोड़ि क' बनाओल गेल 'कोलाज' थिक।[16] जखन कि आठम दशकसँ आरम्भ भेल आलोचनाक समाजपरक मार्क्सवादी दृष्टि आ पद्धति मैथिली कथाक बदलैत प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ आ ऐतिहासिकताक संग युगीन दृष्टिबोधसँ पाठककें परिचित करौलक अछि। मैथिलीक आधुनिक कथाक आरम्भिक कालमे सामाजिक कुरीति आ वैषम्य पर अधिक ध्यान देल गेल। सुधारक भाव लेखनक प्रमुख उद्देश्य बनल रहल। बादमे जखन सामाजिक वैषम्य आ मानवीय सम्बन्धमे व्याप्त दूरीक कारण सभक व्याख्या कयल गेल त' एहि सभ दुरव्यवस्थाक पाछाँ व्यवस्थाक सहस्त्र बाँहि पर लोकक नजरि पड़लैक। सामाजिक आ मानवीय संत्रास लेल व्यवस्थाक अव्यवस्थित व्यापार उत्तरदायी लगलैक। सामाजिक असंतोषमे वृद्धिके देखैत व्यवस्था अपन नह आर तेज केलक। अपन विश्वस्त यंत्र सत्ताक माध्यमे सिकंजा आर कठोर बनौलक। मैथिलीक आधुनिक कथा व्यवस्थाक विद्रूप आकृति आ संवेदनहीन प्रकृतिसँ त' परिचित भेल अछि मुदा तकर भयंकरता

आ हृदहीनताक प्रति ओकर दृष्टि फरीछ नहि भेलैक अछि। फरीछ भेले पर शंका आ छलनामे अन्तर करब साध्य होइत छैक।[17] एही संग विगत शताब्दीक अंतिम दू दशकक कथाकार अपन लेखनमे क्रमश: अधिक लोकोन्मुख होइत गेला अछि। ओ लोकनि लोकरंजनक संग-संग लोक-चिन्ताक प्रति एक संग सजगता देखौलनि अछि।[18] मोहन भारद्वाज स्वातन्त्र्योत्तर कथा प्रवृत्ति सभकें विस्तारसँ विश्लेषित करैत ई विचार रखलनि जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषा मे लिखल गेल अछि। प्रत्येक भाषामे अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक-समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे। एही संग ओ मैथिलीक आधुनिक कथाकें हास्यकथा, रोमांसकथा, देहकथा, सम्बन्ध कथा आ सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक समानान्तर चलैत कथाक रूपमे रखलनि अछि।[19] स्पष्ट अछि जे मैथिलीक आधुनिक कथामे प्रवृत्तिक आधार पर सामाजिक-राजनीतिक चेतनासँ सम्पन्न कथा कम लिखल गेल अछि। मुदा ओकर धारा शुरूसँ चलैत आबि रहल अछि। ओहिमे कैक तरहें विकासो भेल अछि। मोहन भारद्वाजसँ फराक रमानन्द झा 'रमण' छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रामे काम भावनाक अभिव्यक्तिकें एहि कालक कथाक एक विशेष प्रवृत्ति मानलनि अछि। एही संग ओ नारीके श्रमशील मानवीय रूपमे चित्रित करबाक प्रवृत्ति आ पति-पत्नीक बीच बदलैत सम्बन्धक अतिरिक्त लोकक क्षमता-बोध आ असहमतिसँ विद्रोह धरिक प्रवृत्ति मैथिली कथामे देखैत छथि।[20]

मैथिली कथालोचनमे कुलानन्द मिश्रक समीक्षा, निबन्ध आदि पत्र-पत्रिकेक माध्यमसँ आयल अछि। कोनो स्वतंत्र पोथी नहि आबि सकल। ओना मैथिली कथा-यात्रा नामक हुनक निबन्ध आकाशवाणी सँ दस कड़ीमे प्रसारित भेल। ओहि निबन्धमे नवम दशक धरिक कथाक प्रवृत्तिमूलक विवेचन अछि। एकर अतिरिक्त मेघन प्रसादक कथाकोश, वैदेहीक कथा मूल्यांकन अंक, मैथिली अकादमी पत्रिका आ सन्धानक कथा केन्द्रित अंक, मिथिला-मिहिरक कथा-अंकक सम्पादकीय सभ एहि दिशामे विशेष रूपें काज केलक अछि। मुदा मैथिलीक एकमात्र कथापत्रिका कथा दिशा कथा लेखन लेल जत' महत्वपूर्ण रहल ओतहि कथालोचनमे

कोनो योगदान नहि क' सकल। मेघन प्रसाद अपन कथाकोशमे कथालोचन सम्बन्धी दू सए नब्बे निबन्धक सूची देलनि अछि। जाहिमे उन्नैस सए सत्तरिसँ पूर्वक निबन्ध चालीससँ बेसी नहि अछि। ई विवरण सेहो सिद्ध करैत अछि जे सत्तरिक बाद मैथिली कथालोचनमे गति आयल। आठम दशक जहिना मैथिली कथालोचनमे गति अनलक तहिना कथालेखनमे सेहो प्रगति अनलक। संख्योक दृष्टिसँ सभसँ बेसी चौबीस सए उनहत्तरि नब कथा ओही दशकमे अर्थात 1971 सँ 1980 क अवधिमे प्रकाशित भेल।[21] एतेक तक जे ओहि दशक धरि अबैत-अबैत कथाक पुरना परिभाषा सेहो जेना बदलि गेल। कुलानन्द मिश्र आठम दशकक मैथिली कथा पर दृष्टिपात करैत कहैत छथि जे एतेक दूर अबैत-अबैत कथाक सभ पुरना परिभाषा अव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त प्रतीत हुअ' लगैत अछि। तखने एहि सत्यक अनुभूति होइत अछि जे कथाक इतिहासे कथाक एकमात्र संगत परिभाषा होइत अछि। अखुनक कथा त' एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भ' गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैत अछि। प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइत छैक। ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइत अछि।[22]

कथाक सम्बन्धमे सेहो आलोचक लोकनिक धारणा भिन्न-भिन्न रहल अछि। मैथिलीमे कियो एकरा 'गप्प' कहलनि त' कियो 'गल्प'। कथाकें पहिने अंग्रेजीक सौर्ट स्टोरीक अनुवाद 'लघुकथा'क रूपमे चिन्हल गेल जे अन्ततः कथाक रूपमे स्थापित भेल। लघुकथा त' आब फराक विधा मानल जाइत अछि। रमानाथ झा पहिने एकरा गप्प कहलनि आ बादमे लघुकथा। उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथा-संग्रह 'विडम्बना' क भूमिका लिखैत ओ गप्प पर विस्तारसँ चर्चा केलनि अछि। व्यासजीकें गप्पकार कहलनि अछि। गप्पमे प्रभावशीलताक प्रयोजनकें स्पष्ट करैत ओ कहैत छथि जे गप्पक निर्माण एक गोट प्रसंग ल' कए होइत अछि। स्वाभाविक कथानकक तन्तु बीच ओहि कथाक लक्ष्य जेना लपेटल रहैत अछि। कथाक लक्ष्यकें स्पष्टतः प्रकट हेबाक लेल छोट रचनामे वर्णन ओ चित्रणक नैसर्गिक सामन्जस्य शिथिल व्यापार योजनासँ नहि भ' सकैत

अछि। एहि हेतु चाही ध्वनिगर्भित पुष्ट ओ वेगमती शैली। कथानकक योजना तेहन हो जे कोनो भाव, विचार वा समस्या ध्वनित भ' उपस्थित भ' जाय, उपरसँ लादल नहि बोध हो। नाटके जकाँ कथोपकथन द्व ारा मन्तव्यक प्रकाशन, परिस्थितिक चित्रण अथवा विषयक अभिव्यंजन कयलासँ गप्पमे प्रभावशीलता भ' सकैत अछि। मुदा राजकमल चौधरीक कथा-संग्रह 'ललका पाग'क भूमिकामे कथाकें ओ लघुकथा कहलनि अछि। कहलनि अछि जे 1950सँ मैथिली साहित्यमे जाहि विधाक सभसँ विशेष प्रगति भेल अछि से थिक लघुकथा। एहि पर चर्च करैत ओ कहैत छथि जे कथाक कोना अन्त होइत छैक अथवा कोना ससरैत छैक से जीवनक प्रति लेखकक केहन दृष्टिकोण छनि ताहिसँ नियमित रहत। अतएव कथाक कौशल कला थिक। नीक अधलाह कथा कहबाक शैली पर निर्भर अछि। कथानक प्रसंग रमानाथ झाक कहब छनि जे कथानकक मौलिक तत्व थिकैक संघर्ष, से संघर्ष बाहर हो अथवा भीतर हो। एम्हर आबि बाहरी संघर्षसँ विशेष महत्व भीतरी संघर्षकें देल जाय लागल अछि। यैह रीति बढ़ैत-बढ़ैत घटनाचक्रमे सेहो चल गेल। आजुक कथामे घटना सेहो मनहिमे घटैत अछि। ओ इहो कहैत छथि जे मानसिक व्यापार सभ कथामे भेटैत अछि परन्तु ओ कथा कौशलक अलंकार थिक। अलंकारेसँ कथाकें भरि देब ई नव प्रयोग थिक। एहिमे वैह कृत्रिमता भासित होइत अछि जे उत्तरकालीन संस्कृत काव्यमे लक्षित होइत अछि। राजकमल चौधरीक 'पनिडुब्बी' कथाकें ओ एहि प्रयोगक चरम दृष्टान्त कहलनि अछि। 'साँझक गाछ'मे सेहो यैह प्रयोग मानैत छथि। रमानाथ झा कहैत छथि जे राजकमल सभ प्रकारक प्रयोग कैलनि मुदा प्रयोग त' रीतिक नवीनता थिक। केवल रीति मात्रक उत्कर्षकें मुख्यता देब प्राचीन रीतिवादक नवीनीकरण कहाओत। रमानाथ झाक कथनसँ लगैत अछि जे ओ कथाक कौशल अर्थात लूरि के कला मानैत छथि आ नीक ओ अधलाह कथा लेल कहबाक शैलीकें महत्व दैत छथि। एही कारणें ओ पहिने कथाकें गप्प कहलनि अछि। गप्प त' मात्र शैली भ' सकैत अछि। शैली काज करबाक रीति अथवा प्रणाली होइत अछि। एहि लूरि आ रीतिसँ एक रूप ठाढ़ कयल जा सकैत अछि। जेना मकान ईंटा पर ईंटा जोड़ि क' लूरिसँ बनाओल जाइत अछि। मुदा मकान घर ताबत धरि नहि होइत अछि जाबत

ओहिमे मनुक्ख नहि रहैत अछि। मनुक्खे मकानमे रहि क' ओकरा घर बनबैत अछि। मुदा रमानाथ झा कथामे आयल मनुक्खक गप्प नहि केलनि। एहि बातकें दूनू कथा-संग्रहक भूमिका पढ़ि जानल जा सकैत अछि। एहि प्रकारें रमानाथ झा कलाक अनुभूति आ सौन्दर्यक रसास्वादनकें मात्र रूप पर निर्भर मानि लेलनि अछि। स्वाभाविक रूपमे हुनक भूमिकामे रचनाक विश्लेषण केवल रूपक रचाब या रचना कौशलक विश्लेषण धरि सीमित रहि गेल अछि। हुनक भूमिकामे कथाक ऐतिहासिक-सामाजिक आधार पर अभिप्रायक चिन्ता नहि अछि। मुदा रूप-तत्वक गहन विश्लेषण अवश्य भेल अछि। हुनक एहि कथनसँ असहमति नहि भ' सकैत अछि जे मानसिक व्यापारसँ कथाकें भरि देब ठीक नहि थिक। एहि प्रकारें रमानाथ झा रूपवादक सचेत आलोचक छथि से कहल जा सकैत अछि। रमानाथ झाक विपरीत कुलानन्द मिश्र साहित्य आ कलाकें सोद्देश्यकताक संग जोड़ैत छथि। तैं ओ वास्तविकता, मनुष्यक जिज्ञासा, जिजीविषा, जीवन आ समाजमे व्याप्त अन्तर्विरोध, आंतरिक ओ बाह्य जटिलताक सांगोपांग विश्लेषण पर जोर दैत छथि। कथाक सोद्देश्यताक बात करैत ओ कथाक सम्बन्धमे अपन धारणा भारतीय साहित्यिक लोकनिक धारणासँ फराक भारतीय नैयायिक लोकनिक शास्त्र-विचार सम्बन्धी पद्धति-वाद, जल्प ओ वितण्डामे सँ वादसँ स्पष्ट करैत छथि। एहि मतक अनुसार कथा (वाद) एहन वाक्य संदर्भ थिक जाहिमे नाना वक्ता होइत छथि, पूर्व पक्षक उपस्थापन होइत अछि आ सिद्धान्त पक्षक प्रतिष्ठा होइत अछि। ओ कहैत छथि जे कथाक एहि परिभाषाक वृत्तमे कथाक सोद्देश्यताक बात कतौ आबि जाइत अछि।[23]

कथामे कथानकक प्रसंग रमानाथ झाक विचारकें खण्डित करैत सुधांशु शेखर चौधरी कहैत छथि जे पुरान परिभाषाक अनुसार कथानक, चरित्र आ चरमस्थिति कथाक आवश्यक आ अनिवार्य तत्व छल। परन्तु समसामयिक कथाकारक लेखें कथानक, चरित्र, चरमस्थिति आदि महत्वहीन भ' गेल अछि। तैं ई आवश्यक भ' गेल अछि जे आधुनिक कथाकें आधुनिक कथा-तत्वक आधार पर परिभाषित कयल जाय। ओ मैथिलीक आधुनिक कथाक मुख्य तत्वमे वातावरण, मन:स्थितिक बिन्दु विशेष, कथ्य ओ प्रभावकें मानैत छथि। संगहि इहो कहैत छथि जे पुरान

कथा जकाँ जीवनकें दूरसँ देखबाक प्रथा आधुनिक कथामे समाप्त भ' गेल अछि। ई जीवनकें मात्र छुबिये क' नहि उनटि-पुनटि क' देखैत अछि।[24] ओना वर्तमानमे मैथिली कथा सुधांशु शेखर चौधरीक मान्यता-कथामे जीवनक परीक्षण-निरीक्षणकें बदलि देबा पर बित्त लगैत अछि। तारानन्द वियोगी एहि प्रसंगमे कहब छनि जे मैथिली कथामे एकटा एहन परिदृश्य उभरि रहलैक अछि जाहिमे जीवनक स्पन्दन छैक आ जकर रचनाकार कथा लिखबाक लेल जीवनक बीच उतरब जरूरी बुझय लागल अछि।[25] वियोगीक मन्तव्यसँ स्पष्ट अछि जे नव कथाकार अपन कथामे एक जीवित-जागल मनुक्ख-एक नव जीवन्त-अनुभवकें तराशि क' कहानीक रूप द' रहल छथि। वस्तुत: ई नव सर्जनक बात क' रहल छथि ओ। एहि नव सर्जनामे जीवन-दृष्टिक भेद आ वैयक्तिक विशिष्टताक बावजूद लेखनक मूलमे एक समान बुनियादी संवेदनाक बात अछि। एही संग जहाँ धरि नीक अधलाह कथाक प्रश्न अछि रमानाथ झा ओकरा खाली कहबाक शैली पर निर्भर मानैत छथि। वस्तुत: अधलाह कथा नीक पाठकक तेज नजरिक समक्ष बेसी ठहरि सकबामे असमर्थ होइत अछि। लेकिन जे कथा कनियो नीक होइत अछि ओहिमे नीक पाठक 'सम्भावना' होइत अछि आ जे अहूसँ नीक होइत अछि से नीक जकाँ पढ़बाक लेल 'निमंत्रित' करैत अछि, परन्तु जे कथा बहुत नीक होइत अछि ओ नीक ढंगसँ पढ़बाक लेल 'बाध्य' करैत अछि। एहि प्रकारें सम्भावना, निमंत्रण आ बाध्यतामे सेहो एक निश्चित अनुक्रम अछि।[26]

साहित्यिक रचनामे रूपक दू प्रकार होइत अछि। एक रूप ओ थिक जे अन्तर्वस्तुक परिवर्तनक बावजूद अपेक्षाकृत स्थायी होइत अछि। एकरा साहित्यमे विधा कहल जाइत अछि। रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप अन्तर्वस्तु संग प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। एहि कारणे ओ अन्तर्वस्तुक संग परिवर्तनशील ओ विकासशील होइत अछि। एहि दोसर प्रकारक रूपकें शिल्प-शैली कहल जा सकैत अछि। कथामे कथ्य मुख्य थिक त' ओकरा प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत करबाक लेल शिल्प-शैलीक सेहो महत्व अछि। कथाक सार्थकता ओ सफलता कथ्य ओ शिल्प दूनू पर निर्भर करैत अछि। कथालोचनमे कथ्य ओ शैली दूनू कें फराक-फराक महत्व द' विवेचन-विश्लेषणक पद्धति बहुत दिनसँ

चलैत रहल अछि। मैथिलीमे एना फराक-फराक समानान्तर पाठालोचनक परम्परा विकसित नहि भेल। भले ही कोनो आलोचककें शैलीक महत्व कथ्यसँ बेसी बुझाइत होउन मुदा ओ विवेचन सामाजिक सन्दर्भमे कथ्यकें आधार बना क' कयलनि। एहि प्रकारें रमानाथ झाक रूपवादी पद्धतिक विकास मैथिलीमे नहि भ' सकल। बहुत कम आलोचक कथालोचनमे रमानाथ झाक अनुसरण केलनि। राजकमल चौधरीक कथा 'साँझक गाछ' जकरा रमानाथ झा मानसिक व्यापार अर्थात् कथा कौशलक अलंकारक नव प्रयोग कहलनि ताहि पर परवर्ती आलोचकक टिप्पणी देखी त' बात स्पष्ट होइत अछि। मोहन भारद्वाज 'साँझक गाछ'क प्रसंगमे कहैत छथि जे ई कथा शिल्प एवं कथ्य दूनूक आधार पर नहि केवल राजकमलेक मैथिली कथा-साहित्यमे अपितु सम्पूर्ण मैथिली कथा-साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखने अछि। ई कथा कहैत अछि जे राजकमल एकटा एहन स्त्रीकें तकैत छला, जकरामे स्वाभिमान होइक जकर संवेदना मरि नहि गेल होइक आ एहने स्त्रीकें तकबाक उपक्रममे ओ नारीक गत्र-गत्र कें ओकर समस्त शारीरिक आ मानसिक तानी-भरनीकें मथैत छथि।[27] मुदा रमानाथ झासँ लग रहि जयधारी सिंह कहैत छथि जे राजकमलक 'साँझक गाछ- स्वानुभूति संवेदनाक चलैत-ससरैत चित्र अछि? गद्य-काव्याश्रित आत्मगीत अछि? समाज सुधारक कथा मात्र अछि? ई सभ प्रश्न जे समानान्तर उठैत अछि सैह अछि एकर कला-पक्षक आत्म तत्व।[28] कथाक नायकक वर्गकें चिन्हैत आ ओहि पर टिप्पणी करैत भीमनाथ झा कहैत छथि जे राजकमलक 'साँझक गाछ'क नायक कथाकार स्वयं होथु वा क्यो आन, जे होथु, मुदा छथि ओ मध्यवर्गीय लोक। जैह नियति साँझक गाछक होइत छैक सूर्यास्तक बाद, सैह नियति एहि वर्गक लोकक सेहो होइत छैक। भनहि दिनमे ओकर जीवनमे कतबो रमन चमनक नाटक किएक नहि होइत होइक। स्वाँग रचब, मध्यमवर्गीय लोककें सेहो जीवन आ जीविका भ' गेल छैक-कथाक नायके जकाँ।[29] एहीठाम साँझक गाछ हो कि राजकमल चौधरीक अन्य कोनो कथा, ओहि पर पड़ल राजकमलक निजी जीवन-दृष्टिक गप्प करैत कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे राजकमलक कोनो अनुभव सामान्य अनुभवक कोटिमे नहि राखल जा सकैत अछि ओहि पर राजकमलक विशिष्ट जीवन-चक्र आ नितान्त

अपन जींवन-दृष्टिक प्रभाव स्पष्ट रूपें देखा पड़त। राजकमल सामान्य दुनियाक दुःख भोगो अपना तरहें कयलनि आ ओहिसँ अनुभवो अपना तरहें अर्जित कयल आ ओहि अनुभवक उपयोगो अपना तरहें कयल।[30] चारु आलोचकक टिप्पणीसँ स्पष्ट अछि जे जयधारी सिंहकें छोड़ि तीनू आलोचक कथाक अभिप्राय, यथार्थ ओ ओहि पर राजकमलक निजी जीवन-दृष्टिकें सामाजिक सन्दर्भमे उजागर करबाक चेष्टा केलनि अछि। 'साँझक गाछ' कथा मिथिला-मिहिरमे 1966मे सर्वप्रथम प्रकाशित भेल छल। कथा लेखनक ओ काल भोगल यथार्थक अभिव्यक्तिक विशेष काल रहय। एहि कथामे यथार्थ राजकमलक विशिष्ट अनुभवक संग मध्यमवर्गीय लोकक नियति बनि क' आयल अछि। संगहि कथाक अभिप्राय ओहि वर्गक स्त्रीक जीवन-स्थितिमे परिवर्तनक आकांक्षासँ ओत-प्रोत अछि। एहि प्रकारें ई अभिप्राय एहि कथाक सामाजिक पक्षकें उजागर करैत अछि। ई राजकमलक संतुलित शिल्पक खूबिये अछि जे आलापक कथा प्रलापमे नहि बदलि गेल।

मैथिली कथामे जखन यथार्थ आयल त' से बहुलांशमे भोगल यथार्थक रूपमे आयल। ई भोगल यथार्थ व्यक्तिवादक परिणाम छल। जकर सामाजिक आधार पूँजीवादमे निहित अछि। एहि प्रसंग कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे यथार्थवाद आ प्रकृतवाद एकदम्मे भिन्न वस्तु होइत अछि। आदर्शवाद नहि, आदर्शोन्मुख यथार्थवादो नहि, अपितु, द्वन्द्वात्मक आ ऐतिहासिक यथार्थवादे कथा लेल सही खाद-पानि, ऊर्जा तथा ऊष्माक जोगाड़ करैत अछि। अनुभववाद आ तथाकथित भोगल यथार्थवाद एक तरहें पूँजीवादी व्यक्तिवादेक असंयत संतति थिक। कोनो कथा पाठक लेल मात्र शोभाक वस्तु नहि होइत अछि। ओ ओकर अस्तित्वक कथा सेहो होइत अछि। से यदि ओ नहि अछि त' ओकरा होयबाक चाही।[31] कुलानन्द मिश्र छठम दशकक अवधिमे रचनारत कथाकार सभमे भोगल आ भोगल सन यथार्थक चित्रणकें बहुत पैघ आसक्तिक रूपमे देखैत छथि। ओ कहैत छथि जे जकरा सातम-आठम दशकक रचनाकार लोकनि अपन नव रूपक प्रखर (यथार्थ) चेतनाक नजरिसँ रोमांटिक मानि नकारि देलनि। एहि भोगल यथार्थ आ ओकर प्रामाणिकताक प्रश्नकें मैथिलीक आलोचक आठमे दशकसँ उठायब शुरू क' देलनि। रामानुग्रह झा एहि

सन्दर्भमे कथाकारक भोगल यथार्थकें सामान्य अनुभवसँ मिला क' देखब जरूरी मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे जखन कथाकारक व्यक्तिगत अनुभव दोसराक अनुभवसँ फराक नहि हो, तखनहि ओहि अनुभवक प्रामाणिकता सिद्ध हैत।

ओना मैथिली कथामे भोगल यथार्थक चित्रणमे सेहो परिवर्तन होइत गेल अछि। पूर्ववर्ती कथाकारक भोगल यथार्थमे आ क्रमशः हुनक परवर्ती कथाकारमे पर्याप्त भिन्नता अबैत गेल। एहि सम्बन्धमे राज मोहन झाक कहब छनि जे पूर्ववर्ती कथाकार सुविधावादी हेबाक कारणें मोनक भीतर बहुत गहींर डुबबाक आवश्यकताकें नहि बूझैत छला। हुनक गलत नैतिक मूल्य तथा संस्कार सेहो हुनका मोनक गुह्य आ गोपनीय प्रदेशमे प्रवेश करबामे रोकैत छलनि। अनुभूतिक स्तर पर वर्जित प्रदेशमे जँ ओ पहुँचियो जाइत छला त' अभिव्यक्तिक साहसहीनता हुनकर अनुभूति आ अभिव्यक्तिक बीच एकटा खाधि बनौने रहैत छलनि। तै पाठक कें हुनक भोगल यथार्थ यथार्थ नहि प्रतीत होइत छलैक।[33] भोगल यथार्थक सीमाकें खाली अभिव्यक्तिक साहसहीनता आ निजी अनुभव बनाम सामान्य अनुभवक विवादसँ नहि जानल जा सकैत अछि। ओकर सीमा व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिकतामे निहित अछि। व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिकतामे बहिरंग यथार्थकें हृदयंगम करबाक सभ सम्भावना नष्ट भ' जाइत अछि। बहिरंग यथार्थ एक भयंकर रहस्य लाग' लगैत अछि। जें कि व्यक्तिकें बहिरंग यथार्थक दबाब अनुभव होइत छैक तैं ओ चिन्तासँ अभिभूत भ' जाइत अछि। जाबत धरि व्यक्ति अंतरंग यथार्थक जालमे ओझरायल रहैत अछि तावत धरि जड़ता आ गतिरोधक डर बनल रहैत छैक। एहन स्थितिमे जेना लुकाच 'अमूर्त्त सम्भावना' आ 'मूर्त सम्भावना' मे भेद कयलनि अछि से भेद बढ़ि जाइत अछि। लुकाचक अनुसार मानव विकासक असंख्य सम्भावनाकें जँ जीवनक वास्तविक जटिलताक पर्याय मानि लेल जाय त' आधुनिक व्यक्तिवाद विषाद आ सम्मोहनक दू छोरक बीच झूल' लगैत अछि। एहि प्रकारें सम्भावनाक आधार पर मनुक्खक वास्तविक नियतिक उद्घाटनक त' गपो नहि, वैयक्तिकताक टेढ़-टूढ़ रेखोकें उभारब मुश्किल अछि। सम्भावनाक अमूर्त स्वरूप एहि तथ्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ विकासक निर्धारण नहि क' सकैत अछि किएक त' व्यक्तिपरक मनस्थिति

निर्णयात्मक नहि भ' सकैत अछि।[34] तैं लुकाच एहि युगमे मनुक्खक प्रति अपन विश्वास फेरसँ जगा क' यथार्थवादी कलाक सर्जना लेल कहैत छथि। सामाजिक परिवेशसँ व्यक्तिकें जुड़बाक बात कहैत छथि। परिवेशक वस्तुपरक यथार्थकें बुझबाक बात करैत छथि।

मैथिलीक आधुनिक कथामे वस्तुपरक यथार्थकें बुझबाक आ ओकरा कथामे चित्रित करबाक प्रवृत्ति आठम दशकसँ बढ़' लागल। ओना पारम्परिक सौन्दर्य-बोधक स्थान पर आधुनिक दृष्टिबोध एहिसँ पूर्वक दशकमे मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ स्वरूपमे व्यापक परिवर्तन आनब शुरू क' देने छल। मुदा छठम दशकक कथामे वस्तुपरक यथार्थक चित्रण बहुत कमे कथामे भेटि सकैत अछि। एहि प्रकारें छठम, सातम दशकक समय मैथिली कथामे भोगल यथार्थक चित्रणक अभिव्यक्तिक विशेष काल रहल अछि। मुदा विधा आ टेकनीक दूनू रूपमे आधुनिक मैथिली कथा, जकर न्यो पाँचम दशकमे पड़ि गेल, से अगिला दू दशकमे आधुनिक रूपें आधुनिक दृष्टिबोधक संग स्थापित भ' गेल। आठम दशकमे वस्तुपरक यथार्थक चित्रणक प्रवृत्ति बढ़ल त' तकरे संग कथा विधाक रूपमे परिवर्तन सेहो भेल। रिपोर्ताज, रेखाचित्र, डायरी, व्यक्तिचित्र, शब्दचित्र आदि उपरूप सभ कथाक रूपमे फराक-फराक अथवा एक्कहिमे समाहित होइत सेहो आब' लागल। क्रमशः मैथिली कथामे मनोगत व्यापारोकें वस्तुगत आधार प्रदान करबाक कोशिश शुरू भेल। मानसिकतोक कथा आयल त' से समाजक वर्गीय व्यवस्थासँ उपजल मानसिकताक यथार्थ छल। मैथिली कथाकारमे आठम दशकसँ क्रमशः अबैत ई चेतना जत' भोगल यथार्थक अस्वीकार छल, ओतहि समाजक वर्गीय व्यवस्थामे सामाजिक यथार्थक स्वीकार सेहो छल। मुदा जखन मैथिली कथामे सामाजिक यथार्थ घनघोर रूपमे आब' लागल त' प्रारम्भमे एकर स्वर बहुत आक्रामक रहय। मोहन भारद्वाज एकरा 'फौजदारीवला' कथा कहलनि अछि। जकर 'फौजदारीवाला' रूप क्रमशः 'सिविल' रूपमे परिवर्तित होइत गेल। मैथिली कथाक एहि तरहक विकासमे सामान्य रूपसँ भारत आ विशेष रूपसँ मिथिलाक सामाजिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य कें ध्यानमे राखब जरूरी अछि। मुदा कतेक कथाकार जकाँ आलोचको एहि दिशामे भेल प्रगतिकें स्वीकार करबाक मुद्रामे नहि लगैत छथि। हुनका

दृष्टिमे अनेक कारणसँ छठम दशकक कथा मैथिली कथाक स्वर्णयुग बनले अछि। कथाक समकालीन स्वरूपमे शिल्पकें विशेष महत्व देनिहार एहन आलोचकलोकनि क्रमशः कथाक अर्न्तवस्तु संग शिल्पो कें बदलैत देखि रहल छथि किन्तु तैयो प्रगतिकें अपेक्षाकृत कम मानैत छथि। तत्काल देवशंकर नवीनक विचार एहि सन्दर्भमे देखल जा सकैत अछि। ओ कहैत छथि जे पाँचम दशकमे मौलिक कथा लेखन नीक जकाँ अपन प्लेटफार्म तैयार नहि कयने छल, हरिमोहन झा पाठक वर्ग तैयार करबामे लागल छला कि छठम दशकमे त्रिपुण्डक कथामे मानवक अर्न्तमनक व्यथा, शिल्पक प्राधान्य, आब' लागल। मुदा तकर बाद कतोक समय बीति गेल अछि, किन्तु प्रगति अपेक्षाकृत कम अछि।[35] ई नहि कहल जा सकैत अछि जे नवीनकें मैथिली कथाक सामाजिक पक्ष नहि बूझल छनि। ईहो नहि अछि जे ओ बहिरंग यथार्थक सम्यक बोध नहि रखैत छथि। मुदा मैथिली कथा-यात्राकें ऐतिहासिक-द्वन्द्ववादी दृष्टिसँ नहि देखबाक कारणे हुनका लग मैथिली कथाक समाजपरक विकास-क्रम फरीछ नहि भ' सकलनि।

ओना मैथिली कथामे शिल्पोक विकास पर बहुत कम काज भेल अछि। मुदा प्रभास कुमार चौधरीक कथाक सम्बन्धमे विचार करैत रमाकान्त मिश्र आ शिवशंकर श्रीनिवास तथा राज मोहन झाक कथाक शिल्प पर सुभाष चन्द्र यादव किछु रोशनी देलनि अछि। शिवशंकर श्रीनिवास प्रभासक कथा-प्रसंग कहैत छथि जे हिनक कथा कोनो सरल रेखा जकाँ नहि चलैत अछि, अपितु कथाक बीच वा कोनो भागसँ विषय उठा ई अपन कथाक आदि वा अन्त करैत छथि। कथाक बीचमे मूलबात कें पुष्ट करैत कतेको क्षण वा मनोविश्लेषणात्मक विस्तार भेटत। जकर खूबी एहिसँ नापल जा सकैत अछि जे ओकरासँ मूलबातकें कोनो मतलब नहि बुझाइतो अनावश्यक नहि जरूरी बुझायत। एही संग श्रीनिवास ईहो कहैत छथि जे हिनक कथा लेल समय-सीमा वा एक क्षणक महत्व नहि एक सूत्रात्मक होयबाक महत्व अछि जे अन्त तक अपन कथ्यकें नहि छिड़िआय दिअय। तैं ई कोनो घटना कहैत जीवनक कोनो क्षणमे जा अपन कथा पूर्ण करैत छथि, जे गुण आजुक पीढ़ीक कथाकारमे बेस विस्तार पौलक अछि।[36] रमाकान्त मिश्र शिल्पक दृष्टियें प्रभासकें मनमोहन झासँ बेसी समीप मानैत छथि उमानाथ झासँ नहि। ओ ललितसँ प्रभासक कथाक तुलना करैत

कहैत छथि जे ललितक शिल्प पक्ष पर ओ बेसी ध्यान देने होथि से नहि लगैत अछि। ललित भावोद्देश्यक प्रसंग अपन कथामे बड़ सचेत छला, विषयान्तर हुनक कथामे विरले भेटत। एकर विपरीत प्रभासक कथामे अनेक विषयान्तर अछि जे कलात्मक रहितहुँ कथाक ढाठकें बोझिल बना दैत अछि।[37] तहिना राज मोहन झाक कथाक शिल्प सम्बन्धमे बात करैत सुभाष चन्द्र यादव कहैत छथि जे राजमोहन झाक शिल्प पर तर्कशील, चिंतनशील, मननशील आ आलोचनात्मक मेधाक स्पष्ट छाप अछि। हुनक शिल्प विश्लेषणसँ संश्लेषण दिस जयबाक प्रक्रियामे उद्‌भूत होइत अछि। राजकमल चौधरी आ राज मोहन झाक शिल्पक सम्बन्धमे सुभाषक कहब छनि जे राज मोहन झाक शिल्प राजकमल चौधरीक विपरीत अछि आ सर्वथा भिन्न त' अछिए। राजकमल चौधरी संश्लिष्ट संवेदना अर्थात् काव्यात्मक संवेदनाक कथाकर छथि। ओ परिस्थितिक 'डिटेल' मे नहि जाइत छथि आने ओकर विश्लेषण करैत छथि।[38] मैथिली कथालोचनमे कथाक बदलैत आ विकसित होइत शिल्पकें कथाक अन्तर्वस्तुमे आयल परिवर्तन आ विकासक संग विवेचनक जरूरति उपर्युक्त उदाहरणसँ जानल जा सकैत अछि।

भोगल यथार्थक समानान्तर सामाजिक यथार्थक कथा-प्रसंग मोहन भारद्वाजक कहब छनि जे मैथिली कथा साहित्यमे सामाजिक यथार्थ घनघोर रूपमे आयल अछि। मुदा सामाजिक यथार्थ कथा लिखब सामाजिक चेतनाक कथा लिखब नहि थिक। दूनूमे अन्तर अछि। जे कथाकार सामाजिक यथार्थक वर्णन करब पर्याप्त बुझैत छथि हुनका दिमागमे साहित्यक दर्पणवादी अवधारणा काज करैत रहैत छनि। तें ओ सामाजिक संरचनाक विभिन्न पक्षक दस्तावेज तैयार करबे धरि अपनाकें सीमित रखैत छथि। यैह कारण थिक जे सामाजिक सम्बन्ध, प्रवृत्ति तथा संघर्षक प्रतिबिम्ब त' हुनक कथामे भेटैत अछि मुदा सामाजिक चेतना नहि भेटैत अछि।[39] ओ सामाजिक चेतनाक पहिल मैथिली कथाक रूपमे 'रमजानी'क उल्लेख करैत छथि। हुनक कहब छनि जे युगीन बोधसँ सम्पृक्त भइयो क' सामाजिक चेतनाक कथा लेखनक गति बड़ मन्थर अछि। एही संग ओ मैथिली कथामे सामाजिक यथार्थक व्यक्तिवादी उपयोगक चर्च सेहो केलनि अछि। प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्तमे लोक-चिन्ता नहि

व्यक्ति-चिन्ता प्रमुख माननलनि अछि।[40] कहबाक प्रयोजन नहि जे कथामे सामाजिक चेतनाक अभाव आ सामाजिक यथार्थक व्यक्तिवादी उपयोगक जड़िमे मैथिली कथाकारक सामाजिक-वर्गीय स्थिति अछि। ओना एहि सन्दर्भमे इहो ध्यान देबाक अछि जे सामाजिक चेतनाक अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ मैथिली कथाक विवेचना नहि भेल अछि। कथामे जे अनेक प्रकारक चेतनाक द्वन्द्व रहैत अछि तकरो विवेचन नहि आयल अछि। एहन रचनामे सामाजिक यथार्थक विविधताक संग चेतनाक अनेकता जुड़ल भेटि सकैत अछि। एकरे संग सामूहिक चेतना आ व्यक्ति चेतनाक बीच सम्बन्धकें बुझबाक लेल समाज मनोविज्ञानक मदति लेब आवश्यक भ' सकैत अछि। समाजक अध्ययन द्वारा आचारसँ विचार आ विचारसँ आचार धरिक यथार्थकें बूझल जा सकैत अछि। यदि आचार यथार्थसँ सम्बन्धित अछि त' विचारो यथार्थसँ सम्बन्धित अछि।

मैथिली कथालोचनक ई सीमा देखा पड़ि सकैत अछि जे एखन धरि कथ्य ओ शिल्प-शैलीक संग कथाक सामाजिक अर्थ जो अभिप्रायक विवेचन नहि भेल अछि। मैथिली कथालोचन कथाक प्रवृत्तिगत इतिहास, कलात्मकता ओ ओकर सामाजिक सन्दर्भ कें फड़िछा क' नहि राखि सकल अछि। एहि प्रसंग आलोचनाक वर्तमान परिदृश्य पर टिप्पणी करैत कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनाक काज बहुत काल धरि गम्भीरता ओ आग्रहहीनताक संग सम्पादित नहि भेल। एही संग ओ ईहो कहैत छथि जे मैथिली आलोचनामे एखन जे हमरा देखबामे आबि रहल अछि ओहिमे सभसँ भयावह बात ई थिक जे आलोचना रचनाक नाम पर नहि, रचनाकारक नाम पर आग्रही भ' रहल अछि। परिणामस्वरूप जखन की वस्तुक स्वर आ स्वरूपकें ओहि रचना-चरित्रकें विश्लेषित करबाक चाहैत छलैक से नहि भ' सकल अछि।[41] एकर कारणमे हमरा वस्तु (कृति) सँ चेतना (कृतिकार) दिस बढ़बाक प्रयासमे वस्तु-चेतना निर्धारणक ओझरा लगैत अछि। जें कि चेतना लेखकक सामाजिक स्थिति पर निर्भर करैत अछि तें मैथिली कथाकारक सामाजिक स्थिति संग आलोचकोक सामाजिक स्थिति हुनकर दृष्टिकें वस्तुवादी हेबामे बाधा उत्पन्न करैत अछि। मैथिलीक आलोचको लोकनि जाहि वर्गसँ अबैत छथि से वर्ग ऐतिहासिक रूपसँ व्यक्तिवादी

रहल अछि तैं स्वाभाविक रूपसँ ओ बहुलांशमे व्यक्तिवादिये दृष्टिसँ वस्तु (कृति)कें देखैत रहल छथि। मुदा जहिना मैथिली कथामे यथार्थवादी दृष्टिक क्रमिक विकास भेल अछि तहिना कथालोचनोमे व्यक्तिवादी दृष्टि वस्तुवादी भ' रहल अछि।

एहि सन्दर्भमे हम तारानन्द वियोगीक एहि विचारसँ सहमत लगैत छी जे कथा-समीक्षाक क्षेत्रमे मार्क्सवादी दृष्टिक अतिरिक्त कोनो दोसर दृष्टिये नहि जनम लेलकैक तखन द्वन्द्व ककरासँ आ विकास कोना?[42] एहिमे हम एतबे संशोधन कर' चाहब जे रूपवादी दृष्टिक जन्म त' पुर्वहि भेलैक मुदा ओकर विकास नहि भ' सकल तैं आइ ओ द्वन्द्व लेल तत्पर ओ मोस्तैद नहि अछि। एहिसँ कथालोचनक विकास पर जरब नहि पड़लै से कोना अस्वीकारल जा सकैत अछि। मुदा हम वियोगीक एहि विचारसँ सहमत नहि छी जे कुलानन्द मिश्र अथवा मोहन भारद्वाजमे सँ कोनो एक्के गोटाकें जँ राखि लेल जाय त' दोसराक समाहार ओहीमे भ' जेतैक, दृष्टिगत तते एकरूपता छैक।[43] हमरा लगैए वियोगी द्वन्द्वात्मकताक बात कइयो क' ई बिसरि गेला अछि जे सही आलोचक अपन अनुभव आ विवेकक वैयक्तिकता जाग्रत रखैत अछि। द्वन्द्व त' मार्क्सवादी आलोचकोक बीच भ' सकैत अछि। से हेबाको चाहियैक। दृष्टि आ विचार त' कोनो जड़ वस्तु थिक नहि। ओ अपन गति बनौनहि रहत। ओकर विकास होइते रहतैक। जेना मैथिली कथाक संग कथालोचनोक विकास होइत रहतैक।

संदर्भ-संकेत

1. कुलानन्द मिश्र, प्रस्तावना, अनवरत (मोहन भारद्वाज) पृष्ठ-IX-X
2. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास (अंग्रेजी) पृष्ठ-269-260
3. मोहन भारद्वाज, अनवरत, पृष्ठ-39
4. ओएह पृष्ठ-39-40
5. सुधांशु शेखर चौधरी, विवेचना, पृष्ठ-ज
6. उमानाथ झा, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, पृष्ठ-118
7. मोहन भारद्वाज-सन्धान-4, पृष्ठ-56
8. तारानन्द वियोगी, किसुनजीक आलोचना-दृष्टि, आरंभ-7, पृष्ठ-57

9. कुलानन्द मिश्र, रचनामे सोद्देश्यताक बात, सन्निपात-4, पृष्ठ-39
10. कुलानन्द मिश्र, फराक-1, अन्त मे
11. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
12. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली साहित्य ओ राजनीति, पृष्ठ-11
13. भीमनाथ झा, कथामे मध्यमवर्ग, साहित्यालाप, पृष्ठ-55
14. कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-182
15. नामवर सिंह, वाद विवाद संवाद, पृष्ठ-22
16. जीवकान्त, समकालीन कथा साहित्य : समकालीन परिप्रेक्ष्य पृष्ठ-32
17. कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-163
18. ओएह, पृष्ठ-169
19. मोहन भारद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर कथाक प्रवृत्ति-एक विश्लेषण, मि॰ मिहिर 9 एवं 16 नवम्बर 1975
20. रमानन्द झा 'रमण', छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा, मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च-अगस्त 1989
21. मेघन प्रसाद, कथाकोश, पृष्ठ-XVII
22. कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-176
23. कुलानन्द मिश्र, रचनामे सोद्देश्यताक बात, सन्निपात-4, पृष्ठ-35
24. सुधांशुशेखर चौधरी, सम्पादकीय मि॰मिहिर, 8 सितम्बर 1974
25. तारानन्द वियोगी, सन्धान-4, पृष्ठ-241
26. नामवर सिंह, कहानी नयी कहानी, पृष्ठ-138
27. मोहन भारद्वाज, अनवरत, पृष्ठ-65
28. जयधारी सिंह, सम्पादकीय, मैथिली कथा-संग्रह, पृष्ठ-9
29. भीमनाथ झा, साहित्यालाप, पृष्ठ-57
30. कुलानन्द मिश्र, कथा यात्राः सातम दशक धरि, मैथिली अका॰ पत्रिका मार्च-अगस्त 1989
31. कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-169
32. रामानुग्रह झा, मिथिला दर्शन, दिसम्बर 1973
33. राज मोहन झा, अग्निपत्र, 3-4, पृष्ठ-28
34. लुकाच का यथार्थ-दर्शन, पाश्चात्य कथा-सिद्धान्त, पृष्ठ-18
35. देवशंकर नवीन, आधुनिक साहित्यक परिदृश्य, पृष्ठ-37
36. शिवशंकर श्रीनिवास, सन्धान-3, पृष्ठ-27
37. रमाकान्त मिश्र, मैथिली आलोचना, पृष्ठ-38
38. सुभाषचन्द्र यादव, अंतिका, जुलाई-सित॰ 2001
39. मोहन भारद्वाज, एकल पाठ, पृष्ठ-85-86
40. ओएह
41. कुलानन्द मिश्र, सन्धान-4, पृष्ठ-181
42. तारानन्द वियोगी, सन्धान-4, पृष्ठ-256-257
43. ओएह

(आरंभ, अगस्त, 2002, मैथिल आँखि, पोथी, 2007 ई॰)



मोहन भारद्वाज आ मैथिली कथालोचन

ओलोचक मोहन भारद्वाजक पोथी 'कथा-गोष्ठी' मैथिली कथालोचनक पहिल पोथी थिक। एकर प्रकाशन 2008 ई॰ मे भेल। मैथिली कथा आधुनिक समयमे एक सय वर्षसँ लिखल जा रहल अछि। कथालोचनक पोथी मुदा सय वर्षक बाद आयल। एहिसँ पूर्व कथाक आलोचना सम्बन्धी कोनो पोथी प्रकाशित नहि भेल छल। विश्वविद्यालयमे शोध भेल छल। पत्रिका सभमे पाठकीय प्रतिक्रिया रूपमे, आलोचनात्मक निबन्ध रूपमे, कथापोथीक समीक्षा रूपमे, टिप्पणी रूपमे कथाक समीक्षा वा आलोचना प्रकाशित कयल गेल छल। मैथिली साहित्यक इतिहास सभमे कथा लेल फराक अध्याय रहैत छल आ विभिन्न आलोचक सभक द्वारा आन-आन विधाक कवि-रचनाकारक, कथाकारक संग मैथिली कथापर सेहो ओहिमे आलोचनात्मक निबन्ध सम्मिलित रहैत छल। आलोचक मोहन भारद्वाज सेहो अपन 'अनवरत' ओ 'एकल पाठ' पोथीमे विभिन्न विधा पर आलोचनात्मक निबन्ध संग कथो पर निबन्ध आदि के सम्मिलित केने रहथि। डा॰ मेघन प्रसाद अपन पोथी 'मैथिली कथाकोश' मे कथा पर लिखल सहायक निबन्धक सूची मे एहन दू सय नब्बे निबन्धक उल्लेख केने छथि। ई निबन्ध सभ वर्ष 1946 ई॰ सँ वर्ष 1995 ई॰ धरि प्रकाशित भेल अछि। एही संग ओ एक सौ बीस प्रसिद्ध कथा पर विभिन्न लेखकक द्वारा विभिन्न पत्रिका सभमे आयल टिप्पणी सभ सेहो देने छथि। मोहन भारद्वाजक 'कथा-गोष्ठी'क बाद मैथिली कथा पर दोसर पोथी शिवशंकर श्रीनिवासक 'बदलैत स्वर' आयल अछि। दूनूमे आरम्भिक कथा सँ ल' क' वर्त्तमानमे लिखल जा रहल कथाक विकास, प्रवृत्ति ओ स्वरूपक संग विभिन्न कथाकारक कथाक विश्लेषण अछि।

'कथा-गोष्ठी'मे मैथिलीक तीन प्रसिद्ध कथा 'रंगीन परदा' (लिली रे), 'छठि परमेसरी' (धूमकेतु) आ 'सिनुरहार' (शिवशंकर श्रीनिवास) क विस्तारसँ विश्लेषण संग आलोचनात्मक निबन्ध अछि। मैथिली कथालोचनमे ओना आलोचक रमानाथ झा, जयधारी सिंह, रामदेव झा, भीमनाथ झा, रमाकान्त मिश्र, कुलानन्द मिश्र, रामानुग्रह झा, राज मोहन झा, रमानन्द झा 'रमण', उदयचन्द्र झा 'विनोद', सुभाषचन्द्र यादव, विभूति आनन्द, तारानन्द वियोगी, रमेश ओ देवशंकर नवीनक कथालोचनक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि।

आलोचक मोहन भारद्वाज 'कथा-गोष्ठी'' पोथीक भूमिका 'जन्मशतीक अवसर पर' मे लिखने छथि जे मैथिलीक पहिल प्रकाशित कथा अछि 'मोहिनी मोहन'। जेकर प्रकाशन वर्ष 1907-1908 ई॰ मे भेल। वस्तुत: जीवनाथ मिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र काव्यतीर्थ द्वारा लिखित 'मोहिनी मोहन' पोथीक रूपमे प्रकाशित भेल छल। पोथीमे मिथिला भाषाक उपन्यास लिखल अछि। ओहिमे कथा चारि अध्यायमे लिखल गेल छैक। संक्षिप्त रूपमे। ओहिमे उपन्यासक सभ तत्व छैक। ओकरा व्यापक रूपें लिखल जा सकैत छलैक। रहस्य, रोमांच, प्रेम, विवाह, ऐआरी, जासूसी सन एहन युक्ति सभक उपयोग कयल गेल छैक जे यदि ओकरा सय-दू सय पृष्ठमे विस्तारसँ लिखल जइतैक त' हिन्दीक 'चन्द्रकान्ता' सन के उपन्यास होइतैक। मैथिलीक बहुतो आलोचक मोहिनी मोहन संग बहुतो आरम्भिक उपन्यास के कथा मानैत छथि। हमरा हिसाबें मैथिलीक पहिल उपन्यासक सभ योग्यता 'मोहिनी मोहन' के प्राप्त छैक। अद्यतन रूपसँ आलोचक रामदेव झाक अनुसार जलधर झाक लिखल आ वर्ष 1906 मे प्रकाशित 'विलक्षण दाम्पत्य' मैथिलीक पहिल कथा थिक। ओना जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'तारा वैधव्य' जे 1917 ई॰ मे प्रकाशित भेल से मैथिलीक सामाजिक जीवनसँ जुड़ल पहिल मौलिक कथा थिक। आलोचक शिवशंकर श्रीनिवास लिखलनि अछि जे, 'एहि कथामे जाहि तरहक कथानक अछि, चरित्र-चित्रण वर्णन-विन्यास अछि आ सभसँ बेसी जे कथामे कथ्य अछि ओ एहि कथाकें आजुक कथाक प्रारम्भिक रूपसँ जोड़ैत अछि।'[1] एताबता, आधुनिक समयमे मैथिलीक लिखित कथाक आरम्भ भेल आब एक सय वर्षसँ उपर भ' गेल अछि। मुदा

कथाक आलोचना पर पोथी एक सय वर्षक बादे प्रकाशित भेल। मोहन भारद्वाज ओना ईहो कहलनि अछि जे मैथिलीमे आलोचनाक आरम्भ सेहो 'मिथिला मोद' मे लिखित मुरलीधर झाक आलोचनात्मक टिप्पणीसँ भेल। ओ मिथिला मिहिर मे प्रकाशित परमेश्वर झाक मिथिला तत्व विमर्शक आंशिक प्रकाशन भेला पर ओहि पर टिप्पणी केने रहथि। एहि क्रममे मोहन भारद्वाज आगू कहैत छथि, 'माने ई जे मैथिली साहित्यमे कथा आ आलोचना बएसक हिसाबें संगतुरिया अछि। मुदा आइ मैथिलीक प्रथम प्रकाशित कथाक जन्मशतीक अवसर पर दूनूक देह-दशा देखैत छी तँ बड़ अन्तर बुझाइत अछि। कथाक विकास जतेक द्रुतगति सँ भेल अछि ततेक समीक्षाक नहि। ओना, कथा-नाटक सँ समीक्षा आयुमे छोट हो से स्वाभाविके अछि, किन्तु गुणवत्ता आ उपलब्धि मे समीक्षाक डेग हनब अन्तत: सर्जनात्मको साहित्यक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ैत अछि।'[2]

मोहन भारद्वाजक पहिल रचना ओना एक कथा अछि जे 'वैदेही' पत्रिकामे 1965 ई॰ मे छपल। ओ कविता सभ सेहो लिखलनि। अन्तत: ओ एक आलोचक रूपमे विख्यात भेला। हुनक मोन रमैत छलनि आलोचनामे। पोथी सभक सम्पादन केलनि। अनुवाद केलनि। आलोचनाक पहिल पोथी छल 'अनवरत' जे 1995 ई॰ मे प्रकाशित भेल। पूर्वमे ओ विभिन्न विधा ओ विभिन्न विधाक रचनाकार पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि। बादमे ओ एक पोथी, एक विषय ओ एक रचना पर केन्द्रित होइत गेला। यात्रीजीक उपन्यास 'बलचनमा' पर ओ 'बलचनमा : पृष्ठभूमि ओ प्रस्थान' पोथी लिखलनि। डाक पर 'डाक-दृष्टि' नामसँ पोथी प्रकाशित केलनि। ज्योतिरीश्वर पर, विद्यापति पर, चन्दा झा पर लिखल निबन्ध सभ अपन मौलिकता लेल मोन रखबा योग्य अछि। एक कथाक आलोचना केलनि त' एक कविता पर सेहो विस्तारसँ आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि। साहित्य हुनका लेल समाजसँ फराक नहि छल। ओ कहैत छथि जे, 'साहित्य रचनाक प्रक्रियाक तीनटा मुख्य बिन्दु थिक- रचनाकार, रचना आ पाठक। संस्कृत काव्यशास्त्रमे रचनाक विवेचन पर जोर देल गेल, रचनाकार आ पाठक के गौंण मानल गेल। आजुक आलोचना जखन साहित्य पर समग्रतामे विचार करैत अछि त' उक्त तीनू बिन्दु पर ध्यान देब आवश्यक भ' जाइत छैक। रचनाकार पर विचार

करैत काल रचनाक सामाजिक भूमिका मुखर होइत छैक। साहित्य आ समाजक सम्बन्ध कें फड़िछयबाक लेल साहित्यमे सामाजिक स्थिति पर विचार करब अपेक्षित अछि।'[3] हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान' ओ 'द्विरागमन' पर विचार करैत ओ ओहि निबन्धक शीर्षक देलनि, 'समाज-अध्ययन अनिवार्य विषय थिक।' आ शिवशंकर श्रीनिवासक कथा 'सिनुरहार' पर विचार करैत शीर्षक देलनि 'कथा कहबाक अर्थ दुर्गञ्जन नहि होइत अछि'।'

मोहन भारद्वाजक कथालोचन केवल 'कथा-गोष्ठी' पोथीमे संग्रहीत निबन्ध धरि सीमित नहि अछि। ओ वार्त्ता, संवादक संग बहुतो असंग्रहीत निबन्ध, टिप्पणी, समीक्षाक माध्यमे सेहो मैथिली कथा पर अपन मन्तव्य प्रकट कयने छथि। तैं हुनक कथालोचन के बुझबाक लेल ओहि सभ सामग्रीक अध्ययन-विश्लेषण आवश्यक अछि। अपन एक इन्टरभ्यूमे ओ कथाक आरम्भ ओ कथाक विकास पर सामाजिक-ऐतिहासिक दृष्टिसँ विचार प्रकट केने छथि। ओ कहैत छथि जे, 'मैथिली कथा साहित्यक अपन इतिहास छैक। प्रारम्भमे भाववादी आ प्राचीन सौन्दर्यवादी सरणि पर कथा-रचना भेल। किरणजी आ हरिमोहन झा ओकरा सामाजिक आधार देलनि। हरिमोहन झाक बाद ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द आदि कथाकार एहि क्षेत्रमे अयलाह। छठम दशकक उत्तरार्द्ध सँ सातम दशकक अन्त धरि मैथिली साहित्यिक प्रतिभा कथा क्षेत्रमे लहलहायल। किन्तु एहि कालक कथाकार स्थितिक उपस्थापन धरि सीमित रहि गेलाह। तकराबाद मैथिली कथाक विषय-वस्तुमे व्यापकता आयल। अभिजनसँ जनधरि ओ पहुंचल। भाषा सेहो भावुकताक झुल्ल उतारलक। ठोस जमीन परहक गप्प ठोस भाषामे होमय लागल। किन्तु, कथाकार लोकनि एकटा कृत्रिम शालीनताक भीतर रहि क' स्थितिकें देखबाक प्रयास केलनि। स्वतंत्र भारतमे जनमल कथाकार जखन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न आदि राक्षसी शक्तिक सम्मुखीन भेलाह तखन हुनक सोच आ भाषामे परिवर्त्तन आयब स्वाभाविक भ' गेल। तैं हुनक कथाक भाषा आक्रोश-मूलक अछि। हुनक कथाक विषय सिविल नहि, फौजदारीबला अछि। कथाक विकासक ई संक्रमणकाल नवम दशक धरि अबैत-अबैत प्राय: समाप्त भ' गेल। कथाकार लोकनि ई बात बुझलनि जे स्थितिक दंश मिथिलाक

लोक भोगि रहल अछि अवश्य, किन्तु ओहि स्थितिक कारण आ निदान मिथिलामे नहि छैक। क्षेत्रीय समस्या, व्यापक समस्याक स्थानीय अभिव्यक्ति थिक। स्थानीय भाषामे कथा बनि क' ओ आबय से उचित आ आवश्यक। किन्तु ओकर स्थायी निदानक हेतु व्यापक कारण आ समाधानक दूरी धरि जायबो ततबे अनिवार्य अछि। मैथिली कथाकारक ई युगबोध हुनक कथाक स्वरमे परिवर्त्तन अनलकनि।'[4] मैथिली कथाक विकास, बदलैत प्रवृत्ति, कथाकारक सोच-विचारमे होइत बदलाओ आदि कें जेना ओ किछुए पांतीमे राखि देलनि अछि से ओहिना नहि भेल अछि। एहि लेल हुनक मैथिली कथाक गहींर अध्ययन-मनन, समय संग बदलैत सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितिकें देखबाक दृष्टि आ कथाक भाव, कथ्य, भाषा, स्वरूप के सम्बन्धमे चिन्तन-मनन रहल अछि। मोहन भारद्वाजक कथालोचन पर अपन मन्तव्य दैत आलोचक कमलानन्द झा कहैत छथि, 'हिनक मान्यता अछि जे मैथिली कथामे सुधारवादी मानसिकता आ भाववादी कथा-दृष्टिकें सभसँ पहिने हरिमोहन झाक कथा तोड़ैत अछि। मोहन भारद्वाज आधुनिक मैथिली कथाक आरम्भ ललितक कथा रमजानी सँ मानैत छथि। मात्र मानिते नहि छथि, अपितु ओकर ठोस कारण सेहो बतबैत छथि। नेहरू युगमे कृषिसँ बेसी महत्व उद्योग कें देल गेलैक। नव-नव कारखाना खुजल, लोकमे नव-नव आशा-आकांक्षा जगलैक। भारद्वाजजीक अनुसारे 'रमजानी तकरे कथात्मक अभिव्यक्ति छल।' एहिमे नब औद्योगिक चेतनासँ बहराइत मशीनी युगक प्रति आस्था आ ललक देखबामे अबैत अछि। कृषि निर्भर आर्थिक व्यवस्थाक मारल रमजानी आ ओकर आश्रित लेल नव सपनो देखब छोट बात नहि छल। भारद्वाजजीक आलोचना-कर्म कथाकें तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक पृष्ठभूमिमे देखबाक प्रयास करैत अछि। कथाक विषय-वस्तु, भाषा आ शिल्प पर टिप्पणी लिखि समीक्षाक इतिश्री बुझयबला आलोचक भारद्वाजजी नहि छथि। ओ ओहि कथाकार कें पैघ रचनाकार मानैत छथि जनिक कथा कालसँ संघर्ष करैत अछि, पैघ विजन संग नव कथन-शैलीमे लिखल गेल हो। मोहन भारद्वाज सामाजिक यथार्थक वर्णन करयबला कथाकारकें पैघ कथाकार नहि मानैत छथि। जे कथाकार सामाजिक यथार्थकें सामाजिक चेतना धरि पहुंचा दैत अछि, ओएह कथाकार पैघ

कथाकार भए सकैत अछि।'[5]

आलोचक मोहन भारद्वाजक आलोचनाक जे दृष्टिकोण अछि से मार्क्सवादी दृष्टिकोण अछि। ओ ओहि दृष्टिकोणसँ समाजशास्त्रीय कसौटीपर साहित्यक अध्ययन करैत छथि। ओ साहित्यमे समाज के तकैत छथि आ समाजमे साहित्यक सार्थकता निरूपित करैत छथि। ओ कहैत छथि जे, 'साहित्य आ समाजक पारस्परिक सम्बन्ध कें बिकछा क' बुझबाक लेल ओकरा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखब अनिवार्य अछि। प्रत्येक युगक अपन परिस्थिति होइत छैक, किन्तु कोनो युगक परिस्थिति पूर्ववर्ती युगक परिस्थिति सँ सर्वथा असम्बद्ध नहि रहैत अछि। ओहिमे एकटा निरन्तरता होइत छैक। पुर्वापर सम्बन्ध रहैत छैक। कोनो काल विशेषक साहित्य एकरे उपजा थिक। किन्तु, देखबाक बात एतबे नहि अछि। हम सभ जनैत छी जे सामाजिक स्थिति जकाँ साहित्योक दू टा धारा रहल अछि - लोकाश्रयी आ सत्ताश्रयी। बौद्ध धर्मक प्रचार हेतु सिद्धलोकनि मिथिलाक जन-सामान्य लेल जाहि गीतक रचना कयलनि से लोकाश्रयी धाराक वस्तु छल। ओ जनताक चर्यागीत थिक। डाक वचन सेहो मिथिलाक ग्रामीण कृषि समाजक चर्यागीत थिक। डाकक साहित्य-चिन्तनमे समाजक चिन्ता केन्द्रीय स्थान पर अछि।'[6] समाजक जे ई लोकाश्रयी धारा अछि, जाहिमे समाजक चिन्ता प्रमुख रहैत छल, ओहि सामाजिक परम्पराके ओ समानान्तर धारा नहि मुख्यधारा मानैत रहथि। ई एकटा दृष्टि छल, दृष्टिकोण अछि। ओ डाकवचन पर लिखल पोथीक नाम 'डाक-दृष्टि' ओहिना नहि रखलनि। एकर पाछू हुनक तर्क छल, विश्वास छल। आलोचक कमलानन्द झा ठीक लिखलनि अछि जे, 'मार्क्सवादी रचनाकार वा आलोचककें प्रश्नांकित कएल जाइत रहल अछि जे ओ परम्पराक मादे गम्भीर नहि रहैत छथि आ ओकरा हीन बुझैत छथि। ई नितान्त मिथ्या अवधारणा अछि। मोहन भारद्वाजक आलोचनाक आधा भाग मिथिलाक परम्परासँ नाभि-नाल जकाँ जुड़ल अछि। मार्क्सवाद परम्परा-बोध सिखबैत अछि, मुदा परम्परा के अतीत रागसँ मुक्त रखैत अछि। परम्परासँ प्रगतिशील तत्वकें ताकब-हेरब आवश्यक बुझैत अछि। परम्पराक प्रति आलोचनात्मक विवेक मार्क्सवादी चिन्तन पद्धतिक विशेषता रहल अछि। 'डाक-दृष्टि' पर स्वतंत्र पोथी लिखब भारद्वाजजीक परम्परा आ देसज आधुनिकताक प्रतिएँ सकारात्मक

सोचक अन्यतम उदाहरण थिक।'[7]

मोहन भारद्वाजक मानब छल जे जाबत लोकाश्रयी धारा आ वाचिक परम्पराक संग ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिक लोक पक्ष फड़िच्छ नहि होयत तावत ललित आ राजकमल के बूझव सेहो कठिन अछि। हुनकर नजरिसँ मिथिला कहियो ओझल नहि भेल। ओ त' ईहो कहि गेल छथि जे मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिला के पढ़ि क' कयल जेबाक चाही। कोनो सिद्धान्त आ दृष्टिकोण कतेक दूर तक हमर जनपदकें आ ओकर साहित्यकें प्रभावित कयलक अछि से देखब मैथिली आलोचनाक मुख्य काज छैक। प्रश्न अछि जे कोन मिथिला? मुट्ठी भरि लोकक मिथिला नहि। जन-सामान्यक मिथिला। ओ चेता गेल छथि जे, 'मुट्ठी भरि लोकक आचार-विचार आ सौख-सेहन्ता कोनो जनपदक खुशी आ सम्पन्नताक मापदण्ड नहि भ' सकैत अछि। एहि मापदण्ड के बदल' पड़त। कसौटी ताक' पड़त। महाजनक तराजू आ बटखारासँ संस्कृति आ साहित्यकें जाधरि तौलैत रहब ताधरि यैह हाल रहत।'[8] त' हुनकर आलोचनाक जे उद्देश्य छलनि, दृष्टिकोण छलनि, से मैथिली कथा-लोचनक बाट के आर प्रशस्त केलक। आलोचक कुलानन्द मिश्र जाहि बाटें अपन आलोचनाक यात्रा आरम्भ केलनि ओहि बाट के मोहन भारद्वाज आर समतल केलनि, चौरगर ओ चौरस केलनि। आलोचना आब पाठक संग सीधा संवाद कर' लागल। ओहिमे मिथिला-विमर्श जुड़ि गेल। मैथिली कथा-परम्परा आ ओहि मे निहित प्रगतिशीलताक बाट प्रशस्त भेल। ई ओहिना नहि अछि जे मोहन भारद्वाज कथामे रूपसँ बेसी वस्तु के मोजर देलनि। ओ कहलनि जे कथा लेल शैल्पिक प्रयोग साध्य नहि, साधन थिक। कथाक अन्तर्वस्तुक चमक ओहिसँ बढ़ैत छैक, ओकर सम्प्रेषणीयतामे वृद्धि होइत छैक तखने ओ स्वीकार्य थिक। अन्तर्वस्तुक मांगक अनुरूप शिल्प आ भाषाक समतल भेला पर कथा स्वत: बेछप भ' जाइत छैक। ओ मानैत छला जे रूपहीन कथा नहि भ' सकैत छैक। मुदा रूप के प्राथमिकता देब ठीक नहि अछि। वस्तुत: प्राथमिकता वस्तु के हेबाक चाही। विचार के हेबाक चाही। ओ 'कलाक लेल कला'क अपेक्षा 'जीवन लेल कला' के महत्व दैत रहथि। एही संग मोहन भारद्वाज मैथिली कथाकें देश आ विश्वक व्यापक राजनीतिक, आर्थिक ओ सामाजिक पृष्ठभूमिमे देखलनि।

एहि देखबामे सामाजिक वर्ग आ ओहिसँ सम्बन्धित विषय हुनक दृष्टिपथ पर आयल। ओ जाति-प्रथा आ सम्प्रदायवाद अर्थात धार्मिक कट्टरतावाद के जौंआ कहलनि। ई मानलनि जे ई दूनू समाजक एकताक शत्रु अछि। जेना कुलानन्द मिश्र ई मानैत छला जे कथाकार सुभाषचन्द्र यादव मैथिली कथाक बहुतो रूढ़ि के तोड़बाक संग मैथिली कथाकें पुन: ओहि सुगन्धसँ सुवासित कयलनि जे हम सभ मैथिलत्वक सुगन्धि रूपमे जनैत आयल छी। तहिना मोहन भारद्वाज कहब छनि जे, 'चीनसँ भेल पराभवक बाद आ पाकिस्तानकें सैंतबाक बीचक अवधिमे भारतीय मानसिकता आ आवश्यकता के चिन्हैत लालबहादुर शास्त्री जय जवान-जय किसानक उत्साहबर्द्धक नारा देलनि।लोक के बुझा गेलैक जे महानगरीय तामझाम विकासक प्रतिमान नहि थिक। गाम के देख' पड़त। गामक लोक ओहिनाक ओहिना अछि। निम्नवर्गक दशामे कोनो सुधार नहि भेलैक अछि। स्थितिक यैह साक्षात्कार 'घरदेखिया' सन कथाक जन्म दैत अछि। ई संघर्षक कथा नहि थिक। ई मध्य अथवा निम्न मध्वर्गक मोहभंगोक कथा नहि थिक। ई थिक निम्न वर्गक पराभव आ ओहि वर्ग द्वारा तकर करुण स्वीकारक कथा। ओहि वर्गक दयनीय स्थितिक क्लोजअप। ई बात नहि अछि जे निम्नवर्गक कथा एहि सँ पूर्व नहि कहल गेल छल। मुदा, एतेक धरि निश्चित जे छठम आ सातमो दशक धरिक कथामे मध्येवर्ग मुखर रहल अछि। ओकरे स्थिति। ओकरे चिन्ता। ओकरे आक्रोश। सुभाषचन्द्र यादवक कथा ओहिसँ भिन्न अछि।'[9] एहिना ओ आठम आ नवम दशकक कथाके व्यापक पृष्ठभूमि संग जोड़ि क' देखबैत छथि। ओ 1967क चुनावमे व्यक्त जनाक्रोश, नक्सलबाड़ी आन्दोलन, विरोधक मुद्रा के हिंसक होयब, बेकारी आ बेरोजगारी, युवाशक्तिक जागब, विस्फोटक होइत स्थितिक पृष्ठभूमिमे मैथिली कथामे आयल आक्रमकता के, संघर्षक आक्रमक रूप के न्यायोचित मानैत ओकर मर्म के उद्घाटित करैत छथि। एही संग ओ चेतौनी सेहो दैत छथि। कथाक मूल के फड़िछबैत कहैत छथि जे कथाक काज थिक सुसुप्त संवेदनाके जगायब। ओकरा उद्दीप्त करब। ई काज यथाावत उपस्थापनसँ नहि भ' सकैत अछि। यथार्थक कलात्मक प्रक्षेपण हेबाक चाही। कलाबाजी नहि। अन्तत: ओ मैथिली कथाक वर्तमान के प्रसंगमे कहैत छथि, 'स्पष्ट अछि जे आजुक कथा प्रतिकार

आ प्रतिहिंसाक अपरिहार्यता पर विश्वास करितो संवेदना आ सौन्दर्य के मेरुदण्ड मानैत अछि। प्रतिकूल आचरणक विरोध ओ जमि क' करैत अछि, मुदा से भाषाक सतह पर नहि, संवेदनाक धरातल पर। असगर लाठी भांजि क' नहि, सामूहिक चेतना के उद्दीप्त क' क'। राजनीतिक आ आर्थिक क्षेत्रेमे नहि, धार्मिक आ सांस्कृतिक महार पर सेहो। आजुक कथाकार जनैत छथि जे आक्रान्ता दशानन अछि आ तैं ओहो सभ सहस्त्रबेधी वाण चलबैत छथि। आजुक कथाक व्यापकता आ वेधकताक यैह कारण थिक।'[10] आजुक कथाक सम्बन्धमे आलोचक मोहन भारद्वाजक एहि टिप्पणीक परिप्रेक्ष्यमे हुनका बादक आलोचक शिवशंकर श्रीनिवास ओ तारानन्द वियोगीक टिप्पणी के देखब सेहो समीचीन होयत। ई दूनू आलोचक मैथिली कथालोचनक क्षेत्रमे सेहो लगातार काज करैत रहला अछि। शिवशंकर श्रीनिवास कहैत छथि, 'कोनो सत्ता समाजक यथास्थिति चाहैत अछि आ कर्मकाण्ड ओहि लेल अमोघ अस्त्र थिक। कर्मकाण्डक अतिरिक्त समाजमे लेपित आचार सामन्त-जनक सुविधासँ वा ओकर लेल कयल जाइत कार्यक अनुकरण थिक। आजुक समाज ओहि सँ बहराय चाहैत अछि। जाहिमे ओकरा सामन्ती मन:स्थितिसँ संघर्ष करय पड़ैत छैक। ओहि संघर्ष के मैथिली कथा बल दैत आगू आयल अछि। जे कथा मैथिलीमे लिखा रहल सांस्कृतिक चेतनाक कथा थिक। एहि सँ मैथिली कथामे एकटा अद्‌भुत बात भेटत। ओ ई जे मैथिली कथामे एखनो मानवीय संवेदन लबालब भेटत आ भेटत भूमि।'[11] तारानन्द वियोगी आजुक कथाके नवचरणक कथा कहलनि अछि। ओ कहैत छथि, 'नवचरणक मैथिली कथामे शुद्र, स्त्री आ बच्चा एहि तीनू दलित समूहक आबा-जाही व्यापक रूपसँ बढ़ि गेल अछि। ई तीनू दलित समूह जे कथामे आबि रहल अछि, से सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग आबि रहल अछि। जें कि लेखकक नीयत साफ-साफ जीवनमे आस्थाक खोज रहैत अछि, अखण्डमानस व्यक्तित्वक कथापात्र एम्हर मैथिली कथामे खूब आबि रहल अछि।'[12] ई तीनू आलोचक ओहि कालखण्डक मैथिली कथा पर टिप्पणी क' रहल छथि जखन भूमण्डलीकरण आ बाजारवाद दुनियाँक संग अपन देशो पर हॉवी भ' गेल अछि। सत्ता सँ ल' क' समाज पर ओकर असरि व्यापक रूपें पड़ि रहल अछि। मुक्त बाजारक संग दकियानूसी आचार-व्यवहार के प्रश्रय देल

जा रहल अछि। एहन कालखण्ड मे मैथिली कथाक सम्बन्ध मे लिखल टिप्पणी के एहि कारणे प्रस्तुत कयल अछि जे मैथिली कथालोचनक क्षेत्रमे आलोचक लोकनिक काज के अकानल जा सकय। तीनूक दृष्टि ओ मन्तव्य के बूझल जा सकय। स्पष्ट अछि जे तीनूमे भिन्नता अछि त' कतहु एकरूपता सेहो। एकरूपता एहि अर्थमे जे तीनू कथाके संवेदनाक धरातल पर देखब आवश्यक बुझैत छथि। कथामे संवेदनाके महत्व दैत छथि। कथाके समाजसँ जोड़ि क' देखैत छथि। सामूहिक चेतना आ मनुष्यताक पक्षमे कथाक औचित्यके प्रमुखता दैत छथि। भिन्नता समाजके देखबाक दृष्टिमे अछि। मोहन भारद्वाज आ शिवशंकर श्रीनिवास समाजके वर्ग-दृष्टि सँ देखलनि अछि त' तारानन्द वियोगी दलित-दृष्टि सँ। आवश्यकता समाजके दूनू दृष्टिसँ देखबाक अछि। वर्त्तमानमे मैथिली कथालोचन लेल दूनू दृष्टिक महत्व अछि। भविष्य एकर उपादेयता के क्रमश: आर बढ़ेबे करत। समाजमे वर्ग एक यथार्थ थिक त' जाति सेहो एक यथार्थ थिक। शोषित-दलित आब शब्दयुग्म बनि गेल अछि।

मोहन भारद्वाज मैथिली कथामे गद्यक विकासके सामाजिक-ऐतिहासिक दृष्टिसँ देखलनि अछि। ई मानलनि अछि जे कथा पाश्चात्य साहित्यक देन थिक मुदा मैथिली कथा पर पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव बहुत कम पड़ल अछि। ओ मानैत छथि जे कथा आ ओकर भाषाक सम्बन्ध समाजक मूल्यबोध सँ छैक। सामाजिक परिवर्त्तन संग कथाक भाषामे परिवर्त्तन आयल अछि। ओ कहलनि अछि जे भाषाक सामर्थ्य ओकर पाचनशक्ति मे निहित छैक। पाचन-शक्ति शब्द-प्रयोगक लोकधर्मिता सँ बढ़ैत छैक। हुनकर कहब अछि जे, 'कथाक भाषा बजबाक भाषा लग आबियो क' बजबाक भाषा नहि भ' सकैत अछि। प्रारम्भिक कथामे लेखकीय भाषा तथा कथनोपकथनक भाषामे कोनो खास अन्तर नहि छल। मानक भाषाक प्रयोग करबाक मनोवृत्ति दूनू रूपक भाषाकें संस्कृतनिष्ठ बना दैत छल। किन्तु किछु कालक बाद लेखकीय भाषातँ संस्कृतनिष्ठ रहल, कथनोपकथनक भाषा बदलि गेल। पात्रानुकूल भाषा-प्रयोगक आवश्यकताक ज्ञान कथनोपकथनक भाषामे देशज शब्दक अनुपात बढ़ा देलक। लेखकीय भाषा तथा कथनोपकथनक भाषाक बीच फाँक चाकर भ' गेल। किन्तु, कथाक भावभूमिमे क्रमश: व्यापकता आयल आ तखन कथा-भाषाके

सहज-स्वाभाविक बनेबाक इच्छासँ लेखकीय भाषाकें सेहो कथनोपकथन भाषा बना देल गेल।'[13]

अंतमे मोहन भारद्वाजक कथालोचनक भाषा पर सेहो विचार होयब आवश्यक अछि। हुनकर सम्पूर्ण आलोचना-साहित्ये जकां हुनक कथालोचनक भाषा सेहो एकदम साफ-साफ, सोझ-सोझ आ संवादधर्मी अछि। भाषा एहन सहज तखने भ' सकैत छैक जखन माथमे विचारधाराक स्तर पर कोनो ओझरी नहि हो। संगहि आलोचनाक भाषाके गुरू-गम्भीर बना क' रखबाक पारम्परिक बाध्यता आलोचक अनुभव नहि करैत हो। पाठक संग आलोचक समान धरातल पर संवाद करबाक आवश्यकताके प्राथमिकता दैत हो। एहनामे आलोचनाक भाषा सेहो रचनात्मक होयब स्वाभाविक अछि। भाषाक यैह लोकतांत्रिक स्वरूप मोहन भारद्वाजक आलोचनाक विशेषता थिक। हुनकर आलोचनाक भाषाक महत्व पर आलोचक तारानन्द वियोगी लिखलनि अछि जे, 'पहिने जे आलोचना विहित शैली मे होयबाक कारण पूर्वबोधापेक्षी छल, मने ओकरा नीक जकां बुझबाक लेल पण्डित विद्व ने लोक सक्षम भ' सकैत छला, आब से आलोचना साधारणो पाठक अपन यथालब्ध बोधक संग बुझबामे समर्थ भ' गेल। मुदा जँ ई कही जे सामान्यजनक भाषामे आलोचना कें प्रस्तुत क' सकब कोनो सामान्य काज थिक, जकरा कियो बुद्धिमान व्यक्ति अभ्याससँ सिद्ध क' सकैत अछि, तँ सेहो कहब गलत होयत कारण भीतरक अन्तर्वस्तु मे जा धरि स्पष्टता आ पारदर्शिता नहि रहतैक केवल बाहरी भाषामे ओकरा व्यक्त क' लेब एक प्राणहीन कबायद मात्र भ' क' रहि जायत। एकरा लेल समाज संग, इतिहास आ आर्थिकीक संग जे चयन-विवेक, अवगति आ आपकता चाही, तकरा साधबाक लेल कोनो लेखक कें ओहिना अपन जीवन समर्पित करय पड़ि सकैत छनि जेना मोहन भारद्वाज कयलनि। एकर कोनो शार्टकट होयब संभावित नहि अछि। कहियो भैयो नहि सकैत अछि।'[14]

मैथिलीक कथा मादे जेना कुलानन्द मिश्र कहलनि जे कथाकार अपन लेखनमे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि। तहिना ई कहब समीचीन होयत जे मोहन भारद्वाज कथालोचनमे अपन दृष्टिकोण ओ भाषासँ आलोचनाके लोकोन्मुख केलनि अछि। हुनक ई अवदान मैथिली आलोचना लेल महत्वपूर्ण अछि।

संदर्भ-संकेत

1. शिवशंकर श्रीनिवास, स्वतंत्रता पूर्वक कथा, बदलैत स्वर पोथी, 2011 ई॰
2. मोहन भारद्वाज, जन्मशतीक अवसर पर, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
3. मोहन भारद्वाज, आलोचनाक भूमिका पर विचार करैत..., अनवरत पोथी, 1995 ई॰
4. मोहन भारद्वाज, मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकें पढ़ि क' कयल जेबाक चाही, मोहन भारद्वाज सँ आशुतोष कुमार झाक भेंटवार्त्ता, सन्धान-4, 2000 ई॰
5. कमलानन्द झा, मोहन भारद्वाजक दायित्वपूर्ण आलोचना दृष्टि, घर-बाहर पत्रिका, अप्रैल-जून 2019 ई॰
6. मोहन भारद्वाज, आलोचनाक भूमिका पर विचार करैत..., अनवरत पोथी, 1995 ई॰
7. कमलानन्द झा, मोहन भारद्वाजक दायित्वपूर्ण आलोचना-दृष्टि, घर-बाहर पत्रिका, अप्रैल-जून-2019 ई॰
8. मोहन भारद्वाज, मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकें पढ़ि क' कयल जेबाक चाही, मोहन भारद्वाज सँ आशुतोष कुमार झाक भेंटवार्त्ता, सन्धान-4, 2000 ई॰
9. मोहन भारद्वाज, आजुक कथा, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
10. मोहन भारद्वाज मैथिली कथाक वर्त्तमान : किछु प्रसंग, कथा-गोष्ठी पोथी, 2008 ई॰
11. शिवशंकर श्रीनिवास, गत एक दशकक कथाक प्रवृत्ति, बदलैत स्वर पोथी, 2011 ई॰
12. तारानन्द वियोगी, नवचररणक मैथिली कथा, सन्धान-4, 2000 ई॰
13. मोहन भारद्वाज, मैथिली कथामे गद्यक विकास, कथा-गोष्ठी, पोथी, 2008 ई॰
14. तारानन्द वियोगी, मैथिली आलोचनामे मोहन भारद्वाजक महत्व, मिथिला-मिहिर ब्लॉग स्पॉट.काम

('देसिल बयना', मइ 2022 ई॰)



जनजागरण ओ स्वतंत्रतापूर्वक मैथिली कथा

बीसम शताब्दीक शुरूमे समाजक स्थिति अत्यन्त खराब भ' गेल छल। जीवन-निर्वाहक साधन खेती उजड़ि रहल छल। खेती उजरबाक जड़िमे जमीन्दारलोकनिक शोषणयुक्त कर प्रणाली रहय। जमीन्दारलोकनिक ओहिठाम कोनो काज-प्रयोजन होइन ताहू लेल खेतिहर लोकनिसँ टाका असूलल जाय। उद्योग-धंधा सभ सेहो नष्ट भ' रहल रहय। पूंजी एवं बजारक अभावमे मिथिलाक अपन विशिष्ट कुटीर ओ शिल्प उद्योग पतन दिस अग्रसर छल।

समाजक उच्च वर्गमे स्त्रीक स्थिति एकदम भयावह भ' गेल रहय। बहु-विवाह, बिकौआ प्रथाक बाद पर्दा-प्रथा, तिलक, दहेज, विधवा-जीवन, स्त्रीक जीवनकें दर्दनाक बना देने रहय। स्थिति एहन भ' गेल रहय जे स्त्रीक रूपमे जन्म लेबासँ स्वयं स्त्री डेराइत छल-

धियाक जनम जनि दिअह विधाता
धिया डुबैत बीच धार

××××××

जाहे दिन आगे बेटी तोहरो जनम भेल
घरे-घरे ठोकल केवाड़ हे।

उन्नैसम शताब्दीक अन्त धरि विद्यालयक रूपमे स्त्री शिक्षाक जड़ि मजबूत नहि भेल रहय। स्त्रीक कर्त्तव्यक प्रति लोकक जे धारणा छल से एहि तरहक विद्यालयीय शिक्षाक विस्तारमे अवरोध उत्पन्न क' रहल छल। वास्तव मे पर्दा-प्रथा एकर मूलमे रहय। एहिसँ पूर्व शिक्षित पिता ओ भाइ व्यक्तिगत रूपसँ अविवाहित स्त्रीकें शिक्षा दैत छलाह तथा विवाह भेला पर पति शिक्षा दैत रहथि। ई शिक्षा व्यवस्था मनुक ओहि

विचार पर आधारित छल जाहिमे स्त्री बालिका रहय वा युवती अथवा वृद्धा अपन घरोमे स्वतंत्र रूपसँ किछु नहि क' सकैत रहय। ओ पिता, भाइ, पति, पुत्रसँ कहियो फराक नहि भ' सकैत छल। बादमे सरकार स्त्री शिक्षाक सभ प्रश्न पर विचारक लेल एकटा कमिटी बनौलक तथा कमिटीक अनुशंसाक आधार पर स्त्री शिक्षाकें प्राथमिकता देल गेल। यैह काल थिक जखन हरिमोहन झा 'कन्यादान' लीखि रहल छलाह। बुच्चीदाइ अपन चुप्पीसँ पुरूषक असमानताक व्यवहार पर आक्रोश ओ घृणा व्यक्त क' रहल छलीह। मुदा जाहि पत्रिकामे ई कन्यादान धारावाहिक रूपें छपि रहल छल, ओहि पत्रिकाक सम्पादक द्वय कुशेश्वर कुमर आ भोला लाल दासमे स्त्रीक दुर्दशाक प्रश्न पर पुरातन ओ नव दृष्टिक द्वन्द्व उभरि रहल छल। ई द्वन्द्व केवल दू व्यक्तिक नहि रहय। परम्परा सँ चल अबैत व्यवस्था आ युगक अनुरूप समाजमे परिवर्तनक दृष्टिक बीच रहय। सत पूछी त' ई जनजागरणक देन रहय। मैथिलीमे ई जनजागरण जनीजातिक जागरणक निमित व्यापक रूपें पुष्ट भेल। तकर प्रभावो स्वतंत्रतापूर्वक कथा पर व्यापक रूपें पड़ल। एहिठाम कथामे विशिष्ट रूपें लघुकथा ओ उपन्यास विधाक रूपक फड़िछौट कठिन अछि। से जनार्दन झा जनसीदनक 'ताराक वैधव्य' हो कि 'निर्दयी सासु' आ पुनर्विवाह। कुमार गंगानन्द सिंहक 'विवाह' हो कि 'मनुष्यक मोल', ई सभ खाहे कथा कहि छपल हो कि उपन्यास कहि वास्तव मे ओ सभ किछु आलोचक अनुसार कथा थिक। मैथिलीक प्रसिद्ध आलोचक कुलानन्द मिश्रक कहब छनि जे एहि शताब्दीक पहिल दू दशकक त' बाते भिन्न सन् 1932 मे काञ्चीनाथ झा किरणक उपन्यास कहि बहरायल 'चन्द्रग्रहण' सेहो उपन्यासक रूप मे नहि कथेक रूप मे हुनका मान्य छनि। मुदा कालान्तरमे कथा ओ उपन्यासमे विधाक स्तर पर अस्पष्टता समाप्त होइत गेल। आब 'निर्दयी सासु', 'पुनर्विवाह' आ 'चन्द्रग्रहण' उपन्यासक रूपमे स्वीकृत भ' गेल अछि। 'मनुष्यक मोल' सेहो उपन्यास थिक।

त' ई जे जनजागरण समाजमे आबि रहल छल से स्वतंत्रता आन्दोलनक कारणें आबि रहल छल। स्वतंत्रता आन्दोलनक एक हिस्सा समाजक सुधार लेल सेहो संकल्पित छल। महात्मा गाँधीक देशक स्वतंत्रता लेल चलाओल जा रहल आन्दोलनक एक अंग सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर सुधार

सेहो रहय। स्वतंत्रता प्राप्ति लेल लोकमे चेतना जगेबा ओ बढ़ेबाक लेल सामाजिक सुधारक एहि तरहक कार्यक्रमकें गान्धी जरूरी बुझैत छलाह। एहि सम्बन्धमे काका कालेलकरक उक्ति बहुत समीचीन अछि। हमरा सभकें अगस्त 1947 मे स्वराज्य भेटल। केवल एहि दुआरे नहि भेटल जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल उच्च, मध्यवर्ग स्वराज्यके लड़ाइमे सम्मिलित भेल। एहि दुआरे भेटल जे गांधीजीकें नेतृत्वमे जतेक व्यापक सहयोग भरिसक भगवान बुद्धकें समय मे ओहि जनआन्दोलन, ओहि सुधारवादी आन्दोलनके भेटल छलैक ताहू सँ बेसी व्यापक सहयोग भरिसक गांधीजीकें भेटलनि। गांधीजी एकरा कोना सुलभ केलनि? गांधीजी अंग्रेजी पढ़ल-लिखल विशेष वर्गकें एहि प्रकारें सुशिक्षित केलनि जे ओ वर्ग जनसामान्य, अपन भूमि, अपन भूमिजन, अपन परम्परासँ पीठि नहि फेरलक। कोनो नदीक द्वीप सन लोक कटल-कटल नहि रहल। स्वराज्य लेल जनसामान्य सापेक्ष होयब जरूरी छल आ जन सामान्य सापेक्ष लेल ओ अनेक रचनात्मक कार्यक्रम चलौलनि। ओ हमरा सभके एक सोझ-साझ मन्त्र देलनि जकरा चरखा कहल जाइत अछि। जे एक प्रतीक रूपमे सभकें जनसमान्यक लग पहुंचा देलक। गांधीजी जे चरखा के मन्त्र बना देलनि ओ यन्त्र प्रतीक छल, ओहि मन्त्रके जे ओ देलनि कि अपन विशेषताक उपयोग हमरालोकनि जनसामान्यक सेवा लेल करब समाजिक विकास लेल करब भेष आ भाषा दूनू सँ।'

गांधीजीक स्वतंत्रता आन्दोलन आ ओकर आसंग रूप मे समाज सुधारक हिलकोर मिथिलाक बुद्धिजीवीलोकनिकें सेहो जगौलक। ओ लोकनि अपन मातृभाषा मैथिली दिस आकृष्ट भेलाह आ एहि क्रममे अपन समाज दिस सेहो ध्यान गेलनि। वस्तुतः प्रारम्भमे विद्यापति-गीतक भाषा विवाद मिथिलाक बुद्धिजीवीकें मैथिली दिस तकबाक लेल उसकौलक। भाषाक अस्मिता खोजमे संस्कृति दिस ध्यान गेल। संस्कृतिके तकैत काल समाज मोन पड़ल। समाजक स्थिति आ समस्या के सुधारबाक आवश्यकता अनुभव भेल। एहि प्रकारें मैथिलीमे जनजागरणक अपन एक खास रंग ओ प्रभाव अछि। राष्ट्रीय विचारधारासँ ओतप्रोत बुद्धिजीवी लोकनिकें अपन भाषा ओ समाजक चिन्ता विशेष रूपें भेलनि। एकर आवश्यकता ओ लोकनि अपन समाजक खास परिस्थितिक कारणें कने

फराक ढंगसँ अनुभव केलनि। मिथिलाक स्थितियो आन ठामसँ फराक छल। एहिठाम घोषित रूपसँ कियो समाज सुधारक प्रत्यक्ष रूपें नहि भेलाह। समाज जाति-उपजातिमे बंटल छल। फराक-फराक जातीय चेतना सेहो मिथिलामे जड़ि जमाब' लागल छल। भूमिहार, राजपूत ओ कायस्थ बहुत दिनसँ जातीय कान्फ्रेंस क' रहल छलाह। गोआर, गोढ़ि, कियोट, धानुक, इत्यादि सेहो अपन-अपन जातिक उन्नति करबा लेल तत्पर भ' गेल रहथि। हिनकालोकनिकें मैथिल महासभासँ नहि जोड़ल गेल। मैथिल महासभाक ऐतिहासिक प्रयोजन भले ही भिन्न कारणसँ रहल हो मुदा विवाह सम्बन्धी नाना कुरीति यथा बहु विवाह, अयोग्य विवाह इत्यादिकें ओहो शास्त्र ओ लोक मर्यादाक विरूद्ध बुझलक। बहुतो बुद्धिजीवी एहिसँ जुड़ल छलाह तैं ई लोकनि एहि तरहक समाज सुधार लेल मैथिली पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ समाजमे चेतना जगेबाक प्रयास कर' लगलाह।

समाजकें जगेबाक क्रम मे हिनकालोकनिक ध्यान जनीजातिक दुर्वस्था दिस विशेष रूपें गेल। कथा मे जनार्दन झा जनसीदन, कुमार गंगानन्द सिंह, रासविहारी दास अपन भिन्न-भिन्न कृतिक माध्यमे स्त्रीक दुर्दशा दिस समाजक ध्यान पुरजोर रूपें आकृष्ट केलनि। डॉ० रामदेव झा लिखैत छथि जे 'मनुष्यक मोल' सँ पूर्वक मैथिली उपन्यासमे लेखक लोकनिक एकटा सुनिश्चित दृष्टिकोण रहैत छल। से रहैत छल समाज सुधारक। एहि सम्बन्धमे रास बिहारी दासक उक्ति विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि। 'सुमति'क प्रसंग अपन मित्रगणक विचार ओ कहने छथि 'निज मातृभाषाक उन्नतिए सभ उन्नतिक मूल होइत अछि अतएव येहि वेर मिथिला भाषा साहित्येक सेवन करब परमावश्यक थिक हमरा सभक आधुनिक सामाजिक दशा परम अधोगतिकें प्राप्तिमे चललि अछि, तैं येहिवेरि मिथले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यासक रचना हुअए, जाहि सौं समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक। समाजक लोक उपन्यासिक दुर्घटना सौं पूर्णतया परिचित भै समाज सुधारक विवेचना करथि तथा सर्वसम्मत्यानुसार एक एहन नियमावली निर्माण करथि जाहि सौं अपार अपव्यय, अनुचित विधि व्यवहार तथा फफड़दलालीक बाढ़िसँ भासित समाज कें बचाबथि।' एहि क्रममे सामाजिक सुधारक आयाम बढ़ैत सेहो गेल। स्त्रीक दुर्दशासँ धनक अपव्यय, अनुचित विधिव्यवहार दिस सेहो बढ़ल। से बात रासबिहारी दासक

सुमति मे देखाओल गेल मुदा मुख्य रूपें वर्ण व्यवस्थाक संग हरिसिंह देवी प्रथाक कारणे उत्पन्न बहुविवाह, विकौआ प्रथा, अनमेल विवाह, स्त्रीकें छागर-पाठी बुझबाक बात, स्त्री शिक्षाक अभाव, स्त्रीक दु:स्थिति लेल स्त्रियोक उत्तरदायित्व आदि बात आंखि-पांखिक संग प्रस्तुत कयल गेल। जाति-पांजिक कारणे पहिने बर बिकाइत छल। कन्याक बाप टाका गनबैत छलाह। तकर कुपरिणामक भीषण चित्रण कुमार गंगानन्द सिंहक मनुष्यक मोलमे भेल अछि। एकरे संग काली कुमार दास, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', जयनारायण मल्लिक, लक्ष्मीपति सिंह, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आदिक कथा मे समाज सुधारक स्पष्ट उद्देश्य परिलक्षित होइत अछि। कालीकुमार दासक 'गङ्गा स्नान', हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क कथा 'वैधव्य-जीवन', जयनारायण मल्लिकक कथा, 'जीवन-पथ', लक्ष्मीपति सिंहक कथा 'ईहो दिन देखल', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क कथा 'कपिलेश्वरक सभा' आदि एहि क्रममे उल्लेखनीय थिक। ओहि समयक कथाकार सामाजिक कुरीतिकें दूर करब अपन प्रथम एवं पवित्रतम कर्तव्य बुझैत छलाह। मुदा हिनका लोकनिक कथा मुख्यत: सामाजिक कुरीतिमे वैवाहिक कुरीतिसँ जुड़ल छल। हिनकालोकनि सँ फराक हरिमोहन झा अपन कथा सभक माध्यमे समाजक आन आन कुरीति दिस सेहो लोकक ध्यान दोसर ढ़ंगे प्रस्तुत केलनि। जे समाजक विभिन्न प्रवृत्ति पर आधारित छल। समाजमे होइत जागरणक किछु दोसर आ विशिष्ट रूप सेहो स्वतंत्रतापूर्वक कथा सभमे आयल अछि। फूट-फूट जातिक उत्थान लेल जागरणक प्रभावसँ अपन-अपन समाजक बीच सुधारक आकांक्षा सेहो जनमि रहल छल। गरीब ओ जातिमे छोट लोक सभ सेहो ब्राह्मण जकां तेरहा श्राद्ध आदि कर्म कर' लागल रहथि। विषमता ओ विभिन्न शोषण दिस सेहो हुनका लोकनिक ध्यान जाय लागल छलनि। शिक्षाक लेल से ओ सभ साकांक्ष हुअ' लागल छलाह। संगहि अर्थक महत्ता सेहो बुझ' लागल रहथि। कुमार गंगानन्द सिंहक 'बिहाड़ि' कथामे जातिक एक छोट लोक तेरहा श्राद्ध केने रहथि तैं ब्राह्मण मण्डली सभकें अंगना घरक काज छोड़ा देने छलथिन। एहि मे एक ब्राह्मण छोट लोक सभक पक्षमे ओकरा सँ सम्पर्क बनौनहि रहलाह। तैं गामक ब्राह्मण लोकनि हुनका पर बिगड़ल छलाह। एहिठामसँ अकच्छ भ' ओ ब्राह्मण द्वारिका सिमरियाघाट चल गेलाह। सोचलनि जे

मासो करब आ लोकक अत्याचारो सँ बचब। हुनक चल गेला पर रड़टोली मे बड़का आन्दोलन उठल। सभ कें द्वारिकाक दुर्दशा सँ दुख भेल छलैक। बैसार भेल। रौदी कामति जे कांग्रेस कमीटीक मेम्बर, घरक सुभ्यस्त से कहलथिन भाइयों! ऐसे गों-गों करने से कुछ नहीं होगा। हमको डर-भर किसी का नहीं है। वह सवाल जात का है। अपलोग मुंह क्या देखते हैं? कांग्रेस के लिए सब बराबर है। तो हम सत्याग्रह करेंगे। एहि वार्तालापक बीच मे एक गोटे कहलनि हौ जी ई अंग्रेजी फारसी हम सब नै बुझै छिअहु। जे कहबाक छहु से अपने बोली मे बुझा क' कहह।

रौदी कामति ताहि पर विरक्त भ' कहलथिन तँ आपुने सब बाजै जाउ। सभा विसर्जित भेल। एहि क्रममे बात बढ़ैत गेलैक। एक गोटे जे बाहर मे ड्राइवरीक काज करैत छल अपन अफसरक माध्यम सँ जिला मजिस्ट्रेट कें लिखौलक जे ब्राह्मणमण्डली कोनो अत्याचार ओकर लोक वेद पर नहि करैक। तकर तहकीकात मे दरोगाजी गाम मे अयलाह। अन्तत: ब्राह्मणलोकनि कें आपसी सौमनस्य फेर सँ स्थापित करबाक लेल ओही द्वारिकाक प्रयोजन बूझि पड़लनि। द्वारिका घुरिक' अयलाह आ स्थिति कें सम्हारलनि। फेर हुनक चलती भ' गेल। कुमार गंगानन्द सिंहक एहि कथा सँ स्पष्ट अछि जे समाजक तथाकथित छोट लोक सभ सेहो अपन समाजमे सुधार लेल प्रयत्न प्रारम्भ क' देने रहथि। एहि प्रकारक जागरण मे स्वतंत्रता आंदोलनमे लागल कांग्रेसक हाथ छल। संगहि एहि सँ ईहो तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे ब्राह्मणो समाजक किछु लोक बदलैत स्थिति कें बूझि रहल छल आ छोट लोक सभ कें संग द' रहल छल। एक दिस जत' जातीय आधार पर सामाजिक उत्थान लेल जागरण छल त' एहि सँ पैघ ओ छोट जातिक बीच उत्पन्न होइत तनाव कें आगू नहि बढ़' देबाक लेल ब्राह्मण समाजक कियो ने कियो व्यक्ति शॉकआब्जर्वरक काज सेहो करैत छल। ब्राह्मण वर्चस्वक मिथिला समाज मे ई तथ्य जत' कुमार गंगानन्द सिंहक 'बिहाड़ि' मे आयल अछि त' बाद मे प्रभास कुमार चौधरीक 'इन्द्रधनुष' मे सेहो आयल अछि संगहि तारानन्द वियोगीक कथा 'हीरा जनम तिहारो' धरि देखबा मे अबैत अछि। एहि पचास-साठि बरसक अवधिमे आन जे कोनो परिवर्तन भेल हो ई शॉकआब्जर्बरक काज केनिहार व्यक्ति कहियो समाप्त नहि भेलाह अछि।

एक दिस जत' जनजागरणक फलस्वरूप सामाजिक कुरीतिकें हटेबाक ओ सामाजिक उत्थानक आकांक्षा जनमि रहल छल त' दोसर दिस समाज ओ व्यक्तिक उत्थानमे सामाजिक विषमता ओ गरीबी के अवरोधक तत्व बूझि लेबाक चेतना सेहो उत्पन्न हुअ' लागल। काञ्चीनाथ झा किरणक कथा 'एहि चारि खूनक खोज कनिहार के?' मे नायक परेमा अपना ढंगे विषमताक सम्बन्ध मे सोचैत अछि। किरणजी लिखैत छथि जे 'ओकरा खनहि ईश्वरक एकत्व मे सन्देह होइन खनहि ईश्वरक समदृष्टित्व मे। अन्यथा विषमताक कारण कोन? यदि उद्योग मानव तँ हम उद्योग कहिया नै कैल की हमर संस्कारो तेहेन बेजाय छल। तखन पढ़ि कियैक नै सकलहुं। ई नवजीवन लाल कें हिसाब नै जोड़ि होइत छलनि गुरूजी चारि चारि घंटा ठाढ़ केने रहैत छलन्हि से आइ हाकिम होथि और जे सब साल फष्ट करै छल से भुखे मरै। हुनके कियैक? ई ओकिल मुख्तार दरोगा हाकिम ओहने व्यक्ति छथि जनिका पचीस-पचास रूपया मासिक खर्च क' क' पढ़बाक सामर्थ्य छलन्हि। बुद्धिक बलें नहि धनक बलें बाबू भेल अछि।' सामाजिक विषमताक ई परिचय सामाजिक व्यवस्थामे परिवर्तन दिस लोककें ल' जा सकैत अछि। ओना स्वतंत्रता आन्दोलनक संग चलैत सामाजिक सुधारक एक सीमा सेहो स्पष्ट रहय। व्यवस्थामे रहि व्यवस्थामे सुधार। तैं ओहि व्यवस्था पर कोनो चोट नहि कयल गेल। सुधारक आकांक्षा सँ प्रेरित भ' कथ्यक सृजन द्वारा उत्तरदायी व्यवस्था पर चोट नहि कयल जा सकैत अछि, से यदि मैथिली मे कयल गेल त' यात्रीक पारोमे। ओहिमे भनहि पारोक आशा ओ मनोरथ विफल भ' गेल मुदा ओहि अन्यायी व्यवस्था दिस ठोस संकेत अवश्य कयल गेल जे ओकर कष्ट आ विफलताक मूल कारण छल। वस्तुत: एहीठाम परिवर्तनक बाट शुरू भ' सकैत छैक। अन्तत: ई कहले जा सकैत अछि जे मैथिलीक स्वतंत्रतापूर्वक कथामे कथाकारलोकनिक चेतना जनजागरण सँ अनुप्राणित त' भेल मुदा ब्राह्मण ओ पुरूष वर्चस्वक व्यवस्थाक मजबूत पायाके कोनो बेसी क्षति नहि क' सकल। एतबा अवश्य कहल जा सकैत अछि जे जनीजातिक दुर्दशा दिस ध्यान द' समाजक विकास लेल जनीजातिक उत्थानक अनिवार्यता के रेखांकित अवश्य क' देल गेल। ई अनिवार्यता अहू सँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे तहियासँ आइ धरि मैथिली

कथामे स्त्रीक विषयक ई धारा विभिन्न रंग-ढंग ओ भंगिमामे लगातार प्रवहमान अछि। कथाक अभिप्राय क्रमश: बदलि रहल अछि। ओहि मे आब कथालेखिका लोकनिक योगदान सेहो उल्लेखनीय रूपें बढ़ि रहल अछि, विकसित भ' रहल अछि।

(मैथिली भाषा साहित्य पर जनजागरणक प्रभाव, पोथी, चेतना समिति, 2005 ई॰)



मैथिली कथाक विकासः बदलैत स्वर एवं प्रवृत्ति

मैथिली कथाक विकास पर गप करबा सँ पूर्व हमरा सभ कें कथाक सम्बन्धमे किछु मोट बात कें जानि लेब आवश्यक लगैत अछि। अधिकांश भारतीय भाषाक कथा-साहित्य अनठीये गमला मे फुलायल अछि। संस्कृत मे जकरा 'गल्प' या 'आख्यायिका' कहल जाइत अछि से आधुनिक कथासँ भिन्न छल। संगहि हमरा सभक देशी वाचिक परम्पराक अवशेषो आब लिखित साहित्यमे देखबामे नहि अबैत अछि। एहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक स्थिति कोनो भिन्न नहि कहल जा सकैत अछि।[1] जहाँ धरि कथाक परिभाषाक बात अछि त' कथा कें कोनो परिभाषा मे बान्हब कठिन अछि। तैयो बहुतो कथाकार ओ आलोचक एकरा परिभाषित करबाक प्रयास केलनि अछि। मुंशी प्रेमचन्द कथा पर विचार करैत कहैत छथि जे 'कथा (गल्प) एक रचना थिक, जाहि मे जीवनक कोनो एक अंग या मनोभाव कें प्रदर्शित करबे लेखकक उद्देश्य रहैत अछि। ओकर चरित्र, ओकर शैली तथा कथाविन्यास सभ ओही भाव कें पुष्ट करैत अछि।' पाश्चात्य देश सभ मे एडगर एलन पो आधुनिक कथाक जन्मदाता सभ मे प्रमुख मानल जाइत छथि। ओ कथाक परिभाषा दैत कहलनि अछि जे, 'लघु कथा एक एहन आख्यान थिक, जे एतेक छोट होइत अछि कि एक बैसक मे पढ़ल जा सकय। संगहि जे पाठक पर केवल एक प्रभाव उत्पन्न करबाक उद्देश्य सँ लिखल गेल हो। ओ (लघु कथा) स्वत: पूर्ण होइत अछि।[2] मुदा ओलोचक कुलानन्द मिश्र कहैत छथि जे, 'प्राचीन काल सँ आइ धरि वाचिक परम्परा सँ लिखित परम्परा धरि उपलब्ध कथा सभक उद्देश्य, स्वरूप आ स्वरक मध्य व्याप्त भिन्नता कें देखैत कथा कें कोनो परिभाषाक सीमामे बान्हबे कि तकर चेष्टे करब अनर्गल

भ' गेल अछि। कारण जे प्रत्येक कथा आब पाठक सँ वैयक्तिक संवेदना आ संस्पर्शक अपेक्षा रखैत अछि। स्वयं कथा संग सोझ सम्पर्क राखब, आ कथाक समस्त इतिहासक अवगति राखब कथाक लग पहुंचबाक लेल आब अत्यन्त आवश्यक आ एकमात्र सार्थक उपाय थिक।[3] त' सभ सँ पहिने आधुनिक कथा मे जे भिन्नता आयल तकरा देखी त' स्पष्ट होयत जे आधुनिक कथा 'आधिदैविक या दैविक 'अभिप्राय' सबहक स्थान पर 'मानवीय अभिप्राय' प्रधान अछि। ई अभिप्राय कथा पर विचार, वस्तुक रूप मे आक्षेपित नहि भ' क' कथाक विकाससँ उत्पन्न होइत अछि फलत: एहि मे जीवन अधिक अछि। एहि प्रकारें कहि सकैत छी जे कल्पित कथानक सभक तुलनामे लोकाश्रित कथानक सभक प्रतिष्ठा स्वयं एक ऐतिहासिक घटना थिक।'[4] स्वाभाविक रूप सँ जखन उद्देश्य बदलल त' कथाक स्वरूप बदलल आ ओकर स्वरो बदलि गेल। एहि प्रकारें आधुनिक कथा, गल्प आ 'आख्यायिका' सभ सँ गुणात्मक रूपसँ विकसित होइत अछि। से एहि कारणे जे ओकर ढांचा जीवनक यथार्थ सँ सम्बद्ध होइत अछि। आब कने हमरालोकनि विकास कें सेहो जानि ली। आखिर ई विकास थिक की? नव द्वारा पुरानक स्थान ग्रहण करब, उदित भ' रहल कें अस्त भ' रहलक जगह लेबहि कें विकास कहल जाइत अछि। ईहो कहल जाइत अछि जे नव, पुरान कें पूर्णतया मेटा नहि दैत अछि, अपितु ओहि मे जे श्रेष्ठतम अछि ओकरा कायम रखैत अछि। वस्तुत: ओ श्रेष्ठतम कें कायमे नहि रखैत अछि, ओकरा आत्मसात सेहो करैत अछि। ओकरा एक नव उच्चतर स्तर पर सेहो उठबैत अछि। विकासक ई अवधारणा स्वाभाविक रूपें हमरा अपन परम्परा सँ जोड़ैत अछि। मुदा परम्परा कोनो एक्केटा त' होइत नहि छै। समाज मे जेना विभिन्न परम्परा मौजूद रहैत अछि आ ओहि मे जुड़ाओ आ अलगाओ होइत छैक, द्वन्द्व होइत छैक तहिना कथा मे सेहो विभिन्न परम्परा होइत अछि आ ओहि मे द्वन्द्व होइत अछि जे विकासक आधार होइत अछि। द्वन्द्व नहि त' विकास नहि।

आब एहि परिप्रेक्ष्यमे जखन हम मैथिली कथाक विकास कें देखैत छी त' ज्ञात होइत अछि जे एकर इतिहास सय वर्षक भ' गेल अछि। नहि किछु त' दस हजार सँ बेसी कथा छपि चुकल अछि। ई दस हजार

कथा, दू हजार सँ बेसी कथाकार लोकनिक द्वारा लिखल गेल अछि।[5] एखन धरिक जनतबक हिसाब सँ जीवकान्त सभ सँ बेसी लगभग दू सय कथा लिखनिहार कथाकार छथि। कतेको कथाकार छथि जिनकर कथा पत्रिका-सभ मे छिड़िआयले रहि गेल, पोथी रूप मे प्रकाश मे नहि आयल। ओ पत्रिका सभ आब उपलब्धो नहि अछि। एही कारणे डा० रामदेव झाक कहब छनि जे, 'मैथिली साहित्यमे आधुनिक रीतिक कथा-लेखनक उपक्रम कहिया, कोन कथासँ भेल से एखन धरि खूब सुनिश्चित नहि भ' सकल अछि। आरम्भिक कालीन साधन-स्त्रोतक नष्ट, विलुप्त अथवा दुर्लभ भ' गेलाक कारणे कोनहु निष्कर्ष के अन्तिम नहि मानल जा सकैत अछि। परन्तु एखन धरिक अनुसन्धान मे जतबा सूचना-सामग्री उपलब्ध भ' सकल अछि, ओहि आधार पर मैथिली कथाक उद्‌भव ओ विकासक सामान्य रूप-रेखा प्रस्तुत सम्भव अछि।' हम डा० रामदेव झा सँ सहमत होइत जखन मैथिली कथाक विकासक सन्दर्भ मे भेल काज सभ पर दृष्टिपात करैत छी त' हमरा विभिन्न कथा संग्रह सभक भूमिका लेखन, कथा सभक समीक्षा, मैथिली कथाक विकास पर भेल सेमिनार मे पढ़ल गेल आलेख, कोनो खास वर्ष वा दशक मे आयल कथा सभ पर टिप्पणी, आरम्भिक वा कोनो एक दशकक चयनित कथा संग सम्पादकीय रूप मे कथाक प्रवृत्ति पर विचार आ आलोचक मोहन भारद्वाजक 'कथा गोष्ठी' आ कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक पोथी 'बदलैत स्वर' उपलब्ध होइत अछि। एकर अतिरिक्त मैथिली साहित्यक इतिहास सभमे मैथिली कथा पर एक परिच्छेद सेहो भेटैत अछि। निश्चित रूप सँ मैथिली कथा पर शोध सेहो भेल अछि मुदा से पोथीक रूप मे प्रकाशन मे नहि आयल अछि। मैथिली कथा पर डा० मेघन प्रसादक सर्वेक्षण आ दस्तावेजी पोथी मैथिली कथा कोश अपन स्वरूप मे महत्वपूर्ण अछि। मैथिली मे जे आलोचक छथि से सामान्यत: मैथिली साहित्यक आलोचक छथि। ओ विभिन्न विधा पर जखन जे जरूरति भेलनि ताहि पर लिखैत छथि। कथाक आलोचक, खाली कथा पर काज केनिहार आलोचकक एखन धरि प्रतीक्षे छैक मैथिली कें। ओना आलोचक कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथा पर आकाशवाणी सँ दस एपीसोड मे प्रसारित दीर्घ निबन्धक पोथी रूप मे प्रकाशन हमरा आवश्यक लगैत अछि किएक त' ओहि मे मैथिली कथाक

प्रवृत्ति, ओकर सामाजिक सन्दर्भ, ऐतिहासिकता तथा युगीन दृष्टिबोध सँ परिचित होयबा मे सुविधा होयत। ओकर आधार पर तथा अन्य उपलब्ध सामग्री सभक आधार पर मैथिलीक समकालीन कथा धरिक विकास क्रम, प्रवृत्ति आ स्वरक सन्धान सम्भव भ' सकैत अछि। कुलानन्द मिश्र सँ हम ओहि दीर्घ निबन्धक आधार पर मैथिली कथा पर संवाद केने रही जे पहिने 'सन्धान' पत्रिकाक कथा अंक मे आ तकर बाद 'संवाद' नामक पोथी मे छपल अछि। कुलानन्द मिश्रक मैथिली कथाक सम्बन्ध मे कहल किछु बात के मैथिली कथाक विकास, बदलैत स्वर आ प्रवृत्ति पर बात करबाक क्रम मे राखब हम आवश्यक बुझैत छी। ओ कहैत छथि जे 'मैथिलीक मौलिक कथा अपन भारतीय स्वरूप आ आत्मा कें चिन्हैत आरम्भ त' भेल, मुदा ओकर ढब मे परम्पराक विकास नहि छल, नवताक वेलूरिपना आ सकपकाहटि अलबत्त देखा मे आयल। क्रमश: डेग स्थिर आ गति सहज भेलैक तथापि गुलाम भारतक सामाजिक वैषम्य आ अन्याय-अत्याचारक मुखर विरोध ओहि मे परिलक्षित नहि होइत अछि। एकर कारण मे हुनक कहब रहनि जे अपना सभक साहित्य-संस्कार 'काव्य-शास्त्र विनोदेन' समय काटब त' संगत बुझैत अछि, मुदा कोनो मानवीय कि सामाजिक मूल्य लेल 'टंटा बेसाहब' अर्यादित बुझैत अछि। .... हमरा सभक जन-हित-चिन्तन बरोबरि वर्गीय चिन्तन रहल अछि, ओहि वर्गक चिन्तन जे अपन समुदायक लाभ-हानिक प्रति सतर्क रहैत सभ जीव मे ब्रह्म दर्शन करैत आयल अछि। ओ वर्ग दया, बन्धुत्व आ स्नेह सँ खूब परिचित अछि मुदा ओकर दृष्टि मे एकर अधिकारी विशिष्ट वर्गे टा रहलैक अछि।' सातम आठम आ नवम दशकक कथाक प्रवृत्ति पर गप्प करैत ओ कहैत छथि जे सातम दशकक मैथिली कथाकें विचारक प्रौढ़ि त' हासिल भेलैक, मुदा निश्चित सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिक अभाव मे कोनो व्यवस्थित आ विश्वासयोग्य प्रतिरोध लेल आधार भूमि तैयार करब सम्भव नहि भेलैक। आर्थिक ओ राजनीतिक पस्तीक बादो लोकक आँखि मे शील आ विचार मे कुलीनता, सुलभ मूल्यक बात समाप्त नहि भेलैक। ओ परिवर्तनक उदीप्त आकांक्षा रखितो विरोध मे हाथ उठा लेबाक मन:स्थिति नहि बना पबैत अछि।' आठम दशकक कथा-यात्रा पर दृष्टिपात करैत हुनका लगैत छनि जे एतेक दूर अबैत-अबैत

कथाक सभ पुरना परिभाषा अव्याप्ति दोष सँ ग्रस्त प्रतीत होबय लगैत अछि। तखने एहि सत्यक अनुभूति भेल जे कथाक इतिहासे कथाक एकमात्र संगत परिभाषा होइत अछि। अखनुक कथा त' एक तरहें एकटा एहन विशिष्ट रचना भ' गेल अछि जे एकटा कोनो कथा एके कथाकार द्वारा कहल जा सकैत अछि। प्रत्येक सफल आ सार्थक कथा पर कथाकारक अपन विशिष्ट आ वैयक्तिक छाप होइत अछि। ई छाप कथाक विन्यास, भाषा आ रचना-विधानक संग-संग ओकर समग्र प्रभाव पर परिलक्षित होइत अछि।' नवम दशकक कथाकारक कथा प्रवृत्ति पर गप करैत ओ कहैत छथि जे 'प्रकट संघर्षक चेतना आ निष्कम्प दिशा-बोध हिनका-लोकनि मे एक हद धरि चरित्र-भिन्नताक बादो हिनका सभ कें अविभक्त घरातल पर सभ जातीय प्रतिबद्धता आ एकदेशीय वैचारिकताक संग ठाढ़ क' देने छनि। निश्चित सामाजिक, राजनीतिक आ साहचर्य बोध संग ई लोकनि व्यवस्थाक नाम पर पसरल सभ अव्यवस्थाक संतुलित आ सार्थक प्रतिरोध लेल प्रस्तुत नजरि अबैत छथि।' एही क्रममे जँ शतादीक अन्तिम दशकक कथा प्रवृत्ति कें देखबाक हो त' शिवशंकर श्रीनिवासक शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे 'ओहि मे कोनो जमीन पर अधिकार लेल संघर्ष नहि भेटत, बोनि लेल कोनो श्रमिक आ मालिकक बीच झमेला नहि भेटत। देखब जातीय संघर्ष, देखब धार्मिक उत्पीड़न सँ बहरेबाक प्रयास, सामाजिक रस ओ मुक्त जीवन जीबाक लेल देखब पत्नीक पति सँ संघर्ष करैत।'[6]

जहाँ धरि स्वातन्त्र्योत्तर कथा प्रवृत्तिक बात अछि आलोचक मोहन भारद्वाज एकर विस्तार सँ विश्लेषण करैत ई विचार रखलनि जे कोनो भाषाक कथा मात्र एहि लेल ओहि भाषाक साहित्य नहि होइछ जे ओ ओहि भाषा मे लिखल गेल अछि। प्रत्येक भाषा मे अपन विवशता, मुक्ति प्रयोजन, सीमा, संस्कार, परम्परा आ विशिष्टता होइत छैक- समय, परिवेश आ व्यक्तित्वक कारणे। एहि संग ओ मैथिलीक आधुनिक कथा कें हास्य कथा, रोमांस कथा, देह कथा, सम्बन्ध कथा आ सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक समानान्तर चलैत कथाक रूप मे रखलनि अछि।'[7] मोहन भारद्वाज सँ फराक डा० रमानन्द झा 'रमण' छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा मे 'काम भावनाक अभिव्यक्ति कें एहि कालक कथाक एक विशेष प्रवृत्ति मानलनि अछि। एहि संग ओ नारी कें श्रमशील मानवीय रूपमे

चित्रित करबाक प्रवृत्ति आ पति-पत्नीक बीच बदलैत सम्बन्धक अतिरिक्त लोकक क्षमता-बोध आ असहमति सँ विद्रोह धरिक प्रवृत्ति मैथिली कथा मे देखैत छथि।'[8]

मैथिली कथाक विकास-क्रम कें हमरालोकनि निम्नलिखित उपशीर्षक मे विभाजित क' सकैत छी- (1) आरम्भिक मैथिली कथा (2) स्वतंत्रता पूर्वक कथा (3) स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा (4) समकालीन मैथिली कथा।

समकालीन मैथिली कथाक धारा आठम दशक सँ प्रारम्भ भेल। ई वैह दशक थिक जखन मैथिली मे सभ सँ बेसी कथा लिखायल। ई वैह काल थिक जखन मैथिली कथा अभिजन सँ सबजन धरि पहुँचल। भाषा सेहो भावुकताक झुल्ल उतारलक। मोहन भारद्वाजक अनुसार स्वतंत्र भारत मे जनमल कथाकार जखन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न आदि राक्षसी शक्तिक सम्मुखीन भेलाह तखन हुनक सोच आ भाषा मे परिवर्तन आयब स्वाभाविक भ' गेल। तैं हुनक कथाक भाषा आक्रोश मूलक अछि। हुनक कथाक विषय 'सिविल' नहि, फौजदारीवला अछि। कथा विकासक ई संक्रमण-काल नवम दशक धरि अबैत-अबैत प्रायः समाप्त भ' गेल।[9] तकर बादक कथा कें तारानन्द वियोगी नव चरणक मैथिली कथा कहैत छथि। ओ कहैत छथि जे नवचरणक मैथिली कथा मे शुद्र, स्त्री आ बच्चा, एहि तीनू दलित-समूहक आबा-जाही व्यापक रूप सँ बढ़ि गेल अछि। ई तीनू दलित समूह जे कथा मे आबि रहल अछि, से सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग आबि रहल अछि।[10] शिवशंकर श्रीनिवास मैथिली कथाक एहि समकालीन स्वर कें सांस्कृतिक चेतनाक कथा कहैत छथि।[11]

मैथिली कविता सँ फराक मैथिली कथा मे कविता जकां सहजतावाद, अकवितावाद, नवचेतनाबाद, अभिव्यंनावाद आ तदर्थवाद आदि कोनो नारा वा आन्दोलन नहि देखाइ पड़ैत अछि। एहि सँ कथा कतोक वैचारिक ओझराहटि सँ बांचि गेल। एहि सन्दर्भ मे कुलानन्द मिश्रक कहब रहनि जे मैथिलीक आधुनिक कथा हिन्दीक नई कहानी सँ विषय संग सम्बन्ध स्थापित करबाक संस्कार आ तकरा संग निबाहबाक कौशल त' अर्जित कयलक अछि, मुदा अपन विशिष्ट अनुभूतिक पृथक सौन्दर्यक अलग पहिचान लेल विषय-वस्तुक उपस्थापनाक प्रक्रिया कें अपन जातीय संस्पर्श

नहि द' सकल। मुदा हमरा लगैत अछि जे सुभाषचन्द्र यादव आ हुनक समकालीन कथाकारक संग ओ बादमे जे पीढ़ी कथा क्षेत्र मे आयल से हिन्दीक नई कहानीक बादक पीढ़ी थिक आ से मैथिली कथा मे जातीय संस्पर्श देबाक लेल अधिक सतर्क आ सचेष्ट भेल।

हमरालोकनि जनैत छी जे मैथिलीक आरम्भिक कथाक मुख्य स्वर सामाजिक कुरीति कें दूर करब छल। एहि मे कथाकारक सुधारवादी मानसिकता काज क' रहल छल। क्रमशः एहि सुधारवादी मनोवृत्ति मे सेहो परिवर्तन भेल आ स्वतंत्रता सँ पूर्वक कथा मे शिल्पक स्तर पर मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग हुअ' लागल। मैथिली कथाक विकास यात्रा मे 1945 बहुत महत्वपूर्ण वर्ष मानल जाइत अछि। ओही वर्ष हरिमोहन झाक 'प्रणम्य देवता', व्यासजीक 'रूसल जमाय', कुमार गंगानन्द सिंहक 'बिहाड़ि', योगानन्द झाक 'आम खयबाक मुंह', मनमोहन झाक 'बोटिब्स', हरिमोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग' तथा उमानाथ झाक 'आध घंटा' प्रकाशित भेल। कथाक स्वर सुधारवादीसँ आदर्शवादी भ' गेल। ओहि मे रोमांस आ भावुकता त' रहबे करय मुदा कथा यथार्थक धरातल पर सेहो पैर राखब शुरू केलक। वस्तुतः मैथिली कथा मे यथार्थवादी स्वर स्वतंत्रताक बादे आयब शुरू भेल जकर शुरूआत केनिहार कथाकार ललित मानल जाइत छथि।

ललितक बाद कथामे व्यक्ति ओ मनोविज्ञान ओ चरित्रक मनोविश्लेषण सेहो प्रमुखता पौलक। बदलैत समयक संग समाजिक यथार्थ मे वर्ग ओ तकरबाद जाति, शोषित-दलितक प्रति सहानुभूति ओ संवेदनाक स्वर उभरल। उदारीकरण आ पूंजीक जोर विज्ञापनक प्रमुखताक संग सांस्कृतिक धरातल पर अस्मिता ओ माटि-पानिक परम्परापर विश्लेषणपरक विमर्श सेहो कथामे आयल।

पूर्व मे हम जेना विकास पर बात करैत पुरान आ नवक गप कहलहुं, श्रेष्ठतम कें कायम रखबाक गप कहलहुं, नव उच्चतर स्तर पर उठैबाक गप कहलहुं आ कथा परम्परा आ द्वन्द्वक गप कहलहुं त' ताहि दृष्टि सँ मैथिली कथाक विकास कें देखी त' आख्यायिकाक बाद गप्प आ गल्प मैथिली कथाक परिचिति सन बनि गेल। आलोचक रमानाथ झा एहि गप पर विस्तार सँ अपन बात कहलनि अछि। उपेन्द्र नाथ झा कें

गप्पकार कहलनि। कथा मे ई गप्पक धारा शिल्प आ प्रभाव रूप मे आइ धरि लगातार चलि रहल अछि। एहि धारा मे ई दृष्टिगोचर हैत जे कथाकार अपन कथा सँ सम्पृक्त नहि छथि। हुनकर अपन जीवन आ जीवनक सुख-दुख, संघर्ष, नेह-छोह नहि अछि। ओ जेना खिस्सा कहि रहल छथि, कोनो अनकर खिस्सा कहि रहल छथि। से बात बदलि गेल जखन बाद मे भोगल यथार्थक रूप मे कथा मैथिली मे आयल। एही संग सामाजिक यथार्थ सेहो आयल। से यथार्थक उपस्थापन धरि सीमित रहल। बाद मे समाज आ अपना सँ जोड़ि क' कथा कहबाक प्रवृत्ति शुरू भेल। एहन कथा सभ मे लागत जे कथाकार समाजक अभिन्न अंग बनि क' सामाजिक समस्या पर कथा कहि रहलाह अछि। एहि सभ कथा मे समाजिक यथार्थ त' छल मुदा खिस्सा बला शिल्प नहि छल। कालान्तर मे जखन खिस्साक शिल्प आ सामाजिक यथार्थ कें एक संग बुनि क' कथा लिखल जाय लागल त' ओहि मे मैथिली कथाक जातीय संस्पर्श स्पष्ट रूपें देखाइ दिअ' लागल। एहि तरहक विकासक परिणति ई भेल जे कथा कोनो एक स्तरक नहि रहल। तीन स्तर पर कथा चल' लागल। एक कथात्मक स्तर, दोसर भावात्मक स्तर आ तेसर सांस्कृतिक स्तर। कथा पढ़ैत काल अहांके घटना आ चरित्र जे दृश्यमान होइत अछि से कथात्मक स्तर थिक। एही संग भावात्मक स्तर बोधक स्तर थिक, एहि घटना सँ प्राप्त बोध सेहो चमत्कारिक नहि होइत अछि। अंतिम स्तर सांस्कृतिक स्तर मे कथा सम्पूर्ण जीवन-पद्धतिक एक आन्तरिक सत्य बनि जाइत अछि। वस्तुतः मैथिली कथाक विकास एहि तीन-तीन स्तर धरि भेल अछि। एहि लेल आवश्यक अछि एहन आलोचकक जे प्रक्रिया आ पाठक माध्यम सँ मैथिली कथाक विकास पर काज करथि।

संदर्भ-संकेत

1. कुलानन्द मिश्र, कथाकार अपन लेखन मे क्रमशः अधिक लोकोन्मुख होइत गेलाह अछि। अन्तरंग वार्ता, संधान-4
2. कहानी, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली : डॉ॰ अमर नाथ
3. कुलानन्द मिश्र, अन्तरंग वार्ता, सन्धान-4
4. सुरेन्द्र चौधरी, हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ

5. मेघन प्रसाद, मैथिली कथा-कोश
6. शिवशंकर श्रीनिवास, बदलैत स्वर
7. मोहन भारद्वाज, स्वातंत्र्योत्तर कथाक प्रवृत्ति-एक विश्लेषण, मि॰ मिहिर 9 एवं 16 नवम्बर 1975
8. रमानन्द झा 'रमण', छठम दशकोत्तर मैथिली कथा यात्रा, मैथिली अकादेमी पत्रिका, मार्च-अगस्त 1989
9. मोहन भारद्वाज, अन्तरंग वार्ता, सन्धान-4
10. तारानन्द वियोगी, नवचरणक मैथिली कथा, सन्धान-4
11. शिवशंकर श्रीनिवास, बदलैत स्वर।

(मैथिली भाषा-साहित्य प्रबंध, चेतना समिति, 2015 ई॰)



समकालीन मैथिली कथा

कथाकार महाप्रकाशक एक कथा अछि 'केलैंडर'। कथा कहैत अछि जे समकालीन समाज मे सज्जन ओ खगल लोकक जीवन संकटग्रस्त अछि। संकटक अनेको कारण ओ प्रकार अछि। लोक भोर सँ राति धरि ओहि संकट सभ सँ डेराइत, बचैत अथवा ओहि सँ जूझैत, संघर्ष करैत जीवन गुदस्त क' रहल अछि। ई संकट सभ देखार शत्रु सँ अछि त' चिन्हार मित्रो सभ सँ अछि। कदाचित शत्रु सँ बेसी मित्रे सभ सँ अछि। शत्रु कें त' अहां चिन्हैत छी। ओकरा प्रति सावधानो रहैत छी। मुदा मित्र सँ सावधान रह' पड़य त' ई कहेन समाज थिक? वस्तुत: एहन समाज पढ़ल-लिखल, नीक कमाइ-खटाइबाला लोकक समाज थिक। कोनो गरीब वा निरक्षर लोकक समाज नहि। गरीब ओ निरक्षर लोकक चरित्र ओतेक नहि खसलैक अछि जतेक पढ़ल-लिखल लोकक। समाज मे चरित्रक संकट कें ई कथा बहुत मेंही सँ समक्ष अनैत अछि। कथा मे चरित्रक स्खलन सामान्य लोकक नहि प्रतिष्ठित प्रोफेसर, डाक्टर, अफसर सभक देखाओल गेल अछि। प्रतिष्ठित आ पाइबला भइयो क' हिनका सभक क्षुद्रता खतम नहि भेलनि अछि। छोट-छोट वस्तु कें पयबाक लेल अनकर सुख-आनन्द कें छीनि सकैत छथि। ककरो, किछु लुटबाक लेल उद्यत भ' सकैत छथि। मित्रो कें नहि बरजैत छथि। एक घर डानियो छोड़ैत अछि- से समाज आब कदाचित नहि रहल। असल मे हुनका सभ कें ककरो नीक नहि सोहाइत छनि। समाज अत्यधिक इर्ष्यालु भ' रहल अछि। मित्रो भ' क' मित्र सँ ईर्ष्या करैत अछि। मित्र कें ठकि सकैत अछि। मित्रक पसिन्नक कोनहु वस्तु झपटि क', फुसला क' योजना बना क' हड़पि सकैत अछि। कथा मे ई वस्तु थिक 'केलैंडर'। ओहि केलैंडरेक

छीना-झपटीक खिस्सा कहैत कथा पढ़ल-लिखल मध्यवर्गीय समाजक क्षुद्र चरित्र कें उघारि क' राखि दैत अछि।

एहि पढ़ल-लिखल समाज मे अंग्रेजियत बढ़ैत गेल अछि। आब त' ओ अमरीकियत पर आबि क' टीकि गेल अछि। समाज मे अंग्रेजी प्रभुवर्गक भाषा बनि, ज्ञानक भाषा बनि, बजारक भाषा बनि लोक कें खूब प्रभावित कएलक अछि। एहि अंग्रेजीक प्रभाव दू तरहें-सकारात्मक आ नकारात्मक ढंगे समाज पर पड़ल अछि। नकारात्मक प्रभाव एना पड़ल जे अंग्रेजी बाज'बला लोक अपना कें फारवार्ड बूझ' लागल। अपनो परिवारक आन लोक कें जे अंग्रेजी नहि जनैत छल, तकरा बैकवार्ड बूझ' लागल। समाजक ई यथार्थ हरिमोहन झाक कन्यादान मे मानसिकताक स्तर पर अभिव्यक्त भेल। बुच्चीदाइ छबे मास मे रेपीडेक्स्क तर्ज पर अंग्रेजी पढ़ि क' 'आधुनिक' बनि अपन माय कें बैकवार्ड बुझ' लगैत छथि। एहि साठि-सत्तरि वर्ष मे ई मानसिकता व्यवहारक स्तर पर उतरि आयल अछि। नीता झाक कथा 'बाय अंकल'क बुच्चीदाइ 'लावण्या' अपन नेनपन सँ चेतन धरिक 'गार्जियन' रिक्शावला कें चतुरताइ सँ 'स्टुपिड अंकल' कहैत अछि आ मजा लैत अछि। अपन सखीसँअंग्रेजी मे रिक्शावला गोपालक मुर्खता पर बतियाइत अछि। मुदा एहि अंग्रेजीक सकारात्मक प्रभाव सेहो समाज पर पड़ल अछि। लोक, जीवन कें संकटग्रस्त रखनिहार-बनौनिहार रूढ़-परम्परा, आचार-व्यवहार कें जीवनक पक्ष मे बदलब शुरू कएलक अछि। समकालीन समाजक दोसर बुच्चीदाइ 'प्रिया' ज्योत्सना चन्द्रम्‌क कथा 'कांग्रेचुलेट्स मम्मी' मे अपन विधवा मायक दोसर वियाह करबाक निर्णय सुनि अवाक् त' रहि गेल, मुदा शीघ्र एहि निर्णय पर माय कें 'कांग्रेचुलेट्स' कएलक। ओ मम्मीक द्वन्द्व आ धुकधुकी कें शांत करबाक क्रम मे हुनकर हिम्मति बढ़बैत अछि। गम्भीरता सँ हुनका समाजसँ पड़ेबाक लेल नहि, मोकाबिला करबाक लेल प्रेरित करैत अछि। प्रियाक मम्मी रूपा सोचैत छथि जे प्रिया आब किशोरबय नहि रहल।

एहि पुरुषतंत्री समाजसँ जूझैत आइ बहुतो स्त्री अपन स्वाभिमान कें जगौलनि अछि। जीवनक बहुतो क्षेत्र मे काज करैत, परिवार सँ बहरा क' समाजक मादे सोच' लगलीह अछि। जे मानसिक रूपें अपने बैकवार्ड

नहि रहत से समानताक दृष्टिकोण दिस अग्रसर हेबे करत, समाज-जीवन मे समानता कें सोच-विचार ओ आचरणक स्तर पर अपनेबे करत। एहेन बहुतो रास स्त्रीक कथा नारी कथाकारलोकनिक कलम सँ निकलि रहल अछि जे समकालीन मैथिली कथाक स्वर कें बदललक अछि। लिली रे, नीरजा रेणु, शेफालिका वर्मा, उषाकिरण खान, नीता झा, ज्योत्सना चन्द्रम, विभारानी, सुष्मिता पाठक, इन्दिरा झा, वीणा ठाकुर, कमला चौधरी, आशा मिश्र, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', पन्ना झा सन नाम सभ एहि बातक साक्षी अछि जे अपन जीवन ओ साहित्य सँ समकालीन मैथिली कथा-समाज मे स्त्रीक पक्ष मे आवाज कें जोरगर बनौलनि अछि। हिनकालोकनिक कथा मे स्त्री आब पुरुष-वर्चस्वक समाज मे केवल 'स्पेस' नहि बना रहलीह अछि, समाज मे पुरुषक बर्चस्व कें चुनौती देबाक भाषा-भंगिमा सेहो अपनाब' लागल छथि। तें ई कहल जा सकैत अछि जे जमाना आब हरिमोहन झाक बुच्चीदाइक नहि रहल जकरा सी. सी. मिसर बेइज्जत क' क' छोड़ि देथिन अथवा अपना सन बना क' अंग्रेजियतक किटाणु केँ पनपेबाक बुधियारी करताह।

मुदा एहि बैकवार्ड-फॉरवार्डक एक दोसर पक्ष सेहो अछि। से अंग्रेजीक डर्टी पिक्चर नहि सामाजिक राजनीतिक डर्टी पिक्चर थिक, मण्डल-कमण्डलक झगड़ादन थिक, जाति आ धर्मक आधार पर समाज कें फुटकायब थिक। एहि सँ समाज मे वैमनस्य पसरल अछि। ई लोकक संकट कें आर बढ़ौलक अछि। एहि सँ ने कोनो जातिक हित भेल अछि आ ने कोनो धार्मिक समुदायक। एक समय मंडल कमीशनक आधार पर आरक्षण भेल त' लोक सभ कें यात्रा मे, बस-ट्रेन मे पकड़ि क' मारल-पीटल गेल। बैकवार्ड, फॉरवार्ड कें पीटलक त' फॉरवार्ड, बैकवार्ड कें पीटलक। कतेक गोटे मारि-पीटक डर सँ फॉरवार्ड भ' क' बैकवार्ड बनि जान बचेलनि त' कतेक बैकवार्ड भ' क' फॉरवार्ड बनि जीवन बचौलनि। लोक कें अपन परिचिति नुकाब' पड़लैक। रमेशक 'जनउ', मंत्रेश्वर झाक 'गुमटी', शिवशंकर श्रीनिवासक 'दिशा' आ तारानन्द वियोगीक 'विवेक-वध' आदि कतेको कथा अछि जे समकालीन समाज मे बैकवार्ड-फारवार्डक एहि लड़ाइ तथा ओहि सँ समाजक टूटन, दंश, पराभव आदि कें अभिव्यक्त कएलक अछि। ई आरक्षणक मामला सामाजिक रूप सँ पिछड़ि गेल

कमजोर समाजक लेल छल मुदा से जाति कें तोड़बाक बदला जाति कें मजगूत कर' लागल। जातिवाद जे कमजोर भेल जा रहल छल तकरा भोट लेल राजनीतिज्ञ बढ़ावा देब शुरू कएलक। एहि सँ जातिक खाधि आर बेसी व्यापक आ गहींर भेल। अम्बेदकर आ लोहियाक रस्ता एहि मे कतहु दूर पाछू छुटि गेल। मुदा जेना समाज हिनका सभ कें नहि बिसरल अछि तहिना समकालीन मैथिली कथा सेहो भविष्यक समाज-निर्माण कें दृष्टि मे राखि सौहार्द ओ समरसताक मूल्य कें जीवित रखबा लेल सचेष्ट रहल अछि। आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे सामाजिक समरसताक समस्या आइ वस्तुत: विकट भ' गेल अछि। ई बात नहि छैक जे पहिने आर्थिक, धार्मिक आ जातिगत स्तर पर समाजक गाड़ी उनार नहि होइत रहय, मुदा तैयो समाजबन्ध रहैक। सामाजिक मूल्य-मर्यादा आ नैतिकताक प्रति लोकक मोन मे आदर छलैक। यैह आदर-भाव समाजसत्ता कें अक्षुण्ण रखने छल। किन्तु आइ स्थिति एकदम उनटि गेल अछि। ओ ईहो कहैत छथि जे मैथिली कथाकार समाजधर्मी छथि, तें ओ उनटा बसात कें रोकबाक प्रयास मे लागल छथि। हुनक प्रयास मे संग देब जरूरी अछि। मैथिली समाजक एहि समरसताक मूल्य कें तारानन्द वियोगीक 'हीरा जनम तिहारो', शिवशंकर श्रीनिवासक 'जमुनिया धार', उषाकिरण खानक 'टुग्गरि', लिलीरेक 'पाहुन', अरविन्द ठाकुरक 'अन्हारक विरोध मे', रमेशक 'वन्दा वैरागी' आदि बहुतो कथा मे अभिव्यक्त कएल गेल अछि।

समकालीन मैथिली कथा मे मिथिलाक शहर आ कस्बा मे रहैत समाज चित्रित भेल अछि त' गामक समाज सेहो खूबे चित्रित भेल अछि। मैथिल समाज लेल देस एखनो मिथिलेक सिमान धरि सीमित अछि। ओहि सँ बाहर परदेस भ' जाइत अछि जत' लोक कमाइ-खटाइ लेल जाइत अछि। परिवार पिछू एक-दू व्यक्ति परदेस मे अदौ सँ कमाइ लेल जाइत रहल अछि। मुदा आब त' परिवारक परिवार परदेसे मे अछि। मुदा तैयो परदेसक प्रति दुराओ-तनाओ, निन्दा-भाव खतम नहि भेलैक अछि। मिथिलाक गाम-घर मे रहनिहार लोक परदेस मे रहैत अपन समांग लेल विकल होइत रहैत अछि। भयग्रस्त मानसिकता मे जीबैत अछि। से पंजाब लेल गेल समांग हो आ कि दिल्ली-मुम्बई गेल

समांग। आब विदेश गेल समांग सेहो एहि परिधि मे आबि गेल अछि। शैलेन्द्र आनन्दक 'उठ पुत्ता पुरल पुरल' पंजाब गेल समांगक निपत्ता भ' जेबाक घटना कें लोककथाक मर्मस्पर्शी रूप द' चित्रित करैत अछि त' विभूति आनन्दक 'एकटा उड़ल फुर्र' सेहो दिल्ली मे रहैत संतान लेल भयग्रस्त आशंका मे जीबैत परिवारक चित्र उपस्थित करैत अछि। दुनू कथा मुदा एहि भय कें रचबाक लेल चिड़ै-चुनमुनीक आसरा सँ समकालीन सामाजिक संकट कें अभिव्यक्त करैत अछि।

वस्तुत: परदेस एखनो हमरा सभक विवशता बनले अछि। ई प्रवसन, विस्थापन, पलायन क्रमशः गहींर आ व्यापक भेल चल गेल अछि। से आब कतेको दिन सँ चलि रहल अछि। मुदा परदेस ओहिना परदेस बनले अछि। अपन बनि नहि पाबि रहल अछि। परदेस मे रहितो कोनो ने कोनो रूप मे देस सँ अपना कें जोड़ने रखबाक इच्छा एखन धरि मरल नहि अछि। मुदा ई संकटो लगातार बनले अछि। से संकटो कएक तरहक अछि। भूमण्डलीकरणक बजारी आ सांस्कृतिक दूनू आयाम एहि संकट कें आर गहींर कएलक अछि। मुदा तैयो ई भरोस एखनो जीबैत अछि जे अपन देसक दिन अवश्य घुरतैक। मिथिलाक लोक कें आनठाम नहि जाय पड़तैक। जे एत' रह' चाहत, एत' काज-धंधा कर' चाहत से सुविधा एत' उपलब्ध हेतै। मुदा तत्काल मिथिलाक संसाधन आ पछुआयल विकास एहिठामक लोकक आगू बढ़बाक इच्छा संग तालमेल नहि बैसा पाबि रहल अछि। नारायणजीक 'साँझवाती' आ श्याम दरिहरेक 'विस्थापित' सन कथा एहि प्रसंग मे मोन पड़ैत अछि। सुकान्त सोमक 'त्रिशंकु' देस-परदेसक एहि द्वन्द्व कें बहुत मार्मिकताक संग उपस्थित करैत अछि।

हमरालोकनिक समाज मे गाम-घर बहुत गहींर धरि लोकक मोन मे एखनो बसल अछि। से सौंस समाजक मोन मे। जाति-धर्म निरपेक्ष अछि ई मोह-ममता। एहि समाज कें गाम-घर छुटै छै त' ओहि लेल परदेसो मे बेकल रहैत अछि। गाम-घर घुरबाक इच्छा चाहे कविता हो कि कथा, मैथिलीक समकालीन साहित्यक केन्द्र मे बनले अछि। ई नास्टेलजिया एक कमजोरी नहि, पैघ तागति रहल अछि मैथिली साहित्यक। ई अकारण नहि थिक जे समकालीन मैथिली कथाक दू टा शीर्ष कथाकार राजमोहन झा आ जीवकान्त क्रमशः घर आ गाम कें व्यापक रूपें अभिव्यक्त

कएलनि अछि अपन कथा सभ मे। हमरा संग अपन भेंट-वार्ता मे राजमोहन झा 'घर' शीर्षक सँ दसटा कथा लिखबाक इच्छा व्यक्त केने रहथि। हुनकर 'घर' नाम सँ दू टा कथा अछि। घर घुरबाक अकुलाहटि आ घर पहुंचलाक बादक आश्वस्ति कें भोगबाक लेल हुनक एहि दुनू कथा कें पढ़ल जा सकैत अछि। जीवकान्तक विभिन्न कथा कें पढ़ला पर मिथिलाक गाम मे लगभग पचास वर्ष मे भेल विभिन्न परिवर्तन कें, ओकर आरोह-अवरोह कें गमल जा सकैत अछि।

आजुक समय मे समाजबन्ध कें कमजोर कएल जा रहल अछि। समाज मे पसरल पारिवारिकताक भावना कें छहोछित करबाक साजिश सेहो चलि रहल अछि। भूमण्डलीकरणक एहि युग मे मनुक्ख कें अलग-थलग काटि क' असगर बना क' लुटबाक व्योंत बहुत मेंही सँ सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल पर भ' रहल अछि। 'यूज एण्ड थ्रो'क एहि दारुण समय मे अपना कें बचेबाक लेल परिवार, समाज, गाम-घरक कतेक प्रयोजन छैक से एहि समयक संकट सँ जूझैत हरेक समकालीन मनुक्खक हृदय जनैत अछि। एहि धरातल पर समकालीन समय मे अनेको कथा मैथिली मे रचल गेल अछि। से एहि संकट सँ जूझैत, अपना कें बचेबाक कोशिश करैत मनुक्खक थिक। एहि क्रममे अपन परम्परा आ जड़ि धरिक सन्धान-अनुसन्धान भ' रहल अछि। जाति, धर्म, राजनीति आ भूमण्डलीकरण समाज कें कोना प्रभावित कएलक अछि आ ओहि सँ बचि समाज कें साबुत रखबाक, सौहार्दपूर्ण रहबाक, संघर्षशील रहबाक तागति कत' सँ भेटि सकैत अछि ताहि सभ बिन्दु पर समकालीन मैथिली कथा सजग आ सचेष्ट रहल अछि। विभारानीक 'मियाँ मुसलान', शिवशंकर श्रीनिवासक 'सिनुरहार', प्रदीप बिहारीक 'गमला मे धान', प्रो॰ मनमोहन झाक 'शांति आ खिस्सा', विभूति आनन्दक 'लोक देखलक' आदि कथा कें एहि क्रम मे मोन पाड़ल जा सकैत अछि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास समकालीन कथाक एहि स्वर कें अकानलनि अछि। ओ एकरा सांस्कृतिक चेतनाक कथा कहैत छथि। आलोचक कुलानन्द मिश्र सांस्कृतिक चेतनाक स्वर एम्हर बेसी मुखर हेबाक बात पर अपन एक भेंट-वार्ता मे साकांक्ष ओ सतर्क सेहो करैत छथि। ओ कहैत छथि जे सांस्कृतिक चेतना संग जड़ि आ माटि-पानिक

संग सरोकारक चिन्ता हमरो किछु अधिक देखबा मे आयल अछि। प्रो॰ हरिमोहन झा आ यात्री सँ ल' क' कथाकर शिवशंकर श्रीनिवास आ कवि विवेकानन्द ठाकुर धरिक रचना प्रसंग गप्प करबाक क्रम मे एहन चिन्ता सभ कें बोल भेटलैक अछि। हमरा एहन चिन्ता मे होइत वृद्धि सँ प्रसन्नता भेल अछि, मुदा हमरा संगहि ईहो स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमरा सभक चिन्ताक केन्द्र सँ एखनो ओ वर्ग तत्वतः बाहर थिक जे वृहत्तर होयबाक संग-संग सांस्कृतिक विकासक असली कारक कि माटि-पानि सँ अधिक सम्पृक्त रहल अछि आ तें हमरा सभक चिन्तो खण्डित रहबाक लेल अभिशप्त बनल रहैछ। ओ इहो कहैत छथि जे संस्कृतिक बारल वर्गक जीवन आ संस्कार कें यथास्थान प्रतिष्ठित कएलाक बादे अभिजात आ लोक संस्कृतिक बीच संवाद स्थापित कैये क' अपन सांस्कृतिक चेतनाक वस्तुनिष्ठता कें चिह्नित क' सकैत छी।

समकालीन मैथिली कथा मे जे समाज चित्रित भेल अछि से बहुलांश मे ब्राह्मण समाज थिक। सवर्ण वा उच्च वर्गक समाज थिक। मध्यम वर्गक समाज थिक। मुदा कथाकारलोकनि निम्न ओ गरीब, निरक्षर समाजक चित्र सेहो अपन कथा मे उपस्थित कएलनि अछि। जीवकान्तक 'गाछ एकटंगा', प्रभास कुमार चौधरीक 'पतिबरता', धुमकेतुक 'उदयास्त', रामदेव झाक 'मनुक सन्तान', धीरेन्द्रक 'सुगरक बाप', रमानन्द रेणुक 'घट्ठर' आ अनेको कथा, सुभाष चन्द्र यादवक 'काठक लोक' सन बहुतो कथा, विभारानीक 'कौआहकनी', तारानन्द वियोगीक 'कायाकल्प', रमेशक 'कैलाश मण्डलक फिलिप्स रेडियो', विभूति आनन्दक 'काठ' आदि बहुतो कथा अछि जे एहि गरीब निरक्षर समाजक संघर्षपूर्ण जीवनक राग, विराग, उपराग, नेह-छोह कें अभिव्यक्त कयलक अछि। ब्राह्मणो समाजक अनेक कथा मे जे चित्र कथा मे आयल अछि से समाजक बदलैत मानसिकताक कथा कहैत अछि। मुदा जहां धरि साकांक्ष ओ सतर्क रहबाक बात अछि से अपना जगह पर कायम अछिये। किएक त' एहि सँ इतर एहनो कथा सभ भेटि सकैत अछि जे जाति आ सम्प्रदायक रंग कें गाढ़ करैत हो। मुदा से समकालीन मैथिली कथाक परिचिति नहि बनि सकैत अछि। वस्तुतः ओ समकालीन कथा थिको नहि।

समकालीन मैथिली कथा समाजक विभिन्न संस्था ओ क्रियाकलाप

मे आयल विकृति सभ पर सेहो प्रहार कएलक अछि। से बियाहदान हो, पाबनि-तिहार हो, शिक्षण वा अन्य संस्थान हो आ कि कोनो सांस्कृतिक-सामाजिक अनुष्ठान, ओहि मे आयल भ्रष्टताक प्रतिरोध मे बहुतो कथा लिखल गेल अछि। दहेजक कारण समाज मे पसरल पकड़ वियाह पर साकेतानन्दक कथा अछि। पावनि-तिहार पर अर्थ ओ व्यावसायिकताक प्रभाव कें धूमकेतुक 'छठि परमेसरी' ओ 'भरदुतिया' कथा मे देखल जा सकैत अछि। समाज मे शिक्षण संस्था सभ मे पसरल भ्रष्टाचार के विनोद बिहारी लालक कथा 'देशक आधार' बहुत तिक्ख ढंग सँ प्रतिरोधक स्वर मे अभिव्यक्त करैत अछि।

कहल जाइत अछि जे समकालीन सन्दर्भ मे प्रमाणिक कथा वैह भ' सकैत अछि जे समकालीन मनुक्ख जकां आजुक स्थिति मे शामिल आ ओहि सँ जुझैत प्राप्त अनुभव कें रचय। स्वाभाविक रूप सँ तें समकालीन कथा प्रतिवाद आ प्रतिरोधक कथा थिक। ओकर प्रतिवाद आ प्रतिरोध हरेक ओहि वस्तुक प्रति छैक जे समकालीन मनुक्खक संकटक कारण अछि। जिनगीक खांटी, तिक्ख अनुभवक भोक्ता कथाकार अपन चारु दिसक क्रूरता सँ नहि मात्र विचारक स्तर पर अपितु जीवनक स्तर पर सेहो लड़ैत अछि। कथाकार आइ तटस्थ नहि रहि सकैत अछि। किएक त' विचारक स्तर पर लड़बाक तागति सेहो जीवनेक स्तर पर लड़ल जाइत लड़ाइ सँ अबैत छैक।

प्रतिवाद वा प्रतिरोधक ई रूप समकालीन मैथिली कथा मे आठम दशकक कथा-पीढ़ी लग आबि क' जगजियार होइत अछि। कथाकार तारानन्द वियोगी प्रतिरोधक एहि रूप पर टिप्पणी करैत कहैत छथि जे बहुतो एहन कथा लिखल गेल जाहि मे अस्तित्व रक्षा लेल निर्णायक संघर्ष अनिवार्य बनि क' आयल। ओ ईहो कहैत छथि जे एहि संग वर्ण, जाति, वर्ग, परिवार, समाज सन संस्था सभ कें नव परिप्रेक्ष्य मे बूझल-समझल जायब आवश्यक मानल गेल, हाशिया पर अबडेरल निम्न जनक जीवन-सौन्दर्य कें देखबाक एक चेष्ट सेहो मुख्य धारा मे आयल।

ई बात सत्य सत्य थिक जे उपन्यास मे जेना समाज व्यापक ओ प्रत्यक्ष रूप सँ चित्रित होइत अछि तेना कथा मे नहि। तें कथाक समाजशास्त्र रचब कठिन बनले अछि। मुदा एतबा त' कहले जा सकैत अछि जे

समकालीन मैथिली कथा मे जे समाज चित्रित भेल अछि से आर्थिक ओ सांस्कृतिक दूनू स्तर पर संकटग्रस्त समाज थिक। अपन संकट सभ सँ बहरेबाक कि जुझबाक बेगरता जेना समाज कें छैक तहिना भोक्ता कथाकार सेहो समाज-धर्मक निर्वहन सामाजिक चेतनाक कथा रचि क' करैत अछि। यैह समकालीन मैथिली कथाक यथार्थ थिक।

(घर-बाहर, जुलाई-सितम्बर, 2014)



गत एक दशक
मैथिली कथाक शिल्प ओ भाषा

हमरा गत एक दशकक कथाक भाषा ओ शिल्प पर विचार करबाक लेल कहल गेल अछि। ओहि प्रसंग विचार करैत हमरा लागल जे केवल भाषा ओ शिल्प पर विचार करब कथाक मात्र तकनीकी पक्ष पर विचार करब होएत। शिल्प ओ भाषा तँ कथाक अन्तर्वस्तु कें प्रस्तुत करबाक माध्यम थिक। एही कारणें ओ अन्तर्वस्तुक संग परिवर्तनशील ओ विकासशील होइत अछि। कथामे कथ्य मुख्य थिक तँ ओकरा प्रभावशाली ढंग सँ प्रस्तुत करबाक लेल शिल्प ओ भाषाक सेहो महत्व अछि। वस्तुतः दूनू कथ्य ओ शिल्प अविच्छिन्न होइत अछि, कोनो कथाकार कथा लिखबा सँ पहिनहि प्रायः ओकर शिल्प निर्धारित नहि क' लैत छथि। कथानक, चरित्र, वातावरण, भावात्मक प्रभाव, विषयवस्तु आदि बिन्दु कें पहिनहि फड़िछा कए ओहि मादे अपन नोट्स तैयार कए तखन कथा लिखबा लेल नहि बैसैत छथि। ई सभटा कथाकारक मानसमे, मानसिक प्रक्रिया मे चलैत रहैत अछि। ओ इहो पहिने नहि सोचि क' राखि लैत छथि जे ई कथा दलित लोकनिक भाषा मे लिखब। एहि कथा मे सीतामढ़ी, सहरसा जिलाक वा पंचकोसीक मैथिलीक छटा देखायब। भाषाक विन्यास देखेबाक लेल कथा नहि लिखल जाइत अछि। तहिना सर्वज्ञ कथावाचक कें अपन निजी जीवनक महिमा बखानय लेल चयन नहि कयल जाइत अछि। संगहि एहि कथाक भाषा एकदम ठेंठ मैथिली छैक, एहि कथामे चरित्रक विकास नीक जकां भेल अछि, कथानक बहुत गठल छैक। शिल्प वृत्तात्मक छैक। एहि प्रकारक आलोचना की ओहने नहि लगैत अछि जेना कोनो भाषाक परिचय लेल संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाक गप्प मात्र कहल जाए? ओकर परिभाषा देल जाए। व्याकरण भाषा नहि

थिक। तहिना शिल्प ओ भाषा सेहो कथा नहि थिक।

कथाक सफलता कथ्य ओ शिल्प दूनू पर निर्भर करैत अछि। वस्तुतः कथाक लेल अभीष्ट वर्ण्य विषय चुनबाक क्रममे कथाकारक अपन एक निश्चित जीवन-दृष्टि होइत छैक। कथाकार वस्तु कें ओहि रूप मे नहि देखैत अछि जाहि रूप मे ओ सामान्यतया देखल जाइत अछि। रचनात्मक दृष्टिक ई परिवर्तन कथाकारक सम्पूर्ण व्यक्तित्वक परिवर्तनक द्योतक थिक।

गत एक दशक मे करीब एक हजार कथा लिखल गेल अछि। सगर राति दीप जरय कार्यक्रम मे सुनाओल गेल अछि। पांच सए सँ ऊपर छपबो कयल अछि। ताहि मे नहि किछु तँ पचास सँ बेसी कथा सफल ओ सार्थक अछि। शिल्पक दृष्टि सँ ओ सफल अछि तँ वर्तमान वास्तविकताक सम्मुख ओकर सार्थकतो छैक। क्रमशः मैथिली कथा लोकोन्मुखी होइत गेल अछि। आ बोल चालक भाषा मे लिखल जाए लागल अछि। समाजक बेसी भाग अपना कें कथाक संग तादात्म्य बैसा सकैत अछि। मैथिली कथाक क्षेत्र विस्तार भेल अछि।

हमरालोकनि जनैत छी जे कथा जीवनक एक खण्डकें ल' क' चलैत अछि। मुदा ओहि माध्यमे पैघ गप्प सेहो कहल जा सकैत अछि। कथा जीवनक खण्ड मे निहित अन्तर्विरोधकें पकड़बाक कोशिश करैत अछि। एहि खण्डगत अन्तर्विरोध कें पकड़ि जागरूक कथाकार ओकरा सार्थकता प्रदान करैत अछि।

आधुनिक मैथिली कथाक बएस आब करीब साठि बरखक तँ भैये गेल अछि। स्पष्ट अछि जे हम पांचम दशक सँ लिखल कथाक सन्दर्भ लए रहल छी। ई ओएह काल थिक जखन व्यासजी 'रूसल जमाय' लिखलनि। उमानाथ झा 'आध घंटा' वा 'माधवजी' आदि कथाक सृजन कए शिल्पक दृष्टि सँ मैथिली कथा कें आधुनिकता दिस अग्रसर केलनि। मुदा आइ पछिला दशक मे लिखल ओ प्रकाशित कथा कें जँ देखी तँ स्पष्ट रूप सँ मैथिली कथाक विकास दृष्टिगोचर भ' सकैत अछि। कथाक जे विकास भेल अछि ओहि मे मैथिली कथा परम्पराक स्पष्ट छाप अछि।

पछिला दशक एहन कालखण्ड अछि जखन मैथिली कथाकारक चारि पीढ़ी सृजनरत रहल। गोविन्द झा सँ ल' क' अजित कुमार आजाद धरि, एहि दशक मे एक संग योगदान देलनि। गोविन्द झाक जतय 'नखदर्पण'

नामक कथा-संग्रह आएल जे सम्पूर्ण रूपें एही दशक मे लिखल कथा सँ तैयार भेल। खिस्सा कहबाक शिल्प ओ संवेदनाक विस्तारक दृष्टि सँ एहि दशक मे लिखल गोविन्द बाबूक कथा सभ हुनक पहिलुक कथा सँ भिन्न अछि। एही दशक मे राजमोहन झा अपन प्रथम पुरुष कथावाचकक शिल्प मे लिखल कथा सभ सँ समकालीन मनुक्खक त्रासदी ओ अवसाद, आतंक कें कथात्मक अभिव्यक्ति देलनि। जीवकान्तक पारदर्शी शिल्प मे लिखल महत्वपूर्ण कथा 'तेल' आयल तँ धूमकेतुक अपन खास भाषा विन्यास सँ सजल 'छठि परमेसरी' सेहो आयल। सुकान्तक 'त्रिशंकु' रहय वा महाप्रकाशक 'कैलेन्डर' उषाकिरण खानक 'अजनास' हो वा नीता झाक 'अयना', नारायणजीक 'चित्र' हो वा रमेशक 'दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?' विभूति आनन्दक 'दर्द निरोध' हो वा प्रो॰ मनमोहन झाक 'शान्ति' प्रदीप बिहारीक 'गमला मे धान' हो वा शैलेन्द्र कुमार झाक 'फिल्ली ब्लैक' समकालीन मनुक्खक मासु आ रक्त सँ सानल जीवनखण्ड आ ओहि मे निहित अन्तर्विरोध कें कथा सभ मे अकानल जाए सकैत अछि। एहि सभ कथाकें पछिला दशकक कथाक भाषा ओ शिल्प कें जनबा बुझबा लेल पढ़ब जरूरी भए सकैत अछि।

पढ़ब एक रचनात्मक कार्य थिक। ताहि दिशा मे पाठककें प्रेरित प्रोत्साहित करब ओ सहयोग देब आलोचक लोकनिक कर्त्तव्य थिक। वस्तुत: आलोचको तँ पहिने एक साकांक्ष पाठके होइत छथि। वस्तुत: कोनो कथाक मर्म धरि जयबा मे पाठक कें परिश्रम करय पड़ि सकैत छनि। कोनो कथाक अर्थ खुजबा मे देरी लागि सकैत अछि। ओकरा एक सँ बेसी बेर पढ़य पड़ि सकैत छनि। कोनो कथाक अभिप्राय बूझबा मे एहि कारणें कठिन भए सकैत अछि, जे कोनो पाठक पारम्परिक रूप सँ कथा मे वर्णित विषयक सम्बन्ध मे यांत्रिक ढंग सँ बन्हा गेल रहैत छथि। ओ ओही बन्हल-बन्हायल फ्रेम मे कथाक मादे सोचि पबैत छथि। ईहो भए सकैत अछि जे कोनो टटका सामाजिक समस्या पर लिखल कथाक सम्बन्ध मे पाठक खास पक्षक समर्थनक कारणें अपन विवेक जाग्रत नहि राखि पबैत होथि। मोटामोटी आजुक कथा पाठक कें नहि केवल साकांक्ष भ' पढ़बाक अपेक्षा करैत अछि अपितु ओही रचनात्मक प्रक्रिया मे ल' जाइत अछि जाहि प्रक्रिया सँ कथाकार गुजरल अछि। जहिना

मानवीयता ओ उपेक्षितक प्रति सहानुभति कथाकार लेल जरूरी अछि तहिना पाठकोक लेल। एहि प्रकारें कथाकार ओ पाठक एक्के संस्कृतिक प्रक्रियाक अंग भ' जाइत छथि।

उदाहरण रूपमे हम पछिला दशकक मात्र तीन टा कथा - पाठक माध्यम सँ अपन मत स्पष्ट करय चाहब। पहिल कथा थिक विभारानीक 'रहथु साक्षी छठ घाट'। एहि कथा कें पहिल बेर पढ़लहुँ तँ आकर्षित नहि कयलक। मुदा लागल जे किछु मिस कए रहल छी। थोड़ेक दिन छोड़ि देलियैक। फेर जखन पढ़लहुँ तँ बुझायल जे विभा मिथिलाक ब्राह्मणेत्तर समाजमे बाल-विवाह, विधवा-विवाह पर टिप्पणी क' रहल छथि। बाल-विवाह फेर वैधव्य तखन पुनर्विवाह आ संतानक उत्पत्ति धरिक कथा छठि घाट कें साक्षी राखि कहैत छथि। कथाक अन्त सुखद अछि। मुदा किछु दिनका बाद ओ कथा पुन: पढ़बाक मोन भेल। तखन जे पढ़लहुं तँ कथाक अन्त मे देहक सौंसे रोइयाँ भुलकि गेल। ओ वालिका-वधू मुनिया जे ओहि कथा मे एक्को शब्द नहि बजैत अछि से जखन अपन नान्हिटा किलकारी मारैत बच्चाक चुम्मा लैत अछि तँ रोमांच भ' जाइत छैक। ओ अपन माए-बाप-परिवारक सख-सेहन्ताक बलि चढ़ि गेल अछि। लगैत अछि जेना रसनचौकी आ ढोल-पिपहीक आसमर्द करैत स्वरक बीच अवोध स्त्रीक अव्यक्त रूदन हृदय कें बेधि रहल अछि। परिवारक एहि स'ख-सेहन्ता कें पूरा करबामे छठि मैया सहाय भेल छथिन। गरीब परिवार मेहनति आ बुद्धिक बलें सम्पन्न होइत अछि आ अपन मांगल-चांगल एक मात्र कन्या संतान कें धार्मिक ओ सामाजिक पुण्य प्रतिष्ठा लेल बारहे तेरह वर्षमे बियाहि दैत अछि। ओकर वर अकस्मात मरि जाइत छैक। मुदा जेना ओ विवाहक अर्थ नहि बुझैत छल तहिना पतिक मृत्युक अर्थ सेहो नहि बुझैत अछि। सभ कें कनैत देखि ओहो कानय लगैत अछि। फेर ओकर दोसर वियाह अपने दिअर सँ होइत छैक। फेर सँ लोक ओकरा छठि घाट पर गहना-गुड़िया पहिरने रंगीन साड़ी मे देखैत अछि। जे साड़ी एखनहुँ ओकरा सम्हरैत नहि रहैत छैक।

एहि सम्पूर्ण कथा मे समाजक संलग्नता अपूर्व अछि। पूरा गाम मुनियाक सुख-दुखक संग अछि। कथाक प्रारम्भ दौड़ल जाइत गामक लोकक हॉकरोस सँ होइत अछि - रौ बाप रौ बाप! भोला रामचन्नर

केर घर मे तँ डकैती पड़ि गेलै। किछु नहि रहलै आब ओकरा आउरक जीवन मे हा दैव।' एहि कथा मे छठि घाट मात्र एक सक्षी बनल रहैत अछि। घटना घटैत रहैत छैक। जाहि तेजी सँ घटनाचक्र चलैत अछि आ विभा कें ओहि परिवारक विपन्नता सँ सम्पन्नता धरिक खिस्सा कहबाक छनि ताहि लेल जाहि शिल्पक प्रयोग केलनि अछि, से खिस्सा सुनेबाक शिल्प नहि, दृश्य देखेबाक (विजुअल) शिल्प थिक। तैं फ्लैश बैक मे परिवारक सम्पन्न बनबाक खिस्सा चलैत रहैत अछि तँ वर्तमान मे मुनियाक वैधव्य, पुनर्विवाह, सन्तानोत्पत्ति, छठि घाट पर भीड़-भाड़, पूजा पाठक घटनाक दृश्य उपस्थित होइत रहैत अछि। ई शिल्प तेना अछि जे पाठक कें पहिल बेर पढ़ला पर कने दिक्कतिक अनुभव होइत छैक। हुनकर भाषा सेहो मिज्झर-साझर छनि। ताहू सँ अवरोध होइत छैक। ओ बूझि नहि पबैत अछि। कदाचित एही दुआरे जखन कथा संस्था द्वारा एहि कथा कें पुरस्कार दैत एकर अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कयल गेल तँ फ्लैश बैक मे चलैत खिस्सा आ वर्तमान मे घटैत घटना कें फुटकबै लेल दू टाइपक अक्षरक प्रयोग कयल गेल। एहि कथा मे विभा स'ख, सेहन्ता, परम्परा, धार्मिक वातावरणक बीच मनुक्खक लालसा ओ स्त्रीक मूक समर्पणक अन्तर्विरोध ठाढ़ कयल अछि। अन्तर्विरोध सँ अवयस्क स्त्रीक पीड़ा ओ कन्या जीवनक त्रासदी उभरि जाइत अछि।

दोसर कथा जे हम चयन कयल अछि से तारानन्द वियोगीक 'विवेक-वध' थिक। एहिठाम कहि दी जे ई कथा कटिहार सगर राति दीप जरय गोष्ठी मे वियोगी पढ़ने रहथि। ओहिकाल मे आरक्षणक कारण ें बैकवार्ड-फौरवार्डक झमेला बहुत तीव्रताक संग ठाढ़ रहय। बहुतो विवेकवान लोक सेहो एहि बिन्दु पर अपन तर्क आ विवेक कें जाग्रत नहि राखि सकल छलाह। एकटा अन्हरजाली सन पसरल रहय। मुदा वियोगी अपन कथा मे एहि तरहक आपसी भेदभाव पर निर्मम चोट करैत छथि। कथा मे घटना आ ओकर यथार्थ एहि प्रकारें उभरि कए आयल अछि जे श्रोता, पाठकक मोन कें झकझोरि दैत अछि। एहि कथाक अन्त बहुत मारुक अछि। ओहि अन्तक तुलना रमेशक कथा 'दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?'क अन्त सँ कयल जा सकैत अछि। ई अन्त सभ यथार्थक विस्तार लागि सकैत अछि। वस्तुतः दूनू कथाक यथार्थक

सम्बन्ध समाजमे पसरल विकृति सँ अछि। रमेशक कथा जतय टी॰भी॰क प्रसारक बीच समाज मे बढ़ैत सेक्स विकृति, सौन्दर्य-वोध ओ नैतिकताक क्षरण के कथात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि तँ वियोगीक कथा समाजमे जाति-पातिक बीच भेदभाव, शत्रुता ओ जातीय गुण्डागर्दी, जातिक पक्ष ल' बढ़ैत अपराधक विकृतिकें देखबैत अछि। एहि दूनू कथाक कथ्यकें सम्प्रेषित करबाक लेल कदाचित यथार्थक विस्तार जरूरी भ' गेल अछि। किएक तँ कथाकारक दृष्टि मे एहन दारूण समय मे केवल यथार्थक प्रस्तुति सँ कथाक प्रभाव सघन रूपें नहि पड़ि सकत तें ओ ओकर विस्तार केलनि अछि। मुदा ओहि गोष्ठी मे भेल ई जे बहुतो श्रोता ओहि कथाक खिधांश केलनि। एक गोटे तँ साहित्यक अपराधीकरण धरि कहि देलनि। मुदा बाद मे विवेक वध कथा साहित्य अकादेमीक कार्यशाला मे अंग्रेजीक अनुवाद लेल चुनल गेल। ओहि कथाक प्रशंसा कयल गेल।

वियोगी एहि कथाक प्रारम्भ बैकवार्ड-फौरवार्ड सम्बन्धी भेदभावक सम्बन्ध मे मन्तव्य सँ करैत छथि। सिंहजी एहि भेदभाव कें नहि मानैत छथि आ अपन विवेक जाग्रत रखने छथि। ओ फौरवार्ड दलक मठाधीश सँ पुछैत छथि, 'मठाधीशजी, संसारक सभ धर्म मे पड़ोसी कें अतेक महत्व, अतेक गरिमा किए देल गेलैए? ओ अहाँक दुःख बटैत अछि। ओ बैकवार्ड थिक की फौरवार्ड कोनहु फर्क कहाँ पड़ैत अछि? एहि मन्तव्यक बाद कथा मे वियोगी अपन अभीष्ट गन्तव्य दिस बढ़ि जाइत छथि। एक विद्यालयक विभिन्न शिक्षक-शिक्षिकाक माध्यम सँ चरित्र ओ घटनाक माध्यम सँ एहि भेदभावक मानसिकता कें आपसी शत्रुताक सीमा धरि पहुंचा दैत छथि। विद्यालय मे स्पष्टतः दलबन्दी कायम भ' जाइत अछि। शत्रुता एतेक बढ़ैत अछि जे शिक्षक लोकनि एहि मे अपन दलक छात्र-छात्राक सेहो दुरुपयोग प्रारम्भ क' दैत छथि। फौरवार्ड दलक लोक कें बैकवार्ड दलक छात्र सभ कोनो व्याजें मारि बैसैत अछि तँ फौरवार्ड दलक शिक्षक, बैकवार्ड दलक शिक्षक सभ कें एहि मामिला मे फंसेबाक चेष्टा करैत छथि। ओहि मे सफल नहि होइत छथि तँ अपन एक छात्रक दुरुपयोग क' सामूहिक बलात्कारक आरोप लगबैत छथि। बलात्कारक साक्ष्य बनेबाक लेल फौरवार्ड दलक छात्र सभ ओहि कन्याक संग संभोग करैत अछि। साक्ष्य बनि जाइत छैक। मेडिकल रिपोर्ट तैयार भए जाइत

अछि। ओ शिक्षक सभ गिरफ्तार क' लेल जाइत अछि। ओहि मे ओहू शिक्षकक नाम द' देल जाइत अछि जे विवेकवान छथि। निष्पक्ष छथि आ दूनू दलक लोक कें बुझेबाक चेष्टा करैत रहैत छथि। कथाक अन्त मे ओ छात्र अपन शिक्षिका सँ पुछैत अछि, 'मैडम अहाँ तँ कहने रहियै जे ओ सभ निरोध लगा क' करत। मुदा मैडम, से तँ ओ सभ नहि केलक। आ जँ किछु भ' जाय तखन .....?' मैडम हँस' लगलीह, 'बताहि छह तों श्वेता। निरोध लगा क' जँ ओ सभ करितय तँ मेडिकल टेस्ट सफल कोना होइतै।' श्वेता फेर कानय लागलि। मैडम मुसकियेलीह। कथा कहैत अछि जे ई जातिवाद, बैकवार्ड-फौरवार्डक मानसिकता कोना लोकक विवेक कें वध क' दैत अछि। लोक आन्हर भ' जाइत अछि आ अपराधी भ' जाइत अछि। खास क' शिक्षक सन वर्ग सेहो अतेक अन्ध भ' अपराध करैत अछि आ अवोध छात्राक शोषण करैत अछि। ई कथा जतय खतम होइत अछि ओतहि सँ शुरू होइत अछि। वस्तुत: ई कथा खतम नहि होइत अछि। पाठकक मस्तिष्क मे बहुत काल धरि चलैत रहैत अछि। एहि कथा मे जातिवादक अन्धगली मे लोकक गुण्डा आ अपराधी भए जयबाक सामाजिक यथार्थ उभरैत अछि। ई कथा साहित्यक अपराधीकरण नहि जातिवादीक अपराधीकरणक खिस्सा कहैत अछि। एकर पुष्टि लेल हम जातिवादी गुण्डा सभक जाति अधीन समाजक समर्थनक तथ्य कें राखय चाहब। ई यथार्थक दोसर आयाम थिक। साहित्य तँ एहि यथार्थ कें उद्घाटित करैत अछि। वस्तुत: साहित्ये आइ एहि सत्य कें सोंझा आनि सकैत अछि। मुदा त्रासदी ई अछि जे आइ साहित्ये हाशिया दिस ठेलल जा रहल अछि। ई जातिवादी आ धर्मवादी गुण्डा सभक हितमे थिक। वियोगीक एहि कथा मे यथार्थ घटना सँ नहि घटनाक प्रभाव सँ उभरैत अछि। ई प्रभाव कथा मे व्यक्त विचार ओ संवाद मे निहित अछि। ई कथा समकालीन सामाजिक यथार्थक बहुत मारुक ओ हृदय कें वैचैन कय वला आख्यान थिक। एहि मे वियोगीक अपन खास कथा-भाषा ओ भंगिमाक विशेष योगदान अछि।

तेसर कथा शिवशंकर श्रीनिवासक थिक 'गाछ-पात'। ई कथा दू सामाजिक जीवन पद्धतिक अन्तर्विरोध पर चलैत भारतीय संस्कृतिक मानवीय तत्व कें स्थापित करैत अछि। कथा तीन स्तर पर एक संग

चलैत अछि। पहिल कथात्मक स्तर थिक जाहि मे गाम मे असगर रहैत बूढ़ी कें बेटा-पुतहु, पोता-पोती, सभ मीलि शहर ल' जाय चाहैत अछि। ओही लेल गाम आयल अछि। मुदा बूढ़ी अन्तत: ओकरा सभक संग नहि जाइत छथि। अपन गाछ-पात कें बिलटि जयबाक बात कहि प्रस्तावकें नकारि दैत छथि। एही संग कथाक जे दोसर भावात्मक स्तर अछि से बूढ़ीक अपन मृत पतिक स्मृति, हुनका द्वारा रोपल गाछ-पातक प्रति लगाओ, बेटा-पुतहु, पोता-पोती सँ रागात्मक सम्बन्ध ओ एहि सभ मे फँसल बोधक स्तर पर चलैत द्वन्द्व सँ उभरैत अछि। कथाक जे तेसर आ मेंही स्तर अछि से सांस्कृतिक धरातल पर चलैत अछि। एहि मे दू जीवन पद्धतिक अन्तर्विरोध अछि। एक अछि गाम मे रहनिहारि बूढ़ी अर्थात गाछ आ शहर मे रहनिहार बेटा, पोता-पोती अर्थात पात। एक अपन रस, माटि-पानि अर्थात संस्कृतिक मानवीय तत्व सभ सँ ग्रहण करैत अछि तँ दोसर आधुनिक बसात मे उधिया रहल अछि। दूनू जीवन पद्धतिक अन्तर्विरोध बूढ़ी आ पोता-पोतीक गप्प-सप्प मे पाबनि-तिहारक गीत सीखबाक परम्परा आ पोता-पोतीक स्कूली शिक्षा मे सिखल राइम्स सम्बन्धी वार्तालापसँ उभरि जाइत अछि। एहि संग ईहो बात सोंझा अबैत अछि जे बूढ़ पुरैनियाँ सभ आइ काल्हि बच्चा सभ कें बहसा दैत छथि। ई सोच शहर मे रहनिहारि आधुनिका स्त्रीगण लोकनिक थिक। एहि प्रकारें घरक बूढ़ पुरैनियाँ बाबा दादी नानीक परम्परा आ ओकर विरुद्ध अंग्रेजिया अधखिज्जू चालि मे मातल दोसर पीढ़ीक मानसिकता सेहो एहि कथा मे अभिव्यक्त भेल अछि। कथाक वैशिष्टय ई अछि जे बूढ़ी सभटा बात बुझैत छथि। अपन आत्मसम्मानक लेल बेटाक संग नहि जयबाक निर्णय लैत छथि। ओना बहाना प्रकटत: गाछ-पातक बिलटि जयबाक लगबैत छथि। बूढ़ीक ई आत्मसम्मान हुनकर पति बूढ़ाक देल स्नेह, सम्मान ओ अधिकार सँ उपजल अछि। हुनक आत्मसम्मान जगेबा मे बूढ़ोक योगदान छनि। ई तथ्य सामान्यत: वर्णवादी समाज मे पुरुष वर्चस्वक मानसिकताक बीच नहि देखल जाइत अछि। स्त्री कें पुरुषक आश्रित बना कय रखबाक लेल मानसिक स्तर पर कमजोर बना क' राखब जरुरी होइत छैक। मुदा शिवशंकर संस्कृतिक ओहने तत्व सभ कें प्रक्षेपित करैत छथि जे जीवन, सामूहिक भावना ओ मानवीयता सँ ओतप्रोत अछि। ई जीवन-दृष्टि

मनुक्ख ओ गाछ पातक मैत्री ओ गुणग्राहकताक भावना कें सेहो स्पष्ट करैत अछि। स्वाभाविक रूप सँ शिवशंकर अपन एहि कथाक शिल्प खिस्सा कहबाक प्राचीन रूप कें परिवर्द्धित, विकसित करैत रखलनि अछि। मुदा ओहि मे अपन जीवन-दृष्टि ओ भाषा विन्यास सँ बहुस्तरीय प्रभाव उत्पन्न केलनि अछि। एहि कथा कें पढ़ला पर मनुक्खक गरिमामे आस्था बढ़ैत छैक। गाछ-पातक अनुवाद हिन्दीमे प्रकाशित भेलाक बाद ओकर अनुवाद उड़िया, कन्नर ओ मराठी मे आयल अछि। मुदा यांत्रिक रूप सँ वर्ण्य विषयक प्रति बन्हा गेल पाठक एहि कथाकें बूढ़ा-बूढ़ीक कथा कहि सकैत अछि। खास क' शिवशंकर श्रीनिवासक अन्य किछु कथाक पात्र बूढ़ा बूढ़ी रहलाक कारणें मैथिलीमे एकरा बूढ़ीक कथा कहि कतिया देल गेल।

गत एक दशकक मैथिली कथा के उपर्युक्त तीनू कथाक विशेष सन्दर्भ संग विचार करैत हमरा लगैत अछि जे शिल्पक स्तर पर परिवर्तन आयल अछि। ई परिवर्तन कथामे अन्तर्वस्तु मे आयल परिवर्तनक कारण ें भेल अछि। से स्वाभाविक रूपें कथाकारक बदलैत जीवन दृष्टि सँ सबन्ध रखैत अछि। एहि सन्दर्भ मे एकटा बात बहुत सुगमतापूर्वक कहल जा सकैत अछि जे पछिला दशकमे कथाक झुकाव चरित्र दिस बढ़ल अछि। कथा अपन सम्पूर्ण व्याप्ति मे मुख्य चरित्र कें आधार बना लैत अछि। कथानायक वा नायिकाक मोनक परिचय मुख्य भ' जाइत अछि, अन्य चरित्र केवल ओकर मानसिकता कें अपन व्यापारक द्वारा सघन करैत अछि। तें एम्हर कथाक चरित्र बहुधा पाठक कें मोन रहि जाइत छनि भलेहीं ओ आन सभ बात बिसरि जाथु। ओना एहि रूप मे आयल परिवर्तन शिल्पक स्तर पर कथाक पुरान परम्पराक बेसी नजदीक अछि। स्वाभाविक रूप सँ एकर सम्बन्ध खिस्सा कहबाक प्रविधि सँ जुड़ल अछि। जे प्रवृत्ति एम्हर बढ़ल अछि। मुदा एकर एक दोसर परिणाम सेहो भेल अछि जे मैथिली कथामे शिल्पक नव-नव प्रयोग घटल अछि। से कोनो नीक बात नहि थिक। तें शिल्पक विकासक दृष्टि सँ हमरा पछिला दशकक कथा बहुत उल्लेखनीय नहि लगैत अछि। जें कि रूपक विकास सामाजिक विकास सँ जुड़ल अछि तें एहि मामिला मे पछुआयल रहब स्वाभाविक। एहि तथ्य कें मैथिली कथा ओ मलयालम कथा कें पढ़ि

क' बूझल जाए सकैत अछि।

जत' धरि भाषाक प्रश्न अछि समाजक विभिन्न क्षेत्र, जाति-धर्म ओ वर्गक पात्रक आबाजाही कथामे बढ़लाक कारणें भाषाक प्रकृति ओ विन्यासमे अन्तर आयल अछि। ओना कथाकारोक मैथिलीक शब्द सभ सँ अपरिचय एहि मे सहायक भेल अछि। ई बहुत जटिल ओ व्यापक समस्या थिक जकरा हिन्दीआइन कहि हल्ला-गुल्ला कयला सँ सोझराओल नहि जा सकैत अछि। किएक तँ हल्ला-गुल्ला कयनिहार आइ बहुधा विकल्पक रूप मे पंचकोशीक भाषाक उदाहरण दैत देखाइत छथि। जे आइ अतीतमुखी तँ अवश्ये भ' गेल अछि। संगहि ओहि संग मात्र मैथिल ब्राह्मणक परम्परा जुड़ल अछि। जखनि कि भाषा कोनो खास जाति ओ धर्मक नहि थिक।

(जयन्ती, पोथी, चेतना समिति, 2004 ई०)



'व्यासजी'क कथा

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार छथि। ओ कथा, उपन्यास, काव्य, कविता, विदेश-भ्रमण लिखने छथि। अनुवाद सभ केने छथि। नेना सभ लेल पद्यमे अक्षर परिचय लिखने छथि। हुनकर सन्यासी, पतन (खण्डकाव्य), 'कुमार' आ दू पत्र (उपन्यास), विदेश भ्रमण, विडम्बना ओ भजना-भजले (कथा-संग्रह) आ वाभनक बेटी ओ रूबाइयात ए ओमर खैयाम प्रसिद्ध अनुदित पोथी छनि। व्यासजी इंजीनियर रहथि आ बिहार सरकारक चीफ इंजीनियर पद सँ रिटायर केलनि। बिहार विशेष क' झारखण्डक विभिन्न स्थान पर हुनक पोस्टिंग रहलनि। हुनकर कथा सभमे झारखण्डक जंगल, पहाड़ आ ओहिठामक रहनिहार आदिवासी सभक खिस्सा अछि।

व्यासजीक पहिल कथा-संग्रह 'विडम्बना' जे 1952 मे प्रकाशित भेल, ओहिमे सातटा कथा अछि। विडम्बना, उत्तरदायित्व, देबू, बकरी, रक्तदान, वाग्दान आ रूसल जमाय। ई कथा सभ 1944 सँ 1946क बीच लिखित आ प्रकाशित अछि। दोसर संग्रह-भजना-भजले (1989) मे दस टा कथा अछि - एकादशी महात्म्य, मिस्टर बटरफ्लाइ, फोटो, ममता, भजना-भजले, शैदा-हमीदा, मन के मनाएब, भग्गू दा, अखरी बुढ़िया आ मुखियाजी। ई कथा सभ 1947 सँ 1988 धरिक लिखित/ प्रकाशित कथा थिक। व्यासजीक कथा सभ पढ़ब बहुतो कारणसँ महत्वपूर्ण अछि। एम्हर हमरा ई दृढ़ धारणा भेल जा रहल अछि जे अपन कथा-परम्परा के बिना जनने ने क्यो महत्वपूर्ण कथाकार भ' सकैत अछि आ ने सुविज्ञ पाठक। मैथिलीमे आइ जे कथा लिखा रहल अछि अथवा कथामे हम सभ जतबा दूर धरि चललहुं अछि से सम्भव नहि

छल जँ व्यासजी ओ विभिन्न कथाकारक एहि मे योगदान नहि होइत।

व्यासजी जाहि कथा ल' क' सभसँ बेसी प्रसिद्ध भेला से 'रूसल जमाय' कथा छी। ई कथा 1945क मिथिला-मिहिर मे प्रकाशित भेल रहय। डॉ० जयकान्त मिश्र लिखने छथि जे 'रूसल जमाय' मैथिली कथा के नव मोड़ देलक। हुनकर मानब अछि जे, मैथिलीमे गल्प लिखबाक ई नव शैली सभसँ पहिने श्री व्यासजी चलओलनि आओर आइ गल्पक इएह नव शैली-हरिमोहन बाबूक शैली नहि-जाहि शैलीमे स्वस्थ उपदेश ओ प्रखर कटाक्ष भरल रहैत छल-समस्त आधुनिक साहित्यकें व्याप्त कयने अछि। मैथिलीमे एहि शैलीक कथाकार सभमे व्यास जीक स्थान आइयो बहुत ऊँच छनि।'[1] कथाक ई शैली की छल? ई शैली छल मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग। मैथिलीमे एहि दशकसँ पूर्व मनोव्यापारक माध्यमसँ कथा के आगू बढ़ेबाक कला नहि आयल छल। एहिस पूर्वक कथा प्रवृत्ति सुधारवादी रहय। पात्रक अथवा कथावाचकक मनोविज्ञान ओहि मे नहि रहय। आलोचक मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि जे, 'अक्टूबर 1944 मे लिखित 'बकरी' नामक कथा मे व्यासजी कहने छथि, 'हमरा आइ-काल्हि शिक्षाक प्रभावें किछु (यद्यपि बड़ि थोड़) मनस्तत्व विज्ञानक ज्ञान अछि, ओही बल पर बढ़लहुँ, अर्धचेतनावस्था मे एकर आधार कतय...।' आधार जत' कतहु हो, मुदा मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग ठीक एकर बाद लिखल 'रूसल जमाय' मे सफलतापूर्वक व्यासजी कयलनि अछि ताहिमे सन्देह नहि।'[2]

सत्त कही त' मैथिली कथा साहित्यक इतिहास मे 1945ई० बहुत महत्वपूर्ण वर्ष अछि। हरिमोहन झाक 'प्रणम्य देवता'क प्रकाशन एही वर्ष भेल। 'रूसल-जमाय' छपल। प्रो० उमानाथ झाक सम्पादनमे एकटा संकलन प्रकाशित भेल-मैथिली नवीन साहित्य। ओहिमे सात टा कथा सेहो छल। एहि दशकमे उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क संग उमानाथ झा, योगानन्द झा आ मनमोहन झा कथा क्षेत्र मे प्रवेश क' मैथिली कथाधारा के आर वेगसँ गतिमान केलनि। सुधारवादी कथा-प्रवृत्तिक बाद जे मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिसँ कथा लिखब शुरू भेल ताहिमे हिनका लोकनिक योगदान रेखांकित करबा योग्य छनि। असल मे बात ईहो भेलै जे पाँचम दशकमे मैथिली कथाक लगाम अंग्रेजीदाँ लोकक हाथमे आबि

गेल। एक-आध टा अपवाद के छोड़ि अधिकांश कथाकार अंग्रेजी शिक्षा पद्धतिमे दीक्षित छला। आलोचक मोहन भारद्वाजक कहब छनि जे, 'ई भिन्न बात थिक जे व्यासजी इन्जीनियर भइयो क' पण्डित रचनाकार रहथि। रमानाथ झा हिनका सुधारवादी नहि आदर्शवादी कथाकार मानैत छथि।'[3] व्यासजीक दुनू कथा-संग्रहक कथा सभके पढ़लाक बाद हमरा लगैत अछि जे ओ पण्डित रचनाकार भले ही होथु मुदा कथा सभमे पाण्डित्य-प्रदर्शन नहि केलनि अछि। कोनो प्रकारक वैचारिक कट्टरता वा साम्प्रदायिक भावना के अपन कथा सभमे प्रश्रय सेहो नहि देने छथि। आरम्भिक किछु कथामे खान-पीनक सम्बन्धमे थोड़-बहुत आग्रह छनियो त' से क्रमश: बाद मे खत्म भ' गेलनि अछि। अपन कथा सभमे ओ एक उदार हिन्दू सन के लगैत छथि। जेकरा लेल आन धर्मावलम्बी वा आन जातिक लोक घृणा वा उपेक्षाक पात्र नहि अछि। ओ ककरो ओकर धर्म वा जातिक कारणे न्यून क' क' नहि बुझैत छला। तखन हुनका अपन धर्म मे पूर्ण आस्था छलनि मुदा अनका पर अपन धर्म के थोपबा लेल आग्रही सेहो नहि देखाइ छथि। ई एक एहन बात छी जे आइ-काल्हि बूझब जरूरी भ' गेल अछि, किएक त' मुसलमान आ आन धर्मावलम्बीक प्रति घृणाक भाव हिन्दुत्ववादी सभ मे बढ़ि रहल अछि। ओहि सँ 'मनुखता' सेहो प्रभावित भ' रहल अछि। व्यासजीक 'मिस्टर बटरफ्लाइ', 'भजना-भजले', 'शैदा हमीदा', 'भग्गू दा' आ 'अखरी बुढ़िया' कथा पढ़िक' मानवीय भैयारी, पारिवारिकता आ मनुक्खक गरिमाक सम्बन्ध मे जानल जा सकैत अछि। 'शैदा-हमीदा' त' अद्‌भुत कथा अछि, एहन कथा मैथिली मे नहिएँ जकाँ अछि। धार्मिक कट्टरता, नृशंसता आ हिन्दू-मुस्लिम दंगाक बीच शैदा सन युवतीक अनुराग आ निडरता, सद्‌भाव बिसरैवला नहि अछि। व्यासजी ओहि कथाक अन्तमे कहैत छथि, 'एकटा अवश्य ओहि दिन सँ धारणा बदलल जे कोनो जातिमे सभ अधलाहे नहि होइछ।' ई जे अनुभूतिक बात अछि सेहो महत्वपूर्ण अछि। किएक त' बिना कोनो अनुभव के आइ-काल्हि लोक आन धर्म ओ जातिक लोकके प्रति बहुतो गलत आ काल्पनिक धारणा सभ पोसने रहैत अछि। ई क्रम चलैत त' रहल अछि बहुत दिनसँ अंग्रेजेक जमानासँ मुदा स्वतंत्रताक बाद सँ एहि मे

तीव्रता आयल अछि। से केवल मुसलमानेक प्रति नहि, आदिवासी आ शेष पिछड़ल समाजक प्रति सेहो। व्यासजी मुदा स्वतंतत्रताक बाद जे कथा सभ लिखलनि अछि ओहि मे ओ अपन क्षेत्रीय सीमा सँ बाहर भ' व्यापक भेला अछि। सत्त पूछू त' अखरी बुढ़िया, मि० बटरफ्लाइ, शैदा-हमीदा, भग्गू दा, ममता, भजना-भजले कथामे व्यासजी संवेदनाक ओहि विन्दु के स्पर्श करैत छथि जत' मनुक्खके मनुक्खक प्रति प्रेम आ करुणा लबालब भरल रहै छै। हमरा लगैत अछि जे व्यासजीक कथा-संवेदना मानवीय करुणाक न्यौ पर ठाढ़ अछि।

पहिल कथा-संग्रहक कथा सभमे व्यासजी क्षेत्रीय सीमा वा कहू जे मिथिला-मैथिलक सीमामे रहला अछि। आलोचक रमानाथ झा ओहि संग्रहक भूमिकामे कहने छथि जे, 'श्री व्यासजीक रचनामे, केवल एहि गप्पहि सभमे नहि प्रत्युत प्रत्येक रचना मे-ओ काव्य हो वा उपन्यास सबसँ महत्त्वक जे विषय हमरा आकृष्ट करैत अछि से थीक हिनक 'मैथिलत्व'। मध्यवित्त मैथिल परिवारक एहन सुन्दर चित्र, वास्तविक, स्वाभाविक, सुरुचिपूर्ण-हमरा लोकनिक साहित्य मे आओर केओ दोसर कलाकार अंकित नहि कएने छथि।'[4] एतबे नहि, खाली चित्रे टा नहि, अपन भूमिक लोकक प्रति लगाओ के कारण व्यासजी ओहि समयक समस्या सभ जेना अनमेल बियाह, वृद्ध बियाह आदि के सेहो अपन कथा सभमे रखलनि अछि। घर जमैयाक व्यथा त' नव दम्पत्तिक कथा 'रूसल जमाय' मे अछिए। 'वाग्दान' कथामे एकटा नवयुवक अपन संगी सभक संग एक बूढ़ वर के किशोरी कनियाँ सँ विवाह करबा सँ रोकैत अछि। बुढ़बा वर के बैला दैत छैक सभ मीलि क'। पचास बेर कान पकड़ि क' उठ-बैस करबैत अछि जे फेर ओ एहन काज नहि करय मुदा तैयो ओ बुढ़बा बियाह लेल धपाएल रहिते अछि।

कथाक अन्तमे ई बात आयल अछि जे ओ किशोरी सरोज बजैत अछि जे, 'हमरा जँ ओइ बुढ़वासँ बियाह होयत त' हम विष खा लेब।' कथावाचक एहि बातके अपन बेटी पद्‌मासँ सुनि क' स्तब्ध, हतप्रभ सन बड़ीकाल धरि ओहिना ठाढ़ रहि जाइत छथि। आब हम सभ जँ यात्रीजीक 'नवतुरिया' के मोन पाड़ी त' व्यासजीक एहि कथाक ओ आगू डेग लगैत अछि। तहिना 'देबू' कथाक आरम्भ काञ्चीनाथ झा

'किरण'क 'चन्द्रग्रहण' उपन्यास के मोन पाड़ैत अछि। ओना देबू एक अनाथ ओ अंकिचन लोकक अद्भुत अनुराग आ स्वाभिमानक कथा थिक। 'मनुखता' ओकरा मे मूल विन्दु भ' जाइत अछि। एही संगे जँ हम व्यासजीक 'उत्तरदायित्व' कथा पढ़ी त' ओहिमे आयल वैद्यनाथ यात्रा अहाँके मनमोहन झाक कथा 'राजगीर यात्रा' के मोन पाड़ि देत। ई जे एक समयक कथाकार आ हुनक कथा-प्रवृत्ति मे 'कनेक्शन' देखाइ दैत छै, से ओहि भाषा-साहित्यक वैशिष्ट्ये के प्रकट करैत अछि। जाहि साहित्यक अपन भूमि छैक, ओकर कथाकार वैचारिक भिन्नताक बावजूदो अपन साहित्यमे एक-दोसरासँ जुड़ल रहि सकैत छथि। ई बात बाद के दशक मे आर स्पष्ट रूप सँ जगजियार होइत छैक जखन ललित, राजकमल, मायानन्द, सोमदेव, हंसराज, रामदेव झा आ धीरेन्द्र आ लिली रे कथाक क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि। एहि छठम दशक मे आबिक' आधुनिक दृष्टि-बोध मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ स्वरूपमे व्यापक परिवर्त्तन अनलक। जीवन कें, समाज कें देखबाक नजरि सेहो बदलि गेल। मुदा ठीक पछिला दशक मे अर्थात् 1941-50क दशकमे विधा आ टेकनीक दुनू रूपमे आधुनिक मैथिली कथाक न्यौं पड़ि गेल छल। एहि न्यौं के निर्माणमे उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क महती भूमिका छनि। एतबे नहि, स्वतंत्रताक बाद लिखल 1948 सँ 1988 तकक कथा मे ओ अपना के लगातार व्यापक ओ विकसित करैत गेला से कथाकारक रूपमे सेहो आ विषय ओ संवेदनाक विस्तारक दृष्टिसँ सेहो। एहि दुनू कथा-संग्रहक बाद हुनक एकटा कथा आर भेटैत अछि जे प्रभास कुमार चौधरीक सम्पादन मे 'कथा दिशा' पत्रिका मे छपल रहय-छिन्नमूल। ई कथा लोककें अपन जड़ि सँ उखड़ि गेला पर होइत पराभवक कथा अछि। ई जे सांस्कृतिक चेतना अछि से समकालीन मैथिली कथामे अपन विभिन्न रंग ओ कथ्यमे विस्तारित भेल अछि। वर्त्तमान कथाक मुख्य स्वर बनि गेल अछि।

एहि प्रकारें हम देखैत छी जे व्यासजी अपन कथा सभक द्वारा नहि केवल आधुनिक मैथिली कथाक न्यौं के मजबूत केलनि अपितु घरके सेहो सुरक्षित आ विकसित केलनि। जेहने इमानदार ओ इंजीनियर रहथि तेहने इमानदार कथाकार सेहो।

संदर्भ-संकेत

1. डॉ॰ जयकान्त मिश्र : मैथिली साहित्यक इतिहास
2. मोहन भारद्वाज : बीजीपुरुषक भूमिका निबाहैत कथा, 'अनवरत' पोथी
3. ओएह
4. रमानाथ झा, 'विडम्बना' पोथीक भूमिका

(सांध्य गोष्ठी, पत्रिका, सितम्बर 2017 ई॰)

○○○

रूप तत्वक सचेत कथाकार

प्रो॰ उमानाथ झा अपन कथा-संग्रह 'रेखाचित्र' मे कहैत छथि, 'चारि ढाकी कहबाक नहि अछि-एक मौनी मात्र। बुच्चीदाइ लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल छी, परन्तु हुनका अनरसाक हिसख, मलपुआ रुचिकर, ऐहबक फड़ ओ बगेयासँ परिचय, बिस्कुट-सएण्डविच-केक नीक लगतैन्ह? के कहय? मएदा, आँटा, घी, चीनी-ई सभ वस्तु तँ परिचित केवल बनएबाक विधि भिन्न। तें धृष्टता कएल। नीक लगैन्ह तँ आओरो भेटतैन्ह। नहि नीक लगैन्ह तँ दोष सोड़हो आना हमर-केक ओ बिस्कुटक नहि।'

स्पष्ट अछि जे प्रो॰ झा तहिया अर्थात् 1950मे केक ओ बिस्कुट ल' क' उपस्थित भेल रहथि। आशंका मुदा रहनि जे बच्चीदाइ लोकनिकें ई नव वस्तु रुचतनि की नहि? किएक त' हुनका सभकें अपन पारम्परिक पकवान जानल छलनि। पारम्परिके पकवान रुचितो छलनि। केवल बनयबाक विधि भिन्न भेलासँ वस्तुओ भिन्न भ' गेल छल। कत' मलपुआ आ कत' केक! कत' अनरसा आ कत' बिस्कुट? मुदा प्रो॰ झा अपरिचित विधिसँ बना क' अपरिचित वस्तु तहिया किए ल' क' अयला। कोन एहन बाध्यता रहनि? किएक ओहेन रिस्क लेलनि? की रूप परिवर्तन लेल? खाली पाश्चात्य शिल्पक आकर्षणमे। आ कि जे बात हुनका कहबाक रहनि से बिना रूप परिवर्तनक सम्भवे नहि छल? जाहि लोकक खिस्सा, जाहि जीवनक कथा ओ सुनब' चाहैत छला से की पारम्परिक रीतिएँ कहल जा सकैत छल? हमरा जनैत नहि कहल जा सकैत छल। जीवन बदलि रहल छल। समाज परिवर्तित भ' रहल रहय। व्यक्तिक मानसिकता सेहो ताही संग बदलि रहल छल।

स्वाभाविक रूपें कथाक अन्तर्वस्तु परिवर्तनशील आ विकासशील रहय। तैं ओहि अन्तर्वस्तुकें प्रस्तुत करबाक लेल नव रूपक आवश्यकता अनिवार्य भ' गेल।

प्रो॰ झाक 1942मे लिखल कथा अछि 'मकर'। एकटा नेना रामफल मकरक मेलामे जाय चाहैत छल। मकरमे कठपुतरीक नाच देख' चाहैत छल। एक पाइक लाइ, दू पाइक जिलेबी, एकटा पिपही कीन' चाहैत छल। बिचला तीन मकर तँ दुखित रहबाक कारणे नहि जा सकल। स्वस्थो भेला पर चारिम मकरमे बाप नहि जाय देलथिन किएक त' रस्ता महक गाम बिगड़ल छलैक। एकटा कौआ मरि गेल रहय। जीयत त' अगिला साल देखि लेत। मायक अनुनय-विनयक कोनो प्रभाव बाप पर नहि पड़लनि। रामफल कतबो कोशिश केलक। मायक कोंचा ध' ठुंनकल। ओकर भभटपनसँ मायक क्रोध, दुख, अभिमान सभ जागृत भ' गेलनि। रामफलकें थापड़, मुक्का लगलैक। एहन दिन पहिनहुँ होइत रहैक मुदा ओहि दिन रामफलक आत्मविश्वास नष्ट भ' गेलैक। ओकर कोमल मस्तिष्क पर माय-बापक व्यवहारसँ मनुष्यक प्रति सन्देहक दृष्टि जनमि गेलैक। आइ ओकर कोनो अपराध नहि रहैक। प्रकृतिक विचित्रता देखि ओ अत्यन्त विस्मित भेल। परन्तु करितय की? तें ओ अन्तर्हित भ' गेल अर्थात् भड़ारक ओसारा पर राखल खाली ढाड़मे पैसि गेल। संसारसँ नुका लेलक अपनाकें। आब रामफलक खिस्सा कहबाक लेल ओकर आक्रोश, सेहन्ता, मानसिक आघात, दुख, दुखक परिणाम सुनेबाक लेल पुरना ढाठिक आख्यायिका, कथाक संरचना, स्थापत्य आ शिल्प यथेष्ट छल? की कथाक मूल अभिप्रायक अभिव्यक्ति पुरना रीतिएँ अथवा पारम्परिक रूपमे सम्भव छलैक? हम सभ जनैत छी जे पुरना कथा आ आख्यायिका-साहित्य अभिप्राय विशेषक अभिव्यक्ति करैत अछि, चाहे ओ अभिप्राय धर्मकें विषय बना निर्मित भेल हो अथवा लोक-जीवनकें विषय बना लिखल गेल हो। एहि अभिप्राय सभक अंकन हेतु आख्यायिका आ कथामे किछु रूढ़ि बनि गेल छल, समयानुसार ई सभ आकस्मिकता सभमे बदलि गेल और कथा मे घटना-संयोग नाम पर स्वीकृत भ'गेल।[1] मुदा प्रो॰ झाकें 'मकर' कोनो घटना संयोग पर नहि लिखबाक छलनि। हुनका जे लिखबाक छलनि, ताहि लेल कथाक रूप बदल' पड़लनि।

साहित्यक रचनामे रूपक दू प्रकार होइत अछि। एक रूप ओ थिक जे अन्तर्वस्तुक परिवर्तनक बावजूद अपेक्षाकृत स्थायी होइत अछि। एकरा साहित्यमे विधा कहल जाइत अछि। रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप अन्तर्वस्तुकें प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। एहि कारण ें ओ अन्तर्वस्तुक संग परिवर्तनशील और विकासशील होइत अछि।[2] साहित्यमे विधा जेना-कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य आदि अपेक्षाकृत स्थायी मानल गेल अछि। मुदा ओहो विकसित होइत अछि। ओकरो ह्रास होइत छैक। कोनो-कोनो विधा त' लुप्त सेहो भ' जाइत अछि। आधुनिक कालमे जेना चरित काव्यक परम्परा लुप्त जकाँ भ' गेल। जकाँ एहि कारणे जे मैथिलीमे एकरा एकदम लुप्त नहि कहल जा सकैये। कखनो कियो कोनो राजाक फूसि-साँच चरित्रक अतिरंजित चित्रणक संग उपस्थित भ' सकैत छथि। कोनो देवताक प्रशस्तिकाव्य त' हेबनियोमे भेटि सकैत अछि। दोसर प्रकारक रूप जेना रचनाक शिल्प, टेकनीक आदि लगभग सभ विधामे बदलल अछि। विकसित भेल अछि। कथा, कविता, नाटक, उपन्यास सभ मे। महाकाव्य त' आधुनिक कालक विधे नहि मानल जाइये तें ओकर चर्चा नहि कयल। ओकर विकासक गप्पक कोन प्रयोजन? ई फराक बात थिक जे विभिन्न कारणें आइयो कतेक महाकाव्य, खण्डकाव्य पढ़ल जाइये-सुनल जाइये, पुरस्कृत कयल जाइये। भारतीय वाङ्मयमे मुदा प्राचीने कालसँ कथा एकटा लोकप्रिय विधाक रूपमे मान्य रहल अछि। संस्कृत साहित्यमे कथानक, पात्र, उद्देश्य, वर्णनशैली, गद्यपद्यक अभिव्यक्ति-माध्यम इत्यादिक आधार पर कथाक अनेक प्रकार ओ भेदोपभेदक विकास भेल। आचार्य हेमचन्द्र अपन 'काव्यानुशासन' नामक ग्रन्थमे परिभाषा ओ उदाहरण-संकेत दैत कथाक दस गोट प्रभेद-आख्यान, निदर्शन, प्रवटिका, मतल्लिका, मणिकुल्या, परिकथा, खण्डकथा, सकल कथा, उपकथा आ वृहत्कथाक उल्लेख कयने छथि।[3] मुदा आधुनिक कालमे कथाक रूपमे जाहि विधाक विकास भेल से पाश्चात्य साहित्यक देन थिक। आधुनिक कालमे मैथिलीक पहिल कथा जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'ताराक वैधव्य' मानल जाइत अछि। एकर प्रकाशन मिथिला-मिहिरमे 1917 ई॰ मे भेल। अनमेल विवाहक सामाजिक समस्याकें उठबैत, कारुणि

ाक अन्तसँ पाठकक संवेदना जगायब लेखकक अभीष्ट छनि। कथाक शिल्प ओहीक अनुरूप अछि। 1931-40क दशकमे बहुत कथा एहि तरहक लिखल गेल। कथाकार लोकनि पूर्वसँ चल अबैत सामाजिक समस्या खासक' विवाहजन्य कुपरिणामकें कथाक आधार बनौलनि। किछु कथा स्वतंत्रता आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर सेहो लिखल गेल मुदा परिण ाममे सुधारवादी कथाक बाहुल्य छल। एहि अवधिक करीब-करीब सभ कथा भावुकतासँ ओत-प्रोत रहय। सुधारवादी कथाक लेल ब्रह्मसमाज, आर्यसमाजक चलाओल आन्दोलनक संग मैथिल महासभाक निदेश सभ सेहो कथाकारकें प्रेरित केलक। मुदा कथामे रूपक नवीनता बहुधा दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। तथापि उद्देश्यमे सामाजिक सुधार आ तत्कालीन बोधक कारणे कुमार गंगानन्द सिंह, काली कुमार दास, कांञ्चीनाथ झा 'किरण', श्यामानन्द झा, श्रीवल्लभ झा, हरिनन्दन ठाकुर, 'सरोज'क कथा सभ पाठकक ध्यान आकृष्ट केलक।

मैथिली कथा-कोशक अनुसार वर्ष 1908-10 ई॰ क बीच तीनटा कथा प्रकाशित भेल। वर्ष 1911सँ 1920क बीच कुल नौटा कथा निकलल। 1921-30क अवधिमे उन्तीसटा नव कथा आयल। 1931सँ 40क बीच एक सए तैंतीसटा कथा प्रकाशित भेल। मुदा 1941-50 अवधिमे दू सए एक्कानबेटा कथा आयल। एहि अवधिक बादे कथाक प्रकाशन दोबर-तेबर होइत गेल। मुदा से 1980 धरि चलल। 1971-80क बीचमे चौबीस सए उन्हत्तरि नव कथा प्रकाशित भेल अछि। ई दशक एखन धरि सभसँ बेसी नव कथा प्रकाशनक दशक बनल अछि। कथा-कोशक निर्माता डॉ॰ मेघन प्रसाद 1991सँ 1995 धरि छौ सए पनचानबे टा कथा प्रकाशित हेबाक सूचना दैत छथि। कोनो हिसाबें जोड़ैत छी त' शताब्दीक अन्तिम दशकमे कुल प्रकाशित मैथिली कथाक संख्या हजारसँ बेसी नहि होइत अछि। कथा लिखबसँ ल' कय प्रकाशन धरि 1980क बाद मैथिली कथाक संख्या घटल अछि। एकर कारण बहुत भ' सकैत अछि। मुदा मिथिला-मिहिरक बन्द होयब सभसँ प्रमुख अछि। कथा-कोशमे देल सूचना पर जँ ध्यान देल जाय त' ई सहजें स्पष्ट भ' जायत जे 1941-50क दशाक मैथिली कथाक प्रकाशनमे गति ओ उछाल अनलक। प्रो॰ उमानाथ झा ओही दशकमे अपन ऐतिहासिक

योगदान द' रहल छला। परन्तु ई एक तथ्य थिक जे मिथिला मिहिरमे हुनकर कोनो कथा नहि छपल अछि।

1941-50क दशक नहि केवल संख्यामे वृद्धि लेल अपितु कथाक गुणात्मक विकास लेल सेहो उल्लेखनीय अछि। एही दशकमे आबि क' मैथिली कथा प्रवृत्तिमे परिवर्तन आयल। तकनीक आ शिल्पक दृष्टिसँ सेहो कथा आधुनिक भेल। मैथिलीमे आधुनिक कथाक धार मजरल। प्रवृत्तिक आधार पर कथा अनेक उपधारा मे बंटल। प्रो॰ हरमिोहन झाक 'खट्टर ककाक तरंग' एहि अवधिमे आयल। एही कालखण्डमे लिखित उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथा 'रूसल जमाय' (मिथिला मिहिर, 25.8.1945)कें डॉ॰ जयकान्त मिश्र मैथिली कथा साहित्यक विकासमे प्रस्थान-बिन्दु मानल अछि। 'रूसल जमाय' आधुनिक शिल्पेक कारणे प्रस्थान-बिन्दु बनल अछि। रूसल जमायक मोनमे चलैत राग-अनुराग-विराग आ आत्मसम्मानक संघर्ष एकदम पारदर्शी भ' गेल अछि। व्यासजीक 'बकरी' आ नगेन्द्र कुमारक 'ससरफानी' कथा एही अवधिमे आयल। कुमार गंगानन्द सिंहक 'बिहाड़ि' योगानन्द झाक 'आम खयबाक मुँह', मनमोहन झाक 'बोटिब्स'क अतिरिक्त प्रो॰ उमानाथ झाक 'आध घन्टा' आ 'ओहि दिनक यात्रा', 'दीक्षान्त समारोह', 'बुधनी', 'प्रहेलिका', 'गल्प नहि गप्प', आदि कथा ओही अवधिमे निकलल जे बादमे 1950मे 'रेखाचित्र'मे संकलित भ' प्रो॰ झाकें कथाकर रूपमे स्थापित केलक। एहि अवधिमे आबि क' मैथिली कथाक लगाम अंग्रजीदां लोकक हाथमे आबि गेल। एक आधटा अपवाद छोड़ि अधिकांश कथाकार अंग्रेजी शिक्षापद्धतिमे दीक्षित छला। हरिमोहन झा, नगेन्द्रकुमार, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', उमानाथ झा, योगानन्द झा, अमरनाथ ठाकुर, मनमोहन झा आदि कथाकारकें संस्कृतक अपेक्षा अंग्रेजी, बंगला ओ हिन्दी कथाक सान्निध्य बेसी प्राप्त छलनि। जकर स्पष्ट प्रभाव हिनकालोकनिक कथा-लेखन पर पड़ल।[4] एही कालावधिमे 'धर्मरत्नाकर' (कान्चीनाथ झा 'किरण') अछि त' 'वृहस्पतिक शेष' (सुरेन्द्र झा 'सुमन') सेहो अछि जे क्रमशः जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध उठैत आक्रोश तथा दाम्पत्य जीवनक माधुर्य आ रसज्ञता ल' कय दू भिन्न प्रवृत्तिक कथा लेखनकें जन्म देलक। संस्कृत साहित्यमे प्रेम आ सौन्दर्यक

जे उदात्त रूप भेटैत अछि जकर प्रभाव व्यासजी आ सुमनजीक कथा लेखनमे देखल जा सकैत अछि। मुदा से अंग्रेजिया कथाकारक कथामे नहि अछि। अंग्रेजिया कथाकारक कथामे प्रेम ओ सौन्दर्यक उत्स नारी देह थिक।[5] सेक्सक प्रति पाश्चात्य दृष्टि खासक' फ्रायडक मनोविज्ञान अंग्रेजिया कथाकार लोकनिकें बेसी प्रभावित केलक। मोनक भीतर पैसबाक प्रवृत्ति बढ़ल। ई स्वाभाविक छल। भोगकें देहसँ दिमाग धरि जेबामे एहिसँ सहायता भेटलैक। मुदा पारम्परिक सौन्दर्य-बोधक स्थान पर आधुनिक दृष्टि-बोध मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ स्वरूपमे व्यापक परिवर्तन अनलक। जीवनकें देखबाक नजरि सेहो बदलि गेल। दृष्टि-बोधमे परिवर्तन मार्क्सक द्वन्द्ववाद ओ अर्थ पर आधारित वर्गवादसँ सेहो आयल। प्रखर रूपमे से अगिला दशक अर्थात् 1951-60क दशकमे आबि क' चिन्हार भेल। ठीक पछिला दशकमे मुदा विधा आ टेकनीक दूनू रूपमे आधुनिक मैथिली कथाक न्यों पड़ि गेल।

जेना ऊपर कहि आयल छी अन्तर्वस्तुक संग रचनाक भीतर दोसर प्रकारक रूप परिवर्तित ओ विकसित होइत अछि। ई बदलैत अन्तर्वस्तुकें प्रस्तुत करबाक माध्यम आ साधन होइत अछि। मैथिली कथा रचनामे लगातार एहि रूपक परिवर्तन ओ विकास होइत गेल अछि। यैह कारण अछि जे कथामे रिपोर्ताज, रेखाचित्र, डायरी, व्यक्ति-चित्र, शब्द-चित्र आदि उपरूप विकास क्रममे आयल। पहिने ई उपरूप सभ फराक-फराक सेहो छल। एखनो अछिये। मुदा कथामे ई सभ उपरूप क्रमशः समाहित होइत गेल अछि। प्रारंभिक कालमे एहि उपरूप सभक दोखरा प्रयोग भेटैत अछि। मुदा कालान्तरमे एहि प्रयोगमे महीनी अबैत गेल अछि। ई महीनी कथाकारक संवेदनशीलता ओ कथा-शक्ति पर निर्भर करैत अछि। परन्तु कथा-परम्पराक मैथिलीमे विकासकें एहिसँ अकानल जा सकैये। एहि संग ई सेहो देखबाक थिक जे मैथिलीमे 'गल्प' आ 'गप्प' कहिक' सेहो कथा निकलल अछि। 'गल्प' बेरमे चुप्पो रहि कथा रूपमे 'गप्प' पर प्रश्नचिह्न लगेबाक लेल बहुत गोटे फाँड़ बान्हि सकैत छथि। मुदा गप्पकें शैली रूपमे स्वीकृत करबा पर बहुतक सहमति भ' सकैत अछि। गप्पक जाहि रूपक विकास मिथिलामे भेटैत अछि तकरा देखैत शैलीक रूपमे त' ई स्वीकृतिक अधिकारी अछिये। एहि गप्पक

महीनी की कहल जाय। गप्प नामसँ निकलल रचना सभकें पढ़ि क' महीनी सीखल जा सकैत अछि। स्वाभाविक रूपसँ पूर्वज आ अग्रज कथाकारलोकनिक योगदानकें एहि तरहक विकासमे रेखांकित कयल जा सकैत अछि। असलमे युगबोधक कारणे आधुनिक कथाक स्वरूपमे व्यापक परिवर्तन भेल अछि। कथाक पुरान रूपक तुलनामे बहुत भिन्नता आबि गेल अछि। कथानकक एकदम नवरूप, अन्तर्वस्तुक नव भंगिमा आ तथ्यक इतिवृत्तात्मक वर्णनक संग व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक आ यथार्थपरक कथा-विन्यासक कारणे आधुनिक कथा पारम्परिक कथासँ स्वतंत्र देखाइत अछि। मुदा धीरे-धीरे मैथिली कथा अपन आधुनिक रूपकें अक्षुण्ण रखैत प्राचीन परंपरासँ कथाक मौलिक आ सार्थक तत्व सभकें समेटि रहल अछि। पारम्परिक कथा प्रवाह, कथनशैली, अन्य चुम्बकीय गुण सभ क्रमशः मैथिली कथामे अबैत गेल अछि। आब त' शिल्पक दृष्टिसँ लोककथाक सादगी आ बोधकथाक पारदर्शिता सेहो कथाकार लोकनिक नजरिमे आबि रहल छनि। मुदा प्रारंभिक कालमे प्राच्य आ पाश्चात्य शिल्पक देखार अन्तर दूनूक बीचक दूरीकें एकदम जगजियार क' देने छल। तें आधुनिक कथा एकदम अपरिचित सन लगैत रहय। भिन्न कोटिक बुझाइत छल। प्रो॰ उमानाथ झाक कथा-संग्रह 'अतीत'में डॉ॰ मदनेश्वर मिश्र लिखलनि जे 'उमानाथ बाबू कथाकारक ओहि वर्गमे अबैत छथि जे पाश्चात्य साहित्यक कथाक टेकनीक तथा शैलीसँ प्रभावित भ' 1940क बाद मैथिलीमे कथा लिखब प्रारम्भ केलनि। 'रेखाचित्र'मे संगृहीत कथासँ ई स्पष्ट भ' गेल जे उमानाथ बाबूक कथा मैथिली साहित्यमे लिखल जाइत कथा सभसँ भिन्न कोटिक होइत अछि। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवं मनश्चेतनाक अन्तरालसँ प्रवाहित धारा तथा पूर्वदीप्ति इत्यादि जे नवीन तकनीक कहबैछ तकर प्रयोग सभसँ पहिने इएह मैथिली कथामे कयलनि। उमानाथ बाबूक कथा चिन्तनप्रधान एवं दार्शनिक कोटिक होइछ जाहिमे परम्परागत कथातत्व जेना कथानक, चरित्र-चित्रण एवं घटनाक लोप जकाँ भ' जाइत अछि। मनोविश्लेषणक एहि तरहक प्रभावी प्रयोग आइ तक आन केओ कथाकार मैथिलीमे नहि क' सकलाह अछि। कथामे पात्रक अन्तर्द्वन्द्व एवं संघर्षक चित्र बहुत सहज, सरल एवं स्पष्ट भाषामे करबाक हिनक क्षमता अपूर्व अछि।'

निर्विवाद रूपें कथामे कथापन आ कथाकारमे कथा-शक्ति ओ पाठकक चिन्ता रहब जरूरी होइत अछि। कथाक रूप, शिल्प टेकनीक सभ निरर्थक भ' जायत जँ कथा अपन अभीष्टक प्राप्ति नहि क' सकय। ओकर कथ्य, अभिप्राय जँ पाठक धरि नहि पहुँचल त' कथाक सार्थकता सन्देहास्पद भ' जाइत अछि। रूप आ शिल्पक कोनो नव प्रयोग कथाक अभीष्ट प्राप्तिमे सहायके भ' सकैत अछि। प्रारम्भमे मैथिली कथा आस्वादपरक तकर बाद भावपरक आ बोधपरक होइत गेल अछि। क्रमशः सांस्कृतिक सन्दर्भ सेहो ओहिसँ जुड़ैत चल गेल।ई नहि कहल जा सकैत अछि जे आस्वादपरक कथा आइ नहि लिखाइत अछि अथवा आस्वादपरकता कथाक एक गुण रूपमे आइ सम्पूर्णतया खत्म भ' गेल अछि। तहिना ईहो नहि कहल जा सकैये जे भावपरक वा बोधपरक कथा पूर्वमे नहि आयल अथवा कथासँ सांस्कृतिक सन्दर्भ नहि जुड़ल रहैत छल। कथात्मक स्तर, भाव वा बोधक स्तर और सांस्कृतिक स्तर पर चलैत कथा पूर्वहिंसँ पाठककें भेटैत रहल अछि। तैं अभिप्राय आ अभीष्टक स्तर पर कथाकारक दृष्टिमे विकाससँ पाठकक एक जागरूक वर्ग आब तैयार भ' गेल अछि। भले ही एकर संख्या कम हो मुदा ई वर्ग मैथिली कथाक अपन पाठक कहा सकैये। ई पाठक वर्ग कैक स्तर पर एक संग चलैत कथाक आनन्द सेहो संवेदनाक स्तर पर ल' सकैये। मैथिली कथामे ई विकास पाठकक चिन्तासँ भेल अछि। पाठकक ई चिन्ता प्रो॰ झाकें शुरुहेसँ रहलनि अछि, भनहि हुनकर दृष्टि आस्वादपरक रहल हो मुदा कथा पाठके लेल होइत अछि से ओ बुझैत छला। अपन कथा 'ओहि दिनक यात्रा'मे ओ लिखलनि-

'एहि भूमिकाक अर्थ अहाँ बूझि गेल होयब। पटना-गयाक ट्रेनमे जाहि अपरिचिताकें देखि क' हम प्रभावित भेल रही तकरा मसूरीमे अपन हृदयक सिंहासन पर बैसाओल। अहाँकें मोनमे होयत जे 'बम्बइ टाकीज'क फिल्म देखि रहल छी। ठीक, मुदा हम की करू, जँ प्रेमक निन्दा करू तँ लोक कहैए-बड़ जमबैत छथि। गल्पमे प्रेमकें स्थान नहि दैत छिये त' गल्प लोककें फिक्का' बूझि पड़ैत छै। जीवनक दुःखके मुकुरित करबाक चेष्ट करू तँ सभ कहै छी जे गल्प लोक पढ़ैए मनोरंजनक हेतु, मोनके घोर करबाक हेतु नहि। तखन?'

स्पष्ट अछि जे कथाकार पाठककें अपन दृष्टिपटलसँ कखनो नहि हटबैत छथि। पाठककें दृष्टिपटलसँ कात नहि करबाक परम्परा मैथिली कथाकारमे एहि प्रकारें शुरूहेसँ रहल अछि। मुदा तकरे संग प्रयोग काल बहुधा पाठककें बिसरि जेबाक झोंक सेहो रहल अछि।

पाठकक संगहि प्रो॰ झा टेकनीक आ शिल्पक प्रति सेहो सभ दिन सचेत रहला अछि। मैथिली मे नव टेकनीकक कथामे प्रयोगक कारणे ओ खूब ख्याति अर्जित कयलनि। मुदा हुनको बादमे नव टेकनीकक व्यापक प्रसार आ पाठकक एहिसँ सुपरिचयक बाद ओकर आकर्षण कम भ' जेबाक तथ्य अज्ञात नहि रहलनि। अपन कथा संग्रह 'अतीत'क प्राक्कथनमे ओ कहलनि जे, 'ओहि समय जे नवीन छल से आब नवीन नहि रहल। तें शिल्प वा प्रविधिक दृष्टिएँ वर्तमान कथा-संग्रहमे पाठककें कोनो नवीनता भेटबाक सम्भावना कम। तें जँ एक दिस 'अतिपरिचयादवज्ञा'क भय तँ दोसर दिश नवीनक अविश्वास भयमुक्ति।' प्रो॰ झा स्पष्टत: स्वीकार केलनि अछि जे वर्तमान शताब्दीक चारिम दशकमे जखन एहि पंक्तिक लेखक लघुकथा लिख' लगलाह तँ आधुनिकता अनुसन्धानमे योरोपीय-विशेषत: अंग्रेजी-कथा साहित्यसँ प्रेरित भेलाह। परिणाम- 'रेखाचित्र' क लघुकथा सभ जे ओहि समय अंग्रेजी साहित्यसँ अपरिचित पाठककें नवीन बुझि पड़लनि।'

प्रो॰ झाकें जखन एहि नव टेकनीकक आकर्षण कम भ' जेबाक तथ्य ज्ञात भेलनि त' ओ अपन 'अतीत' कथा-संग्रहक कथा सभमे कथा कहबाक रीति-ढंग बदलबाक कोशिश सेहो केलनि। कथा सम्बन्धी सिद्धान्तक अनुसार जँ कथा-विधानकें दृष्टिविन्दुक स्तरसँ देखल जाय तँ ओकर दू प्रकारक अवधारणा अछि। ई दुनू प्रकारक अवधारणा कथाक पूरक पार्श्वकें अभिव्यक्त करैत अछि। ई दुनू पार्श्व अछि कथाकें जान'वला और कथा कह' वला। आधुनिक विद्वान एकरा कथावाचक कहैत छथि। कथाक आधारभूत तत्वक रूपमे एहि वाचन-स्थापत्य (Voice Structure)क विशद और रेखांकन सहित विवेचन एलेन टेट अपन शिल्प सम्बन्धी टिप्पणीमे केलनि अछि।[6] मोटामोटी प्रथम पुरुष कथावाचक आ सर्वज्ञ कथावाचक रहरहाँ आधुनिक कथामे भेटैत अछि। प्रो॰ झा 'अतीत' के कथा सभमे कथावाचक आ कथा-भूमिक स्तर

पर विस्तार केलनि। मुदा अहूठाम मनोवैज्ञानिके तल पर एकर विस्तार भेल अछि। कथा-संग्रह 'अतीत'मे 'सबरंग पटिया' आ 'प्रायश्चित' नामक कथामे दूटा गप्पीक खिस्सा कहल गेल अछि। 'सब रंग पटिया'मे गप्पी एकसँ एक रोचक अनुभव सुनबैत छथि। मुदा एही संग एकटा दुखद घटना सेहो सुना जाइत छथि। घटना एकदम यथार्थ छल। गप्पे-गप्पमे मार्मिक यथार्थक उद्घाटनसँ अभिनयकुशल गप्पीक सृजित हास्यमय वातावरण गम्भीर भ' जाइत अछि। 'प्रायश्चित'क गप्पी त' आशु-कथाकार छथि। लोक कहनि रामबाबू गप्पक खेती करैत छथि, गप्प हँकैत छथि, फँचारि छथि, फुसियाह छथि। राम बाबू मुदा अपन मित्रमण्डलीक मनोरंजनार्थ खीसा कहैत छला, अपन कलाक प्रचार हुनक उद्देश्य नहि छलनि। एही खीसा सुनेबाक हिस्सकक बीच एकटा दुखद घटना भ' गेल। एक युवक-युवती आत्महत्या क' लेलक। ओहि मृत्यु आ खिस्सा सुनेबामे कोनो सम्बन्ध नहि छल तथापि से सोच रामबाबू अपन मोनसँ हटा नहि सकलाह। ओ अपनेकें एकर कारण मानि प्रायश्चित स्वरूप भविष्यमे फेर कोनो खीसा नहि कहबाक प्रण ल' लेलनि। दूनू कथा एक दिस जत' श्रोता-पाठकक संवेदनशीलताक गप्प कहैत अछि त' दोसर दिस मनोरंजन लेल खीसा कहनिहारक संवेदनशीलताकें सेहो प्रकट करैत अछि। एहि प्रकारें प्रो॰ झा कथाकारक कथा कहबाक आ पाठकक कथा सुनबाक प्रयोजनक संग दूनूक संवेदनशील हृदयक तथ्य कें सेहो रखलनि अछि। प्रो॰ झाक कथामे एही संग कथाभूमिक विस्तार कथामे वर्णनसँ भेल अछि। संगहि कथावाचकक आँखि पसरलासँ सेहो भूमि पसरल अछि। स्वाभाविक रूपसँ ई परिवर्तन कथाकारमे संवेदनाक विस्तारसँ सम्भव भेल। अहीं कारणें हुनक गल्पो कथा दिस बढ़ल, मुदा संवेदनाक मूल अधिकांश कथामे स्त्री-पुरुषक सम्बन्धे रहल। से दाम्पत्य जीवनक कथा 'दाम्पत्य' हो वा 'निकट वा दूर'। उच्चवर्गीय मानसिकताक दैहिक शोषणक कथा 'रामदानाक लड्डू' हो, सभमे स्त्री-पुरुषक परम्परागत सम्बन्ध पर आधुनिक वा बदलैत समयक प्रभाव-दबाबक कथात्मक अभिव्यक्ति भेटैत अछि।

कोनो-कोनो कथामे जीवन रहस्यक दार्शनिक कवित्वमय पक्ष सेहो

दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि तरहक कथामे कथापनक अभाव रहैत अछि। जे हो, ई कहल जा सकैये जे प्रो॰ झा बदलैत समयक संग कथाक रूप ओ शिल्प प्रविधिक प्रति सचेत-सचेष्ट रहला अछि। रूप ओ शिल्पक दृष्टिसँ प्रो॰ झाक किछु कथाक विस्तारसँ चर्चा होयब आवश्यक अछि। ओकर पाठ ओ प्रक्रिया पर विचार हेबाक चाही। एहि कार्यसँ मैथिली कथामे रूपतत्वक विकास पर प्रकाश सेहो पड़त। एहि दृष्टिसँ पाठ-प्रक्रिया लेल 'माधवजी' सभसँ उपयुक्त कथा अछि। तत्काल एहि काजकें हम मैथिलीक मान्य आलोचक लोकनिक लेल छोड़ैत छी। ई जनैत जे अंग्रेजीदाँ छथि से मैथिलीदाँ नहि। जे मैथिलीदाँ छथि से अंग्रेजीदाँ नहि। तथापि वीरसँ त' पृथ्वी कहियो खाली नहि रहैत अछि।

साहित्यमे रूपक वैचारिक आधार बनबैत जार्ज लुकाच लिखलनि अछि जे साहित्यमे रूप सामाजिक और सौन्दर्यबोधीय होइत अछि। साहित्यक वैह समाजशास्त्र प्रामाणिक और विश्वसनीय होइत अछि जे साहित्यक रूप सम्बन्धी एहि दुनू पक्षकें उजागर करय। एहिमे सँ कोनो एक पक्ष तक सीमित रह'बला आलोचना अन्ततः अपूर्ण होइत अछि।[7] मैथिली कथाक प्रवृत्तिमूलक विकासक संग ओकर बदलैत रूपक विकास कथा एखन धरि नहि लिखल गेल अछि। ई जहिया लिखल जायत तहिया 1941-50क दशकमे भेल प्रयोग फड़िछा क' लोकक समक्ष आओत। तखनहि ई नीक जकाँ स्पष्ट होयत जे ओहि दशकक कथाकारलोकनिक खास क' कय प्रो॰ उमानाथ झाक कथामे रूप तत्वक केहेन प्रयोग भेल अछि आ ओहि प्रयोगक परवर्ती कथा पर केहेन प्रभाव पड़ल। तत्काल एहि धारणासँ आश्वस्त भेल जा सकैत अछि जे परिमाण बहुधा गुण के संग अनैत अछि तें कथा परिमाणमे भेल वृद्धि गुणात्मक वृद्धि के सेहो अनलक। ताही संग एहि बातक लेल सेहो आश्वस्त भेल जा सकैत अछि जे मैथिली कथाकें आधुनिक बनेबाक लेल पश्चिमक शिल्प अनबाक संग प्रो॰ झा बुच्चीदाइ लोकनिक 'टेस्ट' के सेहो ध्यान मे रखलनि। परम्पराक प्रतीक 'बुच्चीदाइ' कें आधुनिक बनेबाक तात्कालिक चेतना संग रुचि परिवर्तनक चिन्ता कथाकारक सामाजिक चिन्तेकें प्रकट करैत अछि। एकरे संग ईहो कम आश्वस्तिदायक नहि अछि जे भनहि प्रो॰ झाक आशुकथाकार चरित्र प्रायश्चित स्वरूप खीसा नहि कहबाक प्रण

लेलनि मुदा प्रो॰ झा एहि तरहक सप्पत कहियो नहि खेलनि। हुनकर कथाकार लगातार कथा कहैत रहल।

संदर्भ-संकेत

1. हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ-सुरेन्द्र चौधरी
2. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका-डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय
3. मैथिलीक आद्यकथा (मैथिली आलोचना)-डॉ॰ रामदेव झा
4. बीजी पुरुषक भूमिका निबाहैत कथा-(अनवरत) मोहन भारद्वाज
5. ओएह
6. हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ
7. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका

(उमानाथ झा अभिनंदन ग्रन्थ, 2003,
मैथिली आँखि, पोथी, 2007)

OOO

जीवन-आस्थाक कथा

मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार मनमोहन झा जहिया कथा लेखन शुरू केलनि तहिया बुच्चीदाइ सभ पढ़'-लिख' लागल रहथि। घरे-आंगन मे रहि चिट्ठी-पतरी कर' लागल रहथि। हिसाब-बाड़ी लीखि लेल करथि। किताब-काँपी बाँचि लेथि। रामायण-महाभारतसँ आगू बढ़ि मैथिलीक कथा-पिहानी पढ़ि लेथि। बंगलाक कथा-उपन्यास पढ़ि जाथि। धिया-पूताक लालन-पालन आ भानस-भातक अतिरिक्त साहित्य पढ़ब हुनका लोकनिक हिस्सक बनैत गेल। भने मनोरंजन लेल एकर शुरुआत भेल मुदा क्रमशः साहित्य जीवनकें सेहो प्रभावित कर' लागल। मैथिलीक साहित्यकार लोकनि समाजमे होइत एहि परिवर्तन सँ अनभिज्ञ नहि छला। ओ लोकनि जनैत रहथि जे मैथिली साहित्यमे आयल समाज-सुधारक अनुगुंज मैथिल ललना धरि पहुँच' लागल अछि। हरिमोहन झाक कन्यादान उपन्यास समाज के हिला-डोला गेल अछि। घर-परिवारमे मैथिलीक पत्र-पत्रिका पहुँच' लागल अछि। आब समाज ई नहि चाहैत अछि जे ओकर धी-सुआसिनक दुर्दशा बुच्चीदाइ सन होइ। बुच्चीदाइ सभक आँखि सेहो पसरि रहल छलनि। क्रमशः जड़ता टूटि रहल छल।

पाँचम दशक अबैत-अबैत साहित्यकार सभ बुच्चीदाइक कथासँ आगू बढ़ि क' पाठक बुच्चीदाइ पर ध्यान केन्द्रित कर' लगला। मनमोहन झाक समकालीन कथाकार उमानाथ झा 1950 मे अपन कथा-संग्रह रेखा-चित्रमे लिखलनि, 'चारि ढाकी कहबाक नहि अछि-एक मौनी मात्र। बुच्चीदाइ लोकनिक समक्ष उपस्थित भेल छी, परन्तु हुनका अनरसाक हिसख, मलपुआ रुचिकर, ऐहबक फड़ ओ बगेया सँ परिचय, बिस्कुट-सएण्डविच-केक नीक लगतैन्ह? के कहय? मएदा, आँटा, घी,

चीनी-ई सभ वस्तु तँ परिचित केवल बनएबाक विधि भिन्न। तें धृष्टता कएल। नीक लगैन्ह तँ आओरो भेटतैन्ह। नहि नीक लगैन्ह तँ दोष सोड़हो आना हमर-केक ओ बिस्कुटक नहि।' उमानाथ झाकें आशंका रहनि जे बुच्चीदाइ सभकें नव वस्तु अर्थात् नव तरहक कथा रुचतनि की नहि, मुदा मनमोहन झाकें एहि तरहक कोनो आशंका नहि रहनि। ओ 1948 मे अपन कथा-संग्रह 'अश्रुकण' ल' क' उपस्थित भेला। बनएबाक विधि हुनको भिन्न छलनि मुदा एतेक भिन्न नहि जे वस्तु अपरिचित लागय। मनमोहन झा पूर्व सँ चल अबैत कथाक शिल्पमे परिवर्तन त' अनलनि परन्तु एतेक नहि जे कथा अनचिन्हार लागय। ओ नव रसज्ञतासँ परिचित भैयो क' पुरना ढाठीकें पूरापूरी नहि छोड़लनि। खाली ओहिमे नवताक समावेश केलनि। ओ नवता जे पश्चिमसँ चलि क' बंगला ओ हिन्दीक माध्यमे भारतीय साहित्यमे प्रवेश केने छल। एही संग हुनका समक्ष मैथिलीक आधुनिक कथाक पच्चीस-तीस बरसक इतिहास सेहो छलनि।

ई ओ समय छल जखन भारतीय साहित्यमे देश-प्रेम ओ स्त्रीक दुर्दशा ओ दुखक प्रति सम्वेदनाक धार तेज हुअ' लागल छल। बंगलाक शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय अपन उपन्यास सभक माध्यमे स्त्रीत्वक गौरवक संगे स्त्री-जीवनक जड़ताकें तोड़बाक प्रयत्न क' चुकल छला। प्रेमचन्द्र 'निर्मला' लिखि चुकल रहथि। हरिमोहन झा 'कन्यादान' लीखि समाजकें झकझोरि चुकल रहथि। ताराक वैधव्य, करुणा आदि कथा मैथिल स्त्रीक कारुणिक चित्र प्रस्तुत क' समाजकें स्त्री-जीवनक प्रति सोचबाक लेल प्रेरित केने रहय। देशमे 1942क आन्दोलन भ' गेल रहय। द्वितीय विश्वयुद्ध लड़ल जा चुकल छल। देश, समाज आ घर-परिवार पर एहि आन्दोलन आ विश्वयुद्धक प्रभाव सघन रूपें पड़ल रहय। मनमोहन झा लग साहित्य आ समाजक परिप्रेक्ष्य एकदम स्पष्ट छलनि। ओ 1942क आन्दोलन मे भाग लेनिहार क्रांतिकारीक 'आहत आत्मा' कें कथाक माध्यमे प्रस्तुत केलनि त' द्वितीय विश्वयुद्धमे लड़निहार सैनिकक मुँहसँ मैथिल ललना 'रुना'क कथा सेहो कहलनि। ई दुनू कथा 'अश्रुकण' मे संग्रहीत अछि। बादमे ओ 1971क बंगला देशक मुक्ति संग्रामक पृष्ठभूमि मे 'वीरभोग्या' कथा सेहो लिखलनि। ओ प्राचीन मिथिलाक इतिहासमे सेहो गेला। हुनकर

'मीनाक्षी' कथा मिथिलाक ऐतिहासिक नरेश नान्यदेवक कालक थिक। जाहिमे नगर वधू 'मीनाक्षी' मिथिला-प्रेममे अपन प्राण तक त्यागि दैत अछि। एहिमे बंगालक बल्लाल सेन आ मिथिलाक नान्यदेवक बीच भेल युद्धक वर्णन अछि।

'अश्रुकण' कथा-संग्रहक पहिले कथा अछि रुना। कथाक आरम्भे होइत अछि द्वितीय विश्वयुद्धक पृष्ठभूमिमे। कथा कहनिहार सैनिक छथि। छुट्टीमे गाम अयलाहे। अबिते गामक लोक सभ लड़ाइक मादे हुनकासँ पुछय लगैत अछि। कतेक दिन चलतैक लड़ाइ? लोकसभ लड़ाइ सँ अकच्छ अछि। कथावाचक सैनिक अपन ग्रामीण सभकें आश्वस्त करैत छथि जे हम सभ शीघ्रे विजय लाभ करब। इटलीक अध:पतन भ' गेल छैक। अन्यो शत्रु राष्ट्र सभ हारि रहल अछि। ओ अपन ग्रामीण सभकें भरोस दैत अछि जे कोनो वस्तुक क्लेश हुअय त' कहू जयबा काल हम जिलाक कलक्टरकें कहने जेबनि। सभ वस्तुक सुविधा क' देता। प्रथम पुरुष कथावाचकक शिल्पमे रचित कथा शुरुहेमे अपन एक पृष्ठभूमिक निमाण क' लैत अछि। तखन अबैत अछि रुना। रुना ओही गामक थिक। रुनाक पति भागि क' मिलीट्रीमे भर्ती भ' गेल छैक। जेबासँ पहिने ओ रुनासँ गहना मंगने रहैक। गहनाकें बन्हकी राखि ओ मेरठ जा क' लड़ाइमे भर्ती होइतय। लड़ाइमे जेबाक इच्छा बहुत दिन सँ रहैक मुदा माय-बाप जाय नहि देब' चाहैत छलै। रुनाकें गहनाक मोह नहि छलै मुदा ओहो पतिक लड़ाइमे भर्तीक विरुद्ध रहय। तें ओ गहना नहि देलक। रुनाकें होइत छलै जे एहि दुआरे पतिकें ओकरा सँ घृणा भ' गेल छैक। ओ सैनिककें अपन पतिक नाम लीखिक' बतबैत अछि। रुनाक पतिसँ ओ सैनिक परिचित छथि। रुनाकें आश्वासन दैत छथिन जे फेरसँ गाम अयला पर ओ ओकर पति कें संग ल' क' अऔता। फ्रंटपर वापस गेला पर हुनका रुनाक पति सँ भेंट होइत छनि। सैनिककें बुझाइत छनि जे रुनाक प्रति स्नेह त' हुनका छनि मुदा अयबा कालक मनोमालिन्य खतम नहि भेलनि अछि। तथापि ओ रुनाक पतिकें भविष्यमे गाम जयबाक लेल मना लैत छथि। मुदा जखन सैनिककें फेर सँ गाम जयबाक भेलनि त' रुनाक पति लड़ाइमे घायल भ' क' मरि गेल रहैत छैक। सैनिक सोचैत छथि जे आब ओ गाम कोना जयता। रुनाकें की कहथिन, कोना कहथिन। ओ गाम पहुँचला

पर रुनाकें पतिक मृत्युक समाचार नहि कहि पबैत छथि। एम्हर-ओम्हरक गप कहि रुनाकें परतारि दैत छथि। कहैत छथिन जे ओ आब' त' चाहैत छला मुदा दू-चारि सय रुपैया जाबत हाथमे नहि रहितनि ताबत कोना अबितथि। रुना ओहि समय दुखताहि छल। सैनिकक गामसँ विदा हेबाक काल रुना आबि क' साड़ीक खूंटमे बान्हल दस-दसटाक बीस नोट दैत अछि, जे ओ झंझारपुर जा क' अनने रहय। दू सय टाका दैत रुना कहैत अछि जे, 'ई रुपैया चुपचाप हुनका दए देबेन्ह। हमर शपथ थिक आन कियो नहि बूझय। हुनका कहबैन्हि जे गाम पर कहथिन्ह जे कमा कए अनलहुँ अछि। ओ रहता तँ बन्हकी छूटि जेतैक।' सैनिककें आबो सत्य कथा उद्घाटित नहि कयल होइत छनि। ओ सोचैत छथि जे जहिया फेर गाम आयब त' कोनो व्याजसँ रुपैया वापस क' देबैक। अवरुद्ध कण्ठ सँ एतबे कहना गेलनि जे, 'लाबह हम दए देबन्हि।' एहि प्रकारें 'रुना' द्वितीय विश्वयुद्धक परिप्रेक्ष्यमे दाम्पत्य प्रेमक अद्भुत कथा बनि जाइत अछि। दाम्पत्य प्रेमक बहुतो नीक कथा बादोक समयमे मैथिलीमे आयल अछि। मुदा ओहि सभक बीच 'रुना'क फूट महत्व छैक। से महत्व ओकरा द्वितीय विश्वयुद्धक पृष्ठभूमि प्रदान करैत छैक। विशेषता ई जे, कथा जखन लिखल गेल तखन युद्धक प्रभाव समाज परसँ खतम नहि भेल छल। मैथिलीमे युद्ध आ युद्धक प्रभावक पृष्ठभूमिमे उल्लेखनीय कथा नहिएँ जकाँ आयल अछि। आ ताहूमे पारिवारिक आ दाम्पत्य जीवनक राग-कथा। एही संग कथामे नारी हृदयक जाहि प्रकारक उदारता आ उच्चता रुना देखबैत अछि से परम्परा पोषित, मैथिल स्त्रीक पत्नीत्वक गौरवकें प्रकट करैत अछि। एहि ठाम ई कहब असंगत नहि होयत जे 'रुना'क बाद आयल काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'मधुरमनि' सेहो दाम्पत्य जीवनक अद्भुत कथा थिक। ई दुनू कथा एहन पत्नीक कथा थिक जत' पति-पुरुष जेना झूस भ' जाइत अछि। एहि कोटिक स्त्रीक कथा दुनू लेखककें विशिष्ट बनबैत अछि।

परम्परासँ मिथिलाक समाजमे स्त्रीक प्रति पुरुषक दृष्टि वर्चस्वक मानसिकतासँ भरल रहल अछि। स्त्रीकें सभ दिन ओ अपन अधीन मानैत रहल अछि। अधीनस्थकें प्रतिष्ठित करब सहज नहि होइत छैक। लेखको लोकनि साहित्यमे स्त्रीक दुर्दशाक प्रति साकांक्ष भेलो पर पुरुषवादी

मानसिकतासँ मुक्त नहि भ' सकला। स्त्रीकें ओकर सम्पूर्ण सत्ताक संग स्वीकार करबामे असोकर्य होइत रहलनि। पुरुषवादी ई दृष्टि आइयो समाप्त भ' गेल अछि से बात नहि मुदा क्रमश: समानताक दृष्टि आ व्यवहार बढ़ि रहल अछि। जकर कथात्मक अभिव्यक्तियो भ' रहल अछि। मुदा आइसँ साठि-पैंसठि वर्ष पूर्व नारीक हृदयमे पैसि क' चरित्रक उच्चता, उदारता, प्रेम आदिक भाव देखब आ ओकर चित्रण करब खास क' मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे, साधारण बात नहि थिक। स्त्रीक प्रति सम्मानक भावना बिना ई सम्भव नहि भ' सकैत अछि। मनमोहन झामे स्त्रीक प्रति सम्मानक भावना लेखनेटा मे नहि जीवनमे सेहो छलनि। यैह सोच आ मानसिकता हुनका तत्कालीन मैथिल उच्चवर्गीय पुरुष मानसिकतासँ फराक करैत अछि।

हमरा मनमोहन झा सँ पहिल भेंट गाममे नहि, काशीमे भेल छल। काशीक राम मन्दिर पर रहैत रही। नेने रही। मनमोहन झा सरिसब स्कूलमे शिक्षक रहथि। काञ्चीनाथ झा 'किरण' सेहो ओही स्कूलमे शिक्षक रहथि। दुनूकें सम्पूर्ण इलाकाक लोक मास्टर साहेब कहनि। हमहूँ कहियनि। मास्टर साहेब काशी आबथि त' राम मन्दिर पर रहथि। ओ सपरिवार आबथि। हुनकालोकनिक संग हम घूमै-टहलै लेल जाइ। ओहि समय ई त' नहि बुझियैक जे ई एतेक पैघ लेखक छथि, परन्तु ई अवश्य बुझाय जे आन लोक सँ दोसर तरहक छथि। ओहि कालक स्मृति एक विशिष्ट अनुभूतिक संग आइयो बनल अछि। से स्मृति मनमोहन झा आ हुनकर पत्नी तूलिका झाक पारस्परिक प्रेम-भाव आ साहचर्यक अछि। एहन स्नेही दम्पति हमरा जीवनमे बहुत कम भेटल छथि। एही संग कोनो पतिकें अपन पत्नीकें एतेक मोजर दैत, एतेक सम्मान दैत हम ओहि सँ पहिने नहि देखने रहियैक। जीवन भरि दुनूक बीच स्नेह आ प्रेम ओहिना बनल रहलनि। प्रेमक ई पराकाष्ठे छल जे पतिक विछोह तूलिका झा दसो दिन नहि सहि सकली। पतिक देहावसानक लगले बाद ओहो एहि संसारकें छोड़ि देलनि।

मनमोहन झाक कथा-संसार स्त्री आ पुरुषक बीच स्नेह-प्रेम, सम्मान आ उदारता, त्याग आ बलिदानक संसार थिक। वस्तुत: ई संसार मनुखताक संसार थिक। प्रेम, चाहे ओ कोनो प्रकारक हो, मनुखताक खोराक चाहैत अछि। प्रेम लेल मनुख होयब जरूरी छैक। मनमोहन झाक कथा-संसारमे त' निर्जीव वस्तु, घरक खिड़की सेहो प्रेममे पड़ि मनुख भ' गेल अछि। प्रेम ओकरा राग-अनुराग, हास्य, ईर्ष्या-करुणा सभसँ ओत-प्रोत क' दैत छैक। एक 'खिड़की' गहन सम्वेदनाक संग स्त्री-जीवनक करुण कथा कहि जाइत अछि। स्त्रीक प्रेममे पड़ि चन्द्रहार कथाक मोगल सुलेमान सेहो अपन देश जाक' बापे जकाँ पामीर लग पहाड़ काटि क' सोलह वर्षमे पाइ जमा क' चन्द्रहार गढ़ा क' फेरसँ ओहि स्त्रीक आदर करबाक लेल अबैत अछि, जकरासँ प्रेम भ' गेल रहैक। मनमोहन झाक कथा-संसारमे पुरुष सभ बदलल-बदलल सन लगैत छथि। सम्वेदनशील आ मानवीय। ई प्रेमेक प्रभाव थिक। राग-भाव थिक।

कथाकार मनमोहन झाक कथाक मादे मैथिलीक किछु आलोचकक ई कहब अछि जे ओ कथामे कनैत रहला अछि। नोरझोरक कथा कहैत रहला अछि। वस्तुत: ई वैह आलोचक सभ छथि जे हरिमोहन झाकें हास्यरसावतार कहैत छथि। ई एक अतिवादी आ असंगत दृष्टि थिक। जे कथा हमरा मानवीय बनबैत अछि, जीवनक प्रति आस्था बढ़बैत अछि, से पलायनक प्रलाप अथवा व्यथाक कथा भइये नहि सकैत अछि। जँ मनमोहन झाक कोनो कथा पढ़ि क' आँखिमे नोर भरि अबैत अछि त' ई विचारबाक थिक जे ई नोर कोन कारणें आयल? बहुतो पाठककें नोर नहियो आबि सकैत अछि किछुकें कम वा बेसी नोर आबि सकैत अछि। उदाहरण लेल 'झगड़ा' कथाकें लेल जाय। ई कथा पढ़ि अहू बीचमे हमरा आँखिमे नोर आबि गेल। ई नोर आबि गेल त' हम विचार' लगलहुँ जे नोर किए आयल? विचारलहुँ त' लागल जे दुनू दम्पतिक झगड़ाक बीच एक मात्र संतान ननकिरबी सुधाक मृत्युक संताप नोर अनलक। झगड़ा त' दम्पतिक बीच चलिते रहैत छैक। कथोमे खतम नहि भेलैक। कम भने भ' गेल हो! त' ई करुणा कोन करुणा छल? ई त' वात्सल्यक अश्रु छल। कथा जँ हमरा भीतर वात्सल्य भाव जगा देलक त' से जीवन लेल कोन अनर्थ केलक? यैह बिन्दु अछि जत' आबि क' कथा पाठकक मनोदशाकें झकझोरैत अछि। कथा कनबाक लेल नहि, सोचबाक आ किछु करबाक लेल कहैत अछि।

झगड़ा वस्तुत: पति-पत्नीक झगड़ाक कथा नहि अछि। ई अछि

राग-चेतनाक कथा। जिजीविषाक कथा। लगैत अछि जे सुधाक मृत्यु पति-पत्नीक झंझ-मंझक कारणें भेल। पति महोदय पत्नीक व्यवहार सँ तमसा गेला। बेटी सुधाकें एक चाट मारि देलथिन। बाल-मनपर एकर तीव्र प्रतिक्रिया भेल। सुधाकें ज्वर भेलैक मरि गेल। स्पष्ट अछि जे मुख्य विषय पति-पत्नीक मतभेद नहि, सुधाक मृत्यु अछि। कथाक अन्त झगड़ा पर नहि, मृत्यु पर अछि। मृत्युओ पर नहि, सुधाक पिताक प्रति राग-भावक विपर्यय पर होइत अछि। पत्नी झगड़ाकें अनठबैत सामान्य स्थितिमे आबि हवाइ जहाज अपन भाइक बेटाकें सनेशमे देब' चाहैत छथि। किन्तु पति ओहि हवाइ जहाजकें बेटीक स्मृति स्वरूप जोगा क' रखबाक विचार कयने छथि। एहि प्रकारें हवाइ जहाज सुधाक प्रतिरूप बनि क' जीवनक सुख-सपनाक आधार बनि जाइत अछि। कथाक अन्त सुधाक लेल पिताक एही स्नेह-भाव पर, राग-चेतनाक एही अमरता पर होइत अछि। मनमोहन झाक कथाक मूलाधार अछि मनुक्खक जीवनासक्ति। ललित अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'पृथ्वीपुत्र' मे कहैत छथि जे मनुख लेल पहिने जीयब जरूरी अछि। मनमोहन झाक कथा ई बात बहुत पहिने कहने छथि-कनेक दोसर तरहें प्रकारान्तर सँ। यदि हुनक कथाक दुखद प्रसंगसँ उबरि क', नोर-झोर पोछि क', वैचारिकताक धरातल पर आबि क' आस्वादन करी त' ओ जीबाक बाट देखबैत भेटत, जीवनक प्रति आस्था उत्पन्न करैत लागत।

(अमर कथा-शिल्पी स्व॰ मनमोहन झा स्मृति ग्रन्थ, 2010,
बात-विचार पोथी, 2015)



कथाक नवद्वारक उद्घाटक : ललित

सत्त पूछल जाय त' 'आधुनिक कथा' मे, आधुनिक कथाक रचना प्रक्रिया मे कथाकारक वैयक्तिक अनुभूति महत्वपूर्ण होइत अछि। वैयक्तिक वा सामाजिक जीवनक कोनो घटना, कोनो व्यक्ति, कोनो परिस्थिति, कोनो वाक्य कथाकारक मर्म पर अंकित भ' ओकर संवेदना कें उद्वेलित-उद्बोधित क' दैत अछि। ओकरहि आधार मानि अनुभव ओ कल्पनाक संयोग सँ कथाकार कथानकक विश्वसनीय स्वरूप ठाढ़ करैत अछि। परिवेश, चरित्र, संवाद, औत्सुक्य, चरमोत्कर्ष इत्यादिक विन्यास क' कथा कें समग्रता प्रदान करैत अछि। एही कारणे आधुनिक कथा, पाठक कें अपन जीवन ओ अपन परिवेशक कथा बूझि पड़ैत छैक। पाठक कें ओहि कथाक कोनो ने कोनो अंश सँ अपना के सम्बद्ध होयबाक प्रतीति होइ छै।'[1] वस्तुतः 'कथाक रचना-दृष्टि मे मनुक्खक स्वतंत्रता, व्यक्ति महत्ता तथा मानवीय सबन्धक गरिमा के केन्द्रीय स्थान प्राप्त छैक। एकर कारण ई थिक जे आजुक लोक अलौकिक सत्ता पर विश्वास नहि करैत अछि। तैं मध्ययुगीन मानसिकतावला पण्डित सभ कथा आ उपन्यासक रचना नहि क' सकैत छल।'[2]

मैथिलीक आधुनिक काल मे जे प्रथम मौलिक कथा मानल जाइत रहल अछि से जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'तारा-वैधव्य' थिक। 'जनसीदन जी संस्कृतक पण्डित अवश्य छला मुदा हुनका बंगला तथा हिन्दी साहित्यक नीक परिचय छलनि। हुनक मानसिकता एकटा व्यापक परिवेश मे काज क' रहल छल आ तकरे परिणाम थिक जे हुनका कथाक भाषा पंडिताम नहि अछि।'[3] ओना एम्हर पहिल प्रकाशित कथा नवीनतम शोधक आधार पर 'विलक्षण दाम्पत्य' कथाकार जलधर झा

मानल जाइत अछि जे 'मैथिली हित साधन' पत्रिका, संयुक्तांक 1906 मे प्रकाशित छल।[4] मोटा-मोटी आरम्भ सँ 1940 तक सामाजिक समस्या खास क' विवाहजन्य कुपरिणाम कें कथाक आधार बनाओल गेल। किछु कथा स्वतंत्रता आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर सेहो लिखल गेल मुदा परिणाम मे सुधारवादी कथाक बाहुल्य छल। एहि अवधिक करीब-करीब सभ कथा भावुकता सँ ओत-प्रोत रहय। सुधारवादी कथाक लेल ब्रह्मसमाज, आर्यसमाजक चलाओल आन्दोलनक संग मैथिली महासभाक निदेश सभ सेहो कथाकार कें प्रेरित केलक। मुदा कथा मे रूपक नवीनता बहुधा दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। 1941-50क अवधि मे आबि क' कथाक प्रवृत्ति मे परिवर्त्तन आयल तकनीक आ शिल्पक दृष्टि सँ सेहो कथा आधुनिक भेल। मैथिली मे आधुनिक कथाक धार मजरल। प्रवृत्तिक आधार पर कथा अनेक उपधारा मे बंटल। एही अवधि मे लिखल उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कथा 'रूसल जमाय' मैथिली कथा साहित्यक विकास मे प्रस्थान बिन्दु मानल जाइत अछि। नगेन्द्र कुमारक 'ससरफानी', कुमार गंगानन्द सिंह 'बिहाड़ि', योगानन्द झाक 'आम खयबाक मुंह', मनमोहन झाक 'बोटिव्स', उमानाथ झाक 'आध घंटा'क संग काञ्चीनाथ झा किरणक 'धर्मरत्नाकर' आ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'वृहस्पतिक शेष' एही अवधि मे आयल। किरणजीक 'धर्मररत्नाकर' आ सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'वृहस्पतिक शेष' जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध उठैत आक्रोश तथा दाम्पत्य जीवनक माधुर्य आ रसज्ञता ल' कए दू भिन्न प्रवृत्तिक कथा लेखन के जन्म देलक। पारम्परिक सौन्दर्य-बोधक स्थान पर नवीन दृष्टि-बोध मैथिली कथाक स्वर, भंगिमा आ स्वरूप मे व्यापक परिवर्तन अनलक। जीवन के देखबाक नजरि सेहो बदलि गेल। प्रखर रूप मे से अगिला दशक अर्थात् 1951-60क दशक मे आबि क' चिन्हार भेल। वस्तुत: से तखन भेल जखन मैथिली कथा मे कथाकार ललितक प्रवेश भेल। सामाजिक परिवर्तनक प्रति सजग दृष्टि तथा नवताक प्रति स्वस्थ, आशावादी दृष्टिकोण ाक कारणे ललित मैथिली कथा के एहन विस्तृत ओ व्यापक आयाम देलनि जे एहि सँ पूर्व नहि रहय। एतबे नहि, ललित अपन समकालीन आ बादक बहुतो कथाकार के प्रेरित-प्रोत्साहित क' मैथिली कथा के भारतीय विभिन्न भाषा-साहित्यक कथाक समकक्ष ठाढ़ करबा मे सफल भेला।

कथाकार ललितक जन्म 6 अप्रैल 1932 कें मधुबनी जिलाक बसैठ चानपुरा गाम मे भेलनि। 1947 मे ओ मैट्रिक केलनि। इन्टरक बाद ललित दरभंगा सँ कलकत्ता चल गेला। 1949 मे ओत' बी॰एस॰सी॰ मे नामांकन करौलनि मुदा ओत' मोन नहि लगलाक कारणे फेर दरभंगा घूरि क' सी॰एम॰ कॉलेज मे बी॰ए॰ मे नाम लिखौलनि 1950 मे। एही वर्ष हुनक पहिल कथा 'कबुला' वैदेही पत्रिका मे छपल। तकरबाद पारिवारिक आर्थिक स्थितिक दबाब मे ओ लहेरियासरायक एम॰एल॰ एकेडमी (सरस्वती स्कूल) मे 1953 मे शिक्षक भेला। विज्ञानक शिक्षक। विज्ञानक शिक्षक होइतो हुनका मे साहित्यिक रुझान अधिक छलनि तैं साहित्यिक मनोवृत्तिक छात्र हुनका अपना निकट बेसी पबैत छल। हुनक वाणी मे आकर्षण रहनि, व्यक्तित्व मे आकर्षण रहनि, आ इएह दूनू आकर्षण हुनका एक लोकप्रिय शिक्षक रूप मे चर्चित बना देने रहनि। ओत' ओ मुदा बेसी दिन रहि नहि सकला। 1957 मे स्कूल छोड़ि देलनि। डिप्टी कलक्टर भ' गेला। तत्कालीन बिहारक विभिन्न स्थान यथा - कटैया, नरपतगंज, जगदीशपुर, बेलसण्ड, सीतामढ़ी, सिमडेगा, रॉची ओ बेतिया मे डिप्टी कलक्टर पद पर रहला। फेर बगहा आ नवादा मे एस॰डी॰ओ॰ तथा एल॰आर॰डी॰सी॰क पद पर रहथि। अंतिम पदस्थापन ए॰डी॰एम॰क रूप मे बेतिया मे भेलनि। ओतहि 'लीवर सिरोसिस' भ' गेलनि। 14 अप्रैल 1983 के हुनक देहावसान भेल।'[5] कथाकार ललित 1950 सँ 1964 धरि मुख्यतया रचनारत रहला। ओना 1980 धरि हुनक कथा छपल भेटैत अछि। वर्ष 2012 मे विभूति आनन्द द्वारा सम्पादित 'ललित समग्र' मे 41टा कथा संग्रहीत अछि। पृथ्वीपुत्र उपन्यास छनि। विभूति आनन्द लिखलनि अछि जे छह टा कथा - स्पर्धा, समाजक सहयोग, बोलबम, कुलटा, प्रतिशोध आ दीक्षा हुनका नहि भेटलनि। एहि सँ पूर्व 1964 मे 'प्रतिनिधि' नाम सँ हुनक कथा-संग्रह आयल रहय जाहि मे एगारह टा कथा संकलित अछि। ई एक अफसोसक गप छी जे हुनक समकालीन कथाकार मायानन्द मिश्र जाहि कथा 'कुलटा'क सम्बन्ध मे लिखने छथि जे, 'ठीके, एहने कथा मैथिली मे लिखल जा सकैत अछि। लागल जेना सूर्योदय भ' गेल हो, लागल जेना कुहेस छंटि गेल हो।'[6] से कथा उपलब्ध नहि अछि।

अपन प्रिय अग्रज कथाकार ललितक व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे कथाकार राजमोहन झा लिखलनि अछि जे 'ललित जी बहुत किछु फराक आ कातकरौट मे रह' बला लोक रहथि। ई बात नहि कि साहित्य मे ओ केन्द्रीय स्थान पयबाक अधिकारी नहि रहथि मुदा स्वभाव सँ ओ सभठाम दोसरे के आगू बढ़' दैत रहथि स्वयं कात भ' जाइत छला। साहित्य जगत मे हम सभ हुनका एक तटस्थ, निर्लिप्त आ किछु हद धरि उदासीन व्यक्तिक रूप मे जनैत अयलहुं अछि।'[7] राज मोहन झा कें एहि बातक अफसोस सेहो रहनि जे कथाकार ललितक रचनाक सही आ वस्तुपरक मूल्यांकन नहि भेल अछि। ओ कहैत छथि जे 'मैथिली कथाक मूल्यांकनक क्रम मे आलोचकलोकनि जखन कखनो ललितजीक स्मरण केलनि अछि, हुनका राजकमल चौधरी आ मायानन्द मिश्रक संग देखलनि अछि। जखन कि वास्तविकता ई अछि जे ललित जीक कथा हिनकालानेकनि सँ फराक, विशिष्ट और ऊपर अछि। राजकमल-ललित-मायानन्दक जाहि त्रिमूर्त्तिक प्रसिद्धि अछि, ओहि मे ललितजी कें आलोचक लोकनि तेना ओझरा देने छथि जे हिनका सही आ वस्तुपरक मूल्यांकन नहि भ' पबैत अछि। ललितजी नहि केवल प्रथम और वरीय छथि, हुनक साहित्य सेहो शेष दूनू व्यक्तिक तुलना मे कतहु बेसी विविध आ बहुआयामी अछि।'[8]

हमरा लगैत अछि जे कथाकार राज मोहन झाक कहब समीचीन छनि। ठीके, ई त्रिपुण्ड, त्रिमूर्त्ति आदि नाम नहि केवल ललित अपितु राजकमल ओ मायानन्दक कथा मूल्यांकन मे सेहो वस्तुनिष्ठ आकलन के बाधित करैत रहल अछि। एकर कारण मैथिली आलोचना मे आनो बहुत दुर्घटना भेल। पहिल दुर्घटना त' ई भेल जे हिनक समकालीन अन्य कथाकार मूल्यांकन मे उपेक्षित रहि गेला। लिली रे, रामदेव झा, सोमदेव, हंसराज, धीरेन्द्र आदि समकालीन कथाकारक सम्यक् रूपें विवेचन नहि भ' सकल। दोसर, ललित, राजकमल, मायानन्दक आभामण्डल एहन निर्मित भेल जे ओ लोकनि अपन पूर्ववर्त्ती कथा-परम्परा सँ एकदम विछिन्न लाग' लगला। जखन कि ओ लोकनि पूर्वक परम्परा आ प्रवृत्ति सँ जुड़िये क' मैथिली कथा-धारा मे ज्वारि अनलनि। अपन-अपन निजत्वक संग मैथिली कथाक विकास मे योगदान केलनि। तेसर, एहि सँ मैथिली कथाक मूल्यांकनक स्वतंत्र दृष्टि जे विश्वदृष्टि वा सामान्य भारतीय दृष्टि सँ फराक होयब

अपेक्षित छल तकर निर्माण मे बाधा उत्पन्न भेल। कथाकार ललित के त' क्षति भेबे केलनि मैथिली कथालोचन के सेहो क्षति भेलैक। जहांधरि ललितक प्रश्न अछि आलोचक लोकनि हुनक ऐतिहासिक भूमिका के त' स्वीकार केलनि मुदा ललितक कथाक मार्मिक क्षण सभ उत्थर आ संयोग-जन्य लगलनि। ई मानलनि जे अनेक कथाकार कें कथा लिखबा मे प्रवृत्त सेहो कयने छथि। मुदा ललितक कथाक मूल क्षीण आ साधारण लगलनि। तथापि ई मानलनि जे तांगावला, रिक्सावला आदिक मनोदशा के पकड़बा मे हिनका मे अपूर्व शक्ति छनि। हिनक 'रमजानी' कथा के मैथिलीक पहिल सामाजिक चेतनाक कथा मानियो क' हिनक आन कथा सभ मैथिल किवां मैथिलेत्तर पाठक कें मैथिली कथाक माध्यम सँ सामाजिक-आर्थिक स्थितिक तीर्थाटन करायब लगलनि।[10] ईहो लगलनि जे राजकमलक दुनियाँ ललितक दुनियाँ सँ बहुत दूरक दुनियाँ नहि होइतो, भिन्न तरहक दुनियाँ छनि। मशीनी युग मे सुन्न पड़ैत राग-वृत्तिक पीड़ा, आर्थिक कुचक्र मे पड़ल आ आहत होइत मानवीय मूल्यक औनाहटि आ विषम स्थिति पर सोझ चोट नहि करितो, ओहि मूल्य-विघटनक प्रति रोष आ स्थिति वैषम्यक प्रति स्थायी विरोधक प्रकृति राजकमलक कथा कें अपन फराक स्वर प्रदान करैछ। लड़ाइक बात ललित आ राजकमल दूनू के बूझल छनि, लड़ाइक जरूरतियो सँ ओ सभ सहमत छथि, मुदा लड़ाइ लेल युद्धभूमि मे उतरबाक गप्प ललित के नहि अरघैत छनि आ राजकमल लड़बाक लूरि नहि जनैत छथि। अर्थचक्रक निर्ममता सँ ललितोक दुनियाँ प्रभावित छनि आ राजकमलोक मुदा राजकमलक पात्र सभ मे एहि अघोषित युद्ध मे हिस्सेदार हेबाक पात्रता अधिक भेटैत अछि।' ईहो मानलनि जे ललित समय के जनलनि आ समाजक सामंती विकार कें देखार कयलनि। ओहि सँ बचबाक बोध देलनि, किन्तु ओहि सँ मुक्तिक बाट नै बना सकला। पात्र मे ओ पात्रता नहि आबि सकल। रमजानी सन युग चेतनाक कथा ललित आगू नहि लिखि सकला।'[12] संगे-संग ईहो कहल गेल जे ललित जखन लिखब शुरू केलनि, ओहि समय भारत स्वतंत्र भ' गेल छल। ओहि राष्ट्रवादक प्रासंगिकता आब खतम भ' गेल छल जे स्वतंत्रता सँ पहिने रहय। मुदा ओकर असरि स्वतंत्रताक बादो किछु दिन धरि देखाइ दैत रहल। अपन पूर्व साहित्यिक परम्पराक दबाब

ललित पर कोन प्रकारें पड़ि रहल रहय, ई हुनकर 'ओवर-लोड' कहानी मे देखल जा सकैत अछि। एहि कथाक दरोगा त्याग भरल भावुकता मे जीवैत अछि। कथाकार कें एहि भावुकता सँ मोह सेहो छनि, मुदा स्वतंत्र भारत मे त्याग भरल भावुकता कतेक बेसुरा भ' चुकल अछि, कथा द्वारा एकर स्पष्ट व्यंजना भेल अछि। एहि प्रकारें यात्री आ हरिमोहन झाक राष्ट्रवादी मानसिकता ललित लेल अप्रासंगिक भ' चुकल छल। परन्तु यात्रीक ऐतिहासिक यथार्थवाद और हरिमोहन झाक आलोचनात्मक यथार्थवादक परम्परा सँ ललित अपना के जोड़लनि आ ओकर विकास केलनि।"[13]

त' एहि प्रकारें ई देखल जा सकैत अछि जे आलोचक लोकनिक साहित्यक अवधारणा, यथार्थ आ यथार्थवाद के बुझबाक आ मानबाक बैचारिक भिन्नताक कारणे ललितक कथाक मूल्यांकन ठीक-ठीक आ वस्तुनिष्ठ ढंग सँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे एखन धरि नहि भ' सकल अछि। वस्तुत: मिथिलाक खास सामाजिक संरचना, भाषा, मैथिली कथाक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, कथाक परम्परा, प्रवृत्तिक आलोक मे ललितक व्यापक अवदान के रेखांकित नहि कयल जा सकल अछि। तैयो एखन धरि राज मोहन झा, सुभाष चन्द्र यादव, सुकान्त सोम, महाप्रकाश आ विभूति आनन्द द्वारा कयल मूल्यांकनक रोशनी मे आगू बढ़ल अवश्य जा सकैत अछि। एही संग ईहो बात सत्य जे राजकमल चौधरीक जीवन आ साहित्य तेना ने परवर्त्ती साहित्यकार ओ आलोचक लोकनि के चकविदोर लगबैत रहलनि जे ललित पर रोशनी नहि पड़ि सकल। जँ ललितक योगदान के अहू रूपें देखल जाय जे ओ कथा मे नवद्वारक उद्घाटन केलनि त' ओहि द्वार बाटे जे कथाकार समाजिक यथार्थक अभिव्यक्ति अपन कथा मे केलनि से कम महत्वक बात नहि थिक। अहू सँ ललितक प्रभाव ओ सोच के बूझल जा सकैत अछि। ई बात त' कहले जा सकैत अछि जे ललित जाहि बाट के प्रशस्त केलनि से मैथिली कथा के सामाजिक सुधार सँ सामाजिक परिवर्त्तन दिस मोड़बा मे सफल भेल। समाजक आलोचना करबाक हिम्मति अयलनि कथाकार कें। कथा लोकोन्मुख भेल। भावुकता आ रोमांसक दुनियां सँ फराक वास्तविकताक ठोस जमीन पर पैर रखलक। कथा के एकदम काल्पनिक बुझबाक दृष्टि मे परिवर्तन अनलक। भाषाक संस्कार बदलल। सामान्य लोकक भाषा अपन क्षेत्रीय विशिष्टताक संग कथा मे आब' लागल। गद्यक विकास भेल। संगहि एहन यथार्थ-बोध कथाकार मे आयल जे पाठकक विवेक के महत्ता दैत छल।

संदर्भ-संकेत

1. रामदेव झा, मैथिलीक आद्य कथा, मैथिली आलोचना पत्रिका, सम्पा-मोहन भारद्वाज
2. मोहन भारद्वाज, मैथिली कथामे गद्यक विकास, अनवरत पोथी
3. ओएह
4. तारानन्द वियोगी, भूमिका, देसिल बयना, कथा-संग्रह, सम्पा-तारानन्द वियोगी
5. विभूति आनन्द, ललित, विनिबन्ध पोथी
6. मायानन्द मिश्र, एक मील का पत्थर, जो काल-पथ पर गड़ गया, विपक्ष पत्रिका
7. राज मोहन झा, ललित अर्थात ...., विपक्ष पत्रिका
8. ओएह
9. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास पोथी
10. मोहन भारद्वाज, ललितक लेखन विमुखता, अनवरत पोथी
11. ओएह
12. शिवशंकर श्रीनिवास, भूमिका, मैथिली कथा संचयन, पोथी
13. सुभाष चन्द्र यादव, ललित का महत्व, विपक्ष पत्रिका

(देसिलबयना, स्मारिका, 2019 ई०)



लिली रेक कथा-संवेदना

प्रसिद्ध कथाकार लिली रे बीसम शताब्दीक छठम दशकमे मैथिली कथा-क्षेत्रमे प्रवेश केलनि। 26 जनवरी 1933 के मधुबनीमे हुनक जन्म भेलनि। ओहि समय हुनक पिता डी॰एस॰पी॰क पदपर पदस्थापित रहथिन।[1] वैदेही पत्रिकाक जुलाई 1955क अंकमे कल्पनाशरण नामसँ हुनक पहिल कथा छपलनि। कथाक नाम छल 'रोगिणी'। 1955 सँ 1957 धरि हुनक पाँचटा कथा छपलनि। एही पाँचटा कथामे सँ छल 'रंगीन परदा' शीर्षक कथा। जकरा कथाकार ललित लेखिकाकें सम्बोधित पत्र मे मैथिलीक 'माइलस्टोन' कथा कहने छथि। ललितक पत्रक बाद राजकमल चौधरीक पत्र सेहो लेखिकाकें भेटलनि जाहिमे ओ कथाक प्रशंसा केने रहथिन।[2] छठम दशक एहन अवधि छल जखन 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशन फेर सँ शुरू नहि भेल छल। तखन छल 'वैदेही'। ओहि दशकक बेसी कथा जे प्रसिद्ध भेल से 'वैदेही' मे छपल छल। ललित, राजकमल लोकनि 'वैदेही' सँ जुड़ल रहथि। कृष्णकान्त मिश्र ओकर सम्पादक रहथि। आन पाठक भलहिं कल्पनाशरणकें लिली रेक रूपमे नहि चिन्हैत छलथिन, मुदा सम्पादकक संग ललित, राजकमल हुनका जनैत छलाह। ई बात पत्र सँ स्पष्ट होइत अछि। मुदा मैथिली संसार लिली रेकें चिन्हलक 1978 मे प्रकाशित 'अन्तराल' कथाक बाद। पहिल बेर हुनक असली नामसँ कथा प्रकाशित भेल। 'अन्तराल' एक दीर्घकथा छल जे मिथिला-मिहिरक चारि अंक मे छपल।

लिली रेक कथा 1955 सँ 2013 धरि प्रकाशित भेल अछि। अठावन वर्षमे चौआलीस कथा। 1955 सँ 1957 धरि पाँच टा, 1978 सँ 1990 धरि सत्तरह टा, 1991 सँ 2000 धरि उन्नैस टा आ 2001 सँ 2013 धरि तीन टा। एतेक दीर्घ अवधि धरि कथा-सृजनसँ जुड़ल रहब मामूली बात नहि अछि। एहि मे कत्ते कथा आयल। कत्ते कथाकार अयला। अपन पारी समाप्त क' मौन भ' गेलाह। मुदा लिली रे दीर्घ वा लघु अवधि धरि पैवेलियनमे सुस्ताइओकें जखन कखनहु क्रीजपर अयलीह तँ हुनक स्ट्रोक देखा जोग अछि। ओना एहि अवधि मे ओ विशालकाय उपन्यास 'मरीचिका'क संग 'पटाक्षेप', 'उपसंहार', 'जिजीविषा', 'एकआ बड्ड पुरान गप्प' उपन्यास आ 'समयकें धङैत' (आत्मकथा) सेहो लिखलनि। हुनक आत्मकथा[3] पढ़ि कें ई बात आर बेसी अजगुत लागत जे ओ अपन पति आ परिवारक संग एतेक चिन्ता-बेगरता मे ओझरायलो रहैत आ एतेक रास आन-आन तरहक सामाजिक ओ व्यक्तिगत सक्रियता मे संलग्न रहिओ कें कोना लिखबाक लेल समय निकालि लैत छलीह। वस्तुतः ई हुनक सामाजिक ओ सांस्कृतिक सरोकारे अछि जे ओ एतेक दीर्घ रचनात्मक जीवन जीबि सकल छथि।

लिली रेक कथाक कहबाक ढंग एकदम्म खिस्सकड़बला अछि। से अपन ढब-ढांचा मे पारम्परिक मैथिली प्रकृति सँ हुनका जोड़ैत अछि। रोचकता एहेन जे खिस्सा शुरू करब तँ अन्ते कय छोड़ब। कथाक अन्त मे कथ्य ओ भाव छिटकि जायत। लिली रेक कथाक चरमबिन्दु बहुधा अन्तहिमे रहैत अछि। लिली रे कथा कहबा मे कखनहु हड़बड़ी मे नहि रहैत छथि। ओ अत्यन्त धैर्यसँ विस्तारमे जा कथा कहनिहारि छथि। कखनहु लागत जे कथा कतय सँ शुरू भेल आ कतय जा रहल अछि आ फेर कतय पहुंचि गेल। मुदा कथाक अन्त सम्पूर्ण विस्तारकें एक संगतिमे आनि दैत अछि। लिली रेक कथाक दोसर विशेषता कथाक संवाद अछि। बहुधा कथाक बेसी अंश संवादे मे रहैत अछि। संवादक बेसी प्रयोग सँ कथामे तार्किकताक संग प्रवाह बनल रहैत छैक। लिली रेक कथाक तेसर विशेषता हुनक भाषा अछि। मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रक बोली-बानी आ भाषाक उपयोग अपन कथामे जतेक लिली रे केलनि अछि, से आन बहुतो कथाकारसँ सम्भव नहि भेल अछि। अपन कथामे भाषा प्रयोग लेल ओ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय छथि। भाषा मे जतय साहित्यिकताक पुट भेटैत अछि, ओतहि विभिन्न क्षेत्रक मिठास आ आत्मीयता सेहो।

लिली रे कथाक शिल्प मे बहुत कम प्रयोग कयलनि अछि। हुनक

कथावाचक एकरंगाहे सन रहल अछि। कथाक शिल्प मे खिस्साक ढब-ढांचाक कारणें ओ एकहि स्तरीय कथा कहनिहारि कथाकार छथि। हुनक कथा मे विभिन्न स्तर नहि अछि। वस्तुत: लिली रेक कथा एहि कारणें कथात्मक स्तर पर चलैत अछि। ओहिमे भावात्मक ओ सांस्कृतिक स्तरक विन्यास नहि भेटैत अछि। वस्तुत: लिली रे अपन कथा-यात्रामे सामाजिक सम्पृक्ति सँ अपन यात्रा आरम्भ करितो कालान्तर मे सहज मानवीय प्रवृत्ति दिस बढ़ैत गेलीह अछि। तें हुनक कथा-संरचनामे द्वन्द्वात्मकता नहि अछि। जे द्वन्द्व अछि से चरित्रक मानसिक स्तर धरि सीमित अछि। मुदा, चरित्रक मनोविज्ञानमे हुनक प्रवेश अपूर्व अछि। कथाकार लिली रेक ई सामर्थ्य हुनका सँ किछु मोन रखबा जोगर चरित्र खास क' स्त्री चरित्रक सृजन करौलक अछि। रानू देवी राणा, 'अन्त:सलिला' कथाक फूलकुमारी, 'जिद' कथाक देवकी, 'बिहाड़ि अयबा सँ पहिने'क डाक्टर सावित्री पाठक, 'विशाखन' कथाक मधु आदि चरित्र अपन मानसिक तल पर द्वन्द्वात्मकताक कारणें अपन एक खास छवि निर्मित करैत अछि। परिवेश आ व्यक्तिक द्वन्द्व, से एही कारणें लगैत छैक। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध पर सोचबा लेल विवश करैत ई कथासभ स्त्रीक मनोविज्ञान कें बुझबाक अवसर प्रदान करैत अछि। एहि कथा सभक परिणाम महत्त्वपूर्ण नहि अछि। महत्वपूर्ण अछि मानस-प्रक्रिया। स्त्रीक पुरुषक प्रति, पतिक प्रति एक खास प्रकारक व्यवहार, जे कखनहु जिदियाह ओ असन्तुलित सेहो लागि सकैत अछि। मुदा, एहि लेल व्यक्ति रूपमे ओहि स्त्रीकें दोषी नहि मानल जा सकैत अछि। एकरा पराधीनता आ स्वाधीनताक सामाजिक तल पर द्वन्द्व सँ बेसी मानसिक तल पर द्वन्द्व बूझल जा सकैत अछि। मुदा, ई धरि सत्य जे ई कथासभ मानसिक रूपें सबल होइत स्त्रीक कथा अवश्य अछि। एहि क्रममे पारिवारिक जीवनमे अलगाओ आ सामाजिक जीवनमे पराभव भोगबा सँ सेहो एहि स्त्रीसभकें गुरेज नहि छैक। वस्तुत: स्त्री पहिने पुरुषक आगू शारीरिक आ बौद्धिक रूपसँ हीनतर बूझल जाइत छल। कानून आ धर्मशास्त्र दुनू स्त्रीक पराधीनताक व्यवस्था सुनिश्चित कयने रहय। स्त्री अपन नामसँ कोनो सम्पत्ति नहि राखि सकैत छल, व्यवसाय नहि क' सकैत छल, ने अपन सन्तान पर अथवा एतय धरि जे अपना उपर कोनो अधिकार देखा सकैत छल।

मुदा क्रमश: पुरुषकें समकक्ष स्त्रीक राजनीतिक, सामाजिक आ शैक्षिक समानताक आन्दोलन जकरा किछु वर्ष पूर्व तक 'नारीवाद' कहल जाइत छल, से ग्रेट ब्रिटेन आ संयुक्त राज्य अमेरिकामे शुरू भेल। एकर जड़ि अट्ठारहम शतादीक मानवतावाद आ औद्योगिक क्रान्ति मे छल। एशिया मे नारीवाद तथा नारीवादी संघर्षक जन्म तखन भेल जखन लोकतांत्रिक अधिकारक प्रति चेतना जागृत भेलैक। तखने जनताक आधा आबादीकें आधारभूत अधिकार सभसँ वंचित राखयला अन्यायक प्रति जागरूकता उत्पन्न भेल। विशेषत: उन्नैसम आ बीसम शताब्दी मे विदेशी शासन आ सामन्ती शासनक निरंकुशताक विरुद्ध ठाढ़ भेल आन्दोलनक अवधि मे नारीवादी धारणा कें सेहो बल भेटल। एहि युगमे स्त्रीक अधीनताक विरुद्ध उठल स्वर मे विधवाक पुनर्विवाह, बहु विवाह, सती आ पर्दाप्रथा पर रोक तथा स्त्रीक लेल शिक्षा ओ कानूनी अथवा संवैधानिक स्वतंत्रताक मांग शामिल रहय।[4] एहि प्रकारक जागरणक प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय साहित्य पर पड़ल अछि। मैथिली मे सेहो निबन्ध, कथा, उपन्यास, कविता सभक माध्यमे स्वतंत्रता सँ पूर्व बहुविवाह, विधवासभक समस्या, पर्दा-प्रथा, बेमेल विवाह, स्त्री-शिक्षा सभ पर खूब लेखन गेल। स्वाभाविक रूपसँ लिली रे पर एहि सभ चेतनाक प्रभाव पड़ल आ ओ अपन जीवन ओ लेखन मे स्त्रीक स्वाधीनता, सबलता ओ आर्थिक ओ मानसिक स्वावलम्बनक लेल स्वर कें तेज केलनि। आधुनिक मैथिली कथाक पहिल नारी स्वर बनि गेलीह ओ। सामाजिक ओ मानसिक रूपसँ सबल होइत स्त्रीक कथा लगातार कहैत रहली। बहुत कथा लिखलनि, मुदा हुनक बहुतो कथामे एहि स्वर कें अकानल जा सकैत अछि। मुदा एही संग इहो सत्य थिक जे हुनक कथा स्त्रीक संघर्ष कें सम्पूर्ण समाजक धरातल पर नहि उठाय, पारिवारिक ओ व्यक्तिगत धरातल पर उठबैत अछि।

एहि क्रममे ई जानि लेब आवश्यक अछि जे व्यक्ति ओ परिवारेसँ समाज बनैत छैक। परिवारमे जँ सामन्ती व्यवस्था अछि, पुरुषक वर्चस्व अछि अथवा स्त्री कें पराधीन बूझल जाइत अछि, तँ समाजमे कोना एकर विपरीत स्थिति रहत? स्त्री पहिने परिवार मे रहैत अछि तखन वृहत्तर समाज मे अबैत अछि। स्त्रीक सचेतन भेलाक लाभ पहिने परिवारकें भेटैत छैक तखन समाज कें। तहिना स्त्री कें लोकतांत्रिक मूल्यक लेल

पहिने परिवारमे संघर्ष करय पड़ैत छैक, तखन ओ समाजमे संघर्षक लेल बढ़ैत अछि। तें ई आवश्यक छैक जे परिवारमे स्त्रीक मान्यता हो, ओकर सम्मान हो, तखने सामन्ती मूल्यसँ बाहर आबि परिवारेमे लोकतांत्रिक मूल्य स्थापित भ' सकत। लिली रेक विभिन्न कथा मे स्त्री श्रम करैत भेटत, आर्थिक रूपसँ स्वालम्बी भेटत, उद्यमी भेटत। तहिना पुरुषक प्रति समानताक व्यवहार सेहो भेटत।

लिली रे जे कथा कहलनि अछि, सांगोपांग, विस्तारमे जा कें कहलनि अछि। तें हुनक अधिकांश कथा एक दीर्घकथा अछि। ई प्रवृत्ति मैथिलीक बहुत कम कथाकारक अछि। एहन विन्याससँ कथा कहनिहार मे लिली रेक संग मायानन्द मिश्र आ प्रभास कुमार चौधरी हमरा मोन पड़ैत छथि। ई कथाकार सभ उपन्यास सेहो लिखलनि अछि। से खूब लिखलनि अछि। विस्तारसँ कथा कहबाक शिल्पक कारणें हिनकालोकनिक कथामे उपन्यास सनक व्याप्ति भेटैत अछि। मुदा, ई दुखक बात छल जे एहन कथाकारक एकहुटा कथा-संग्रह उपलब्ध नहि छल। उपन्यासो सभ 'मरीचिका' कें छोड़ि पोथी रूपमे नहि आयल रहय। आयल छल तँ मैथिलीसँ पहिने हिन्दी मे। मैथिलीसँ हिन्दी मे अनुवाद रूपमे। कथाकार विभारानी द्वारा अनुवादित उपन्यास 'पटाक्षेप' ओ कथा-संग्रह 'विल टेलर की डायरी' ज्ञानपीठ प्रकाशन सँ छपल। हिन्दी मे से खूबे पढ़ल गेल। आब लिली रेक पोथी सभ वर्ष 2014-15 मे मैथिली मे प्रकाशित भेल अछि। प्रसिद्ध आलोचक ओ सम्पादक डा॰ रमानन्द झा 'रमण'कें एकर श्रेय जाइत छनि। हुनक लगन ओ परिश्रम सँ ई सम्भव भेल। 'साहित्यिकी प्रकाशन'क योगदान सँ से सम्भव भेल। आब कथाकार लिली रेकें सम्पण र्ा रूपें जानल-बूझल जा सकैत छनि।

लिली रेक कथा-संसार बहुत व्यापक छनि। श्रमिक, मजदूरक घर सँ ल' कें एकदम शहरुआ आधुनिक परिवर, सम्पन्न ओ सामंती परिवार सभक कथा ओ कहलनि अछि। हुनक कथा कोनो खास क्षेत्रीय सीमामे बान्हल नहि अछि। लिली रे गामक कथा नहि कहलनि अछि। गामसँ आयल लोकक कथा अवश्य कहलनि अछि। मुदा जेना कहलहुँ, कोनो विषयक उपस्थापनमे अर्थात् कथन-शैली मे मैथिल विशिष्टता छनि। से हुनक कथाकें बंगला, तमिल की मलयाली कथा-चेतनासँ फराक,

मैथिल चरित्र प्रदान करैत छनि। ओना ई भिन्न बात थिक जे हिनक कथाक अनुवाद मे 'फूट नोट'क काज नहि पड़ैत छैक। हमरा कखनहुँ कें ई बात आश्चर्यचकित करैत अछि जे लिली रे अपन कथामे एहि प्रकारक मैथिलपन कें कोना बचा कें रखलनि? एहि क्रममे हमरा लगैत अछि जे अपन तमाम आधुनिक-बोध, अङरेजिया चालि-चलन, परिवेश, भाषा-व्यवहार, परिवारमे मैथिलीक प्रति कोनो विशेष अनुरागक अभाव, बेसी जीवन मिथिला क्षेत्रसँ बाहर बितऔलाक बादोक हुनकामे अपन परम्परा-बोध वा देसीपन विद्यमान छल। एही संग ओ एहि सभ सीमासँ ऊपर उठि समग्र मानवताक आधारभूत प्रश्नसभ कें देखब आवश्यक बुझलनि आ ओही सँ अपन कथा-संसार रचलनि। एही संग हमरा इहो लगैत अछि जे जेना संरचनावादी भाषिकीक आलोक मे एकटा प्रसिद्ध कथन अछि - भाषा बजैत अछि, व्यक्ति नहि अर्थात् मनुष्य जे किछुओ बजैत अछि, ओ भाषाक भाषिक तंत्रक अनुसार अछि, ओकरा बिना मनुष्य बाजि नहि सकैत अछि। आ रोला वार्थ साहित्य पर एकरा चरितार्थ करैत विरोधाभासक भाषा मे कहैत छथि - साहित्य लिखैत अछि, साहित्यकार नहि। तात्पर्य ई जे साहित्य शून्य मे जन्म नहि लैत अछि। जँ पहिने सँ लेखनक (साहित्य) अस्तित्व नहि हो तँ कोनहु कवि अथवा कृतिकार लिखिये नहि सकैत छथि। पूर्ववर्ती सभ जे किछु लिखने छथि, प्रत्येक कलाकृति ओहि पर परिवर्तन मात्र थिक। कृतिकार जाहि संस्कृति, जाहि भाषा, जाहि साहित्यक परम्परामे पोषित छथि, लाख विद्रोह आ विमुखता दिस प्रवृत्त होथि, ओ लिखता ओही परम्परा एवं काव्यशास्त्रक परिधि मे। कोनो कलाकृति अपन सांस्कृतिक तंत्र आ साहित्यिक तन्त्र सँ बाहर आइधरि ने लिखल गेल अछि, ने लिखल जा सकैत अछि।[5] से बात एहिठाम लागू मानल जा सकैत अछि। ओना ई सिद्धांत बहस-सापेक्ष अछि मुदा बहुतो प्रश्नक समाधान सेहो करैत अछि।

आब हमरालोकनि मोन पाड़ी ओहि समय कें जखन लिली रे कथा लिखब शुरू कयलनि। ओ समय छल स्वाधीनताक लगले बादक। स्वाधीनता सँ पूर्व जाहि समाजक परिकल्पना कयल गेल छल ताहि समाजक निर्माणमे सन्देह देखबामे आब' लागल रहय। जनताक मोहभंग हुअय लागल रहय। ओहिसँ पूर्वक मैथिली कथा सामाजिक सरोकारक सुधारवादी धारा

आ भावुक रोमांस सँ ओतप्रोत कथाधाराक संग कथाक पाश्चात्य शिल्प सँ परिचित भ' गेल छल। संस्कृत, बंगला आ अङरेजी पढ़ल-लिखल कथाकार कथा लिखब शुरू क' देने छला। पाश्चात्य शिल्पक प्रयोग तँ भ' रहल छल, मुदा विषय-वस्तु मैथिल जनजीवन मे धँसल नहिओ रहैत छल। एकर सामानान्तर मैथिल जनजीवन मे धँसल कथा मैथिल प्रकृति अर्थात् गप्पक शैलीमे सेहो कहल जा रहल छल। आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे 'मैथिली कथा साहित्यक अपन इतिहास छैक। प्रारम्भ मे भाववादी आ प्राचीन सौन्दर्यवादी सरणि पर कथा-रचना भेल। किरणजी आ हरिमोहन झा ओकरा सामाजिक आधार देलनि। हरिमोहन झाक बाद ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द आदि कथाकार एहि क्षेत्र मे अयला।'[6] ललित, राजकमलक संग जँ मायानन्द अयलाह तँ सोमदेव, धीरेन्द्र रामदेव झा, हंसराज सेहो अयलाह। आ अयलीह कथाकार लिली रे। कथाकारक ई पीढ़ी जेना होइत छैक, मैथिलीक पूर्ववर्त्ती कथा सभसँ सन्तुष्ट नहि छल। ओ सभ हिन्दी आ अन्य भारतीय भाषाक समकक्ष मैथिली कथा कें ठाढ़ करय चाहैत रहथि। हुनकालोकनि कें विश्वक कथा-साहित्यसँ परिचय रहनि। मुदा मैथिली कथाक सजग पाठक सेहो रहथि ओ लोकनि। पूर्ववर्त्ती कथाकार लोकनिसँ आत्मीयता रहनि। ओ लोकनि ई बुझैत छलाह जे मैथिली कथाक विकास मे हमसभ अपन योगदान तखनहि द' सकैत छी जखन पूर्वक कथा-परम्पराक सम्यक ज्ञान रहय। कथाक नीक-बेजाय बुझियैक। तें ई देखल जा सकैत अछि जे छठम दशकक कथाकार लोकनि जत' अपन कथा कें नव-नव विषय-वस्तु, समकालीन समस्या, भाव-बोध आ वैचारिकता सँ सम्पन्न कयलनि, ओतहि अपन पूर्ववर्ती कथा-परम्परा सँ एकदम विछिन्न नहि भेलाह। हुनकालोकनिक कथा युगानुकूल परिवर्त्तनक संग पूर्ववर्त्ती कथाक अग्रिम कड़ी सन लगैत अछि। ललित, राजकमल आ लिली रेक सम्पूर्ण कथा जखन एक संग उपलब्ध भेल अछि तँ ई बात एकदम फड़ीछ भ' कें सोझाँ आयल अछि। तहिना सोमदेव, धीरेन्द्र, रामदेव झा, हंसराजक सभ कथाक जँ एक संग आकलन करब तँ एहि तथ्यक पुष्टि भ' जायत। एहि संग एक आर तथ्य सेहो समक्ष आयल अछि। कथाकार ओ समीक्षक शिवशंकर श्रीनिवासक इहो मानब छनि जे 'एहि छठम दशकसँ

कथाकारक एकटा पीढ़ी जेना कायम भेलैक तेना पूर्वमे नहि छल। एक समयक लेखक रूपमे विभिन्न कथाकारक उदय भेल आ ओलोकनि अपन-अपन कथा लिखब आरम्भ केलनि। जिनका सभमे अपन-अपन खास वैशिष्ट्य ओ दृष्टिक कारणें भिन्नता रहितो समाकलीनता छनि जे अपूर्व अछि।'[7] एहि दृष्टिसँ जँ देखल जाय तँ ई सकालीनता मूल्यक रूपमे बादक दशक सभमे आयल कथाकार सभमे बढ़ैत गेल अछि। से आठम दशकमे आबि, एकदम जगजियार भ' जाइत अछि।

एहि सन्दर्भ मे सभसँ पहिने लिली रेक पहिले कथा 'रोगिणी'कें जँ देखब तँ स्पष्ट होयत जे पूर्व मे विधवाक समस्या आन-आन तरहें मैथिली कथामे अवश्य आयल अछि। मुदा एक तरुणी विधवाक कोनो युवकसँ दैहिक सम्बन्ध आ ओहिसँ उत्पन्न सन्तानकें स्वयं स्त्री द्वारा पोसबाक सहज इच्छा एहिसँ पूर्वक मैथिली कथामे भरिसके आयल छल। समाजक डरसँ ओ विधवा अपन सन्तानकें पोसैए मुदा बेटो कें ई नहि कहि पबैत अछि जे ओ ओकर माय छियै। कहै छै जे बहीन छी। पूर्वक मैथिली कथाक प्रवृत्ति कें जँ ध्यानमे राखी तँ कहि सकैत छी जे एहन स्थिति मे तरुणी विधवा या तँ अत्महत्या क' लितय अथवा कोखिमे उत्पन्न सन्तानकें मारि दितय, गर्भपात करा लितय। बिना वैवाहिक लाइसेंसक कोनो स्त्री सन्तान कें जन्म नहि द' सकैत अछि। पतिसँ फराक पुरुषसँ शारीरिक सम्बन्धक मादे सोचियो नहि सकैत अछि। जेना हम पूर्वमे कहलहुँ जे लिली रेक कथा सामाजिक सम्पृक्ति सँ सहज मानवीय प्रवृत्ति दिस बढ़ैत गेल अछि, तकर बीज एहि कथामे पड़ि गेल छल।

कथाकार लिली रेक मानस निर्मितिक सम्बन्ध कें बुझबामे शंकर कुमार झाक लिखल 'लिली रे' शीर्षक निबन्ध बहुत सहायता करैत अछि। ओ लिखलनि अछि जे, 'लिलीक प्रारम्भिक शिक्षा भेल रहय पटनाक मिशनरी स्कूल, कानवेंट मे, कॉन्वेंटक शिक्षासँ मिशनबाली मदर-सिस्टर द्वारा सिखाओल इसाई धर्मक विशिष्ट गुण सेवा-व्रत, मनुष्य मात्र कें अपन बन्धु बूझब, रोगीक सेवा करब, निर्धनकें सहायता करब आदि स्वाभाविक रूपें हिनक व्यक्तित्व मे आत्मसात् भए गेल रहए, आधुनिकताक पक्षपाती पिता ओ अत्याधुनिकताक समर्थक पतिक प्रोत्साहन पाबि लिली रे आइ सँ दशक पूर्वे ओहि सामाजिक समानताक समर्थन कएल जकर

उपयोगिता-आवश्यकता आइ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकारल जा रहल अछि। स्त्री, पत्नी ओ पुरुष, पतिक मध्य समान अधिकारक प्रवृत्ति सँ ओतप्रोत रहथि।[8] एहि प्रकारें ई कहल जा सकैत अछि जे मानवीय करुणासँ निर्मित नारीवादी स्वर जे लिली रेक कथा-संसारमे व्याप्त भेटैत अछि, तकर जड़ि लिली रेक जीवन-दृष्टिसँ उपजल अछि। ओ लोकल सँ ग्लोबल होइत गेलीह अछि। से बात लिली रेक कथामे मैथिल, बंगाली, नेपाली, भूटानी, यूरोपीयक संग विभिन्न जाति ओ धर्मक पात्रसभक कथासँ सेहो स्पष्ट होइत अछि। एतेक व्यापक पात्र ओ चरित्र मैथिलीक कोनो आन कथाकारक कथा मे नहि भेटैत अछि। एक दिस सर्ज लबोक आ रानूदेवी राणा (रानू देवी राणा) छथि तँ बिल टेलर आ थापा (बिल टेलरक डायरी) छथि। चन्द्रमुखी छथि तँ गुलाबजान छथि। चुनी, जोन, असलम (लाली गुराँस) छथि तँ डाक्टर पतरीस, हिल्डा लबोक, डालमा (अप्रत्याशित) छथि। मालती (रंगीत परदा), कृष्णा (अन्तराल), माया (माया), कमला (कमला), लखिमा (हम राजी छी), मिसेज सिंह (पाहुन), निरूपमा (निरूपमा), पानमती (विधिक विधान) तँ छथिहे।

लिली रे सभसँ बेसी चर्चित भेलीह 'रंगीन परदा' कथासँ। ई कथा मैथिलीमे स्त्री-विमर्शक प्रारम्भ मानल जाइत अछि। एहि समयमे मैथिली कथा क्षेत्रमे एक उल्लेखनीय घटना भेल। 'वैदेही'क अप्रैल 1955क अंक मे ललितक 'मुक्ति' कथा छपल। ई कथा राजकमल चौधरी कें ततेक उद्वेलित कयलकनि जे ओ ओकर जबाब मे 'फुलपरासवाली' लिखलनि जे 'वैदेही'क अगस्त 1955क अंक मे छपल। तकर बादे जून-जुलाइ 1956 मे लिली रेक कल्पनाशरण नाम सँ 'रंगीन परदा' कथा छपलनि। एहि प्रकारें ई देखले जा सकैत अछि जे मैथिली कथामे स्त्री-विमर्शक प्रारम्भ एहि तीनू कथासँ अवश्ये भ' गेल। स्त्री-विमर्श मे स्त्रीक यौन स्वतन्त्रता आ आर्थिक स्वतन्त्रता दू प्रमुख तत्वक रूपमे रहल अछि। से क्रमशः बाहर सँ भीतर, घर-परिवारक परिधिमे अबैत गेल अछि। ई पति-पत्नीक सम्बन्धक बीच सघन होइत गेल। एक प्रकारक अघोषित संघर्षक रूप ल' लेलक। एकर पक्ष-विपक्ष मे कतेको कथा आयल। पति-पत्नी आ एकटा तेसर (स्त्री वा पुरुष) रूपमे ई संघर्ष स्त्री-विमर्शक अन्तर्गत सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमे मुखर भेल अछि। ध्यान देबैक तँ

ई लागत जे 'मुक्ति', 'फुलपरासवाली' आ 'रंगीन परदा' तीनू कथा पति-पत्नीक बीचेक सम्बन्ध-बन्धक गीरह कें खोलैत अछि। 'मुक्ति' मे स्त्री पतिसँ विमुख भ' दरबानक संग पड़ा जाइत अछि। 'फुलपरासवाली' मे स्त्री पति आ अन्य पुरुष सँ विमुख भ' गाम चल जाइत अछि। 'रंगीन परदा' मे अन्य पुरुष पतिक हत्या क' दैत अछि आ स्त्री अन्य पुरुषो सँ विमुख भ' जाइत अछि। एहि प्रकारें ई तीनू कथा मिथिलाक सामन्ती सामाजिक परिवेश मे स्त्री (मिथिलामे स्त्री माने पत्नीए होइत छैक)क इयत्ताक कथा बनि जाइत अछि। तें मिथिलाक सन्दर्भ मे एहि कथासभ कें स्त्री-विमर्शक आरम्भिक कथा तँ मानले जा सकैत छैक। मुदा लिली रेक सभ कथा स्त्री-विमर्शक कथा नहि छनि। स्त्री-पुरुषक कथा ओ स्त्री-विमर्शक कथामे फर्क होइत छैक। स्त्री-विमर्शक दृष्टि सँ लिली रेक कथाक विश्लेषण होयबाक चाही। मुदा एहि लेख मे से हमर अभीष्ट नहि अछि। एहि लेखमे हम लिली रेक कथाकार कें बुझबाक प्रयास क' रहल छी। हुनकर कथा-संवेदना हमर दृष्टि मे अछि।

जेना कहलहुँ, लिली रेक बेसी कथा परिवार आ पति-पत्नीक कथा अछि। ओहि कथासभक भीतर पुरुष आ स्त्रीक अहं आ अस्तित्वक संघर्ष सेहो अछि। एहि क्रममे स्त्री कखनो कठोर देखाइत अछि, तँ कखनो भावुक। तहिना पुरुष कखनो समटल तँ कखनो फसकल। स्त्री बेसी व्यवहारिक ओ अपन हित बूझयबाली लगैत छैक। समाज आ परिवारसँ बाहर आबि अपन मनोरथक अनुसार जीवन जिअयबाली आ एहि तरहक निर्णय लिअयबाली स्त्री चरित्रक सृजन सेहो केलनि अछि लिली रे।

कथाकार लिली रेक संवेदना एहि तरहक स्त्री आ पुरुषक संग अछि जे एक हाड़-मांसक मनुक्खक रूपमे दया, समता, ममता, न्याय, प्रीति, सत्य, कल्याण-बुद्धिपर बल दैत जीवन जीबाक अभिलाषी अछि। समस्त प्राणी मे समानताक भावना आ सामाजिक जीवनमे पुरुष-स्त्रीक समानताक पक्षधर लिली रे मैथिली कथा कें किछु एहन कथा सँ समृद्ध कयलनि अछि जे भाव-भाषा-शिल्प ओ अपन कथ्य सहित सभ दिन बेछप ओ महत्वपूर्ण बनल रहत। हमरा जनैत एहन कथा सभ मे 'रंगीन परदा', 'चन्द्रमुखी', 'रानू देवी राणा', 'विधिक विधान', 'लक्ष्य बिन्दु', 'दुविधा', 'महाकालक महिमा', 'हम राजी छी', 'कहाउत', 'विल टेलरक डायरी',

'सम्बन्ध' आ 'लाली गुराँस' कें चुनल जा सकैत अछि। ई कथा सभ सामाजिक सरोकारसँ बेसी मानवीय सरोकारक लेल मोन रखबा योग्य अछि।

संदर्भ-संकेत

1. लिली रे, संकलन/सम्पादन : डा॰ रमानन्द झा 'रमण', समयकें धाङल, साहित्यिकी प्रकाशन
2. ओएह
3. ओएह
4. डा॰ अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नई दिल्ली
5. गोपीचन्द नारंग/ताराकान्त झा, अनु-संरचनावाद उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
6. मोहन भारद्वाज सँ आशुतोष कुमार झाक संवाद, संवाद पोथी, सम्पादक- अशोक, शान्ति निकेतन, शिवपुरी, पटना
7. शिवशंकर श्रीनिवास, बदलैत स्वर, नवारम्भ, हनुमान नगर, पटना
8. लिली रे, संकलन/सम्पादन - डा॰ रमानन्द झा 'रमण', रंगीत परदा, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसवपाही, मधुबनी

(मैथिली कथाक समाज : भाषा एवं शिल्प, चेतना समिति, 2016 ई॰)



कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास

शिवशंकर श्रीनिवास हमर मित्र छथि। हमरा सभक मित्रता किशोरावस्थासँ आइ धरि कायम अछि। से एहि दुआरे नहि कि हम सभ एक्के गाममे रहि गामसँ दू मील दूर कॉलेज मे पढ़बा लेल, संगे-संग जाइत छलहुं आ अबैतो छलहुं। बात किछु दोसर छै। हम दुनू गोटे कथा लिखैत छी। कथाकार छी। साहित्ये हमर सभक मित्रताक आधार अछि। कहल जाइत अछि जे साहित्य जोड़ैत अछि। तोड़ैत नहि अछि। त' साहित्ये अछि जे एहि तमाम वर्ष मे हमरा दुनू के जोड़ने रहल अछि।

शिवशंकर गाममे रहैत छथि। ओ मैथिली तथा हिन्दी भाषामे एम॰ए॰ केने छथि। पी॰एच॰डी॰ मे हिनक विषय रहनि 'कथा साहित्यमे समाजक चित्रण'। ओ कल्याणी मिथिला संस्कृत महाविद्यालय, दीप (मधुबनी मे) उपाचार्य पद पर काज केलनि। आब सेवानिवृत्त भ' गेल छथि। सेवानिवृत्तिक समयमे कालेजक प्रधानाचार्य रहथि। हुनका अपन जीविका लेल गाम नहि छोड़' पड़लनि। प्रोफेसर बनलासँ पूर्व सकरी मे पब्लिक स्कूलमे सेहो बहुत दिन शिक्षकक काज केलनि। हम नेनपनेसँ शहरे मे पढ़लहुँ-लिखलहुँ। नौकरी केलहुँ। सभ मिलाक' पाचो बरस, गाम मे नहि रहल होयब। तैयो शहरी नहि भ' सकलहुँ। गाम लगातार हमर मोनमे जीवित रहल। गाम के हमर मोनमे जीवित रखबामे शिवशंकर आ हुनकर कथा सभक हाथ सेहो रहल अछि। शिवशंकरक कथा गाम के बिसर' नहि दैत अछि। गाम के अस्तित्व, विकास आ प्रतिष्ठा लेल संघर्षरत शिवशंकरक कथा मन-मस्तिष्क के छेकने रहैत अछि। अपनामे लेपटा लैत अछि। अनवरत टोकैत रहैत अछि। कहैत रहैत अछि जे गाम लेल किछु सोचू, विचारू। किछु करू।

शिवशंकर श्रीनिवासक एक कथा छनि 'चिन्ता'। कथा मे मेहीं कामति एक लघु कृषक छथि। बैसल रहला पर जन मे सेहो खटि लैत छथि। खेती करबाक इलम लेल सभ हुनकर प्रशंसा करैत अछि। वस्तुत: ओ खेतसँ प्रेम करैत छथि। एही खेतियाहा मोन के कारण हुनका भीतर सामुदायिक सोच उपजल छनि। जकर पृष्ठभूमि मे कृषक-संस्कृति अछि। कृषि कर्मसँ उपजल जीवनशैली अछि। ओ एहि बातसँ चिंतित छथि जे लोक गामसँ भागि रहल अछि। खेती-पथारी बंद भ' रहल अछि। मेहींक बेटा झगड़ा क' क' शहर चल गेल अछि। मेंही सोचैत रहैत छथि जे हुनकर बेटा घूमि क' फेर अपन गाम आओत आ गाममे खेती करत। श्रीनिवासक ई कथा कृषि-कर्म सँ लोकक पलायन के रेखांकित करैत अछि। रेखांकिते नहि करैत अछि आजुक स्थिति के प्रश्नांकित सेहो करैत अछि। वस्तुत: मेहीक बेटा के फेर सँ गाम आयब आइ सभसँ पैघ चुनौती बनि गेल अछि। जँ ओ घूमि क' आबियो जाइत अछि त' की खेतीसँ ओकर गुजर-बसर भ' सकतैक? मेही सन हजारों-लाखों मिथिलाक बेटा सभक बोझ की एहिठामक खेती सम्हारि सकैत अछि? वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे त' एहि प्रश्नक जवाब नकारात्मक अछि। वस्तुत: खेती आइ उद्योग भ' गेल अछि। उद्योगे जकां, ओकरा चलब' पड़ैत छैक। एना मे केवल हुनर आ खेतसँ प्रेमक बल पर उद्योग कोना चलाओल जा सकैत अछि। ओहि लेल पूँजी, लाभकर जोत, बजारमे टिकबाक सामर्थ्य चाही। मुदा मेहीं त' एक लघु कृषक छथि, खाली समयमे मजदूरी सेहो क' लैत छथि। जीवन निर्वाह कहुना भ' जाइत छनि। खेतीक नवका चलनिमे मेहीं सन कृषक पूर्णत: मजदूर भ' जायत। मजदूरिए टा हुनकर हाथमे रहि जेतनि। गाममे बाप मजदूर आ शहरमे बेटा मजदूर। से लगातार भ' सेहो रहल अछि। त' एहि तरहें मेहींक चिंता एक व्यापक चिंताक घटाटोपमे अहाँके समेटि लैत अछि। श्रीनिवासक कथा एहिना अहाँके भीतर उतरैत अछि अहाँके आकुल-व्याकुल करैत अछि।

श्रीनिवासक पहिल स्वतंत्र कथा-संग्रह 'अदहन' वर्ष 1991 मे प्रकाशित भेल। ओहिसँ पहिने एके गामक तीन कथाकार मित्र-अशोक आ शैलेन्द्र आनन्दक संग पाँच-पाँच टा कथाक सहयोगी कथा-संग्रह 'त्रिकोण' नामसँ 1986 मे प्रकाशित भेलनि। हुनकर दोसर कथा-संग्रह

'गामक लोक' 2005 मे आयल, 'गुण-कथा' वर्ष 2014 मे आ चारिम हेबनिमे प्रकाशित 'माटि' वर्ष 2021 ई० मे। ओकर बादो ओ लगातार कथा लीखि रहल छथि जे पत्रिका सभ मे प्रकाशित होइत रहैत छनि। 'अदहन' कथा-संग्रहक भूमिकामे प्रसिद्ध कवि-कथाकार जीवकान्त कहने छथि जे 'हिनक कथा सभ मे कहबाक जे ढंग, से उत्सुकता जगबैत अछि। पढ़बा काल मोन अकछाइत नहि अछि। एहि दृष्टिएं ओ बंगालक कथाकार सभ जकाँ पाठक पर अपन 'पकड़' बनओने रखबामे सिद्धहस्त छथि। किछु कथाकार अपन कथाक शिल्प एहन बिछैत छथि जे कथाकारक कथ्य पाठकक अनुभव नहि बनि पबैत अछि, सेहो दुर्बोधताक अवगुण एखन धरि ई नहि विकसित कयलनि अछि। ई संतोषक बात थिक। कमला आ बागमती कछेरक मैथिली ई खूब सुन्नर लिखैत छथि। सामान्य लोकक दैनन्दिन भाषाक किछु अद्‌भुत शब्द सभ ई जीवनसँ सोझे उठा क' देलनि अछि। एहू तरहें ओ भाषा आ साहित्यकें सम्पन्न क' रहलाह अछि।' 'गामक लोक' कथा संग्रहक भूमिका मे हम कहने रही जे श्रीनिवास हमर प्रिय कथाकार छथि। ई बात मुदा बहुतो लोक कहि सकैत छथि। हमरा बूझल अछि जे मैथिलीक पाठक हुनका बहुत प्रेम करैत छनि। हुनकर कथाक प्रतीक्षा करैत अछि। जखन कोनो पत्रिका मे हुनकर कथा छपैत अछि त' पाठक के खुशी होइत छैक। चलू, एक नीक कथा पढ़बा लेल भेटत। एहन अवसर भरिसके आयल हो जखन शिवशंकर अपन कथासँ पाठक के निराश केने होथि। ओ चालीस वर्ष सँ लगातार कथा कहि रहल छथि, तैयो ई नहि लगैत अछि जे ओ बासि भ' रहल छथि वा अपनाके दोहरा रहल छथि। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक ई एक एहन तागति छी जे हुनका श्रेष्ठ बनबैत अछि। वर्ष 1983 मे अपन कथा 'अपन बुत्ता' सँ विधिवत कथा-यात्राक आरंभ कयनिहार श्रीनिवास आइयो पाठक लोकनिक प्रिय कथाकार छथि। ओ एहन तागति कत' सँ उपलब्ध केलनि अछि? कोना ओ एत्ते वर्षसँ अपना आप के तरोताजा बना क' रखने छथि? एकर की रहस्य अछि? एकर रहस्य अछि शिवशंकरक लोक-मन के जनबाक, बुझबाक सतत् चेष्टा। लोक-मन पर हुनकर गहींर पकड़। ओ शुरू सँ एक आम लोक रहल छथि। आम लोक सन सोचैत छथि। आम लोकक तागति पर हुनका

अटूट आस्था छनि। एही संग अपन जमीन, अपन माटि ओ कहियो नहि छोड़लनि अछि। हुनकर मन-मस्तिष्क माटिक तागति आ माटिक सुगंधिसँ भरल-पुरल अछि। ओहि मे रचल-बसल अछि। ई माटि मिथिलाक माटि थिक। एहि मे मिथिलाक माटिक सौरभ के अनुभव कयल जा सकैत अछि। चिन्हल जा सकैत अछि। ओ 'अदहन' कथा-संग्रह मे अपनो कहने छथि जे 'एकटा बात लेल हम कथामे सतत् प्रयत्नशील रहलहुँ अछि जे कथा मैथिली कथा रहय। मात्र वाक्य संरचनामे, क्रियापद मैथिली रहने ओ मैथिली कथा नहि लागय अपितु मिथिलाक माटिक सौरभ कथामे रहैक। कखनो-कखनो कथाकार अपन भूमिसँ दूरक कथा कहैत छथि, ताहिठाम कथामे मिथिलाक जन-जीवनक बात नहि रहत परन्तु एहन लागय जे कोनो मैथिल मैथिलीमे मिथिलाक बाहरके कथा कहलनि अछि। ई भेनहि मैथिली कथा अपन फूट चिन्हास बनौने रहत। ओकर एहन चिन्हार हैबे कथाकें मौलिक रूपसँ विशिष्ट बनाओत।'

त' माटिक तागति आ ओकर, सौरभक महत्ता बुझैबला कथाकारक मन स्वाभाविक रूपसँ आम लोकक मन, गाम-ग्रामीणक मन, खेतिहरक मन होयत। सैह कारण अछि जे शिवशंकरक कथामे प्रेम-मनौअलि हो, राग-विराग हो, चिन्ता-बेगरता हो, द्वेष-घृणा हो, रूप वर्णन हो, संघर्ष वा श्रृंगार हो, यैह मन बेर-बेर झलकि जाइत अछि। हुनकर एक सुंदर कथा अछि 'जमुनियां धार'। कथा कहैत अछि जे भिन्न-भिन्न रीति-रिबाज के मानैबला लोक सभ जँ एक समाजमे रहैत अछि त' ओकर संवेदना सेहो एक होइत अछि। कथामे एक मुस्लिम युवती अछि। गामक ओहि युवतीक बएसक संबंधमे जखन कथाकार कह' चाहैत छथि त' देखू की कहैत छथि, 'आसिन मासमे खेतक आरि पर ठाढ़ भ' गरजैत धानक फसिल के जरूर हियौने हैब, आब फूटत तखन फूटत। ओहने सन लगैत बएसक युवती छलि।' ओकर रूप 'छांटल चाउर आ महमह तेहने ओकर रूप आ रंग लागि रहल छल।' ओहिना 'चिड़ै नहि मनुक्ख थिक' कथाक नायक वामदेव के कद-काठीक वर्णन करैत कहने छथि, 'से त' अद्‌भुत मनुख अइ। एकरा देखै छिऐ तँ ठीके होइए जे लोरिक ताड़ गाछक छड़ी बना क' चरवाहि करैत छल होयत।' हुनकर कथा सभ के पढ़ैत अहाँ महसूस करब जे श्रीनिवासक सौंदर्य-बोध लोक-मन, खेतिहर-मन के

रस मे पागल अछि। ई बहुत महत्वपूर्ण बात थिक। सामान्यत: कथाकार सभ पर पारम्परिक सौंदर्य-बोध, जे संस्कृत-साहित्यक धारमे मजरल रहैत अछि से कोनो नारी-पुरुषक सौंदर्यक वर्णन करैत काल संस्कृते साहित्यमे आयल उपमा सभ द' क' अपना के व्यक्त करैत अछि। मैथिलीक विद्रोही कथाकार राजकमल चौधरी पर्यन्त अपन नायिकाक रूप वर्णनमे बाणभट्ट के मोन पाड़ैत छथि। एहनामे शिवशंकर श्रीनिवासक कथाकार एक कृषकक सौंदर्य-बोधसँ अपन कथामे स्त्री-पुरुषक रूपक वर्णन करैत अछि से मैथिली कथामे श्रीनिवासक विशिष्ट योगदान मानल जा सकैत अछि। हुनकर कथा सभ के पढ़ैत कोनो पाठक के लागि सकैत छनि जे ओ गाममे कृषि-कर्मसँ जुड़ल लोक छथि। कृषक छथि। शिवशंकरक कथा-संसार मे बहुते जीवन्त, दीन-दुनियाँ से प्रेम कर' बला लोक सभ बसैत अछि। ई लोक सभ खाली मनुक्खेसँ प्रेम नहि करैत अछि। पशु-पक्षीसँ, गाछ-पातसँ, वनस्पति सभ सँ खेत-पथार सभ सँ सेहो प्रेम करैत अछि। एहि सभ लोक के श्रीनिवासक कथाकार बहुत प्रतिष्ठा दैत अछि। प्रतिष्ठित करैत अछि। एहने लोक सभसँ ओ अपन कथा-संसार रचलनि अछि। कथाकारक काज होइत छै जे ओ वास्तविक संसारसँ पृथक अपन मनोरथक अनुकूल एक फराक कथा-संसार रचय। जन-जीवन सँ उठा क' एहन चित्र सभ उपस्थित करय जे एक फूट संसार रचबाक विन्यास सँ सुसज्जित हो। जे ओकर आँखिमे बसल हो। से मनोरथक संसार के श्रीनिवासक कथा-संसारमे देखल जा सकैत अछि। स्वत: से लौकि उठैत अछि। एही संग हुनक कथा-संसारमे आत्मकेन्द्रित, संकुचित, धन-पशु, शुभ-लाभक मानसिकतामे जीव' बला, जाति-सम्प्रदाय के महत्ता देब' बला अहंकारी आ भ्रष्टाचारी के हुनकर धिक्कार आ फटकार सेहो देखैत बनैत अछि। एहन लोकक मानसिकता के ओ पियाजुक एक-एक छिलका जकाँ ओदारैत चलैत छथि। देखू, एहने एक लोकक संबंध मे 'चिड़ै नहि मनुक्ख थिक' कथामे ओ की कहि रहल छथि, 'से इन्दुनाथ के ककरो खिधांशमे बड़ रस आबनि। गाममे बेरोजगारी बढ़ि रहलैए, पढ़ब-लिखब दिससँ लोक भागि रहलए। जकर हालत नीक छलै ओकर बिगड़ि गेलै. .. से सुनि हुनका आनंद होइन आ यैह आनंद लेबाक लेल, पूरा गाम मे अपन पैघत्व देखाबय इन्दुनाथ गाम आबथि। ओ जखन अपन दलान

पर बैसल दरबारी सभ सँ घेरल रहैत छलाह, तँ, हुनका होइत छलनि जे ओ जेना रामबहादुर झा भ' गेल होथि। वैह रामबहादुर झा जे प्रत्येक दिन चिड़ै-भोज करैत रहथि। रामबहादुर झा जखन चाउर के आंजुर मे ल' ऊपर उछालि छिंटथि तँ, ऊपर चिड़ै सभ चाउर के ओकर दपदपीसँ लोकि लेब' चाहय, ओहि समय कएक बेर ओ भीतरे-भीतर जेना चिड़ै भ' जाथि। ... वैह इन्द्रनाथ आब भीतरे-भीतर राम बहादुर झा भ' रहल छलाह।' शिवशंकर अपन कथा के लोकोक्ति, छोट-छोट खिस्सा, सुक्ति सभ, गप सभसँ रचैत छथि। हुनकर कथाक ई शिल्प नहि केवल हुनक कथन-शैलीके लोकधर्मी बनबैत अछि, कथ्य के सेहो ओरिया क' हृदयमे उतारि दैत अछि। सम्पूर्ण कथा मोनमे घुलैत रहैत अछि।

श्रीनिवासक कथा-संग्रह 'गामक लोक' के भूमिका मे हम लिखने रही जे, 'ओ ओहि लोक सभक पक्षमे छथि जे काजुल अछि, परिश्रमी अछि। अपन बुत्ता पर भरोस केनिहार अछि। कोनो बसातमे उड़िया जाइ बला लोक नहि अछि। जागल-जागल लोक अछि। जकर क्रियाकलापसँ धरती ऊपर उठैत अछि। जे सामान्यतया कृषि-कर्मसँ जुड़ल अछि। यदि सोझे-सोझ नहियो जुड़ल अछि त' आत्मसम्मानसँ अपन पैर पर ठाढ़ भ' जिनगी जीब' चाहैत अछि। जकर घाम चोटीसँ ऐड़ी धरि बहैत रहैत अछि। एहने लोक अपन परिवेशसँ विछिन्न नहि हुअ' चाहैत अछि। हाड़-मांसक यंत्र नहि बन' चाहैत अछि। तर्कपरायण, रूढ़िवादी, कठमुल्ला ओ नहि बनि सकैत अछि। वस्तुतः एहन लोक क्रियाशील जीवन जीब' चाहैत अछि। ओ जनैत अछि जे क्रियाशीलते जीवनक उद्देश्य थिक। क्रियाशीलता के छोड़ि जीवनक सौंदर्य कतहु ठहरि नहि सकैत अछि। मुदा ई 'ग्लोवल भिलेज' बला सभ एहि सुंदर के फालतू चीज बनेबा पर बिर्त्त अछि। ओकरा से जरूरी बुझाइ छैक किएक त' ओ महाजन थिक, व्यापारी थिक ओकरा कोनो सुरति मे अपन माल बेचबाक छै। ताहि लेल गामक गुण के गामक लोकक क्रियाशील सुंदर जीवन कें फालतू घोषित करब जरूरी छैक। तखनहि ओकर मुक्त व्यापार ओत' प्रवेश क' सकत।' शिवशंकरक कथामे गामक यैह काज कर' बला परिश्रमी, श्रमजीवी, आत्मसम्मानी लोक 'ग्लोवल भिलेज' के व्यापारी सभक प्रतिपक्ष मे चुनौती देबाक मुद्रामे अहांके ठाढ़ भेल भेटि सकैत अछि। हुनकर कथामे एहने क्रियाशील जीवन

जीव' बला कतेको स्त्री-पुरुषक आत्मसम्मानी व्यक्तित्वक सौंदर्य अहांके मोहित क' सकैत अछि। शिवशंकरक कथा 'साहुकारी' के लिअ'। गाममे रहनिहार मास्टर गोपीनाथ ठाकुर कथाकार छथि। अपन काजक प्रति, अपन कथा-लेखनक प्रति हुनका हृदयमे सम्मानक भाव छनि। ओ एहन काज नहि करैत छथि अथवा नहि कर' चाहैत छथि जाहि काजक प्रति हुनका सम्मानक भाव नहि छनि। जाहि काजमे हुनका रुचि छनि ओहि काजमे हुनका तृप्ति भेटैत छनि। मास्टरी हुनकर पसिन्न के काज छनि। ओहि काजक प्रति जखन लोक के असम्मान प्रदर्शित करैत देखैत छथि त' क्रोधित होइत छथि। मुदा लोक सभ अछि जे हुनका चोट पहुंचबैत रहैत अछि। सभ पाइ के महत्व दिअ' लागल अछि आइ-काल्हि। पाइ चाहे जेना आबय। जत' सँ आबय। एहि क्रममे ओ बेटाक संग पत्नीसँ सेहो असहमत होइत छथि। पत्नी पर हुनका भरोस छलनि। मुदा ओहो बदलैत समय संग बदलि गेली अछि। पाइक महत्व दिअ' लगली अछि। ताहू मे जहियासँ राजसत्ताक समर्थन भेटि गेलैक अछि तहियासँ समाज पर संकट आर बढ़ि गेल अछि। एहन विकट समयमे गोपीनाथ ठाकुर ओहि बनिया के मोन पाड़ि हंसि पड़ैत छथि जे आमदनीए के सभ किछु बुझैत छल। अपन स्त्री तक सँ तखने बात करैत छल जखन किछु आमदनीक संभावना बनैत हो। कथाकार प्रतीकात्मक ढंगसँ एहि व्यापारी मानसिकता पर व्यंगक चोट करैत छथि। एहि कथाक माध्यमसँ शिवशंकर इहो बात कहलनि अछि जे जाहि विचार-व्यवहार के, जाहि काज के समाजमे घृण ाक दृष्टिसँ देखबाक परंपरा विद्यमान रहल अछि, ओ सामाजिक मानदण्ड आब एहि बाजारबादक समयमे बदलि रहल अछि। आब एके घर-परिवार मे फराक-फराक सोच आ आस्थाक लोक रह' लागल अछि। एना मे, घर-परिवार, समाज सभ चुनौतीक दायरामे आबि गेल अछि। आब त' गाम सेहो चुनौतीक दायरा मे आबि गेल अछि। हिन्दू-मुसलमानक पसाही ओतहु पसरि गेल अछि। 'पसाही' कथामे नूरो दीदी कहैए, 'से तों कह' की हम एहि गामसँ भागि जाउ? की हम्मर गाम नहि छी? गामो आब हिन्नू-मुसलमान होइ छै?'

शिवशंकरक लोक-मन, खेतिहर-मनक व्याप्ति खाली मिथिलाक गाम धरि सीमित नहि अछि। ओ एहि मन सँ सम्पूर्ण देश आ विश्व के हियबैत

छथि। ओ बहुतो कथा शहरमे रहै बला गामक लोक के कथा सेहो कहलनि अछि। 'गुण-कथा', 'रूमाल', 'पितामही', 'मनुक्ख नदी थिक' आदि कथा के एहि दृष्टि सँ देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा के गाम आ शहरमे विभाजित क' कय नहि देखल जा सकैत अछि। हुनकर कथा ग्राम्य-बोधक कथा नहि छी। ओ गामक सहरजमीन पर ठाढ़ भ' सामाजिक-आर्थिक सभ प्रश्न सभसँ टकराइत छथि आ सम्पूर्ण समाज लेल जे श्रेयस्कर अछि, ओहि बात के अपन कथामे कहैत छथि। हुनकर आस्था समाजक कल्याणकारी विकासमे अछि। ओहिमे धर्म-सम्प्रदाय, जाति-पातिक भेद नहि अछि।

शिवशंकर के कथा लिखब बहुत पसिन्न छनि। हम चाहैत छी जे ओ अपन पसिन्नक हरेक एहन सभ काज करैत रहथि जे लोक के जोड़य, समाज के, लोक के उच्च स्तर पर ल' जाय। जे ककरो अहंकारक विरोध करय। जे लोक आम-रस्ता पर बेढ़ लगबैए, ओहेन बेढ़ के, ओहन बेढ़ लगौनिहार व्यवस्थाक विरूद्ध संघर्ष लेल तैयार हुअय। शिवशंकर अपन कथाक माध्यमसँ सुंदर जीवनक कतेको चित्र प्रस्तुत केलनि अछि। ओ सुन्दर जीवन जे 'जकर टाङ तकर आम' कथाक लालपरी सन अपन काज के महत्व दिअय। अपन काज सँ प्रेम करय। एहन सुन्दर जीवन जाहिमे 'चट्ट पड़ैत खेत', सुन्न वाध, सुखायल-टटायल गाछ, सुखायल धार नहि होइ, लोकक मोन सेहो एहन नहि होइ। जे 'माटि'क महत्ता के बूझि जीवनके भविष्यक सुन्दर मनुक्ख गढ़वामे लगा दिअय। प्रीतिक लाल-लाल फूल लगयबामे लागि जाय। अपन माटि ताकि लिअय ओ। ओ जनैत छथि जे जीवनमे संघर्ष सेहो वैह क' सकैत अछि जे सुंदर आ व्यापक रूपसँ जीवन जीअ' चाहैत अछि। लोकमे संघर्ष-चेतना बनल रहय से आवश्यक अछि। मुदा संघर्ष-चेतना बनल रहबाक लेल सौंदर्य-चेतना बनल रहब सेहो जरूरी थिक। कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास अपन कथाक माध्यमसँ सैह बात कहबाक लेल बेर-बेर, लगातार कथा लिखैत रहला अछि।

(तीरभुक्ति पत्रिका, जुलाई-सितम्बर 2019 ई॰)



आधुनिक कथाकारक कथा 'अतीत'

प्रो॰ उमानाथ झा मैथिलीक आधुनिक कथाकार छथि। जखन हुनका आधुनिक कहैत छी त' से वर्त्तमानक पर्याय नहि थिक। वस्तुत: आधुनिकताक सम्बन्ध आधुनिकीकरण के फलस्वरूप पुरातन तथा परम्परागत विचार आ मूल्य, धार्मिक विश्वास आ रूढ़िगत रीति-रिवाजक विरूद्ध नवीन आ वैज्ञानिक आविष्कार, विचार, नव मूल्य आदि सँ अछि। आधुनिकता एक दृष्टि थिक, मूल्य थिक। वर्त्तमानमे लेखन केनिहार सभ लेखक आधुनिक नहि छथि।

प्रो॰ झा 'अतीत' कथा-संग्रहक प्राक्कथन मे लिखने छथि जे, 'सम्प्रति किछु शताब्दी सँ सभ क्षेत्रमे प्रेरणाक प्रवाद पश्चिमसँ पूर्व रहल अछि। प्रगति शब्द भ' गेल अछि पश्चिम गतिक पर्याय। साहित्य एकर अपवाद नहि। किन्तु मिथिलामे परिवर्त्तनक गति सदैव मन्द रहल अछि। तैं मैथिली साहित्यहु मे अन्य भारतीय साहित्यक अपेक्षा बाद मे आधुनिकता आयल। मैथिली साहित्य पर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव ओहि समय बढ़' लागल जखन अंग्रेजक भारत छोड़ब निश्चितप्राय भ' गेल रहय। वर्त्तमान शताब्दीक चारिम दशकमे जखन एहि पंक्तिक लेखक लघुकथा लिख' लगलाह तँ आधुनिकता अनुसंधानमे योरोपीय विशेषत: अंग्रेजी कथा-साहित्यसँ प्रेरित भेलाह। परिणाम 'रेखाचित्र'क लघुकथा सभ जे ओहि समय अंग्रेजी साहित्यसँ अपरिचित पाठक कें नवीन बूझि पड़लनि।'

आधुनिकताक संग ओकर एक पक्ष इहो रहल जे सामाजिक समस्याक अपेक्षा साहित्य मे व्यक्तिक स्वरूप तथा आत्म-बोध के प्रमुख मानल गेल। प्रत्येक वस्तु, विचार तथा संरचना पर व्यक्तिक वैयक्तिकताक

छाप अंकित रहब जरूरी बूझल गेल। फलत: कथा साहित्यमे संश्लिष्ट चरित्रक कथा-नायक आयल। ओकर मानसिक अन्तर्द्वन्द्वक सजीव चित्रण हुअ' लागल। मनोविज्ञान कथाकारकें जीवनक कटु-मधु अनुभव के अभिव्यक्त करबाक लेल प्रेरित केलक। मनुक्ख के यथार्थ रूप मे हाड़-मांस-रुधिर सँ निर्मित चित्र के रूप मे देखल गेल। एहि तरहक कथामे मनक कुंठा, दमित वासना, अतृप्त यौनाकांक्षा तथा हीन ग्रन्थि आदि व्यक्तिक अवचेतन के आधार बनाओल जाइत अछि।

मैथिली कथा लेल 1941-50क दशक बहुत महत्वपूर्ण अछि। एही दशक मे आबि क' मैथिली कथाक प्रवृत्ति मे परिवर्तन आयल। पात्रक मानस लोकक सजीव चित्रण हुअ' लागल। प्रो० उमानाथ झा ओही दशक मे अपन ऐतिहासिक योगदान देब आरम्भ केलनि। हुनका संग हरिमोहन झा, उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास', नगेन्द्र कुमार, योगानन्द झा, मनमोहन झा आदि कथाकार जे संस्कृतक अपेक्षा अंग्रेजी, बंगला ओ हिन्दीसँ बेसी जुड़ल रहथि, सेहो अपन महत्वपूर्ण योगदान द' रहल रहथि। प्रो० झाक जन्म एक जनवरी उन्नैस सय तेइस ई० के आ देहावसान सात दिसम्बर दू हजार नौ ई० के भेलनि। हिनक 'रेखाचित्र' (1951), अतीत (1984) आ किमधिकम् (2006) कथा-संग्रह प्रकाशित अछि। 'अतीत मे तेरह टा कथा अछि। प्रो० झा कथामे रूप तत्व अर्थात् कथा कोना कहल जाय, कथाक शिल्प, भाषा-शैलीक प्रति बहुत सचेत रहथि। ओ प्रभावकारिताक लेल कथाक स्वरूप के जरूरी मानैत रहथि। अतीतक प्राक्कथन मे कहनहु छथि जे, 'प्रभावक तीव्रता (Intensity) लघुकथाक प्रधान लक्ष्य तथा एहि निमित्त आकार कें यथासंभव सीमित राखब वाञ्छनीय। आ प्राय: एही सभ कारणे लघु कथामे घटना एवं चरित्रक संख्या तथा कालक अवधि कम रहैत छैक। कथाक ई आधुनिक रूप पाश्चात्य एहिमे सन्देह नहि।' वस्तुत: अतीतक कथा सभ जे पाठक पर प्रभाव उत्पन्न करैत अछि सैह ओकर विशिष्टता थिक। एहिमे हुनक कथा कहबाक ढंग अर्थात् शिल्पक विशिष्ट योगदान अछि।

अतीतक पहिल कथा थिक 'स्वप्न ओ सत्य'। एहि कथा मे कथा सुनैत श्रोता लोकनि पर ओकर प्रभावक चित्रण अछि। डाक्टर आ हुनक

पत्नीक कथा श्रोता सभ सुनि रहल रहथि। कथा प्रभावोत्पादक रहय। श्रोता सभ डाक्टरक पत्नीक मानसिक अवस्थाक विश्लेषण सुनबामे दत्तचित्त रहथि। श्रोता मे सँ एक प्रमुख व्यक्ति भुटकुन बाबू कें कथाक ओर-छोर नहि बुझा रहल रहनि। ओ पुरनाचालिक 'बेतालपचीसी', 'सिंहासनबतीसी, आ आर अनेक 'खिस्सा' सुनने रहथि। एहि प्रकारक कथा ओ नहि सुनने रहथि। तैं ओ डिप्टी साहेब सँ पुछलनि, 'हओ बुच्चन, तों बुझि रहलक हए!' डिप्टी साहेब के कथा परिचित लगलनि। डाक्टर पत्नीक कथा सुनैत हुनका अपन पहिल पत्नीक स्मृति कष्ट देब शुरू केलकनि। डाक्टरक पत्नी ई बूझि गेल रहथि जे हुनकर पति 'अर्जेन्ट काल' आदिक बहाना सँ दोसर स्त्री लग जाइत छथि। ओ एहि कथा मे अपना के देख' लगैत छथि। हुनकर पहिल पत्नीक मृत्यु भ' गेल रहनि। कथा सुनलाक बाद पहिल पत्नी रोहिणीक स्मृति कष्ट दिअ' लगलनि। कष्टक कारण रहय जे ओहो अपन जीवनक जे अंश गुप्त रखने रहथि से कहीं रोहिणी जनैत त' नहि छली, ई सन्देह उत्पन्न भ' गेलनि। ओ विचलित भ' जाइत छथि। कार्यक्रम मे आन बात सभ होइत रहैत अछि मुदा डिप्टी साहेब चुपचाप ओत' सँ निकलि जाइ छथि। कथाक प्रभाव एहि रूपें पड़ल हुनका पर। एहि कथा मे खिस्सा, गप, गल्प आ कथा शब्दक प्रयोग भेल अछि। वस्तुत: मैथिली कथाक विकासमे एहि तकनीकी शब्द सभक विशेष अर्थ ओ सन्दर्भ अछि।

दोसर कथा 'रहस्य'क कथ्य अछि जे मनुक्खक जीवन के बूझब आसान नहि अछि। जीवनक ओझरी के कोनो सिद्धान्त विशेषक द्वारा सोझराओल नहि जा सकैत अछि। मानव जीवनक प्रसंग कोनो बात निश्चित रूपें कहब कठिन होइत छैक। ई जे कथ्य अछि से स्वत: पूर्वकक कथा सभसँ फराक अछि। पहिने जे कथा होइ छल ओहिमे पात्रक चरित्र वैह होइत रहय जे बाहर मे प्रकट रहय। परन्तु आब पात्रक मोनक गुह्यतम रहस्ये ओकर चरित्र होइ छैक। एहि कथा मे बैजू आ कान्ताक दाम्पत्य जीवनक बात आयल अछि जे बाहर सँ तँ सामान्य लगैत छल मुदा भीतर सँ सामान्य नहि छल। ओ सभ आदर्श पति-पत्नीक अभिनय क' रहल रहथि। भीतरक आगि एतेक बढ़ैत गेल जे अभिनय बेसी दिन नहि चलि सकलनि। वस्तुत: ओ दूनू एक

दोसराक लेल अनुपयुक्त रहथि मुदा आदर्शक पालनक कोशिशमे अपन व्यक्तित्वक हनन क' रहल रहथि। फल भेल जे अन्ततः कान्ता मरि गेली आ बैजू बताह भ' गेला। कान्ता कोना मुइली आ बैजू कोना बताह भेला एहि प्रसंग वास्तविकता बूझब कठिन छल। जे व्यक्ति कथा सुना रहल छथि से बैजूक पुरान मित्र आ कान्ताक अन्तरंग रहथि। ओ पत्रकार छथि आ गल्प सेहो लिखैत छथि। कथावाचक अपना ऊपर लगाओल जा रहल आरोपक उत्तर सेहो दैत छथि। एहि कथाक शिल्प एहन अछि जे कथाक शीर्षक 'रहस्य' अपन छाप छोड़बा मे सफल भ' जाइत अछि।

तेसर कथा 'निकट आ दूर' दाम्पत्य जीवनमे उत्पन्न तनाओक कथा थिक। ई तनाओ एहन अछि जे एक विछान पर रहैतो, शरीरें एतेक निकट रहलो पर मोन सँ दूनू पति-पत्नी त्रिलोक आ शान्ता दूर भ' गेल छथि। पति-पत्नीक बीच तनाओक चित्र अद्‌भुत अछि। कथाक शिल्प, भाषा-शैली एकदम सहज अछि। संवादक बहुलता अछि आ संवाद दूनू व्यक्तिक भीतरक दूरी के प्रकट करैत अछि। एहि कथाक शिल्प पूर्वक दूनू कथासँ एकदम भिन्न अछि। कथावाचक एकदम परोक्षमे रहैत तटस्थ जकां छथि।

चारिम कथा 'जयन्ती' मैथिलीक पूर्वक कथा सभक परम्परामे लिखल नेनेमे विवाहित आ लगले विधवा बनल जयन्तीक कथा थिक। परन्तु एहि कथाक दृष्टि भिन्न अछि। विधवा जीवनमे सुधार सँ बेसी विधवाक मोन के बूझब-गमब अछि। कथामे जयन्तीक वयस्क भेला पर अंग-प्रत्यंगमे होइत परिवर्तनक कवित्वय चित्रण एहिमे भेल अछि। संगहि मिथिलाक संभ्रान्त परिवारमे स्त्री शिक्षा केवल आश्रमी काज धरि सीमित रहबा पर चिन्ता व्यक्त कयल गेल अछि। सामाजिक व्यवस्था पूर्व मे एहन रहल अछि जे अभिभावक लोकनि मानैत रहला जे अक्षर ज्ञान सँ मौगी व्यभिचारिणी भ' जायत। तैं जयन्तीक संसारक परिधि बहुत छोट भ' गेल रहनि। ओ कोल्हुक बड़द जकां चलैत एकदम मशीन भ' गेल रहथि। विधवा भेनाइ हुनक यौवनके दबा देलक। सामाजिक व्यवस्था एक नारीक मोन के कोना मारि दैत अछि से कहबाक छनि कथाकार कें। दुख आ कचोटक संग ओही जीवनसँ आनन्द लेबाक

कोशिश करैत जयन्ती तुलसी चौरा लग सभ दिन दीप लेसैत छथि आ नोर खसैत छनि। कथाक शिल्पक विशेषता ई अछि जे कथाक मार्मिकता पाठकक मोन के आच्छन्न करैत अछि। ई मार्मिकता पूर्वक कथासँ भिन्न अछि।

पाँचम कथा 'रामदानाक लड्डू' देशक स्वतंत्रताक बाद बदलल सामाजिक परिवेशमे सामंती मानसिकताक चरित्रहीन लोकक पराजय के देखबैत अछि। जमीन्दारी व्यवस्था समाप्त भ' गेलाक बादो पूर्व जमीन्दार सभक ग्राम-पंचायत पर प्रभुत्व बनले छल। पूर्व जमीन्दार फुचन बाबू समय के देखैत आब बदलि रहल रहथि। मुदा हुनक बालक सोन बाबूक मानसिकता नहि बदलल छल। ओ गरीब गुरबा स्त्रीक सतीत्वक मूल्य रामदानाक लड्डू सन सस्त बुझैत रहथि। हुनकर मोन निर्धनमाक पत्नी सम्पतिया पर लोभायल रहनि। ओ जोर-जबर्दस्तीसँ कलमबाग मे ओकरा संग बलात्कार करबाक चेष्टा केलनि। सम्पतिया आत्मरक्षा मे असमर्थ होइत जोर सँ चिचिआयल। संयोगवश निर्धनमा ओत' पहुंचि गेल आ सोनू बाबू ओ निर्धनमाक मल्लयुद्ध मे श्वासक अवरोधक कारणे हुनक प्राण छुटि गेलनि। एहि प्रकारें सोनू बाबू कें रामदानाक लड्डूक मूल्य बदलल समयमे महग भ' गेल छैक तकर ज्ञान नहि भ' सकलनि। अपन जान गमौलनि। गरीबक आर्थिक स्थितिमे श्रमसँ अबैत परिवर्त्तन आ अपन सम्मानक प्रति सचेतन हेबाक वास्तविकता सेहो एहि कथा सँ समक्ष अबैत अछि। कथाक संरचना मे एक स्थैर्य अछि जे बिना कोनो विशेष कोलाहल के अपन कथ्यके सम्पूर्ण कथामे कायम रखने अछि।

छठम कथा 'इतिवृत्त' एक व्यक्तिक बीतल जीवनक घटना सभक वृत्तान्त थिक। अपर दण्डाधिकारी रिपुदमन चौधरी स्टेशन पर ट्रेनक प्रतीक्षामे भरि रातुक जागरण के सार्थक बनेबाक लेल परिचित व्यक्तिके अपन कथा सुनबैत छथि। बाद मे ओ व्यक्ति ओहि 'ड्रामाटिक मोनोलॉग' के लिपिबद्ध करैत छथि। आरम्भमे लगैत छैक जे कोनो एक मध्यवर्गीय संभ्रान्त व्यक्ति अपन जीवनक कथा कहि रहल अछि मुदा अन्त मे पता चलैत छैक जे, जकरा कथा कहि रहल छला से व्यक्ति हुनक जीवन गाथा के कल्पना द्वारा पूर्ण कयलनि अछि। एहि कथामे घटनाके खाली ओछा क' राखि

नहि देल गेल अछि, एहिमे ओहि डिप्टी साहेबक मनोभाव सेहो प्रकट होइत चलैत अछि, तैं ई हुनक आत्माभिव्यक्तिक कथा बनि जाइत अछि। एहिमे डिप्टी साहेबक जीवनक लक्ष्य, सफलता-असफलता, संतुष्टि आदिक गप्प त' अछिए, एहिमे महत्वपूर्ण अछि हुनक पत्नी कमलाक कथा अर्थात मिथिलाक संभ्रान्त समाजक कन्याक कथा। कमला ओहि समाजक कन्या छथि जे वातावरणमे परिवर्त्तनक बावजूद आनक कोन कथा पतियोसँ बेसी वार्त्तालाप करब उचित नहि बुझैत छथि, बेसीकाल मौने रहब हुनका श्रेयस्कर लगैत छनि। एही कारण पति के मोन मे ई विचार आबि जाइत छनि जे कमला के सोचबाक शक्ति नहि छनि। एहि कारण पतिक व्यवहार सेहो तदनुरूपे भ' जाइ छनि, किएक त' कमला की सोचती अथवा कमला की कहती, ताहिसँ ओ निश्चिन्त छथि। एम्हर डिप्टी साहेब सेहो जीवन मे कने स्वच्छन्द होयबाक, कने ककरोसँ प्रेम करबाक अभिलाषा के दमन करैत रहला। ओहो अपन जाति, कुल पदोचित मर्यादा के बिसरि नहि सकला। एहि प्रकारें ई कथा एक संभ्रान्त मध्यमवर्गीय व्यक्तिक जीवनमे बहुतो अभिलाषा पूर्ण नहि हेबाक, सुन्दर पत्नीक यथासम्भव मौने रहि जीवन गुदस्त करबाक, कोनो उथल-पुथल, कोनो रोमानियत, कोनो सरसता नहि हेबाक-रहबाक कचोट के अभिव्यक्त करैत अछि। वस्तुतः एहन कचोट जे बेरस, रंगहीन-गन्धहीन, संघर्षहीन जीवनक कोखिसँ उत्पन्न भेल अछि। जीवनके जीवन्त रहबाक लेल समय-समय पर ओहिमे परिवर्त्तन जरूरी होइत छैक। कथाक विशेषता ई अछि जे पाठक एहि आत्मकथासँ अपनो आत्मसाक्षात्कार करैत चलैत अछि।

सातम कथा 'जीवन-संघर्ष'क कथ्य अछि जे जीवित रहबाक लेल लगाओ, आकर्षण, अनुराग, प्रेम जरूरी अछि। जीबाक लेल संघर्ष मे वैह विजयी भ' सकैत अछि जे अनका लेल वा अपनहु लेल जीवित रह' चाहत। पहाड़क सेनाटोरियममे स्वास्थ्य-लाभ लेल संघर्षरत सुधाकर मिश्र नामक व्यक्तिक जीवनमे उदासी अछि। हुनका वर्त्तमान आ भविष्य एकसमान अर्थहीन लगनि। ओ एहि उदासीक कारण स्वस्थ नहि भ' रहल छला। स्वास्थ्य लेल रोगी के अपनहु प्रयत्न करब जरूरी होइत छैक। मनीषी डाक्टर ग्वेत्स रोगीक एहन मानसिकतासँ चिन्तित रहथि।

हुनका ई बूझल भेलनि जे सुधाकर कें अतीतक प्रति मोह बांकी छनि। हुनक गुप्त इतिहासमे सभसँ मुख्य स्थान कोनो नारीक छनि। मिस ब्राउन नामक नर्सक माध्यम सँ रोगीक वर्त्तमान रिक्तताक पूर्त्तिक प्रयासमे ओ डाक्टर लागल रहथि। अस्पतालमे 'बेड नं॰ थ्री'क रोगी बनि गेल सुधाकर कें लुसी ब्राउनक पृथक अस्तित्व अस्पष्ट रूपें बोध हुअ' लगलनि। नर्स लुसी ब्राउन रोगी सुधाकर कें स्वस्थ करबाक हेतु प्रेमिका जकां अभिनय कर' लगली। परिणाम ई भेल जे सुधाकर एकरा अभिनय नहि बूझि वास्तविक बूझ' लगला। ओ पहिनहुँ अर्चना नामक युवती सँ प्रेम केने रहथि, स्वप्न सनक दिन बीतल रहनि। तैं हुनका आब जीवित रहबाक इच्छा जाग्रत भ' गेलनि। डाक्टर ग्वेत्स अथवा नर्स लुसी ब्राउन के अभिनयक परिणामक ध्यान नहि रहलनि। प्रेम त' एहन वस्तु नहि थिक जकरा जखन चाही रोकि दी। सुधाकर लुसीक प्रेमके वास्तविक बूझि वस्तुतः फेर सँ भ्रममे पड़ला। मुदा तत्काल ई भ्रमो हुनका स्वास्थ्य-लाभ लेल सहायक भेलनि। जीवन लेल कखनो भ्रममे रहब सेहो सहायक होइत छैक।

आठम कथा 'बहुत छोट गप्प' एहन गप्प थिक जे अछि त' पैघ मुदा ओकरा छोट बुझल जाइत रहलैक अछि। ई गप्प छैक स्त्रीक सर्वंसहा रूपक। ओ एक दिस पत्नी अछि त' दोसर दिस माय। दूनू दिस तिराइत-घिंचाइत ओ कखनो एहन जीवनसँ थाकल अनुभव सेहो करैत अछि। भले ही एहि अनुभूतिक क्षण छोट हो! कथामे पहाड़ी स्थानपर झील लग टूरिस्ट रूपमे भ्रमण करैत कथावाचक कें कानमे एक स्त्रीक शब्द पड़ैत छनि, 'ऐ जिनगीसँ त' मरबे नीक'। ओ देखैत छथि जे कारी, जीर्ण घघरा, भाटाक रंगक ओढ़नी, अज्ञात रंगक मैल चोली पहिरने बीस-एकैस वर्षक एक स्त्रीकें पहाड़ी पैजामा, हवाइ कमीज पहिरने चारि-पाँच बरखक एक बालक हाथ पकड़ि कतहु ल' जयबाक कोशिश क' रहल छल। ओकर माय विपरीत दिशामे जेबाक कोशिश करैत रहय। ओ स्त्री इच्छाशक्तिक अभावक कारणे बालक सँ पराजित भ' बजैत अछि, 'ऐ सँ त' मरबे नीक'। एहि देखल दृश्यक आधार पर कथावाचक कल्पना करैत छथि जे स्त्री कें पति एक दिस त' बेटा दोसर दिस खीचि रहल छैक। एक दिस शरीर अक्षम रहनहुं स्वामीक दैनिक कार्य मे सहायता करबाक इच्छा छैक त'

दोसर दिस घर मे प्राय: किछु नहि रहनहुँ बालकक भोजनक प्रबन्ध करबाक छैक। ई सभ बात अपन मोन मे सोचैत कथावाचक पर्यटक सभक समृद्धि ओ स्त्रीक परिवारक अभाव देखि क' द्रवित होइत छथि। अपन विदेशी परिधान उतारि क' तखनहि फेकबाक इच्छा होइत छनि। ई कथा वाह्‌य रूपमे बहुत थोड़ घटित होइत अछि, जे किछु घटल अछि से मोनमे, मोनक भीतर मे।

नवम कथा 'सबरङ पटिया' गपक चटकारक समानान्तर यथार्थ घटनाक प्रभाव आ मार्मिकताके स्थापित करैत अछि। करुणा एहि कथाक मूल बिन्दु आ प्रश्न सेहो अछि। हँसी-खुशीक वातावरणमे कोनो घटित घटना कोना एक एहन प्रश्न ठाढ़ क' दैत अछि जकर उत्तर सहज नहि छैक। घटना लेल के उत्तरदायी तकर निश्चय करब कठिन छैक। सभक विचार एहि प्रसंग भिन्न-भिन्न भ' सकैत छैक। गप कहनिहार एक प्रोफेसर छथि। परीक्षा-ऋतु मे पैरवीकार सभसँ अकच्छ रहैत छथि। पैरवीकार के शरद ऋतुक खंजन चिड़ै बुझै छथि। एहनामे एक बेर कोनो विधवा स्त्री अपन बेटीक विवाह ठीक भेलाक बाद, ओकर परीक्षा मे लिखल कॉपी मे बेसी अंक देबाक अनुरोध करैत छनि। ओहि स्त्रीक अनुसार ओ प्रोफेसर ओकर पतिक सहपाठी रहल छथि। बेटीक उत्तीर्ण नहि भेलासँ ओकर विवाह टूटि जेतैक। प्रोफेसर साहेब ओकर गप के फूसि बूझि पैरवी पर कोनो ध्यान नहि दैत छथि। फलत: ओ फेल क' जाइत अछि। विवाह टूटि जाइ छैक। ओ स्त्री अपन बेटीक विदागरी लेल कीनल सबरङ पटिया एक पुर्जीक संग हुनका पठा दैत छनि। पुर्जी मे लिखल रहैक जे, उर्मिलाक बिदागरी लेल ई सबरङ पटिया किनने रही, से एकर आब हमरा कहियो काज नहि पड़त तैं अहींके पठा रहल छी। ओ पटिया भिड़िया क' प्रोफेसर साहेबक घरक एक कोन मे राखल रहैए। पटिया के ओहि कोन सँ हटा क' हुनका ने ओछाओल होइत छनि आ ने फेकल होइत छनि।

दसम कथा 'दाम्पत्य' मे बाहरसँ आदर्श देखाइ दैत पति-पत्नीक घटनाहीन जीवन पर व्यंगात्मक टिप्पणी अछि। दाम्पत्य जीवन मे एकरसताक वर्फ के, ठंढ़ापन के आपसी स्नेह-अनुराग, परिवर्त्तनशीलताक उष्मासँ पघिलायब जरूरी होइत छैक। ई ठंढ़ापन दिमागसँ देह धरि

असरि करैत छैक। भौतिक रूपसँ सुखी-सम्पन्न, आधुनिक स्त्री-पुरुषक दाम्पत्य कोना जीवनशैली आ रुचि भिन्नताक कारणे आत्मीयता आ अनुरागसँ सुन्न भ' जाइत अछि, तकर कथा थिक दाम्पत्य। पति शैलेन्द्रक युरोपीय जीवनक अन्धानुकरण पत्नी सविताके पसिन्न नहि छलनि। सविता अपन एकरस जीवनक तिक्तताके संगीत सुनि हटयबाक प्रयास करथि। पति घर सँ बेसीकाल बाहरे रहथिन। घर मे सेहो सभ काज रूटीन सँ होइक। नियमक राज रहैक। दू प्राणीक एहि संसार मे कोनो ज्वार-भाटा नहि। सभ्यता आ संस्कृति सँ सकपंज जीवन। वस्तुत: दूनूक समय कहुना कटैत रहनि। आधुनिक जीवनशैलीमे यांत्रिकता आबि जायब आ प्रेम-अनुरागक अभाव भ' जयबाक चित्रण क' कथामे आधुनिक व्यक्ति-मानवक त्रासदी के अभिव्यक्त कयल गेल अछि।

एगारहम कथा 'गाम घरक गप्प' गाम-घरक लोकमे अबैत मानसिक परिवर्त्तनक कथा कहैत अछि। संगहि दहेजक दुष्परिणाम सेहो कथामे आयल अछि। फेकू बाबूक बेटी पूर्णिमा जखन एगारहम वर्ग मे पढ़ैत रहथि तखन हुनक विवाह भ' जाइत अछि। फेकू बाबू प्रतिष्ठित लोक रहथि। गाममे सभसँ पहिने वैह बी०ए० पास केने छला। हाइ स्कूलक शिक्षक रहथि। मनोरथ रहनि जे जतेक धरि भ' सकय पूर्णिमा के पढ़ाबी। मुदा सर-सम्बन्धी, गौंआ-घरुआक दबाब मे विवाह करब' पड़लनि। ससुर श्रीकान्त बाबूक फरमाइश हनुमानजीक नाङरि जकाँ बढ़ैत गेलनि। फटफटियाक मांग भेला पर ओ ओकर पूर्त्ति नहि क' सकला। फलत: पूर्णिमा के सासु-ससुरक अवहेलना, अपमानक संग पतियोक प्रताड़ना सह' पड़लनि। पति बाजब-भूकब बन्द क' देलथिन। श्रीकान्त बाबू बेटाक दोसर विवाहक योजना बनब' लगला। एक वर्ष सासुर बसलाक बाद पूर्णिमा भरि जन्मक लेल नैहर आबि गेली। फेकू बाबू एहि चोट के सहन नहि क' सकलाक कारणें अधबताह भ' मरि गेला। पूर्णिमा हेडमास्टरक सहयोगसँ मैट्रिक पास क' ट्रेनिंग ल' क' वकील साहेबक कृपासँ कन्या पाठशाला मे शिक्षिका भ' गेली। कथाक आरम्भ मुखियाजी द्वारा चतुर्भुज ठाकुर प्रसिद्ध वकील साहेब सँ पूछल गेल एहि प्रश्न सँ होइत अछि, 'हओ चतुर्भुज, ई नब चिड़ै केना फसओलह'। अन्त मे वकील साहेब द्वारा सभ बात कहला पर मुखियाजी लज्जित होइत छथि। संगहि ईहो

बुझैत छथि जे पूर्णिमाक पति बुच्चन बाबूक दोसर विवाह मध्य प्रदेशक एक धनीक व्यक्तिक ओहिठाम हुनका कुमार बूझि होइत अछि। ओ ओहीठाम घरजमैया भ' गेल छथि। चारि वर्षसँ गाम नहि अयला अछि। एहि प्रकारें दहेजक लोभमे पड़ल व्यक्ति श्रीकान्त बाबू के अन्तत: बेटासँ हाथ धोअ' पड़ैत छनि आ पूर्णिमा लोकक सहयोगसँ शिक्षित भ' अर्थ उपार्जन करैत परिवारक पालन कर' लगैत अछि।

बारहम कथा 'प्रायश्चित', फूसि आ काल्पनिक गप सुनेबाक हिस्सक पर चोट करैत अछि। एहन हिस्सक बहुतो लोकके रहैत छनि मुदा एकर दुष्परिणाम सेहो भ' सकैत अछि। एहि हिस्सकक मार्मिक परिणाम ककरो जीवनक अन्त सेहो भ' सकै अछि। कथामे राम बाबू आशुकथाकार छथि। लोक कहनि जे रामबाबू गप्पक खेती करैत छथि। गप्प हंकैत छथि। फँचारि आ फुसियाह छथि। रामबाबू अपन मित्रमण्डलीक मनोरंजनार्थ खीसा कहैत छला, अपन कलाक प्रचार हुनक उद्देश्य नहि छलनि। एही खीसा सुनेबाक हिस्सकक बीच एकटा दुखद घटना भ' गेल। एक युवक-युवती एहि कारणे आत्महत्या क' लेलक। ओहि मृत्यु आ खिस्सा सुनेबामे कोनो सम्बन्ध नहि छल मुदा ओ युवक-युवती खीसा सुनि रहल छल अवश्य। राम बाबूक मोनमे ई बात बैसि गेलनि जे ओहि युवक-युवतीक आमहत्याक कारण हुनक खीसा सुनायब अछि। ओ नैनीतालक एक होटलमे अंग्रेजीक कवि बाइरन आ हुनक कठबहिनिक प्रेमक तर्ज पर अवैध प्रेमक गप्प सुनबैत रहथि। सामनेक टेबुल पर एक युवक-युवती छल। हिनक गप्प सुनि युवतीक चेहरा विवर्ण भ' गेल छलैक। युवको पर एकर असरि पड़ल अछि से ओ अनुभव केलनि। राम बाबू एहि बात के अपन मोन सँ नहि हटा सकला। ओ अपने के एकर कारण मानि प्रायश्चितस्वरूप भविष्यमे कोनो खीसा नहि कहबाक प्रण ल' लेलनि।

तेरहम कथा 'अतीत' वर्त्तमानमे अतीतक छाया नहि बिसरि पयबाक, स्मृतिमे बनल रहबाक, मोनसँ नहि हटा पयबाक यथार्थ के प्रकट करैत अछि। जेकरासँ लोक प्रेम करैत अछि, ओकर देहावसानक बादो ओकर स्मृति के मोनसँ नहि हटा पबैत अछि। समय परिवर्तनशील अछि। ओ एकठाम ठहरि नहि सकैत अछि। मुदा मोन एहि बातके स्वीकार नहि

क' पबैए। छायालोकमे अपन छायाक शरीरे विद्यमान नहि रहलो पर अनुभव करैत अछि जे छाया सशरीर विद्यमान छथि। जीवनक रिक्तता के भरबाक लेल छायाक उपस्थिति, सानिध्य मधुर लगैत छैक। एहि कथा मे कथात्मकताक अभाव अछि। भाषा दार्शनिक अंदाजमे कविताक निकट अछि। शब्दक चयन सेहो सतर्कतापूर्वक ताही अनुरूप भेल अछि।

'अतीत' कथा-संग्रहक कथा सभ मे कथा कहबाक ढंगक अर्थात् शिल्पक विभिन्न प्रयोग भेल अछि। घटना सभ बाहरसँ बेसी व्यक्ति-मानवक मोनमे घटित होइत अछि। वस्तुत: मोन बहुत शक्तिशाली होइत अछि। मोनक प्रभाव व्यक्तिक बाह्य जीवन पर पड़ैत रहैत छैक। प्रो॰ झाक कथा कहबाक कलामे मनोविश्लेषणक बहुत महत्व अछि। स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध, दाम्पत्य जीवनक विसंगति, असहजता, तनाओ आदि माध्यमसँ जीवन जीबाक कलाक प्रति कथा सभ साकांक्ष करैत अछि। वस्तुत: ई संसार मात्र सौन्दर्यक संसार नहि थिक आ जीवन जीबाक कला लेल कोनो वस्तु निम्न, छोट आ अस्वच्छ नहि होइत अछि। मैथिली कथाक विकासमे प्रो॰ उमानाथ झाक कथा-कला आ व्यक्ति-मानवक मनोलोकक चित्रणक अपन खास महत्व अछि। एहि तरहक प्रयोग बाद मे एक प्रवृत्तिक रूपमे जन्म लेलक। बादक कथा सभमे मनोगत व्यापारक माध्यमसँ जीवनक नव-नव यथार्थ समक्ष आयल। राजकमल चौधरी सँ ल' क' राज मोहन झा आ प्रो॰ मनमोहन झाक कथा सभमे एहि प्रवृत्तिक व्यापक प्रभाव देखल जा सकैत अछि।

(साहित्यरथी, 2021 ई॰)



राज मोहन झाक आइ काल्हि परसू

आधुनिक मैथिली कथामे देशक स्वतंत्रताके बाद जाहि सभ कथाकारक व्यापक योगदान मानल जाइत अछि, ओहिमे सातम दशकक कथाकार राज मोहन झा सेहो छथि। छठम दशकमे ललित, सोमदेव, धीरेन्द्र, राजकमल, मायानन्द मिश्र बलराम, रामदेव झा, लिली रे आ हंसराजक बाद जे कथाकार लोकनि अगिला दशकमे अपन कथासँ मैथिली कथाके भारतीय अन्य भाषा-साहित्यक समकालीन कथाक समकक्ष अनबामे अपन महत्वपूर्ण योगदान केलनि ओहिमे राज मोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, जीवकान्त, गंगेश गुंजन अन्यतम छथि। राज मोहन झाक महत्ता एहि रूपें अछि जे ओ अपन कथा सभ मे नागरिक जीवनक विडम्बना, यथार्थ कें अपन खास शैली ओ भाषामे अभिव्यक्त केलनि। शहरी मध्यम-वर्गक कायरता, अकर्मकता, अपनापनके अभाव, निरस-जीवन, डर-भय, प्रदर्शन प्रियता पर ओ कथा मे तीक्ष्ण व्यंग केलनि। कथा मे नव-नव प्रयोग ओ विशिष्ट शिल्प-शैली हुनक खास परिचित रहलनि।

राज मोहन झाक जन्म प्रसिद्ध साहित्यकार हरिमोहन झाक पहिल सुपुत्रक रूप मे 27 अगस्त 1934 के भेलनि आ देहावसान 7 जनवरी 2016 ई॰ कें। हुनकर छ: टा कथा-संग्रह प्रकाशित अछि। आइ काल्हि परसू कथा-संग्रहक प्रकाशन 1993 ई॰ मे भेल। एहि पोथी पर वर्ष 1996 मे हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि।आइ काल्हि परसू मे बीसटा कथा अछि। आदंक, पलायन, दुर्घटना, भोजन, नेतागिरी, अन्नपूर्णा, पार्टनर, सुख, घर, वस्तुत:, छुट्टीक दिन, अन्तत:, शब्द, कोनो रस्ता नहि, साँप छुछुन्नरि, हिसाब-किताब, अघटना, खोज, चिन्ता आ बुधियारी। आइ काल्हि परसू सँ पूर्व हिनक एक आदि : एक अन्त

(1965), झूठ-साँच (1972), एकटा तेसर (1984) आ बाद मे अनुलग्न (1996) आ अभियुक्त निष्कासन विस्थापित इत्यादि इत्यादि (2003) कथा-संग्रह प्रकाशित छनि। हिनक आलोचनात्मक निबन्धक चारिटा पोथी सेहो प्रकाशित अछि। गल्तीनामा(1983), टिप्पणीत्यादि (1992), भनहि विद्यापति (1992) आ प्रसंगत: (2001) राज मोहन झा अपन कथा-यात्रा ओहि समयमे शुरू केलनि जखन गामक संयुक्त परिवार सँ शहरक एकल परिवार दिस गमन शुरू भेल। गाममे रहैत पिता आ अन्य सर-सम्बंधिक मोन पड़ैत रहलै, स्मृतिके छेकने रहलै मुदा शहर मे पति-पत्नी ओ परिवारक संग जीवन-यापनमे सीमित आमदनी आ बढ़ैत खर्चाक कारण दूनूक बीच दूरी बढ़ैत गेलैक। आब अप्पन लोक अपन लोक नहि रहलै। बदलैत सामाजिक-आर्थिक स्थितिमे नोकरी-चाकरी आ पूंजीवादी समयक दबाबमे फंसल व्यक्ति ई अनुभव कर' लागल जे आत्मीयता, ममत्व घटि रहलैए। कतहु किछु रिक्त भ' रहलैए। ई रिक्तता-बोध ओकरा बेचैन त' कर' लगलै मुदा एहि सँ बाहर निकलबाक कोनो रस्ता नहि सूझि रहल छलैक। मध्यमवर्गक एहि बेचैनी, परिस्थितिक आगू विवश भेल व्यक्ति, ओकर दुर्बस्था, त्रासदी सम्बन्धके बचेबाक कशमकश, जीवन के चिहुंटि क' पकड़बाक प्राण-प्रण चेष्टा, छूटैत के पकड़बाक अपना भरि कोशिश, गाम आ घरक बीच ठाढ़ परिस्थितिमे सामंजस्यक खोज संग राज मोहन झा अपन कथा-यात्रा शुरू केलनि। मध्यमवर्ग मे ओना छोट व्यापारी, वेतनभोगी, स्व-रोजगारी, छोट कृषक, बाबू वर्गीय श्रमिक, सरकारी नोकरिहारा आदि अबैत अछि मुदा राज मोहन झा अपन कथा-यात्रा मे वेतनभोगी, नोकरिहारा मध्यमवर्गक कथा बेसी कहलनि अछि। शहरमे रहैत नोकरिहाराक आर्थिक अभाव आ अपन परिचित लेल औनाइत मोनक संग राज मोहन झाक कथामे दाम्पत्य जीवनक तनाओ दृष्टिगोचर होइत अछि। दाम्पत्य जीवनक ई कथा सभ खाली स्त्री-पुरुषक बीचक सम्बन्धक कथा नहि छी। ओ दू टा मनुक्ख, दू टा पृथक व्यक्ति सभक एक छत के नीचा जीवन जीबाक, प्रेम-अप्रेम, स्नेह-घृणा, द्वन्द्व आ मिलाप, अहं के टकराओ, संघर्ष आ संस्पर्शक कथा सेहो थिक। राज मोहन झाक कथामे मनोविश्लेषण एक प्रमुख तत्वक रूपमे रहल अछि। मानसिक ताना-बाना के कथाक आधार बनायब हिनक पहिल विशेषता

मानल जाइत अछि। मनमे घटैत घटनाकें कथा बना देबामे ई अत्यन्त पटु छथि। आइ काल्हि परसू कथा-संग्रहमे एक कथा अछि 'दुर्घटना'। ओहि कथामे स्कूटर पर जाइत पति-पत्नी दुर्घटनाग्रस्त होइत अछि। पत्नी के बेसी चोट लगैत छैक। दुर्घटनाक बाद पतिक मोनमे चलैत एहि घटनाक प्रभाव-विश्लेषण कथाक मूलाधार थिक। अन्ततः पति के होइत छैक जे ओ सभ बचि गेल। ओकरा संतोष भेलैक। मुदा जखन पत्नी कहैत छैक जे, 'सप्पत खाइ छी जे आइ दिनसँ फेर हम अहाँ संग स्कूटर पर बैसी।' पति के तखन लगलै जे ओकर ई सोचब जे दुर्घटनासँ बाँचि गेल रहय ओ सभ, गलत रहै। दुर्घटना ठीके भ' गेल रहै।

मानसिक द्वन्द्व आ मनोविश्लेषण पद्धतिक एक अपूर्व कथा अछि 'घर'। कोना क' 'घर' पहुंचब तकर चिन्ता सौंसे कथामे व्याप्त छैक। अद्भुत शिल्पमे लिखल कथा एहन अछि जे पाठक सेहो कथानायक सँ जुड़ि, ओकरे जकाँ घर पहुँचबाक लेल व्याकुल भ' जाइत अछि। 'घर' जेना पाठकक मोनमे आसमर्द कर' लगैत छैक। घर पहुँचबाक चिन्ता जेना जीवन आ मृत्युक द्वन्द्व सन बनि जाइत छैक। अन्ततः जखन कथानायक घर पहुँचि जाइत अछि त' पाठको साँस लैत अछि। निचेन होइत अछि।

'हम अपन घरक दरबज्जा पर पहुँचि जाइ छी। भरोस नहि छल। अन्दाजसँ गोदरेजक तालामे चाभी घोसिआब' लगै छी। किछु समय लगैत अछि आ हमर बेचैनी बढ़ि जाइत अछि ता खटसँ दरबज्जा खुलि जाइत अछि आ हम किछु नहि देखैत-सुनै छी, भीतर ढुकि जाइ छी। भीतर ढुकि जाइ छी आ ठेलिक' अपना पाछाँ दरबज्जा बन्द क' लैत छी। दरबज्जा बन्द क' लैत छी आ ठामहि आँगनमे पसरि जाइ छी। पसरि जाइ छी आ सोचैत छी जे आब जँ मरियो जाइ, तँ कोनो हर्ज नहि।' 'अन्ततः' कथामे, कथा पढ़ैत घोसी लॉजक कमरामे लाइट अकस्मात् चल गेलाक बाद मोनमे चलैत कथाक पात्र दमन चक्रवर्तीक क्रिया पर सोचैत आ अन्हार भेलासँ भेल पराभव सभक एहन रोचक वर्णन अछि जे दृश्य पर दृश्य आँखिमे खचित होइत चल जाइत अछि। राज मोहन झा बातक बातमे आ बाते-बातमे कथा बुनि लेबाक सामर्थसँ लैस कथाकार रहथि। एहि कथामे कथानायकक मानस आ अन्हार कोठलीमे फेरसँ इजोत करबाक लेल व्योंत करबाक कोशिश, एही दू सामानान्तर चलैत

घटनासँ कथा बनि जाइत अछि। एहि बीचमे लाइट नहि अबैत छैक। ओ अन्हारमे अपनाके आ मोनमे आयल बात सभके जखन चौकी पर पड़ल बिसर' लगैत अछि कि लाइट भक्कसँ चल अबैत छैक। ओकरा होइत छैक जे ओ एहि लेल कनेको प्रस्तुत नहि छल। लाइट अयलाक बाद ओकरा मोन पड़ैत छैक जे दमन चक्रवर्ती ओकरा लेल प्रतीक्षा क' रहल छलै। राज मोहन झाक ई विशेषता रहलनि जे हुनक कथा-शिल्पक कारण पाठक हुनक कथानायक वा कथावाचक संग अपनाकें एकाकार बूझ' लगैत अछि।

हुनकर 'भोजन' कथामे बदलैत समय ओ संवेदनाक संग कामकाजी पति-पत्नीक मशीनी दिनचर्याक आ भोजन सन काज के एक यांत्रिक प्रक्रियामे बदलि जेबाक बात कहल गेल अछि। तीन पीढ़ीमे भोजनक सुख-आनन्द कोना बदलैत गेल अछि से ई कथा सहज भावें व्यक्त क' जाइत अछि। पहिने जे भोजन एकटा रुचिकर ओ आकर्षक वस्तु होइत छल से आब जेना ओहिमे कोनो लसि, नहि रहि गेल छैक। मनुक्ख जेना एक मशीनमे परिवर्तित भेल जा रहल अछि आ जीवनसँ रस बिला रहल छैक। तहिना सुख तकैत दम्पति, सुख के चीन्हि लेलाक बादो ओकरा पकड़ि क' नहि राखि पबैए, एहि यथार्थ के 'सुख' कथामे अभिव्यक्त कयल गेल अछि। दाम्पत्य जीवनमे हँसी-खुशी रहैत पति-पत्नी कोना दोसरा के सीदित करबाक लेल अपनो कष्ट सह' लगैत अछि आ एहिसँ सुख कोना बिलाइत चल जाइत छैक तकर खोज एहि कथाक उद्देश्य अछि। राज मोहन झा दाम्पत्य जीवनक कथा सभमे छोट-छोट बात, छोट-छोट घटना सभके संयोजित क' जीवनसँ जीवन-रस के सूखि जेबाक अनुभूतिके लगातार अभिव्यक्त करैत छथि। एही संग ओ अर्थक पाछू भागल जाइत मनुक्खक स्वभावमे होइत परिवर्त्तन के सेहो लक्ष्य करैत छथि। व्यवस्थाक दबाब मे पड़ल मनुक्ख कोना अन्यमनस्क ओ उदासीन बनि अपन स्वाभाविक गतिविधिसँ विरत होइत चल जाइत अछि ओहि मनोविज्ञान के 'खोज' कथामे पकड़बाक आ उपस्थित करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। राज मोहन झाक कथा सभ पढ़ैत पाठक कें सदिखन अपना भीतर तकबाक आवश्यकता महसूस होइत रहैत छैक। ओ जेना अपन पात्र सभक मोनमे पैसि ओकर उहा-पोह, ओकर मनःस्थिति कें तीक्ष्ण रोशनीसँ आलोकित

करैत छथि तहिना पाठक कें एही संग आत्मसाक्षात्कार लेल सेहो उत्प्रेरित करैत छथि। आइ-काल्हि लोक गरीब सभक पक्षधर हेबाक आ सर्वहारा वर्गक प्रति आत्मीयता प्रदर्शित करैत कोना छोट-छोट फायदा लेल ओकर शोषण क' लैत अछि से कथा 'बुधियारी' मे कहल गेल अछि। साहित्य पर संस्कृति पर जनसरोकारक गप करैत बुधियार लोक सभ, वस्तुतः बुद्धिजीवी सभ, श्रमजीवीके मोलम्मा द' कय ओकर निश्छल मोनके कने सहला क' ओकरा ठकि लेब के एकदम स्वाभाविक रूपमे लैत अछि। कोनो प्रकारक अपराध-बोध वा नैतिकताक प्रश्न जेना एहि वर्गक लोक लेल बेमानी भ' गेल छैक।

राज मोहन झा अपन कथा मे फूट सँ कोनो स्वप्न, सदिच्छा नहि मिलबै छथि। संसार मे, जे जेना अछि तकरा अपन विशिष्ट शैलीमे कुशल कारीगर जेना उभरि क' राखि दैत छथि। अपना दिससँ ओहिमे किछु ने जोड़ैत छथि। तेकर ई अर्थ नहि जे ओ अपन कथामे स्थितिके ओछा क' राखि दैत छथि, स्थितिक भीतर जे सम्भावना नुकाएल रहैत छै, तकरो अभिव्यक्त करैत चलैत छथि। हुनकर एकटा कथा अछि 'पार्टनर'। ताशक पार्टनर सभ बैसिक' ताश खेला रहल छथि। आपसमे हंसी-मजाक, मनोरंजन चलि रहल अछि। एहीमे ताशक एक पार्टनर जे वर्त्तमानमे अस्पताल सँ डेरा पर आबि गेल छथि। हुनका हार्ट-अटैक भेल छलनि। ताश खेलाइत हुनके सम्बन्धमे गप भ' रहल अछि। मिसेज श्रीवास्तव अपन पत्ती सरियबैत टेबुल पर बात फेकलनि - 'अहाँ सभ भवेश जीकें देख' नईं गेलियनि? सुनलहुँ जे अस्पतालसँ आबि गेलाहे।'

'अरे हँ, कते दिनसँ ने सोचै छी जे....' पाठकजी अपन ताश उठबैत बजलाह - 'असलमे ऑफिससँ घुरती मे अस्पताल मे सभ दिन देखि लैत रहियनि, आब डेरा पर... आब ठीक भ' गेला।'

'हँ, आब नहि कोनो, जीबि गेलाह।' चटर्जी बाजल।

'आह, हार्ट-अटैक सँ उबरि जायब कमक भाग्यक बात नहि होइ छै।' पाठकजी कहलथिन।

'बाप रे, हमरा तँ सोचिए क'... मिसेज श्रीवास्तव ठीके डरें काँपि उठलीह।

'लेकिन हमरा सभकें चलक चाही कहियो। असलमे तते नहि दूर

भ' जाइ छैक मोराबादी...' हम कहलियनि।

'हमहूँ नहि जा सकलहुँए एम्हर कतेक दिन सँ चटर्जी बाजल।

मिसेज श्रीवास्तव कहलथिन, 'अहाँके तँ और जयबाक चाही, फेवरिट छलाह अहाँक। एह, हुनकर ठहक्का मोन पड़ैए तँ ओहिना आँखिक सोझाँ आबि जाइत छथि। असक्क भेल पड़ल हेताह एखन, नई? मिसेज श्रीवास्तव भावुक भ' रहल छली।' सभ पार्टनर एहिना ताश खेलाइत भावुक होइत भवेशजी कें देखि अयबाक गप करैत रहल। आइये देखि अयबाक सेहो गप भेल मुदा फेर से कोनो आन दिन लेल टारि देल गेल। ताश चलैत रहल। आन सभ गप होइत रहल। कविता भेल आ कविता पर कटुक्ति कयल गेल। चाय-पान-सिकरेट दोहराओल जाइत रहलैक। बेस राति क' सिटिंग बर्खास्त भेल। रस्तामे एक दोसरा सँ फुटकैत काल फेर सभ के भवेशजी मोन पड़लथिन। अगिला दिन लेल कार्यक्रम पक्का कयल गेल एहि बातक संशय के संग जे काल्हियो फेर ई बात एही समयमे ने मोन पड़य। त' सैह पार्टनर सभक, दोस-महिमक मनोगत यथार्थ छी जे अपन पार्टनर के देखबाक लेल जेबाक बात टालैत रहैए। ई जे क्षरण होइत समाज अछि, ओहिमे एहिना संवेदनशीलता जँ मध्यवर्ग मे घटैत जायत त' ओ समाज केवल आकारे सँ मनुक्ख सभक रहि जायत। हिनकर 'पलायन', 'नेतागिरी', 'वस्तुतः', 'आदंक' कथामे समाज-व्यवस्थामे आपराधिक मनोवृत्तिक बढ़ैत चल जायब, व्यवस्था तर पिसाइत लोकक टूटैत चल जायब, सरकारी व्यवस्थामे गैर जिम्मेदारी आ भ्रष्ट आचरण एक सहज स्वभाव बनैत जायब के स्वर देल गेल अछि। एहि तरहक व्यवस्था मे एक सामान्य लोकक पराभव, डर आ प्राण-प्रणसँ अपन संवेदनशीलता के बचेबाक कोशिश के अभिव्यक्ति भेटल अछि कथा सभमे। 'आदंक' कथामे ट्रेन-यात्रा मे डकैती होइत छैक। यात्री सभक चीज-वस्तु, रुपैया-पाइ लूटि लैत छैक डकैत सभ। कथा-नायकक दस रुपैया आ घड़ी सेहो ल' लैत छनि। ओ एहि घटल घटना के बहुत सहज रूपमे लैत छथि। घटना आयल-गेल भ' गेल। केहेन-केहेन पैघ घटना होइत रहै छै रहरहाँ। मुदा जखन ओहि घटनाक विवरण ओ अपन बेटा पिंकू आ ओकर दोस विवेक के सुनबैत छथि त' ओ सभ घटना कोन स्टेशन पर भेल कोन तारीखक बात छै आदि विवरण विस्तारसँ पुछैत

छनि। जे घटना कोनो बड़का बात नहि बुंझाइत रहैक से बड़का बात तखन भ' जाइत छै जखन दस दिनक बाद ओ अपन ड्रावर मे घड़ीके पड़ल देखैत छथि। लगैत छनि जेना साँप देखि लेने होइ। पूरा शरीरमे माथ सँ ल' क' पयर धरि आदंकक एकटा थरथराइत डाँड़ि घिचा गेल रहनि। चिचिया क' पिंकू के सोर पाड़ैत छथि। पत्नी कहैत छथिन जे ओ त' विवेक संग बाहर निकलल अछि। ई जे आदंक अछि से बेटाक अपराधी भ' जेबाक आदंक अछि। एकर व्याप्ति ओहि सभ व्यक्ति आ परिवार, समाज धरि छैक जत' बेटा-भातिजक अपराधी बनि जायब डर, भय, आदंक उत्पन्न करैत छैक। जँ अपराधी होयब, बाहुबली होयबकें गौरवक बात बुझल जाय लगतैक त' से समाज वस्तुत: कोनो समाजे नहि रहि जेतैक।

'अन्नपूर्णा' कथामे दूटा सखी अपन-अपन पतिक व्यवहार, आचरण आ व्यक्तित्वक प्रसंग बात करैत एक-दोसराक प्रति आकर्षण अनुभव करैत छथि त' 'चिन्ता आ चिन्ता' कथामे पत्नीक अपन पतिक यात्रामे कुशलताक मादे चिन्ता-दुश्चिन्ता के देखबैत एहि बात पर विचार कयल गेल अछि जे कि ई चिन्ता वस्तुत: पति लेल छल कि अपना लेल। 'छुट्टीक दिन' कथामे अपन एक मित्रक देल चिट्ठी के पहुँचेबाक लाथे दिल्ली महानगरक बस-यात्रा वर्जनक संग छुट्टीक दिन एक जिम्मेदारीक निर्वाह करबाक सार्थक काजके अन्तत: उदासीनतामे परिणत होइत देखाओल गेल अछि। कथानायक के एहि बातक अफसोस होइत छनि जे ओ एहि बातके किएक नहि मोन राखि सकला जे ककरो भेंट करबाक लेल छुट्टीक दिन उपयुक्त होइत छैक त' भेंट नहि भ' सकबाक लेल सेहो छुट्टिएक दिन अनुकूल होइत छैक। 'कोनो रस्ता नहि' कथामे व्यक्तिक निजताक संग पारिवारिक-सामाजिक जीवनमे नैतिकता आ शिष्टाचार नहि रहि जेबाक प्रश्न उठाओल गेल अछि त' 'साँप-छुछुन्नरि' मे कोनो प्रभावशाली आ ओहदेदार व्यक्तिक चतुरता, अनकर समयके कोनो मूल्य नहि बुझबाक आचरणके प्रश्नांकित कयल गेल अछि। समाज-जीवन मे एक व्यक्तिक दोसर व्यक्तिक संग कयल जाइबला व्यवहार मे व्यक्तिक सत्ताक कोना हनन होइत अछि से एहि तरहक कथा सभक माध्यमे व्यक्त भेल अछि। 'हिसाब-किताब' मे लचरल आर्थिक स्थितिक लोकक नैतिक-बोध आ

वर्गीय संस्कार खतम नहि होयबाक बात कहल गेल अछि त' 'अघटना' मे कोनो घटना घटित भ' गेलाक बाद ओहि क्रममे भेल चिन्ता-बेगरता, मानसिक पराभवके स्मृति अगिले क्षण एना समाप्त हेबाक बात आयल अछि जेना कोनो घटना घटबे नहि कयल अछि। कथानायकक समान सभ जाहि बसमे राखल छल ओ बस हुनकासँ छूटि जाइत छनि, ओ दोसर बससँ ओकर पीछा करैत छथि। अन्तत: जखन समान सभ भेटि जाइत छनि त' अनुभव करैत छथि जे तीन-साढ़े तीन घंटाक सभटा बात खतम भ' गेल। किछु घटित भेबे नहि कयल।

'शब्द' कथा एहि सभ कथासँ फराक एक दोसरे धरातलक कथा अछि। एहि कथामे अपन भाषाक शब्द-सम्पदाक समृद्धिक संग एहि बात पर सेहो चिन्ता व्यक्त कयल गेल अछि जे बहुत रास एहन वस्तु सेहो भेटि सकैत अछि, जकरा लेल अपना ओत' शब्द नहि अछि। जेना छौंड़ा। छौंड़ा कहला पर कतहु ने कतहु जे एकटा हीनता अथवा न्यूनता बला बात होइ छै से कोनो सात-आठ बरखक सुसंस्कृत, शालीन, सौम्य बालक के छौंड़ा कहबासँ रोकैत छैक। बटुक कहला पर ओहि बालक मे टीक खूब जरूरी होइत छैक। एहने एक शिष्ट, सौम्य बालकसँ बसमे भेंट आ ओकरा संग गप-सपक कथा अछि 'शब्द'। ओ बालक अपन मायके संग यात्रा क' रहल अछि। थोड़बे कालमे ओ बालक कथावाचक संग घुलि-मिलि जाइत अछि। कथावाचक ओकर बात-व्यवहारसँ ओकरा प्रति अनुराग अनुभव करैत छथि। ओकरासँ परिचय बढ़ब' चाहैत छथि। ओकर पापाक मृत्युक समाचार सुनि संवेदित होइत छथि। मुदा ओहि बालकक स्टौप आबि जाइत छैक त' ओ उतरि जाइत अछि। उतरबाक काल ओ एकबेर हिनका दिस तकैत अछि आ उतरि जाइत अछि। मुदा ओकर माय हिनकर अनुमानक विपरीत हिनका दिस एकोबेर नहि तकैत अछि।

राज मोहन झाक कथा सभके पढ़ैत मानवीय त्रासदी के अकानल जा सकैत अछि। हुनकर कथा अहाँके विचलित करत, दुखी करत, उदास करत। मुदा से भाव उत्पन्न भैयो क' कथाक प्रभाव सकारात्मके होइत अछि। नकारात्मक नहि। तकर कारण अछि जे वर्त्तमान समयमे समाजमे जे किछु मनुक्ख विरोधी अछि, मनुखताक विरोधमे जाइत अछि, पीड़ादायक आ यंत्रणापूर्ण अछि, ओहि सभ पर हुनकर दृष्टि जाइत छनि। हुनकर सभ

कथा कोनो ने कोनो मानवीय विडम्बना के सोंझा अनैत अछि। ओ मानवीय विडम्बना, पीड़ा, यंत्रणाक कथा एहि दुआरे कहैत छथि जे एक सुन्दर जीवन, विषमता रहित समाज, संवेदनशील मनुक्खक संसार सृजित हो। राज मोहन झाक कथा-संग्रह 'आइ काल्हि परसू' मे अहाँके आइ आ काल्हिमे परसूक एक सुन्दर संसारक स्वप्न जीवित आ सम्भावनासँ परिपूर्ण भेटि सकैत अछि।

(साहित्यरथी, 2021 ई॰)



बनैत कम बिगड़ैत बेसी

'बनैत बिगड़ैत' सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह थिक। पहिल कथा संग्रह 'घरदेखिया' करीब छब्बीस वर्ष पूर्व आयल रहए। एतेक अंतराल पर आयल संग्रह स्वाभाविक रूपें लोकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। से अहू दुआरे जे सुभाष चन्द्र यादव मैथिलीक जानल-मानल कथाकार छथि। मैथिली कथा साहित्यमे सुभाषक अपन विशिष्ट योगदान अछि। आलोचक कुलानन्द मिश्रक कहब छनि जे मैथिली कथाक क्षेत्रमे एकटा निश्चित सीमाक अतिक्रमण सुभाष चन्द्र यादवक बादे आरम्भ भेल। जे अखनुक नव्यतम कथाकारलोकनिक प्रियतम आस्था आ पवित्रतम विश्वास बनि गेल अछि।

अपन कथा-संग्रह 'घरदेखिया'क शीर्षक कथा 'घरदेखिया' सुभाष कें मैथिली कथामे स्थापित क' देने छल। ई कथा मिथिला मिहिरक 15 सितम्बर 1974क अंक मे पहिल बेर छपल रहय। ई कथा 1977 मे मैथिली अकादमीक कथा-संग्रहमे अपन स्थान बनौलक। कथाक संग देल सम्पादकीय टिप्पणीमे कहल गेल जे 'बीसम शताब्दीक एहि उन्नत युगमे समाजक एकटा वर्गक यथार्थ सँ ई कथा जे अंतरंग साक्षात्कार करबैत अछि, से एके संग मोनमे अनिवर्चनीय अह्लाद आ भीतर धरि पैसि जाइ बला अवसादसँ भरि दैत अछि। कथामे भाषा केना फोटोग्राफी करैत चलैत छैक, तकर बड़ सुन्दर उदाहरण ई कथा अछि।' वस्तुतः 'घरदेखिया' सुभाषक अनेको प्रसिद्ध कथामे सँ एक थिक। ओ कथा अभावग्रस्त लोकक घरक परिस्थितिकें बहुत सुन्यस्त रूपें देखबैत संवेदित करैत अछि। उपेनक संग पाठक सेहो 'काका'क आर्थिक अभाव कें देखिक' चिंतित भ' उठैत अछि। आब बेटीक बियाह लेल टाकाक जोगाड़

केना हेतै? पाठक सोचबा लेल विवश होइत अछि।

निश्चित रूपसँ सुभाष मैथिली कथाकें अपना तरहक किछु उत्तम कथा सभ देलनि अछि। घरदेखियाक संग काठक बनल लोक, फँसरी आ झालि बहुतो पाठक आलोचक द्वारा प्रशंसित भेल अछि। ई कथा सभ सुभाषेक नै मैथिलीक नीक कथाक रूपमे मानल जाइत अछि। सुभाषक नीक कथा आरो अछि। हम एतए किछु आर कथाक नामो ल' सकैत छी। एकटा दुखांत कथा, उत्तर मेघ, जासूस कुकुर आ चोर, तीर्थ, परिचय, बेर-बेर, लिफ्ट आ फुकना। ई सभ कथा अपन शिल्प ओ कथ्यक संतुलनसँ अभीष्ट प्रभाव छोड़बामे सफल भेल अछि। कम-सँ-कम शब्दमे कोनो व्यक्ति, घटना अथवा भावक सजीव ओ भावपूर्ण अंकन एहि कथा सभमे भेल अछि। एकटा कलाकारक रूपमे सुभाष वर्णनसँ बेसी चित्रण मे अपन निपुणता देखबैत रहला अछि। से बिना कोनो ताम-झाम, रंग-रोगनकें। तँए सुभाषक कथा सभ कखनो क' एकटा रेखा-चित्र, शब्द चित्र सन लगैत अछि। साहित्यमे जेकरा रेखाचित्र कहल जाइत अछि, ओइमे कम-सँ-कम शब्दमे कलात्मक ढंगसँ कोनो वस्तु, व्यक्ति अथवा दृश्यक अंकन कयल जाइत अछि। एहिमे साधन शब्द होइत अछि, रेखा नहि। तँए एकरा शब्द-चित्र सेहो कहल जा सकैत अछि। रेखाचित्रक अंग्रेजी नाम स्केच थिक। रेखाचित्रमे कथाक गहींरताक अभाव रहैत अछि। एहि सभ बातक होइतो कथा आ रेखा-चित्रमे बहुधा भेद करब मुश्किल होइ छै।

सुभाष चन्द्र यादवक 'घरदेखिया' संग्रहमे पैंतीसटा कथा रहय। 'बनैत बिगड़ैत' मे एक्कैस टा कथा अछि। एहि एक्कैस टा कथा मे एकटा कथा अछि 'ओ लड़की'। ई कथा 'असंगति' नाम सँ 'घरदेखिया' संग्रहमे सेहो अछि। दुनू कथा मे घटना एक्के थिक। मुदा उपस्थापन आ निष्पत्तिमे अंतर अछि। एहि प्रकारे एक्के घटनासँ निर्मित कथाक दूटा पाठ, दू शीर्षक सँ हमरा सभकें भेटैत अछि। घटना महानगरक होस्टल लगक थिक। मोटर मे बैसि क' एकटा लड़का आ लड़की चाह पीलक। चाह पीबि क' दुनू कप लड़की हाथमे रखने रहय। नवीन, जे ओकरासँ अपरिचित रहय, तकरा जाइत देखलक तँ पुछलकै जे की अहाँ ओइ दिसि (चाहक दोकान दिसि) जा रहल छी? सवाल खतम होइते नवीनक नजरि लड़कीक चेहरा सँ उतरि क' ओकर हाथक कप पर चलि गेलै आ ओ

अपमानसँ तिलमिला गेल। ओकरा भीतर क्रोध आ घृणाक धधरा उठलै, की ओइ दुनूक अइंठ कप ल' जायत? लड़कीक नेत बूझिते ओ जबाब देलकै, नै। असंगतिमे नवीन अंत धरि तिलमिलाइत रहैये आ सोचैये जे ओ किए नै कहि सकलै, 'हाउ डिड यू डेयर?' कथा एहिठाम खतम होइत अछि। मुदा 'ओ लड़की' मे एकर बादो कथाकें विस्तार देल गेल छै। नवीनक मानसिक अंतर्द्वन्द्व छै। ओ सोचैत अछि जे दुनूमे कियो दोषी रहल हेतै आ दुनू दोषी हेतै आ दुनू मे कियो नै। कारण आरो भ' सकैत छल। अंततः एतबे सत्य रहि गेलै जे लड़की उदास भ' गेल छलै आ नवीन दुखी। ई सभ बात ओ सोचने चल जा रहल छल। दुनू कथामे घटना कनियेंटा अछि। आर जे किछु अछि से मानसिके स्तर पर अछि। पहिल मे अपमानक बोध अंत धरि बनल छै। ऐ बातक पछताबा छैक जे लड़की (असंगतिमे लड़कीक नाम कूकी थिक) कें झाड़ि क' बदला किए नहि लेलक? ओकरा औकात किए नहि देखा सकलै। तोहर ई मजाल जे हमरा अइंठ कप उठा क' ल' जाइ लेल कहबें? मुदा 'ओ लड़की' मे ई अपमान बोध अंततः समझौतामे बदलि जाइत अछि। थोरथाम भ' जाइ छै। लड़कियो उदास जे अनेरे कहलकै आ नवीनो दुःखी जे अइंठ कप ल' जइतय तँ की भ' जइतै। मुदा ई सभटा मन कथे। मनेक भीतर मे चलैत। पजरैत आ मिझाइत। कथाक ऐ दुनू पाठक विस्तारसँ तुलनात्मक अध्ययन बहुत रोचक भ' सकैत अछि।

बनैत बिगड़ैत मे संग्रहीत कथा सभसँ पूर्व कथाकार 'अपन गप्प' मे कहैत छथि जे 'हमर रचना और किछु नै, देश-कालक प्रति हमर प्रतिक्रिया थिक। हम अपन समैक सार तत्वकें प्रतिबिम्बित करए चाहैत छी। जीवन लेल जे किछु नीक आ श्रेयस्कर अछि, हमर रचना तकरे हासिल करए चाहैत अछि। हम एहन मनुक्ख गढ़ए चाहैत छी जे सभसँ प्रेम करए। आ प्रेम वएह क' सकैत अछि जे सत्यक सर्वाधिक निकट हएत।' कथाकारक इच्छा आ कथा सभकें जँ देखी तँ लागत जे कथाकार अपन अभीष्ट कें बहुत अंश धरि प्राप्त क' लेने छथि। जतए कतौ अभीष्टक प्राप्ति नहि भ' सकलनि अछि तँ से अभीष्टक अस्पष्टता आ तइ कारणें उत्पन्न शिल्पक कमजोरी थिक। प्रथम पुरुष कथावाचकबला अर्थात् कथा कहनिहार ओ कथा जननिहार जतए एक छथि से एगारहटा कथा अछि। ई सभ कथाकें

आत्मानुभूतिक निकट मानल जा सकैत अछि। एहन कथा सभ अछि, अपन-अपन दु:ख, आतंक, एकटा अंत, एकटा प्रेम कथा, कनियाँ पुतरा, कारबार, कुश्ती, तृष्णा, दृष्टि, बात, रम्भा, हमर गाम। ऐ एगारहो कथामे सँ दसटा कथामे हम सोझे-सोझ पात्रक रूपमे कथामे सम्मिलित छथि। मुदा एकटा कथा 'तृष्णा' मे दोसर पात्र अखिलनक खिस्सा कहैत छथि। एहि कथा सबहक माध्यमे देश-कालक प्रति जे प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि से यथार्थ अछि। से वर्त्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थितिमे राग-भावक होइत अभावकें देखबैत अछि। सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध-अनुबन्ध बदलि रहल अछि। अनकर दुख तकलीफक प्रति एक मारुक उदासीनता पसरि रहल छैक। कारोबारी सम्बन्ध, अश्लीलता हदकें छूबि रहल अछि। शासन-व्यवस्था असंवेदनशील आ भ्रष्ट भ' गेल छैक। लोक कमजोर आ असहायकें दबबय चाहैत अछि। गाम-घरमे जमीन-जाल, सम्पत्तिक छीना-झपटी बढ़ल छैक। कथाकार चाहैत छथि जे प्रेम कयनिहारक बीच सम्वादहीनता नहि उपजय। सम्वादहीनतासँ ओ बेचैन होइत छथि (एकटा प्रेम कथा), शासन-व्यवस्थाक अंग भेलापर मित्र-परिचितोक बात-बेवहार बदलि जाइ छैक। ई बात-बेवहार आतंकित क' सकैत अछि (आतंक)। श्रद्धा आ सिनेह देखाबय लेल कर्मकाण्ड जरूरी नै छै (एकटा अंत), निश्छल आ निर्विकार यौवनकें छली आ विकारग्रस्त मानसिकतासँ बचाएब कठिन भेल जा रहल छैक (कनियाँ पुतरा)। एहि कारोबारी युगमे असहाय आ निर्बलकें आर्थिक-शारीरिक शोषणसँ बाँचब मुश्किल भ' गेलैक अछि। मानवीयताक ह्रास भ' रहल छै (कारोबार), जीवनक आपाधापी लोककें जहिना-तहिना रहबा पर विवश करै छैक (कुश्ती), कोनो सुन्दर दृष्टि भंगिमा वाली स्त्रीक प्रति सहज खिंचाओ आ लगाओ सम्भव छैक। लोकमे ई इच्छा जनमि सकै छैक जे ओकर संग हरदम बनल रहय। संग नहियो भेटतै तँ स्मृति आत्माकें आलोकित करैत रहतै (तृष्णा), मनुक्खकें जीबाक लेल सार्थक ओ व्यावहारिक दृष्टि आवश्यक छैक (दृष्टि), जीवनमे बहुतो घटना घटैत रहै छैक। जीवन कथा चलैत रहै छैक। दुख-सुख भोगैत रहैत अछि लोक। परन्तु बात कखनो-कखनो बनि पबैत छै (बात), रम्भा सन रूपवती स्त्री ककरो कोनो अवस्थामे विचलित क' सकैत अछि। एहि विचलन मे मोनकें नुका क' राखब

सम्भव नहि छैक। मोन पारदर्शी भ' जाइ छैक। मोनक सुन्दरता आ कुरुपता देखार भ' सकै छैक (रम्भा), अनुपस्थित जमींदारक लेल गाम आब स्मृतिमे जा रहल छैक। गामक जीवन विकट भ' गेल छैक। वस्तुत: गाम आब अपन नहि रहि गेलैक अछि (अपन गाम)। एहि सभ कथामे जे भाव-विचार व्यक्त भेल अछि से बहुलांशमे कथामे अनुस्यूत भ' क' आयल अछि। मुदा जतय-ततय कथामे फूट सँ टिप्पणी, चिन्तन, दर्शन वा मन्तव्यक सोङर सेहो दिअ' पड़लनि अछि कथाकारकें। कथा-संग्रहमे संगृहीत किछु कथा सभमे ई सोंगर कखनो कें कने खीचल-तीरल सेहो लागि सकैत अछि। लागि सकैत अछि जे कथावाचक जेना किछु आगू बढ़ि गेल अछि आ कथा कतौ पाछूए छूटि गेल अछि। हमरा जनैत एकर कारण कथाक रूप-विधान थिक, ले आउट थिक। कथात्मकताक अभाव थिक। जँए कि सुभाष अपन कथा लेल वातावरण आ पृष्ठभूमिक निर्माण नहिएँ जकाँ करैत छथि तँए हुनका अभीष्ट प्राप्ति लेल कखनो क' फूटसँ उपक्रम करय पड़ैत छनि।

किछु कथामे कोसीक बाढ़ि आ कोसी कातक गामक चित्रण बहुत प्रामाणिक रूपसँ भेल अछि। किछु कथामे असगर हेबाक कष्ट-भोग दारुण भ' गेल अछि। एहि कथा सबहक चित्रण भयाओन अछि। जाहि कथामे कोसी आ कोसी कातक गाम अछि से कथा 'केनरी आइलैंडक लारेल', 'परलय' आ 'हमर गाम' थिक। कोसीक बाढ़िसँ तबाही, कोसी कातक गामक रस्ता-पेड़ाक दुरुहता कहैत अछि जे ई एकटा दोसरे संसार थिक। विकाससँ दूर, सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्धक बदलैत आयाम आ ओइ भीतरसँ राग-विरागक झिलमिलाइत मनोभाव, बनैत-बिगड़ैत जातीय-वर्गीय सम्बन्ध कथा सभकें स्मरणीय बनबैत अछि। ''परलय'' आ ''हमर गाम'' शीर्षक तँ कथाक अनुकूल लगैत अछि, ओकर संगति छै मुदा केनरी आइलैंडक लारेलक कोनो संगति कथामे नहि भेटि पबैत अछि। केनरी आइलैंड स्पेनक आइलैंड थिक, जे मेडीटरेनियन समुद्रमे अछि। एहि आइलैंडपर लारेल नामक गाछ खूब होइ छैक। एहि झमटगर गाछक छोट-छोट पातक उपयोग मुकुट, टोपी बना क' लोककें सम्मानित करबामे होइत अछि। इंग्लैण्डमे राजाक मुकुटमे लारेल लगाओल गेल रहै। मुदा कथामे ई लारेल के थिक, से स्पष्ट नहि होइत अछि। कथाक संग

शीर्षकक संगतिक समस्या किछु आनो कथाक संग अछि।

''असुरक्षित'' आ ''एकाकी'' बाहर आ भीतरसँ असगर भेल लोकक व्यक्ति-चित्र थिक। ई दुनू कथा बहिरंग आ अंतरंगक बीच होइत आवाजाहीक कथा थिक। कखनो बहिरंग हावी भ' जाइ छैक तँ कखनो अंतरंग। ई स्थिति व्यक्तिवादी मानसिकताक देन कहल जा सकैत अछि। एहन लोकमे असुरक्षा-बोध बढ़ि जाइ छैक। ओ अपन वर्तमान वातावरण ाक संग ताल-मेल नहि बैसा पबैत अछि। दाना, नदी आ कबाछु एहन कथा थिक जेकरामे कोनो पैघ बात कहबाक तागति छै मुदा अन्ततः से बात उभरि नहि सकल अछि। एक ओझरायल अनुभूति आ संकोच, कहि सकैत छी जे एहि कथा सभकें पुष्पित हेबामे बाधक भेलैक अछि। तथापि ''नदी'' प्रवाहमान धारक रूपमे तँ नै मुदा रुकैत-चलैत वात्सल्यक अनुभूति जगबैत छै। ''दाना'' एहि कारोबारी समयमे मनुक्खकें हरेक दाना लेल चिड़ै-चुनमुनी सन बनैत देखबैत अछि। ''कबाछु''क अनुभूति जुगुप्सा जगबै छैक जखनि कि एहि कथामे गहींर सत्यक बीज अछि। सत्य ई थिक जे जखन व्यक्तिक वर्ग बदलि जाइ छैक तँ ओकरा अपन पूर्ववर्ती व्यवहार, चालि-चलन, श्रम वा आराम सबहक प्रति एक हीनता-बोध, लाज-संकोच उपजि जाइत छैक।

कथा-संग्रहक नाम 'बनैत बिगड़ैत', एहि नाम सँ प्रकाशित कथाक आधार पर राखल गेल अछि। एहि कथामे माय-बाप लगसँ परदेश चल गेल सन्तानक कुशलता लेल व्याकुल, अनिष्टक आशंकासँ डेरायल, संतानसँ भेटल अवहेलनाक संताप भोगैत पति-पत्नीक खिस्सा कहल गेल अछि। पत्नी कें एहि मानसिकतामे कौआक टाहि आ कुकुरक कानब अशुभ लगै छै। ओहि कटाह बातसँ पति आर पीड़ित होइत अछि। एहि क्रममे ओ विभिन्न बात सोचैत अछि। कौआक कुचरबाक मादे अशुभ कल्पनाकें कौआक विलायल जेबासँ जोड़ि दैत अछि। कौआ संग अपनो (दादाक) विला जेबाक कल्पना करैत अछि। एहि प्रकारें जेना सन्तानक विछोहसँ उपजल क्षोभ आ दुखमे अपनाकें कौआ सन कुरुप मानि, अशुभ मानि, विला जेबाक, मरि जयबाक, स्मृतिमे चल जेबाक उपालम्भ देल गेल अछि।

सुभाष चन्द्र यादवक एहि कथा-संग्रहक अनेक कथामे गामक, दादाक, सिनेह-भावक स्मृतिमे चल जेबाक बात कहल गेल अछि। जेना

ई सभ आब स्मृतिएटा मे जीवित रहत। वस्तुतः वर्तमान समयपर ई सभ कथाकारक प्रतिक्रिया थिक। ई प्रतिक्रिया समयकें बनैत कम आ बिगड़ैत बेसी देखि क', पाबि क' व्यक्त भेल अछि। जेना ई समय बनि कम रहल अछि, बिगड़ि बेसी रहल अछि। वर्तमान समयपर कथाकारक ई प्रतिक्रिया यथार्थ भलेहीं हुअय, मुदा ई यथार्थ उदास आ निष्क्रिय करैत अछि। एहि सँ ने हृदयमे प्रेरणा होइत अछि आ ने आत्मबल भेटैत अछि। तैं सुभाषजी सँ ई आशा करब अनर्गल नहि होयत जे ओ अगिला समयमे समकालीन यथार्थक एहन पक्ष सेहो प्रस्तुत करता जे प्रेरित आ सक्रिय करत। जाहिसँ आत्मबल भेटत। एहन कथा वस्तुतः कम बिगड़ैत आ बेसी बनैत कथा होयत। ओना जेना सुभाष अपनो एहि संग्रहक भूमिकामे कहने छथि जे 'हम समयक सारतत्वकें प्रतिविम्बित करय चाहैत छी। जीवन लेल जे किछु नीक आ श्रेयस्कर अछि, हमर रचना तकरे हासिल कर' चाहैत अछि' त' से एहि बनैत-बिगड़ैत समयके यथार्थमे तकर सम्भावना त' नुकायल अछिए। ई यथार्थ के देखबाक कथाकारक दृष्टि के बात थिक।

(विदेह मैथिली प्रबन्ध - निबन्ध-समालोचना, 2012 ई०)



राजकमलक ललका पाग

ललका पाग पहिल कथा छी जे राजकमल मूल रूपसँ मैथिलीमे लिखलनि। एहि सँ पूर्व तीनटा कथा-अपराजिता, अन्धकार आ फुलपरासवाली ओ अपने हिन्दी मे लिखलनि जकर अनुवाद मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार ललित कयने रहथि। ललित लिखने छथि जे राजकमल हुनका वादाक अनुसार अपन कथा अपराजिता पठौने रहथिन जकर मैथिली अनुवाद कय वैदेही मे ओ छपने रहथि। तकर बाद फुलपरासवाली तक के जे कथा रहैक से मूल हिन्दी आ तकर भाषानुवाद हुनके कयल छल। ई मानबा मे ककरो असोकर्य नहि भ' सकैत अछि जे ललित तीनू कथाक नीक अनुवाद केने छला। ललका पागक पूर्वक तीनू कथा पढ़लाक बाद ललका पाग पढ़ला पर भाषाक स्तर पर कोनो झटका नहि लगैत छै। तखन एकटा बात अवश्य जे ललका पाग ओ पहिल कथा छी जत' सँ राजकमल अपन प्रकृतिमे आबि गेला। प्रकृतिए मे नहि आबि गेला मैथिलीक जे कथा-परम्परा छल ताहि सँ एकदम जुड़ि गेला। तकर बाद त' हुनक गाड़ी बढ़ैत गेल आ ओ खाँटी मैथिल जनजीवनक कथाकार रूप मे एकदम ठाढ़ देखाइत छथि।

जखन हम राजकमलक मैथिली कथा-परम्परासँ जुड़बाक बात कहैत छी त' हमर तात्पर्य ई नहि अछि जे ओ पारम्परिक रूपें ओहि कथा-धाराक अनुगमन कर' लगला जे हुनकासँ पूर्व प्रवाहित भ' रहल छल। ओ अनुगमन नहि कयलनि ओ त' ओहि धारामे ज्वारि आनि देलनि। एहन ज्वारि जे नदीक पाट के चौड़ा क' देलक। धार आब वेगसँ प्रवाहित हुअ' लागल। बिना अपन कथा-परम्परासँ जुड़ने कियो पैघ कथाकार नहि भ' सकैत अछि। मुदा केवल जुड़िये गेने बात नहि

बनैत अछि। पूर्वसँ प्रवाहित धारा मे जँ ज्वारि नहि उठा सकल त' ओ पैघ कथाकार नहि छी।

राजकमल चौधरीक मैथिली कथा सभ कें पढ़ैत अहाँकें लागत जे ओ अपन पूर्वज ओ समकालीन कथाकार सभसँ अद्‌भुत रूपें कनेक्टेड छथि। फुलपरासवालीक सम्बन्धमे त' सभ के बुझले अछि जे ओ कथा ललितक 'मुक्ति' कथाक उत्तरमे लिखल गेल अछि। कमलमुखी कनियाँ कथामे ओ हरिमोहन झाक प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान'क 'बुच्चीदाइ चुप' वला दृश्य के पुनर्सृजित केलनि। हरिद्वारवास कथामे कथाकार लिली रेक प्रसिद्ध कथा 'रंगीन परदा'क उपयोग क' ओहि कथा कें अपना हिसाबें आगू बढ़ौलनि। हरिद्वारवासमे मालती मोहनजीक हत्या क' दैत छथि। राजकमलक सहस्र मेनका कथा त' मैथिलीक पहिल आधुनिक कथा 'ताराक वैधव्य' सँ कनेक्ट होइत अछि। मिथिलामे गाम-गाममे विधवा स्त्रीक जेना भरमार छल। हुनका लोकनिक जीवन असह्य कष्ट आ पीड़ासँ भरल रहनि। जीवन मे कोनो सुख नहि। युवती विधवा सभक प्रति पुरुषक लोलुप दृष्टि, दुराचारक असंख्य कथा गढ़ि रहल छल। एहि असहाय आ दारुण विधवा जीवनक मूल मे बिकौआ प्रथा त' रहबे करय, अनमेल विवाह सेहो छल। एक पुरुषक मृत्यु पर दस-बीसटा स्त्री, विधवा भ' जाइत छल।

मैथिलीमे कतेको कथा विधवालोकनिक जीवन पर लिखल गेल जे पूर्व मे करुणा उपजबैत अछि आ क्रमशः व्यवस्थाक प्रति आक्रोश भरैत अछि। राजकमल एहन विधवालोकनिक जीवन-यापनक समस्या, हुनका लोकनिक प्रति होइत अमानुषिक व्यवहार आ तिरस्कारक दिस ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ओ कहैत छथि जे व्यवस्थाक जाँत तर पिसाइत एहन स्त्री जेना मनुक्ख नहि रहि गेल छल। मनुक्खक स्थिति मे त' नहिये छल। हुनक कादम्बरी उपकथा एहि अमानुषिक व्यवस्थाक बीच मनुष्यत्वक प्रतिष्ठाक कथा कहैत अछि।

राजकमल चौधरीक कथा पर आलोचक सभक टिप्पणी सभसँ ज्ञात होइत अछि जे हुनक कतेको कथा विवादित भेल। ओकरा यौन सम्बन्ध आ सेक्सक उद्दाम चित्रणसँ जोड़ल गेल। ओकरा पौर्नोग्राफी तक कहल गेल। ई सभ बात पढ़ैत हमरा लगैत अछि जे एहि प्रकारक

विरोध आ प्रहार त' हरिमोहन झा आ यात्री पर सेहो भेल छल। मुदा जेना हरिमोहन झाक साहित्य आब खाली हास्यरस लेल नहि पढ़ल जाइत अछि तहिना राजकमलक कथा मे सेहो कतहु सेक्स नहि भेटैत अछि। राजकमलक कथा पढ़ि जँ ककरो सेक्स वला गुदगुदी लगैत छनि त' हमरा जनैत हुनका अपन मनोविकारक इलाज करेबाक चाही। सेक्सक समस्या राजकमलक कथामे कतहु नहि अछि। समस्या ओहि पाठक लोकनिमे रहनि जे ओकरा पढ़ि रोमांचित होइत रहथि। एहि क्रममे हमरा मोन पड़ैत अछि कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक हरिमोहन झाक कन्यादान पर टिप्पणी। ओ कहने छथि जे कन्यादान मे जे समाज चित्रित भेल अछि, झारखण्डी नाथक जेहेन भीषण गरीबी अछि से यथार्थ बुझियो क' जाहि पाठक कें हँसी लगैत छनि से धन्य छथि। तहिना हमरो कहबाक मोन करैत अछि जे मिथिलामे स्त्री समाजक एहन दारुण स्थितिक चित्रण के पढ़ि क' जाहि पाठक के ओहि मे सेक्स देखाइत छनि सेहो धन्य छथि।

राजकमलक कथामे मैथिल स्त्रीक प्रवेश होइत अछि फुलपरासवालीसँ। जे मिथिलाक कोसिकन्हा मे पालित छली। तकर बाद अबैत छथि ललका पागक त्रिपुरा वा त्रिपुर वा तिरु। ओ ओहि वर्गक कन्या छली जे जाँत मे गहूँम पिसैत अछि। ढेकी पर चाउर छँटैत, ऊखरि मे चूड़ा कुटैत अछि। सिलौट पर पिठार पिसैत कोनो नव-पुरान पद नहुँए-नहुँए गबैत अछि। ई मैथिल नारि तुलसी-चौड़ा निपैत, अरिपन पर सिन्दूर आ पिठारक रक्त-श्वेत फूल-पात उगबैत अछि। सामा आ नुका-चोरी क' जट्टा-जटिन खेलाइत अछि। तिरु जखन पेट मे पिल्ही, देह मे घाव-फोसरी, आँखि मे सेर-दू-सेर काँची लेने, फाटल-चीटल फराक मे नेटा-पोटा पोछैत खरिहाने-खरिहान गाछिए-गाछी बौआइत बाँसक नवका कोपड़ सन कोमल, कविश्रेष्ठ वाणभट्टक श्यामांगी नायिका भ' गेली तखन हुनकर भाय के बियाहक चिन्ता भेलनि। तिरुक भाय के डाक्टरी पढ़ैत बर भेटलनि। बियाहक गप पर तिरु घर मे जाक' अन्हार मे चित्त पड़ि सुबक' लगली। राजकमल लिखैत छथि जे 'मिथिलाक छौड़ी सभ एहिना कनैत अछि। नीको मे अधलाहो मे कानब-कलपब मैथिली स्त्रीक परम्परा भ' गेल अछि।' किन्तु तिरु कानथि अथवा नहि

विवाह भइए गेलनि। शुभलगन मे विवाह भेलाक बाद नवमे दिन दुरागमन सेहो भ' गेलनि। तेरहम बयस रहनि। दुरागमनक बाद हुनकर भाय अपन माय के संग क' जेना निश्चिन्त भ' कलकत्ता चल गेला। एम्हर खेलाइ-धुपाइ वाली तिरु विवाहक बाद कोठली मे कैद भ' गेली। मुदा से तिरु पहिने नहि बुझलनि। से बुझलनि बाद मे! पहिने त' ननगिलाटक ललका दसगज्जी घोघ तर सँ ओ वर के देखलनि जे बड़ सुन्दर छथि, सदिखन हँसिते रहैत छथि। एकर संग ओ ईहो देखलनि जे सासुरक आंगनक पछुआर मे बड़की टा बाड़ी अछि आ बाड़ीक पछुआर मे बड़की टा पोखरि। तिरु-विचारलनि जे नैहरे जकाँ हरीनक बच्चा बनि बाड़ी मे बउआयब आ माछ बनि पोखरि मे चुभकब। तैं जखन भोजभात आ गीतनादक पश्चात् गाम-घरक कनियाँ-बहुरिया, दाइ-माइ, बूढ़ि-नवीना तिरुक गोल मुँह, आमक फाड़ा सन आँखि, पुष्ट पकिया श्याम रंग आ बाँसे सन पातर-छीतर देह के ठोकि बजा, अपन-अपन कैफा करैत चल गेली त' अपन अधवयसू सासु चननपुरवालीसँ पुछलथिन 'माय, अहाँ कें पोखरि मे हेल' अबैत अछि?' अपन नवीना पुतहुक एहि विचित्र प्रश्न पर सासु बजली, 'बहुआसिनो कतहु पोखरि मे हेलैत छैक?' एहि पर तिरु-विस्मयसँ आँखिक पकोट उठा भौंह वक्र क' क' पुछलथिन, 'से किएक? पोखरि मे हेलने की बहुआसिन कें पानि लागि जेतनि।' बस, तिरुक यैह पुछबे विष भ' गेल। भोर होइत-होइत सौंसे गाममे हल्ला भ' गेल जे रातिमे कमलपुरवाली कनियाँ पोखरिमे नहाइत रहथि। एतेक तक जे तिरुक पति राधा सेहो गाममे भेल हल्ला पर विश्वास क' लेलनि। तिरुक उत्तर हुनका फूसि लगलनि। क्रोधसँ दोसर कात मुँह फेरि क' सुति रहला। तिरु नोर बहबैत रहली। अलगनीसँ चद्दरि तीरि नीचामे सिमटीक फरस पर पड़ि रहली। राधा क्रोधित, चिन्तित, दुखित भ' सोच' लगला जे किएक एहि मूर्ख छौड़ीसँ विवाह केलहुँ। हुनका मोन पड़लथिन शम्भुनाथ मिसरक डाक्टर सुपुत्री कामाख्या दाइ। जे नीक चाह बनबैत रहथि। नीक सिनेमाक गीत गबैत रहथि। एहना मे तिरुक हिचुकि-हिचुकि कानब राधा के आर क्रोधित क' देलकनि। ओ बिगड़ि क' 'राच्छसी नहितन! सुतइयो नहि देत, जो आब तोरा दिस तकबो नहि करब...' कहैत कोठली सँ बहरा गेला। तिरुक

कोठलीसँ बहरा क' भगबाक पश्चात् पूरे एक वर्ष धरि राधा तिरुक कोठलीमे नहि गेला। बारहो मास बीति गेल। कनियाँ-वर के भेंट नहि भेल। पति-पत्नीक सम्बन्ध नहि भेल। कोनो सम्पर्क नहि। शारीरिक सम्पर्कक त' प्रश्ने नहि। बियाह की भेल, बुझू त' बियाहे नहि भेल। तिरु कनैत रहली। कनिते रहली। हुनकर सासु चननपुरवालीक विजय भेलनि। हुनकर सतरंजक गोटी सुतरि गेलनि। राधाक वियाह, दोसर वियाह आब कामाख्या दाइ सँ ठीक भेलनि। जे चननपुरवाली हुनकर मायक इच्छा छलनि। एहि सभ निश्चयक उपरान्त एक दिन राधा तिरुक कोठली मे सूत' गेला। तिरुकें सूचना देलथिन जे ओ दोसर वियाह क' रहल छथि। एहि पर तिरु चुप्पे रहली। राधा पुछलथिन, 'की कहैत छी, अहाँ के दुख नहि हैत?' आब एहि प्रश्नक की उत्तर दितथि तिरु। फेर चुप्पे रहि गेली। राधा फेर पुछलथिन! तिरु कहलथिन जे किए दुख होयत अहाँक कुल मे त' दोसर बियाह लिखले अछि। राधाक कुल मे त' दूटा-तीनटा बियाह भेल रहनि। ई युग त' थोड़ेक बदलल छल। एहि समाज मे त' दर्जनक हिसाबसँ बियाह होइत छल। एहना मे दुखक की बात? बात त' एतबे जे राधा ई बात पुछलथिन। पुछबे टा नहि केलथिन, तिरुक दुख नहि होयबाक गप सुनि किछु नरमो भेला। पुरुषमे ई भाव आयल से ध्यान देबाक जोगर विषय छी। स्त्री त' उचिते पतिएक सुखमे अपन सुख तकैत छल। मैथिल स्त्री त' जीवन भरि सहैत रहैत अछि। बजैत किछु नहि अछि। से तिरु कोना ओहि लौह परम्परा के अतिक्रमण करितथि। तै पर ई परम्परा त' सामन्ती पुरुष समाजक बनाओल रहय। एही समाजक लोक तिरुक ससुर रामसागर चौधरी सेहो तँ रातुक एहि घटनाक बाद हरिद्वार दिस विदा भ' गेला। तिरुक लज्जा त्यागि हमरो हरिद्वार लेने चलू कहला पर जेना पुरुष कहैत आयल अछि सैह कहलथिन जे अहाँक चचरीए एहिठामसँ बहरेबाक चाही, जीबित देह नहि। जहल मे त' सजायक समय बीतला पर लोक जीबितो निकलैत अछि मुदा एहि समाजक स्त्री बियाहक कैदखानासँ जीबित कोना निकलत? तिरु धरती पर उखड़ल गाछ जकाँ खसि पड़ली त' खसल रहथु। पानिसँ निकलल माछ जकाँ छटपट करैत छथि त' छटपटाइत रहथु। मुदा एहनो अहुरिया कटैत मरैत गाय, चोटायल

सर्पिणी सन क्रोध क' सकैत अछि। सासुक ई कहला पर जे एक्के वर्षमे घर मे आगि लगा देलक। आब कनैत अछि। हड़ाशंखिनी नहितन। तिरु सासु लग सटि के कहलथिन, 'अहाँ हमर सासु छी। तैं किछु नहि कहैत छी। नहि त'...।' सासु चननपुरवाली एहि पर डरे पड़ेली। हुनका बुझेलनि जे ई त' साक्षात दुर्गा छी। मुदा एहि सभ सँ की हो। राधा दोसर बियाह लेल तैयार भेला। बियाह दिन नबका रेशमी कोट पहिरिलनि। नबका जूता पहिरिलनि। जेबीमे तिरुक काढ़ल रुमाल आ छोट-छीन चानीक पनबट्टी रखलनि। तखन माथ पर पाग रखबाक बात आयल। इहो बात आयल जे एहि मे उजरा पागसँ नहि हैत। तखन राधा के तिरुक समाद आयल अंगना अयबाक लेल। राधा तिरुक कोठलीमे गेला। तिरु काठक बड़का बक्सा खोलने किछु ताकि रहल छली। राधा दिस मूड़ी घुमा क' बजली, 'सत्ते बड्ड सुन्दर लगैत छी अहाँ। एक बेर फेर अहीं सँ बिआह करबाक इच्छा होइत अछि।' राधा के ई बात हँसी बुझेलनि। ओ विदा हेबाक लेल अगुतायल छला। समय बीतल जाइत रहैक। तखन तिरु बक्सा सँ जे वस्तु बहार केलनि से घुनेस आ सुखायल फूल आ कागदक माला सभसँ सजाओल पाग छल। ललका पाग। राधा के स्मरण भ' अयलनि जे इएह पाग थिक जे पहीरि कमलपुर विवाह करय गेल छलहुँ। इएह पाग थिक जाहि पर सभ सँ नुका क' तिरु फूल-माला चढ़बैत छली। तिरु स्वामी के पाग पहीरि लेबाक लेल देलथिन। राधाक हाथ मे पाग दैत तिरुक छाती फाटि गेलनि। मुदा एहि बेर ओ कनलीह नहि हृदय कठोर क' अपन नोर पीबि गेली। तिरु सँ ललका पाग लेलाक बाद राधा सँ कोठली मे ठाढ़ रहल नहि भेलनि। आँगन मे आबि कुर्सी पर बैसि रहला। ललका पाग माथ पर भारी भेल चल जा रहल छलनि। माथ मे बिहाड़ि उठि रहल छलनि। ओ कान' लगला, तीन वर्षक नेना जकाँ कान' लगला। गामक अलिखित दैनिक-पत्रक अवैतनिक महा सम्पादक श्री भोला मास्टर कें सभ बात बूझ' मे आबि गेलनि। राधा के उठबैत बजला, ''राधा भाइ, उठ', चिन्ता जुनि कर', पुरुषक माथक ललका पाग त' स्त्री होइत छैक। से त' तोरा संग मे छहे। तखन तों किएक कनैत छह...।' राधा किछु नहि बजला। किएक नहि बजला? एही प्रश्नसँ कथा समाप्त होइत अछि।

मुदा एहि प्रश्नसँ पूर्व जे भोला मास्टर द्वारा कहल गेल अछि से की कहैत अछि? हमरा जनैत से कहैत अछि जे तोहर स्त्री के जखन कोनो आपत्ति नहि छनि ओ तोहर दोसर विवाह मे संग द' रहल छथुन तखन तोरा कथी के दुख आ चिन्ता? मुदा वैह स्त्री अर्थात् ललका पाग राधा के आइ भारी पड़ि गेलनि। हुनकर माथमे बिहाड़ि उठि गेलनि। ओह, एहन स्त्री जे हमर क्रोध, हमर अवहेलना, हमर तिरस्कार सभटा बरदास्त केलक। जेकरा हमर दोसर विवाह सँ जेना कोनो प्रकट दुख नहि छै। जे हमरे सुख मे अपन सुख तकैत अछि। एहनो स्थिति मे हँसि रहल अछि भीतरे-भीतर दुखी होइतहुँ खुलि क' किछु बाजि नहि रहल अछि। कोनो झगड़ा, झंझट, प्रतिरोध नहि क' रहल अछि। एहन स्त्री के मोजर नहि द' लहक-चहक मे पड़ि दोसर स्त्रीसँ विवाह कर' विदा भ' रहल छलहुँ। ओह! ई सभ भावना जखन राधा के मथ' लगलनि त' ओ आवेगमे कान' लगला। एहना मे मुदा ओ बजितथि की? बजबा जोकर त' हुनकर मुँह नहि रहि गेल छलनि। किएक त' सभटा अपने किरदानी रहनि। डाक्टरी पढ़ितो कोनो सुस्थिर विचारक लोक त' ओ छला नहि। शुरुहे सँ ई देखल जा सकैत अछि जे राधा ने विचारवान लोक रहथि ने हुनका मे कोनो समीचीन निर्णय लेबाक क्षमता रहनि। ओ त' जेना हवा मे पताइत चल' बला लोक रहथि। राधाक विपरीत तिरु अपन स्टैण्ड पर कायम रह' बाली स्त्री रहथि। भले ही ओ स्टैण्ड एक पारम्परिक मैथिल स्त्री होइक। मुदा ओ एम्हर-ओम्हर डोल' बाली नहि छली। जेहेन परिवेश ओ वातावरण मे पालित-पोषित रहथि ताहि मे ओ पति परमेश्वर लग एहि सँ फराक किछु कोना क' सकैत छली? तैं ओ अपन लीक धेने चलैत रहली। मुदा एहि सभक बावजूद ओ चिचिअएली नहि। पतिक पैर नहि पकड़लनि। समर्पण नहि केलनि। गिड़-गिड़ेली नहि। दयाक भीख सेहो नहि मंगलनि। सत्त पुछू त' यैह सभ बात राधा के छटपटी छोड़ा देलकनि। ओ दोसर विवाह कर' नहि जा सकला। धुस द' बैसि रहला। ई कोनो कम बात नहि भेल। एहि प्रकारें ई कहल जा सकैत अछि जे अन्ततः राधा विवाह के खेलौड़ मानै वला समाजसँ अपना के बिलगा लेलनि। अपना के बचा लेलनि। ललका पागक मर्यादा रहि गेल। मुदा जाहि प्रकारक कथा सभ ल' क'

राजकमल बाद मे चर्चित भेला, हुनकर विरोध भेल, खिधांश भेल ताहि प्रकारक कथा ललका पाग नहि छी। स्वाभाविक अछि जे तैं पारम्परिको लोक कें एहि कथासँ कोनो आपत्ति नहि भेलनि। मुदा एहि कथा मे तिरु एकटा स्त्रीक माध्यमसँ प्रतिरोध करबाक बीज ताकब वस्तुतः समयसँ आगूक गप होयत। ललका पाग तँ भावनाक परिधिमे अपन कारबार करैत अछि। तैं एहि कथा के दमयन्ती हरण, हरिद्वारवास, कमलमुखी कनियाँ, ननदि भाउज आदि कथाक संग पढ़ल जाय तखन ई स्पष्ट होयत जे ई कथा कोना सर्व स्वीकार्य कथा बनि गेल। एहि क्रम मे ई नहि बिसरबाक छी जे ललका पाग राजकमल चौधरीक अपनेसँ मैथिली मे लिखल पहिल कथा छी।

(स्मारिका, चेतना समिति, 2014, बात-विचार पोथी, 2015)

OOO

हम नीक लोक नहि छी

'नीक लोक' कथाकार लिली रेक एकदम नब रचना छी। ई दीर्घकथा ओ अपन असंकलित कथा सभक संग्रह 'रंगीन परदा', 'लाली गुरांस' ओ 'विशाखन' के बाद लिखलनि अछि। 'नीक लोक' पहिने 'घर-बाहर' पत्रिकामे छपल आ तखन साहित्यिकी प्रकाशनसँ पोथी रूपमे। कथाक नायिका सन्तु अन्त मे अपन पतिसँ कहैत अछि, 'तों जल्दी भाग! नहि त' हम पुलिसकें बजा लेबइ। हम नीक लोक नहि छी।' ई बात सन्तुके किए कह' पड़लै ताहि लेल सम्पूर्ण कथा पढ़ब जरूरी छै। ओना हमरा लगैत अछि जे हरेक नीक लोककें कहियो, कखनो ककरो ई कहबाक जरूरति किए होइ छै? से एहि दुआरे होइ छै जे ओ अनुभव करैत अछि जे ओकरा नीक लोक बूझि क', नीक लोक कहिक' दबाओल जा रहल छै। ओकरा दबबै बला कियो भ' सकैत अछि। अपन लोक भ' सकैत छै। समाजक लोक भ' सकैत छै। जत' काज-उदम करैत अछि ओतुका बॉस आ सहकर्मी भ' सकैत छै। असलमे नीक लोक संग दुर्व्यव्यवहार कर'बला, ओकरा प्रताड़ित कर'बला ई बूझैत अछि जे ई नीक लोक अछि तैं अत्यन्त सहनशील अछि। कमजोर अछि। सज्जन अछि। एहन भलेमानुस अछि जे प्रतिरोध नहि करत। प्रत्याक्रमण त' नहिये करत। एहन लोक सभ बूझैत रहैत अछि जे नीक लोक के परतारल जा सकैत अछि। ठकल जा सकैत अछि। कखियाओल जा सकैत अछि। ताहूमे जँ ओ स्त्री अछि तखन त' बाते कोन? मुदा नीक लोक स्त्री हो वा पुरुष, ओकरा प्रति एहन धारणा समाजमे कोना उत्पन्न भेल? एहिमे हमरा लगैत अछि जे नीक लोक अछि कि अधलाह लोक से ओकर बात-व्यवहारसँ प्रकट होइत छैक। नीक लोकक बात-व्यवहार एहन होइ छै जे ओ हठात् ककरो हानि नहि पहुँचाब' चाहैत अछि। ककरो अप्रिय कथा नहि कह' चाहैत अछि। जँ अप्रिय कथा बजना जाइत छै त' तकर अफसोस होइत रहैत छै। सभक कल्याण कामना नीक लोकक मोनमे रहैत छै। सामान्यत: नि:स्वार्थ रहैत अछि। लोभ एहन नहि होइत छै जाहिसँ ककरो क्षति होइ। लोक-लाज बदनामीक डर होइ छै। नीक लोककें क्रोध नहि होइ छै मुदा जँ होइ छै त' भयंकर होइ छै। एहन नीक लोक वस्तुत: सभ जाति, धर्म, वर्ग मे होइत अछि। बेसी संख्यामे होइत अछि। मुदा एहन नीक लोक सभ कें एकजुट हेबाक प्रवृत्ति नहि होइत छै। जँ एकजुट भ' जाइत अछि त' किछु क' सकैत अछि। मुदा अधलाह लोक ई मानबा लेल कखनो तैयार नहि होएत जे ओ वस्तुत: अधलाह लोक अछि। सभ लोक कें शक्तिशाली आ नीक लोक बनबाक आकांक्षा होइत छैक। मुदा दिक्कत ई छैक जे शक्तिशाली बनबाक क्रममे अन्तत: मनुक्ख नीक लोक नहि रहि जाइत अछि। कतहु ने कतहु शक्ति (पावर) आ सज्जनतामे टकराहटि शुरू भ' जाइत अछि आ लोक एहि क्रममे शक्तिशाली त' बनि जाइत अछि मुदा सज्जनता कें अतिक्रमण क' जाइत अछि। तहिना ईहो भ' सकैत अछि जे सज्जन त' बनि जाय मुदा शक्तिशाली नहि बनि पाबय। ओकरा अन्तत: ई बुझबा मे आबय जे असली ताकत त' स्वयं सज्जनता थिक, एहि भीतरी शक्ति कें फेर बाहरी ताकत अर्जित करबाक कोन प्रयोजन? तैं सज्जन आ नीक लोक कमजोर नहि होइत अछि। कमजोर त' शक्तिशाली होइत अछि, जेकरा अपन अर्जित शक्ति नष्ट भ' जेबाक चिन्ता सतबैत रहैत छैक। एहि चिन्ता वा डर मे ओ बेर-बेर अपन शक्तिक दुरुपयोग करैत रहैत अछि। शक्तिक बिना दुरुपयोग-प्रयोग के लोक ओकरा शक्तिशाली कोना बुझतै। यैह अकिल अन्तत: ओकर विनाशक कारण बनैत छैक। सज्जन कें अपन सज्जनता प्रकट करबाक लेल फूट सँ कोनो कोशिशक जरूरत नहि होइ छै।

यैह स्थिति नीक लोक सन्तुक पति जितेक होइत छै। ओ पति हेबाक अधिकार कें अपन शक्ति बुझैत अछि। शक्तिक प्रदर्शन लेल शक्तिक दुरुपयोग करैत अछि। अपन दोसर पत्नी सन्तु आ तीन बरखक बेटी नेहाकें पीटैत अछि। सन्तु अपन बेटी नेहाक संग जितेक घर छोड़ि दैत अछि। अपन घर मे चल जाइत अछि। अपन घर जे ओ अपन कमाइसँ

बनौने अछि। जितेकें ई बुझबा मे नहि अयलै जे सन्तु घर किए छोड़लक? ओ सोचैत अछि जे सन्तु ओकर अपमान केलकै। ओ अपन अधिकारक दुरुपयोग कें ई सोचि न्यायोचित मानैत अछि, जे केहनो त' ओ सन्तुक बूढ़ा (पति) रहै। सम्मानक व्यक्ति। ओकरा होइ छै जे ओ अपमान नहि सहि सकैत छल। आब ई जे जितेक, सन्तु द्वारा अपमान हेबाक समझदारी छै, तकर पड़ताल कयल जाय। वस्तुतः जितेक ई समझदारी 'पति-परमेश्वर' बला परम्परा पर आधारित छैक। एहन परम्परा जाहिमे सभ अधिकार पुरुषक हाथमे रहैत छैक। पत्नी किछु बाजि नहि सकैत अछि। किछु मांगि नहि सकैत अछि। पति किछुओ करय, पतिक कर्त्तव्य नहि करय, पिताक कर्त्तव्य नहि करय, केवल अपनेटा लेल जीबय मुदा स्त्री सभटा देखियो क', भोगियो क' धिया-पूताकें बिलटैत देखि दुखी भइयो क', किछु बाजय नहि। लड़य नहि, खाली सहय। सैह भेल नीक लोक पति परमेश्वरक नजरि मे। जँ किछु बाजल प्रतिरोध केलक त' परमेश्वर अपना कें अपमानित अनुभव करताह। एही कारण जितेकें पहिल स्त्री मेनका सभ दिन सँ पसिन्न छलै। ओकरा सभ सँ नीक ई लगै जे मेनका कहियो प्रतिवाद नहि करै। सन्तु संग जखन रुपैया ल' क' झगड़ा बढ़ैत गेलै त' जिते बाजल रहय, 'जखन देखू टाका चाही। मेनकाकें कोनो सम्पत्ति नहि रहइ तहयो कहियो एक पाइ नहि मंगलक। जे दियइ तही मे चलाबय। एतेक नीक लोक।' जिते पानिक क'लक मिस्त्री छल। ओकर बाप सेहो म्यूनिसपैलिटीमे पानिक क'लक मिस्त्री रहय। खुशामद पैरवी क' क' जिते के सेहो काज दिया देलकै। दार्जिलिंग मे आयके स्रोत बढ़ि रहल छल। जनसंख्या सेहो बढ़ि रहल छल। मिस्त्री सभक काज बढ़ि रहल रहय। आमदनी बेसी हुअ' लागल रहै। मजदूरीक अतिरिक्त टिप सेहो भेटै। साँझ क' जिते तीनू बाप-पूत मासु-भात खाइ छल। रक्सी पीबैत छल'। बुत्त भ' सूतैत छल। पीबाक आदति बढ़ैत गेलै। मेनकाकें सेहो एहिमे शामिल क' लेलक जिते। एहि पीबाक हिस्सक आ दोस-महिम सभकें पीयेबाक कारणे पाइ बेसी खर्च हुअ' लगलैक। पैंच-पालट लिअ' लागल। रमक दाम बढ़ैत गेलैक त' खर्चो बढ़ल गेलैक। ओ घरक खर्च मे कटौती कर' लागल। धिया-पूताक पढ़ाइ-लिखाइ मे खर्च नहि करय। मेनकासँ ओकरा दूटा बेटी आ एकटा बेटा रहै। हरदम बेटा-बेटी पर

तमसाइत रहय। बेटा-बेटी सभ ओकरा डरे सकदम रहै। घर मे तनाओ रहल करै। एहनामे सन्तु अपन संगी मेनकाक काज आबइ। पैंच-पालट दै। धिया-पूता लेल नीक-निकुत चीज-बस्तु आनइ। सन्तु मेमसाहेबक ओहिठाम दाइक काज करैत छल। सन्तु मेमसाहेबक बच्चा सभ कें होमवर्क करबैत देखैत अपनहु बूझ' लागल, अंग्रेजीक किताब सेहो पढ़' लागल। मेमसाहेब दुखित भ' जाथि त' होमवर्क देखब सन्तुक काज भ' जाइ। मेनका सुनलक त' चकित भ' गेल। सन्तु के कहलकै, 'कहुना हमरो बच्चा सभ तोरे जकाँ भ' जाय। हमरा जकाँ नहि।' सन्तुकें सुनैत नीक लागल रहै। ओहो पुलकित होइत बाजल रहय, 'हमरा सँ आगू जेतउ। घरेलू काज नहि, कोनो कम्पनीमे काज करतउ। जेना हमर भाय सूरज करैत अछि।' मेनका आ सन्तुक दोस्ती आर बढ़ि गेलै, बढ़ैत गेलै।

मुदा अकस्मात् मेनका मरि गेल। पेटक दर्द जान ल' क' छोड़लकै। दर्दसँ छटपटाइत मरि गेल। जितेक बेटा प्रवीणक कहब छलै जे, 'ओकर मृत्युंक कारण रहै बाउक कृपणता। जतबा ओ अपन साथी सभक संग उड़बैत अछि तकर आधहुं अपन परिवार पर करैत, त' अमा नहि मरैत।' जितेक माय सेहो खून बोकरि क' मुइल रहै। बहीन सूतल मे मुइल रहै। बाप मुइलै। मेनकाक मुइलासँ ओकर धिया-पूता टुग्गर भ' गेलै। सन्तु कहबो केलकै जितेकें, 'ई की क' रहल छी? अहाँ बाप थिकिअई। बापक अछैत टुग्गर कियैक बना देलिअइ ओकरा सब कें?' सन्तु लगातार जिते पर धिया-पूता लेल दबाव बनौने रहल। किछु-किछु जितेक सुमति घुरलै। से सन्तु के बुझायल रहै। एहना मे जिते अपन धिया-पूता कें कहलक, 'सन्तु कें कियेक नहि कहइ छहिक जे छेमा नहि, अमां चाहियहु तोरा लोकनि कें।' ओकर धिया-पूता कें ई बात पसिन्न पड़लै। सन्तुसँ कहलक, सन्तु राजी भ' गेल। मौसीसँ माय बनि गेलै बियाह क' के।

सन्तुक माय कें नहि पसिन्न पड़लै ई बियाह। ओ जितेक स्वभाव जनैत छल। मुदा बेटा सूरज मना लेलकै ओकरा। मेनकाक दुनू बेटी ब्यूटीशियन बनबाक लेल चल गेलै। सन्तु अपन जमा कयल छह हजार टाका देलकै ओकरा सभकें। बेटा सेहो कुबैत मे काज कर' चल गेल। सन्तु आ जितेक बीच बाताबाती तकर बाद सँ बढ़ैत गेल। बच्चा सभ कइएक बेर जिते आ मेनकाक बीच टाका ल' कें झगड़ाक गप सुनौने

छल सन्तुकें। अपन टाका नुका कें राखय कहने छल। जिते तमसाइत रहल सन्तु पर। जोर-जोर सँ ललकैत रहल, 'तों झुट्ठी छैं। तों...। तोंही हमर बेटा-बेटी के हमर विरुद्ध, बापक विरुद्ध सिखबैत पढ़बैत छहीक।' जिते चिकरैत रहल। सन्तु अपन गर दाबि बाजल रहय, 'तों कने आस्ते से नहि बाजि सकै छैं? एतनीटा बच्चा नेहा सकदम भ' गेलि अछि। ओकरा अपन बापक इयैह रूप मोन रहतइ।' नेहा अपन माय-बाप दिस आँखि फाड़िक' देखि रहल छल। भयसँ ठोर थरथरा रहल छलै। तकरबाद फेर दोसर दिन जखन जिते सन्तु संग रूपैया ल' क' मारि-पीट केलक त' सन्तु ओकरा घर छोड़ि क' चल गेल।

वस्तुत: पति परमेश्वर बला ई रूप जाहि मे पति एकदम गैर जिम्मेदार अछि, दायित्वहीन अछि, नीक लोक की, लोक सेहो नहि थिक। नीक लोक ओ अछि जकरा दायित्वबोध छै। अपन कर्त्तव्यक ज्ञान छै। ई दायित्वबोध घर-परिवार सँ शुरू होइ छै। जेना सन्तु कें भेलै। जाबत ओकर भाय सूरज पढ़ि-लिखिकें नोकरी नहि कर' लागल ताबत् ओ बियाहक मादे सोचबो नहि केलक। ओ सूरज जेकाँ अपन माय लेल कर' चाहैत छल। बहीन सभ जकाँ स्वार्थी नहि बन' चाहैत छल। पहिने अपन मायक इच्छा पुराब' चाहैत छल।

सन्तु अपन पूरा दरमाहा माइ कें सौंपि दैत छल। ओकर माय सोचैत छल जे सन्तुक मदतिक बिना ओ सूरज कें कोना पढ़ा सकैत छल? पढ़ैत नहि त' ई नोकरी भेटितइ? ई घर बनितइ? ..... ई जे दायित्वबोध छलै सन्तुक से घर-परिवार सँ बढ़ि क' सखी-बहिनपा धरि पसरि गेलै। मेनका ओकर अपन भ' गेलै। ओकर धिया-पूता अपन लाग' लगलै। अन्तत: सखीक मुइलाक बाद ओकर संतानो सभक दायित्व उठब' लेल ओ जितेसँ बियाह क' लेलक। मेनकाक संतान सभ अपन पैर पर ठाढ़ भेलै। एहिमे ओकरा सभकें माय जकाँ मदति केलक सन्तु। मुदा जखन अपन सन्तान नेहाक भय सँ थरथर चेहरा देखलक आ अपन मातृत्व ओ स्त्रीत्व पर प्रहार भेलै त' ओ तिलमिला गेल। जिते सँ सम्बन्ध तोड़ि लेलक। ओ थापड़-मुक्का खाइ छी, भने पड़ल छी, तेहेन कमजोर भ' क' नहि रहि सकैत छल। एक कर्मठ स्वाबलम्बी स्त्री जकाँ जेना सम्बन्ध बनौलक तहिना सम्बन्ध विच्छेद सेहो क' लेलक। कथाकार लिली रे

एहि कथा मे कहैत छथि जे एहने स्त्री जे दायित्वबोधबाली अछि, कर्मठ अछि, आर्थिक रूपसँ स्वाबलम्बी अछि से कतहुसँ कमजोर नहि अछि। ओकरा भलेमानुस बूझि क' सहनशील बूझि क' सज्जन बूझि क' कियो प्रताड़ित नहि क' सकैत अछि। ठकि नहि सकैत अछि। ओकरा पर जुलुम नहि क' सकैत अछि। वस्तुत: जे बेर पड़ला पर प्रतिकार करैत अछि सैह नीक लोक अछि। भले ही ओकरा नीक लोक बला स्वभावे कें अपन शक्ति बना क' प्रतिरोध कर' पड़ै।

चिकड़ि क' बाज' पड़ै जे, ओकरा नीक लोक बुझबाक गलती नहि कयल जाय। वस्तुत: नीक लोकक एक गुण ई होइत छै जे ओ सहजें ककरो पर विश्वास क' लैत अछि। लोक पर विश्वास करब ओकर प्रकृतिमे रहैत छै। जखनकि दुनियाँ एहन अछि जे बहुतो लोक विश्वसनीय नहि रहि गेल अछि। ककरो ठेस पहुँचा देनाइ, ठकि लेनाइ, विश्वासघात क' देनाइ एक सहज वृत्ति सन भ' गेलैक अछि। केवल अपना लेल जीबै बला, स्वार्थे आन्हर, लोभ-लालसामे पड़ल लोक आपसी विश्वसनीयता कें बना क' रखबाक बातकें दू कौड़ी के बुझैत अछि। हँ, जेकरासँ स्वार्थ साधन होइत हो, ओकरा मोनमे अपना प्रति विश्वासक भ्रम बना क' रखबामे माहिर भ' गेल अछि लोक। सन्तु आ जितेक सम्बन्धक विश्लेषण कयला पर सेहो एहने सन स्थिति प्रकट होइत अछि। सन्तु अपना सखी मेनकाक मुइलाक बाद ओकर संतान सभक प्रति सहज स्नेहवश दायित्वबोधसँ भरि उठैत अछि। जिते कें फटकारैत अछि त' ओ सन्तुक किछु बात कें मानि लैत अछि।

सन्तु कें मिलेबाक लेल लल्लो-चप्पो करैत अछि। ओकर मोन कें जितबाक कोशिश करैए। एहि मे ओकर स्वार्थ छै। ओ चाहैत अछि जे सन्तु नहि केवल ओकर आर्थिक मदति करय, ओकर घरो सम्हारय, जाहिसँ ओ छुट्टा साँढ़ जकाँ अपन इच्छासँ मौज मस्ती क' सकय। दारू पीबि सकय। कमायल रूपैयाकें लोक-वेद पर नहि खर्च क' अपना पर खर्च करय। वस्तुत: जितेक एहि चालि मे संवेदनशील सन्तु फँसि जाइए। जे सन्तु आन कतेक अपन बएसक पुरुषकें नकारि क' बिन बियाहलि रहल से अपना सँ बहुते जेठ पुरुषसँ बियाह क' लैत अछि। किछु दिन आरामसँ बितैत छै। मुदा जखने हरहर-खटखटसँ जीवन नर्क बुझाय लगैत

छै त' ओ एहि सभ लेल अपना कें दोषी मानैत अछि। अपन गलती बूझि क' फेर जे डेग उठबैत अछि से दुरूस्त डेग होइ छै। एक बेर गलती भ' सकैत छै मुदा बेर-बेर गलती करब नीक लोकक लक्षण नहि भ' सकैत अछि। तखन ठीके ओ कमजोर लोक बूझल जाएत। विवेकी नहि मानल जाएत।

कथाकार लिली रेक ई कथा सेहो हुनक पहिनेक कथा सभ जकाँ मानवीय सरोकारक लेल मोन रखबाक योग्य अछि। जेना हमरालोकनि जनैत छी लिली रेक कथा-संवेदना एहि तरहक स्त्री आ पुरुषक संग अछि जे एक हाड़-मांसक मनुक्खक रूपमे दया, समता, ममता, न्याय, प्रीति, सत्य, कल्याण, बुद्धि पर बल दैत जीवन जीबाक अभिलाषी अछि। एहि कथामे विशेष रूपसँ रेखांकित करबाक बात ई अछि जे एहि मे मनुक्खक आन्तरिक गुण आ अवगुण सभक बदलैत सामाजिक मूल्य संग द्वन्द्व के उजागर कयल गेल अछि।

एहि मे दार्जिलिंगक होइत विकास आ ओहि विकासक प्रभाव ओहिठामक निम्नवर्गक बसिन्दा सभ पर कोना आ केहेन सकारात्मक ओ नकारात्मक रूपसँ पड़लैक अछि तकर कथा सेहो कहलनि अछि लिली रे। मुदा ई कथा केवल दार्जिलिंगक नहि छी, सभठामक छी। कथाक शिल्प सेहो पहिने जकाँ खिस्साक ढब-ढाँचामे अछि। एक स्तरीय। कथात्मक स्तरे पर चल' बला कथा-विन्याससँ लिली रे सटीक प्रभाव उत्पन्न करैत रहली अछि। ई एक पैघ विडम्बना थिक जे कोनो स्त्री वा पुरुष, जे नीक लोक अछि, ओकरा ई कह' पड़ै जे हम नीक लोक नहीं छी। जानि नहि ओ समाज कहिया होयत जहिया नीक लोक कें एहन बात कहबाक प्रयोजन नहि हेतै।

(सखी-बहिनपा, पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2018 ई॰)





अशोक

जन्म : 18 जनवरी, 1953 ई.
जन्म स्थान : लोहना, मधुबनी (बिहार)
शिक्षा : बी.एस-सी. डी.सी.एम. (मास्को)
वृत्ति : बिहार सहकारिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकारी

प्रकाशन : चक्रव्यूह (कविता-संग्रह)
त्रिकोण (सहयोगी कथा-संग्रह)
ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह)
मातवर (कथा-संग्रह)
डैडीगाम (कथा-संग्रह)
मैथिल आँखि (निबन्ध-संग्रह)
कथाक उपन्यास : उपन्यास कथा
(मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्ययन)
आँखिमे बसल (यात्रा कथा)
बात-विचार (आलोचना)
राज मोहन झा (विनिबन्ध)

संपादन : संवाद (वार्त्ता)
प्रतिमान (विचारगोष्ठीक आलेख ओ विमर्शक संग्रह)
सन्धान (अनियतकालीन पत्रिका)

वर्तमान पता : बी-102, श्रीरामचन्द्र इन्क्लेब रोड नं. 1ए, शिवपुरी, पटना-23
सम्पर्क : 8986269001
ई-मेल : ashokthewriter@gmail.com



प्रकाशक
सिद्धिरस्तु
ई-मेल : siddhirastu.trust@gmail.com
वेबसाइट : www.siddhirastutrust.com

ISBN 978-81-957865-5-8



मूल्य: ₹ 300/-